महाराजा अग्रसेन और अग्रवंश

(एक अध्ययन)

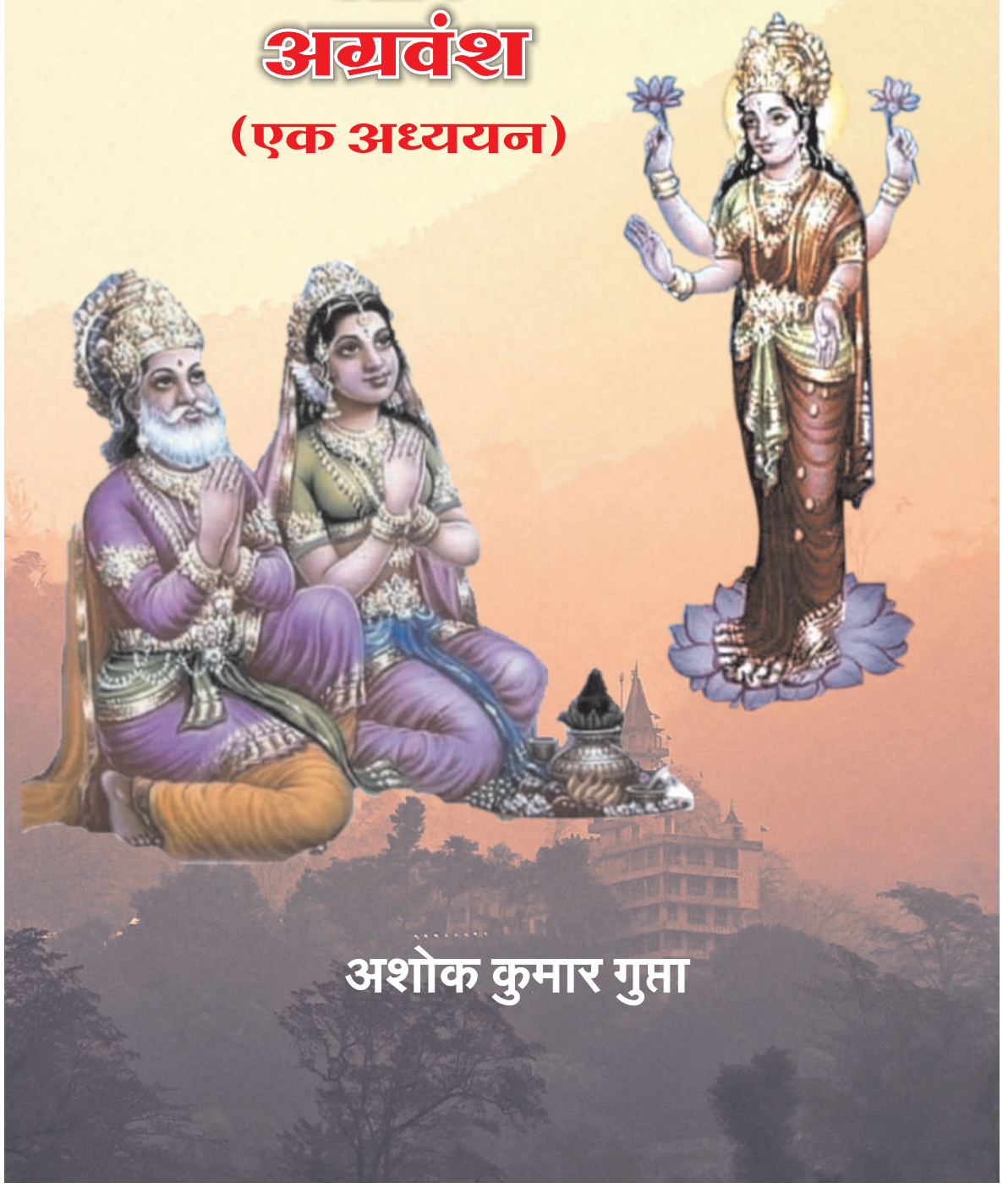

अशोक कुमार गुप्ता

चित्र . अग्रवाल वंश की उत्पत्ति
राजा अग्रसेन . वैश्य वंश के अगुवा
''साढ़े सत्रह गोत्रों में आधा गोत्र ''गोन'' समझना चाहिए।
नोट १ - महाराजा अग्रसेन अपनी औलाद को दो नामों से पुकारने लगे थे।
१. जो देश की ''राजकन्यांओं'' की औलाद थी, उनको ''देशवंशी''।
२. जो राजा ''वासक'' की युवतियों की औलाद थी, उनको ''विशवंशी''।।
नोट २ -
(अ). शिक्षा को अपनाने के कारण ''देशवंशी'' शब्द का बिगड़कर ''देशे'' रहा, जिसका बिगड़ कर ''दसे'' रह गया।
(ब). ''विशवंशी'' शब्द का बिगड़ कर ''विशे'' रहा, जिसका बिगड़ कर ''बीसे'' हो गया।
● लाल रंग से देशवंशी समझो
● हरे रंग से विशवंशी जानो
● पीले रंग से ऋषि (गुरू पुरोहित) जानो, जिस पर गोत्रों का सिल्सिला चला।
इस ऐतिहासिक वंशावली वृक्ष को छापा था - खलीला खुशरंग प्रेस, मेरठ ने।
प्रकाशित करवाया गया -- सचिव, वैश्यवंशी, ''वैश्य अग्रवाल सभा, मेरठ'' द्वारा।

महाराजा अग्रसेन और अग्रवंश
(एक अध्ययन)

लेखक

अशोक कुमार गुप्ता

एम.कॉम, एम.ए, (हिंदी), बी.एड.

पूर्व अध्यापक व वरिष्ठ अनुवादक

मो. नं. 63765 66713, **वाट्सएप नं.** - 94606 49764

agupta.shant@gmail.com

प्रकाशक

श्री अग्रवाल विकास महासभा, गुजरात

महाराजा अग्रसेन और अग्रवंश
(एक अध्ययन)

- लेखक : **अशोक कुमार गुप्ता**
  मो. नं. 63765 66713, **वाट्सएप नं.** - 94606 49764
  agupta.shant@gmail.com

- सर्वाधिकार : **लेखक**

- द्वितीय संस्करण : **जनवरी, 2022**
  प्रथम संस्करण - जनवरी 2021

- सहयोग राशि : **250/- रूपये मात्र**

- प्रकाशक : **श्री अग्रवाल विकास महासभा, गुजरात**

- **प्राप्ति स्थान :**
  64/FF, रूद्राक्ष कॉम्पलेक्स, अन्नपूर्णा होटल के सामने,
  VATVA GIDC रोड, वटवा, अहमदाबाद - 382445
  मो. नं. 98250 39346

- **टाईप सेटिंग :**
  एम.एस.कंप्यूटर्स, जोधपुर
  मो : 70238 90090

- **मुद्रक :**

(मुख पृष्ठ डिजाईन कर्त्ता, सी.ए. विवेक कुमार गुप्ता, अहमदाबाद)

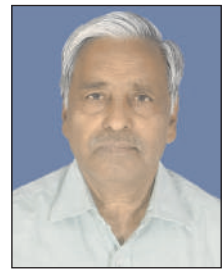

लेखक की कलम से .....

बंधुओं, समय-समय पर अनेक अग्र-विद्वानों ने ''**अग्र-साहित्य**'' का सृजन किया, उसे समृद्धशाली बनाया और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी काफी कुछ लिखा। -- राष्ट्र के प्रति समर्पित, इतिहास का महत्त्व समझने वाले और अग्रवाल-समाज का भला व उत्थान चाहने वाले इन विद्वानों का मानना था कि ''इतिहास बड़े गर्व और गौरव की चीज़ होती है। जिससे हमें अपने देश एवं जाति की उन्नति एवं अवनति के बारे में जानने का सुअवसर मिलता है। अपने बच्चों को गौरवशाली इतिहास पढ़ाकर ही, हम उनमें देश, जाति व समाज के प्रति समर्पण-भाव पैदा कर सकते हैं।''

निश्चित रूप से, अग्रवाल समाज का इतिहास गौरवशाली रहा है और साहित्य भी समृद्धशाली है। सबसे पहले स्व.भारतेंदु हरिशचंद्र जी ने पुस्तक ''**अग्रवालों की उत्पत्ति**'' सन् 1871 में लिखी, जिसे 1920 में प्रकाशित किया गया। छोटी किंतु इस महत्वपूर्ण पुस्तक ने अग्रवाल समाज में हलचल पैदा कर दी, अग्रवालों को अपने गौरवशाली इतिहास का ज्ञान हुआ। भारतेंदु जी के बाद अग्र साहित्य लिखने में अनेक प्रयत्न हुए। हमारे लिये यह गर्व की बात है कि सन् 1915-20 से ही अग्रवाल समाज के इतिहास व साहित्य को समृद्धशाली बनाने के लिये अनेक विद्वान लेखकों ने अपना योगदान दिया। **तब,** जब उस जमाने में आवागमन के साधन अत्यंत सीमित थे, यात्राएं कष्टदायक थीं, विदेशियों द्वारा इतिहास संबंधी ग्रंथों को नष्ट कर दिया गया था, सामग्री-संकलन करने में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था, जनश्रुतियों के संकलन के लिये जगह-जगह भटकना पड़ता था आदि।

पुस्तक लेखन से पहले मैंने अनेक सामाजिक लेख लिखे तथा कुछ का संपादन करने का भी अवसर मिला। मेरी दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, पहली गौरवशाली अग्रवाल समाज-ऐतिहासिक परिदृश्य'' तथा दूसरी ''अग्रवाल समाज और स्वाधीनता संग्राम (1857-1947)'। स्वाधीनता संग्राम पर लिखी गई पुस्तक का विमोचन, देश के अनेक स्थानों पर हुआ, जिसका विवरण भी इसी पुस्तक में दिया गया है। मुझे प्रसन्नता है कि इन दोनों विषयों पर पहली बार लिखी गई, इन पुस्तकों की सराहना अनेक विद्वानों ने की, अनेक पत्र मिले और फोन व वाट्सएप पर भी अपनी प्रतिक्रियाएं दीं। **हौंसला बढ़ता है,** जब ऐसी प्रतिक्रियाएं मिलती हैं और आगे लिखने के लिये प्रेरणा भी देती हैं। अग्रबंधुओं की इसी प्रेरणा दायक प्रतिक्रियांओं के कारण प्रस्तुत है मेरी तीसरी पुस्तक ''**महाराजा अग्रसेन और अग्रवंश - एक अध्ययन**'', आशा है, यह पुस्तक भी अग्रबंधुओं को पसंद आयेगी और अग्रवंश को जानने में सहायक होगी।

अनेक अग्रवाल बंधुओं के मेरे पास, उनके प्रश्नों से संबंधित फोन आते हैं। काफी

भ्रांतियां हैं, जो अभी भी दूर करना आवश्यक है। मेरा मानना है कि जब तक हम ''एक स्वर में अपने इतिहास और साहित्य को स्वीकार नहीं करेंगे, तब तक सही जानकारी अग्र बंधुओं तक नहीं पहुंचेगी और यह भ्रांतियां व प्रश्न हमेशा बने रहेंगे।'' आज यह भी देखा जा रहा है कि, समाज के कुछ गणमान्य बंधु, बिना जानकारी व इतिहास पढ़े ही भ्रांतिपूर्ण बातें करते हैं, कुछ अति उत्साही बंधु मैग्जिन में अपने मन से भी लिखते हैं, कुछ बंधु आधी- अधूरी जानकारी नेट अथवा फेस बुक पर डाल देते हैं, जिससे भ्रांतियां बनी रहना स्वभाविक है। हम सभी की जिम्मेदारी है, कि सही जानकारी समाज को दें। नेट पर तो जो डालेंगे वही मिलेगा। मेरा आग्रह रहेगा कि अपने साहित्य की पुस्तकें जहां से भी मिलें, जैसे भी मिलें, अवश्य पढ़ें। **विद्वानों ने कहा भी है**, कि - यदि इतिहास को आप लगातार गलत पढ़ायेंगे तो इतिहास भी गलत समझा जाएगा। इतिहास को दुरूस्त करने की जिम्मेदारी समाज की है, संस्थाओं के पदाधिकारी तथा जागरूक अग्रबंधु इसमें सहयोग कर सकते हैं। आज भी अगर, कुछ संस्थाएं तथा समाज सेवी सुविधा दें तो अभी भी, अग्रवाल समाज के अनेक विषयों पर पुस्तकें लिखी जा सकती हैं जिससे आज की पीढ़ी को प्रेरणा मिलेगी तथा लेखक भी तैयार होंगे।

इस पुस्तक में कुछ भ्रांतियों को दूर करने की कोशिश की गई हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि इस पुस्तक के माध्यम से काफी हद तक अग्रबंधुओं को उनके प्रश्नों के उत्तर मिलेंगे और भ्रांतियां भी दूर होंगी जैसे वैश्य जातियों में गुप्ता लिखा जाना, नागवंश, समाज में फैली किवदंतियां, गौत्र, जनपद व गणराज्य आदि।

इस लघु पुस्तक को लिखने में काफी मेहनत की गई है। **मेरी इस मेहनत को मैं अपनी प्रिय बेटियों - डा. गरिमा गुप्ता व हिमशिखा अग्रवाल तथा पुत्र सी.ए. विवेक गुप्ता को समर्पित करता हूं,** जिन्होंने हमेशा उत्साहित किया और कहा कि पापा आप हमेशा लिखते रहें और समाज में अपनी लेखनी की ज्योति जलाते रहें। आपके द्वारा दी गई जानकारी अग्रवाल समाज के लिये महत्वपूर्ण होती है, ऐसा हमारा मानना है।

मैं सौभाग्यशाली रहा कि, अग्रवाल समाज के मूर्धन्य लेखकों का मुझे सान्निध्य मिला, उनसे लिखने की प्रेरणा मिली, आरंभ से ही समाज सेवा में रहने के कारण भी लिखने का मन बना। इस पुस्तक को लिखने में मैंने अग्रवाल समाज के स्वनाम धन्य लेखकों की पुस्तकों का सहारा लिया, मैं उन सभी विद्वान लेखकों का हृदय से आभार प्रकट करता हूं। अग्रवाल समाज के समृद्धशाली साहित्य का संकलन मेरे पास काफी है, इसका अध्ययन भी मैंने किया है और अपने संकलन में से कुछ सामग्री एकत्रित कर पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है। समाज में जागृति लाने के लिये, मेरे द्वारा किये गए इस प्रयास में कुछ त्रुटियां रह गई होंगी। **बंधुओं** -कलम चलाना मेरा पेशा नहीं रहा, इसलिये कमी को पाठक सहज भाव से लेंगें, ऐसा मेरा मानना है। यह पुस्तक प्रत्येक अग्रवाल परिवार में पहुंचे, यही मेरी कामना है। पुस्तक के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन के लिये मैं श्री अग्रवाल विकास महासभा के अध्यक्ष श्री डी. के.अग्रवाल तथा महामंत्री श्री कपूर चंद जी गुप्ता का हृदय से आभार प्रकट करते हुए आशा करता हूं कि

आप जैसे साहित्य मनीषी अग्रवाल समाज के साहित्य की समृद्धि में इसी प्रकार योगदान देते रहेंगे।

पूर्व में लिखी गईं पुस्तकों की भरपूर सराहना अग्रबंधुओं द्वारा की गई, मैं उन सभी का तहेदिल से आभार प्रकट करता हूं। अंत में **वरिष्ठ अग्रसाहित्यकार श्री ओमप्रकाश जी गर्ग 'मधुप'** के इस वाक्य से मैं अपनी बात समाप्त करता हूं –

''अपनी विरासत को जानिये, वैश्य अग्रवाल जाति के इतिहास को पढ़िए और समाज की उन्नति के लिये अपने सिर को गर्व से ऊंचा करके चलिये। कोई भी व्यक्ति जो पूर्ण विश्व को जानने का दावा करता है, भले ही वह परमात्मा को जानने का दावा करता है किंतु जब तक वह अपना इतिहास नहीं जानता, वह अंधकार में रहता है। इसलिये हे अग्रबंधुओं – उठो। जागो। स्वंय अपने बारे में जानों, अपने इतिहास के बारे में जानों और अंधकार का परित्याग कर, प्रकाश की ओर चलो तमसो मा ज्योतिर्गमय ।।''

।। जय अग्रसेन जय अग्रोहाधाम ।।

आपका स्नेही

अशोक कुमार गुप्ता, जोधपुर

अग्रवाल गोत्र गीत

अग्रवंश के गोत्र देश में जिंदल, बिंदल, सिंघल हैं,
गोयल, धारण, मंगल, मधुकुल, बंसल, कंसल, कुच्छल हैं,
गर्ग हैं कोई, कोई नागल, गोयन, ऐरन, तिंगल हैं,
शेष बचे हैं तीन नाम जो तायल, मित्तल, भंदल हैं।
सभी एकता के संबल हैं, समता–ममता के प्रतीक हैं,
प्यार की भाषा गोत्र अठारह, महिमा अग्रवाल संसार की,
अग्रसेन की संतान हैं हम, जय अग्रसेन महाराज की ।।

अशोक कुमार गुप्ता

इसी पुस्तक से -- कुछ अंश

यह भी सही है कि महाराजा अग्रसेन के इतिहास लेखन में अनेक भ्रांतियां हैं और रहेंगी भी। इतिहास नित्य बदलता रहता है, शोध होते हैं और खंडन-मंडन भी। **लेकिन महाराजा अग्रसेन ने जिन सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया वह बड़े से बड़े मानवतावादी तथा समाज शास्त्रियों के लिये खोज का विषय है।** सत्यकेतु जी के अनुसार - इन भेदों के होते हुए भी, अग्रसेन जी की कथा सर्वत्र एक सी पाई जाती है। ''**सन् 1920**'' से ही अग्रवाल समाज के इतिहास व साहित्य को समृद्धशाली बनाने के लिये अनेक विद्वान लेखकों ने अपना योगदान दिया। **तब,** जब - ''उस जमाने में आवागमन के साधन अत्यंत सीमित थे, यात्राएं कष्ट दायक थीं, विदेशियों द्वारा इतिहास संबंधी ग्रंथों को नष्ट कर दिया गया था, आज जैसी तकनीकी उन्नति नहीं थी, सुविधाओं का अभाव था।'' सामग्री-संकलन हेतु सैंकड़ों मील की यात्रा करना उनकी पूर्ण समर्पणता को दर्शाता है।

अग्रवाल समाज का **स्वर्णिम इतिहास** 5100 वर्ष से भी अधिक पुराना है। स्वतंत्र जाति के रूप में इसका उल्लेख वर्तमान में प्राप्त प्रमाणों, शिलालेखों, प्राचीन ग्रंथों के आधार पर 1100 ईस्वी के आस-पास ही मिलता है। **राष्ट्रीय उत्थान में अग्रवालों का योगदान इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ है।** यह समाज वीरता एवं त्याग के क्षेत्र में भी अग्रणी रहा है। आजादी के दीवानों के रूप में स्वत्रंता संग्राम के इतिहास में अगवालों का योगदान तो भरा पड़ा है।

इतिहास साक्षी है, कि जब तक वैश्य अग्रवालों के हाथ में कृषि, गौरक्षा और वाणिज्य का कार्य रहा, भारत सोने की चिड़िया कहलाया। संपूर्ण भारत में परिचय सम्मेलन व सामूहिक विवाह का आरंभ अग्रवाल समाज ने ही किया। अपनी योग्यता व बुद्धि से अनेक अग्र विभूतियों ने राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आपनी पहचान का झंडा बुलंद कर समाज का नाम रोशन किया है। **उल्लेखनीय** है कि अग्रसेन जी की संतानों ने अपनी प्रतिभा के बल पर हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का डंका बजाया है। **विश्वसनीयता का दूसरा नाम अग्रवाल है।**

अग्रवालों में गोत्र जीवित जागृत हैं। वे केवल लोगों को स्मरण ही नहीं हैं बल्कि व्यवहारिक जीवन में भी उनका प्रतिदिन प्रयोग होता है। विशेषतया - सगाई, विवाह, कर्मकांड, यज्ञ आदि में तो इनके बिना कार्य ही नहीं चल सकता। इसमें संदेह नहीं कि एक ही गौत्र को विभिन्न स्थानों पर कुछ उच्चारण भेद से बोला जाता है।

यह प्रसन्नता की बात है, कि - आज पूरे देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी महाराजा अग्रसेन का नाम घर-घर में गुंजायमान है। यह भी गर्व की बात है कि - आज अग्रवाल समाज में **चेतना** आई है लेकिन - खेद भी है कि **एकता** नहीं आई। पूरे देश में अनेक संगठन हैं। सभी संगठन अपनी-अपनी तरह से कार्य कर रहे हैं। हम गर्व से कह सकते हैं कि आज देश के सभी शहरों, कस्बों आदि में महाराजा अग्रसेन की मूर्तियां, चौराहे, पार्क, सड़कें, अस्पताल, कॉलेज, विश्वविद्यालय आदि हैं। जगह-जगह अग्रभागवत हो रही है तो अग्रसेन जी की लीलाओं व

नाटकों का भव्य मंचन भी किया जा रहा है, समय-समय पर अग्रसेन जी पर फिल्मों का भी निर्माण हुआ है, और भी अनेक उपलब्धियां हैं तथा यह क्रम अनवरत जारी है।

एक ईंट और एक मुद्रा – इस परंपरा में कुछ अतिश्योक्ति भी हो सकती है, पर यह कथा स्पष्ट करती है कि अग्रोहा में आने वाले प्रत्येक परिवार को थोड़ी-थोड़ी सहायता देकर उसे आत्मनिर्भर बना देते थे। जिससे कि वह अपना स्वतंत्र एवं ससम्मान जीवन आरंभ कर सके। चूंकि सहायता एक परंपरा थी, इसलिये उसे स्वीकार करने में किसी के आत्मसम्मान को ठेस नहीं लगती।

अग्रसेन जयंती – जयंती मनाने के विषय में कहा जाता है कि अग्रवालों के कुल पुरोहित स्वामी ब्रह्मानंद जी ने समाज के लोगों को प्रेरित किया कि वे अपने महापुरूष की जयंती ''आसोज सुदी एकम'' को धूमधाम से मनाएं। विक्रम संवत् 1964 यानि सन् 1907 के आस-पास स्वामी जी ने जयंती मनाने का श्रीगणेश अग्रोहा में किया। **दिल्ली में अग्रसेन जयंती** – श्री बशेसर नाथ गोटेवाले ने सन् 1938 में ही आपने अपने साथियों के साथ दिल्ली में पहली बार अग्रसेन जयंती का शुभारंभ किया और सारे देश को बताया कि अग्रसेन जी हमारे कुल प्रवर्तक हैं।

अग्रवाल – किसी एक प्रदेश, भाषा या धर्म से बंधे हुए नहीं हैं, वे जहां पर भी जाकर बसे वहां की भाषा और संस्कृति को पूरी तरह आत्मसात कर लिया। जैन व वैष्णव धर्म को मानने वाले अनेक हैं तो बौद्ध घर्म के महान् विद्वान श्री सत्यनारायण गोयनका तथा प्रोफेसर लोकेश चंद्र जी हैं। कानपुर से दिल्ली तक और कुछ पंजाब में भी अग्रहरि गुरूद्वारे देखे जा सकते हैं। संपूर्ण मारवाड़ी समाज में उद्योग के क्षेत्र में ''**आगे**'' आने वालों में ''**अग्रवाल**'' प्रमुख रहे हैं। आजादी के पहले सन् 1700 से 1920 तक 520 मारवाड़ी फर्मों का अध्ययन करने से पता चलता है कि इनमें **333 फर्में तो अग्रवाल जाति की ही थीं,** जिनके मालिकों का मूल निवास स्थान ''शेखावाटी'' था। हैदराबाद के नवाब के खजाने को मारवाड़ी संभालते थे, बल्कि पित्ती व गनेड़ीवाल तो ''कर निर्धारण'' का कार्य भी करते थे, जिसमें राजा गोविंद दास पित्ती का महत्वपूर्ण योगदान रहा। अग्रवंशी मिर्जामल पौद्दार जी ने तो पंजाब के राजा रणजीतसिंह जी को कई बार ऋण दिया था। जबलपुर के राजा गोकुलदास पित्ती 800 गांवों की ''जमींदारी'' के मालिक थे।

अग्रवाल वैश्य समाज न केवल वाणिज्य, उद्योग तथा अन्य क्षेत्रों मे अग्रणी रहा है, बल्कि इस समाज के अनेक अग्रबंधु वीरता एवं सैन्य क्षेत्र में भी अग्रणी रहे हैं। वे सेना के तीनों क्षेत्र हों या पुलिस सेवा, सभी में अपनी बहादुरी व वीरता की मिसाल पेश की है। आध्यात्मिक क्षेत्र में अग्रवाल समाज के उच्च कोटि के विद्वान एवं मनीषी संत एवं धर्माचार्य हुए हैं। पूरे देश में प्रसिद्ध मंदिरों के निर्माता, सहयोग कर्त्ता या मुख्य भूमिका में अग्रवाल समाज के लोग हैं। मंदिरों के निर्माण के प्रति उत्साह को इसी से जाना जा सकता है कि ''रामगोपाल दुजोदवालों'' ने अकेले शेखावाटी क्षेत्र में 400 से अधिक मंदिरों का निर्माण या जीर्णोद्वार करवाया। अग्रवालों की दानशीलता की भी अनेक कहानियां प्रसिद्ध हैं।

अनुक्रमणिका

क्र. स.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	**अध्याय एक - अग्रकुल संस्थापक - महाराजा अग्रसेन** जन्म, परिवार व शिक्षा, महारानी माधवी, अठारह यज्ञ व क्षत्रिय से वैश्य होना गौत्र स्थापना, भगवान शिव व महालक्ष्मी की आराधना, देवराज इंद्र से टकराव आग्रेय गणराज्य, अग्रोहा-राजधानी, एक ईंट और एक रूपया, उपसंहार अग्रसेन जयंती का शुभारंभ, महाराजा अग्रसेन जी के महान् गुण महाराजा अग्रसेन और भारत सरकारकुछ प्रमुख उपलब्धियां अग्रसेन की बावड़ी, महाराजा अग्रसेन आश्रम हरिद्वार, अग्रसेन घाट हरिद्वार, महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज व अस्पताल आदि	1-19
2.	**अध्याय दो - अग्रोहा** इतिहास के आइने में, विदेशी यात्रियों का वर्णन, अग्रोहा गणराज्य का पतन, शहाबुद्दीन गौरी का आक्रमण, प्राचीन खंडहरों का विनाश, अग्रोहा का पुन:उद्धार, वर्तमान अग्रोहा नव-निर्माण की कहानी, आधुनिक अग्रोहा, पानी की व्यवस्था,अग्रोहा में दर्शनीय स्थल, कहानी अग्रोहा के विकास की,अग्रोहा नव-निर्माण के आधार स्तंभ	20-39
3.	**अध्याय तीन - अग्रवाल समाज का साहित्य** समृद्धशाली ऐतिहासिक साहित्य, पुस्तक अग्रवंश का वर्णन, अग्रवाल इतिहास रोचक जानकारी, पुस्तक अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास	40-45
4.	**अध्याय चार - अग्रसेन - अग्रोहा पर किवदंतियां** गोकुलचंद-रतनसेन की कथा, अग्रोहा के जलने की कथा हरभजनशाह की कथा, लक्खी तालाब और हरभजनशाह सती शीला, लोहागढ़ जहां अग्रसेन ने पिंडदान किया जसराज तथा नागकन्यांओं की कथा परशुराम और अग्रसेन, सिकंदर का अग्रोहा पर आक्रमण अश्वमांस के बोलने की घटना, इंद्र के साथ युद्ध	46-56
5.	**अध्याय - पांच** महालक्ष्मी व्रत कथा (अगवंशवैश्यानुकीर्तम्), अग्रपुराण, श्री अग्रभागवत	57-64
6.	**अध्याय छः - जानकारी** भाट, नागवंश, जातियों के विविध प्रकार, गणराज्य व जनपद महाभारत का युद्ध किस तारीख को हुआ, चारों युगों की रोचक जानकारी	65-76

7. **अध्याय सात - भ्रांतियां तथा भ्रांति संबंधी जानकारी** 77-94

वैश्यों में ''गुप्ता'' जाति के रूप में लिखा जाना गोत्र, बीसा-दस्सा-पंजा-ढईया, साढ़े 17 गोत्र या आधे गोत्र की मान्यता का आधार महाभारत व पुराणों में म.अग्रसेन का उल्लेख न होना टोडरमल, महात्मा गांधी मोढ़ से गांधी तक भामाशाह, हेमचंद्र विक्रमादित्य, ये अग्रवाल नहीं हैं

8. **अध्याय आठ - अग्रवाल** 95-202

संगठन - कुछ महत्वपूर्ण व कुछ पुरानी संस्थाओं का परिचय

अग्रवालों में शाखाएं जैन, राजवंशी, सिख, सरालिया, अग्रहरि आदि

अग्रवाल इतिहास के गौरवपूर्ण निर्माता

आविष्कारक एवं वैज्ञानिक, देश में ''**सर्वप्रथम**'' उपलब्धि प्राप्त अग्रबंधु व्यापार जगत में ''सर्वप्रथम'' विशेष उपलब्धि प्राप्त करने वाले

सेना में ''सर्वप्रथम'' उपलब्धि प्राप्त, संस्थापक एवं निर्माण कर्त्ताअन्य क्षेत्रों में प्रसिद्धि विशिष्ट उपलब्धियां प्राप्तराष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त अग्रबंधु

हिंदी साहित्य में विशेष उपलब्धि प्राप्त, हिंदी अकादमी पुरस्कार प्राप्त, सम्मानित उपाधियों से **सम्मानित अग्रविभूतियां** एवं विभिन्न उपाधियां

उद्योग जगत में किंग के नाम से ख्याति प्राप्त

खेल जगत - अर्जुन पुरस्कार, द्रोणाचार्य पुरस्कार व

राजीव गांधी खेल रत्न अवार्ड, से सम्मानित

अग्रबंधु - मुख्यमंत्री, राज्यपाल, संविधान सभा के सदस्य

व्यापार व उद्योग जगत, भारत में बैंकिंग स्थापना में अग्रबंधुओं का योगदान नगरों की स्थापना, स्वतंत्रता सेनानी कुछ प्रमुख अग्रविभूतियां अग्रबंधुओं द्वारा स्थापित कला संग्रहालय, पुस्तकालय अग्रबंधुओं द्वारा स्थापित या उनके नाम से पुरस्कारों का विवरण

''**शौर्यगाथा**'' - महावीर चक्र, वीर चक्र, शौर्य चक्र, कीर्ति चक्र, परम विशिष्ट सेवा मेडल, एक से अधिक पुरस्कार प्राप्त करने वाले, एक ही परिवार के दो सदस्य पुरस्कार विजेता आध्यात्मिक व धार्मिक जगत की संत विभूतियां, आर्य समाज की विभूतियां

विश्व कीर्तिमान में अग्रवाल गिन्निज, लिम्का, गोल्डन, इंडियन बुक व अन्य, अग्रवालों द्वारा किये गये लोकोपकारी कार्य

9. अध्याय नौ 203-259

इतिहास के झरोखे से, अग्रोहा में अग्रवालों का प्रथम कुंभ राजधानी दिल्ली में अपनी तरह का पहला अभूतपूर्व सम्मेलन मासिक पत्रिका - श्री रामेश्वर दास गुप्त का लेख ''महाराजा अग्रसेन, अग्रोहा और अग्रवाल'' के कुछ अंश, संस्मरण

संक्षिप्त में कुछ अग्रविभूतियों का परिचय

दीवान नानूमल जी अग्रवाल, कानूनगो परिवार, रायबहादुर ज्योति प्रसाद, राजा पटनीमल, शाह गोविंद चंद, राजा दुर्गा प्रसाद, राजा रामदेव पौद्दार, सर शादीलाल अग्रवाल, सर गंगाराम ज्योतिप्रसाद अग्रवाल, शंकर लाल गोयनका, सर मोती सागर जैन, आचार्य रघुवीर (मंगल), सेठ मिर्जामल पौद्दार, सेठ आनंदीलाल ज्ञानी राम पौद्दार, भागीरथ कानोडिया, सेठ किरोड़ीमल लोहारीवाला, सेठ सुखानंद सरावगी, ईश्वर दास जालान, रामेश्वर टाटिया, सेठ रामेश्वरदास नथानी, रसायनाचार्य पं. श्यामसुंदराचार्य वैश्य, बलदेव जी वैद्य जगमोहन डालमिया, कुछ मुख्य बातें अग्रबंधुओं की

विज्ञान एवं चिकित्सा

पद्श्री डा. गोविंद स्वरूप, पद्श्री डा. रामनारायण अग्रवाल, पद्श्री डा. हर्ष कुमार गुप्ता, पद्श्री डा. आत्माराम सिंघल, दिनेश अग्रवाल, डा. दीवान चंद अग्रवाल, डा. ललित प्रकाश अग्रवाल केसरी - ए - हिंद, पद्मश्री डा. मोहन लाल

साहित्य सेवक

भारतेंदु हरिशचंद्र, डा. वासुदेव शरण अग्रवाल, जगन्नाथदास रत्नाकर, बाबू गुलाबराय, पद्मभूषण विष्णु प्रभाकर, प्रो. डा. लोकेशचंद्र, शिवचंद्र भरतिया, कन्हैयालाल पौद्दार, डा. परमेश्वरी लाल गुप्त, स्व. बाबू ठाकुर प्रसाद जी गुप्त, बुकसेलर, चंद्र कुमार अग्रवाल, जयप्रकाश भारती, कैलाशचंद्र अग्रवाल, पवन चौधरी- मनमौजी, डा. मोहन लाल गुप्ता, आजादी के पूर्व अग्रवाल समाज की पत्र/पत्रिकाएं

अध्याय दस 260-278

पद्म पुरस्कार प्राप्त अग्रवल विभूतियां, डाक टिकट, अग्रवाल समाज और स्वाधीनता संग्राम

आभार व गौरव के क्षण (पुस्तक विमोचन)

अध्याय एक

अग्रकुल संस्थापक - महाराजा अग्रसेन

अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ़ जायें,
एक रूपया एक ईंट दे, अग्रसेन पथ अपनायें।
साम्य और समता का दर्शन, जन-मन तक पहुँचा पायें,
मिट जाएगी सभी विषमता, अग्रवंश को चमकायें।।

यह प्रसन्नता की बात है कि आज पूरे देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी महाराजा अग्रसेन का नाम घर-घर में गुंजायमान है। यह भी गर्व की बात है कि आज अग्रवाल समाज में **चेतना** आई है लेकिन खेद भी है कि **एकता** नहीं आई। पूरे देश में अनेक संगठन हैं। सभी संगठन अपनी-अपनी तरह से कार्य कर रहे हैं। हम गर्व से कह सकते हैं कि आज देश के सभी शहरों, कस्बों आदि में महाराजा अग्रसेन की मूर्तियां, चौराहे, पार्क, सड़कें, अस्पताल, कॉलेज, विश्वविद्यालय आदि हैं। जगह-जगह अग्रभागवत हो रही है तो अग्रसेन जी की लीलाओं व नाटकों का भव्य मंचन भी किया जा रहा है, समय-समय पर अग्रसेन जी पर फिल्मों का भी निर्माण हुआ है, और भी अनेक उपलब्धियां हैं तथा यह क्रम अनवरत जारी है। यही कारण है कि अग्रसेन जी की महिमा को देखते हुए, आज अग्रवाल समाज इनको भगवान मानता है। **स्वराजमणि जी** ने अपनी पुस्तक के पेज नं. 34 पर लिखा है कि - अग्रसेन ने कभी भी अवतार के रूप में जन्म नहीं लिया। उन्होंने कोई नया धर्म चलाकर अपने को आचार्य या गुरू के स्थान पर नहीं रखा बल्कि लोकतांत्रिक शासन की एक नई सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था के कारण वे प्रसिद्ध हुए। **उल्लेखनीय** है कि अग्रसेन जी की संतानों ने अपनी प्रतिभा के बल पर हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का डंका बजाया है।

अग्रवाल जाति का इतिहास और महाराजा अग्रसेन का इतिहास तथा उनके जीवन चरित्र को जानने के लिए अब तक उपलब्ध प्राचीन प्रमुख ग्रंथों के नाम ''अग्रवैश्यवंशानुकीर्तम'', उरू चरितम् एवं महालक्ष्मी व्रत कथा है, इसके अलावा व्याख्यानों, भाटों के गीत तथा वंशावलियां, जन श्रुतियों, किंवदंतियों, अग्रोहा के थेहों से प्राप्त पुरातात्विक सामग्री, प्राचीन शिलालेख, जैन एवं बौद्ध ग्रंथों की प्रशस्तियां, विभिन्न इतिहासकारों एवं यात्रियों के उल्लेखनीय विवरण आदि के रूप में हैं और उनकी प्रमाणिकता भी निर्विवाद नहीं है जिनका उल्लेख अनेक विद्वानों ने अपनी पुस्तकों व शोध ग्रंथों में किया है। पौराणिक तथा ऐतिहासिक ग्रंथों में महाराजा अग्रसेन के बारे में स्पष्ट तथ्यों का अभाव है किंतु कुछ वर्ष पहले ही महर्षि जैमिनी कृत **अग्रउपाख्यानम्** ग्रंथ (अग्र भागवत) के मिलने से महाराजा अग्रसेन के जीवन चरित्र में एक और कड़ी जुड़ी है जिसे

जयभारत का एक अंश बताया जाता है तथा यह मूलरूप से ताड़पत्र पर है, जिसमें महाराजा अग्रसेन के बारे में जानकारी है।

यह भी सही है कि महाराजा अग्रसेन के इतिहास लेखन में अनेक भ्रांतियां हैं और रहेंगी भी, इतिहास नित्य बदलता रहता है, शोध होते हैं और खंडन-मंडन भी। लेकिन महाराजा अग्रसेन ने जिन सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया वह बड़े से बड़े मानवतावादी तथा समाज शास्त्रियों के लिये खोज का विषय है। सत्यकेतु जी के अनुसार इन भेदों के होते हुए भी, अग्रसेन जी की कथा सर्वत्र एक सी पाई जाती है। परम्परागत जनश्रुतियों, प्राचीन लेखों तथा भविष्य पुराण के उत्तर भाग के महालक्ष्मी व्रत कथा का सहारा लेकर भारतेंदु बाबू हरिशचंद्र ने अग्रवालों के संबंध में '**अग्रवालों की उत्पत्ति**' नामक पहली पुस्तक संवत् 1928 अर्थात् 148 वर्ष पहले, सन् 1871 में लिखी थी, जिसका प्रकाशन काशी निवासी बाबू राधाकृष्णदास जी की सहमति से लक्ष्मीवेंक्टेश्वर प्रेस द्वारा समय-समय पर किया गया। भारतेंदु बाबू द्वारा लिखी गई इस पहली पुस्तक ने तहलका मचा दिया, इससे पहले अग्रवाल समाज का लिखित में कोई इतिहास नहीं था।

महाराजा अग्रसेन - ''अग्रउपाख्यानम्'' के अनुसार अग्रकुल संस्थापक व समाजवाद के प्रवर्तक महाराजा अग्रसेन सूर्यवंशी थे। वे एक महान् शासक थे जो आज भी अपने आदर्शों के कारण विश्व में जाने जाते हैं। संसार में पहली बार अहिंसा का संदेश देने वाले, प्रताप नगर के महाराजा वल्लभसेन के पुत्र, जिन्होंने अपने राज्य को 18 कुलों में बांटा तथा उनके निर्वाचित प्रतिनिधियों की सहायता से शासन का संचालन किया। महाराजा अग्रसेन ने स्वय छत्र और चंवर धारण किया तथा अपनी प्रजा को भी यह अधिकार दिया कि विवाह के समय दूल्हा छत्र और चंवर धारण कर अग्रवंशीय परंपरा का पालन कर गौरव का अनुभव करे। राजा और प्रजा में समानता लाने का यह अद्‌भुत दृष्टिकोण था।

डा. स्वराजमणि अग्रवाल - महाराजा अग्रसेन ने अग्रवाल वैश्य वर्ण से एक अलग वैश्य उपजाति का निर्माण किया। उन्हें 18 यज्ञों के माध्यम से अपना वंश और गौरव प्रदान किया। नवीन गणराज्य की स्थापना के लिये उन्हें शक्ति और धन दोनों की आवश्यकता थी। अत: उन्होंने शिव एवं लक्ष्मी की कठोर आराधना करके दैवी शक्ति प्राप्त की। अग्रसेन जी ने अपने जीवन काल में महालक्ष्मी जी की तीन बार तपस्या की और अपने कुल की सुख समृद्धि का वरदान प्राप्त किया। नागवंश से अपने वैवाहिक संबंध जोड़कर अपनी राज शक्ति को सुदृढ़ बनाया। देवताओं के राजा इंद्र को युद्ध में परास्त कर उनसे संधि कर ली। महाराजा अग्रसेन ने अग्रोहा नगर की स्थापना कर उसे अपनी राजधानी बनाया और एकतंत्रीय शासन व्यवस्था को समाप्त कर विश्व में सर्वप्रथम अपने ढंग की अनोखी लोकतांत्रिक प्रणाली का शुभारंभ किया। आज भी इतिहास में महाराजा अग्रसेन परम प्रतापी, धार्मिक, सहिष्णु, समाजवाद के प्रेरक के रूप में जाने जाते हैं। देश में अग्रवाल समाज द्वारा किये जा रहे सभी जनहित कार्य अग्रसेन जी के जीवन मूल्यों पर आधारित हैं।

जन्म - उपलब्ध साहित्य, जनश्रुतियों तथा श्री अग्रउपाख्यानम् ग्रंथ के अनुसार महाराजा

अग्रसेन का जन्म भगवान श्रीराम की 34वीं पीढ़ी में सूर्यवंशी क्षत्रिय कुल में महाराजा वल्लभ के घर, द्वापर के अंतिम काल और कलियुग के प्रारंभ में हुआ था।

भाटों के गीतों के अनुसार -

''त्रैता युग का था, प्रथम चरण सुनो उस काल। जन्में सूरज वंश में अग्रसेन भूपाल।।
वदि मिगसर शनि पंचमी, त्रेता पहले चर्ण, अग्रसेन उत्पन्न भए, कह भाषें शिवकर्ण।''

अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा ने भी इसी से मिलता-जुलता शिवकर्ण का एक दूसरा दोहा प्रकाशित किया है, जो इस प्रकार है-

''आश्विन शुक्ला प्रतिपक्ष, त्रैता प्रथम चरण। अग्रसेन उत्पन्न भये कह भाखें शिवकर्ण।।

इन दोहों में अग्रसेन जी को त्रेता युग का बताया गया है। सही तो यह है कि पुराण भिन्न-भिन्न कालों में भिन्न-भिन्न प्रांतों में लिखे गये हैं और युगों की गणना भी ज्योतिष की दिशा-दशा गणनानुसार है।

आचार्य रामरंग - किसी शिवकर्ण नामक भाट का यह दोहा है। न तो इस दोहे का कोई प्रमाणिक आधार है और न ही इन शिवकर्ण महोदय का अता पता है। इसकी **भाषा** भी **16-17** वीं शताब्दी की है।

डा. स्वराजमणि अग्रवाल ने लिखा है कि - **क्वांरसुदी (आसोज या आश्विन) प्रतिपदा के दिन बारह बजे महेंद्रकाल** में राजा वल्लभ के घर महाराजा अग्रसेन का जन्म हुआ। महेन्द्रकाल के विषय में कहा जाता है कि इस काल में जन्मा बालक बहुत भाग्यवान, शस्त्र-शास्त्र में निपुण, धन-धान्य, देविक शक्ति से आपूर रहता है।

वैद्य कृपाराम शाहादरा-निवासी ने अपनी पुस्तक में महाराजा अग्रसेन की ''जन्म कुंडली'' प्रकाशित की है जिसके अनुसार इनका जन्म कलि संवत् 01, मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमी, शनिवार, पुष्य नक्षत्र, इष्ट 23 घड़ी 38 पल, मेष लग्न के 25 अंश पर दक्षिण प्रदेश के प्रताप नगर में वैश कुलवंत महाराज वल्लभ के घर बताया गया है।

जैमिनी कृत श्री **अग्रउपाख्यानम् ग्रंथ (अग्रभागवत)** - के अनुसार महाभारत युद्ध में जब महाराजा अग्रसेन ने भाग लिया तब उनकी आयु 15 वर्ष थी। इस गणना के आधार पर महाराजा अग्रसेन का जन्म आज से 5173 वर्ष पहले हुआ। इस ग्रंथ में अग्रसेन जी का जन्म **''आश्विन शुक्ला पंचमी'' को इतवार के दिन बारह बजे के लगभग** बताया गया है।

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना ने राष्ट्रीय स्तर पर विद्वानों की सहमति प्राप्त करके महाभारत युद्ध और भगवान श्री कृष्ण की ऐतिहासिकता सुनिश्चित करते हुए महाभारत युद्ध की तिथि 3138-39 ईस्वी पूर्व निश्चित की है। इस गणना के आधार पर महाराजा अग्रसेन का जन्म आज से (3138 वर्ष + 15वर्ष + 2020 = **5173) वर्ष पहले हुआ।**

आचार्य रामरंग -- महाराजा अग्रसेन वैश्य अग्रवाल परंपरा के पितृ पुरूष हैं। कलियुग के प्रथम नरेश हैं। महाराजा परिक्षित का राज्याभिषेक उनके बाद हुआ। महाभारत के युद्ध के समय

उन्हें किशोर कहा गया है। संवत्सर (वर्ष) की गणना की हमारे यहां कई पद्धतियां प्रचलित हैं जिसके कारण कहीं माह का और कुछ वर्षों का अंतर पड़ सकता है। फिर भी कुछ वर्षों के फर्क से अग्रसेन जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर फर्क पड़ने वाला नहीं है। इस संबंध में आप पांडवों के 14 वर्ष के वनवास का उदाहरण देते हैं कि किस तरह से भीष्म पितामह ने वनवास की गणना की।

परिवार व शिक्षा - अग्रसेन जी के पिता का नाम वल्लभसेन तथा माता का नाम भगवती देवी था, दादा का नाम वृहतसेन था। उनके चाचा का नाम कुंदन सेन तथा सेनापति का नाम केशी था। अग्रसेन जी के भाई का नाम शूरसेन था। अग्रसेन जी की शिक्षा संदीपन ऋषि के आश्रम के पास तांडव ऋषि के आश्रम में संपन्न हुई। महाराजा अग्रसेन की पत्नी माधवी जी थीं, उनके 18 पुत्र और एक पुत्री हुई। कन्या का नाम ईश्वरी था जिसका विवाह काशी नरेश महाराजा महेश से हुआ। महाराजा अग्रसेन के 18 पुत्रों का विवाह उस समय के शक्तिशाली नागराज ''वासुकी'' की 18 पुत्रियों से हुआ। महाराजा अग्रसेन ने **गौड़ ब्राह्मणों** को अपना पुरोहित बनाया।

महारानी माधवी - अग्रभागवत, विभिन्न पुस्तकों व जनश्रुति के अनुसार महर्षि गर्ग ने नागलोक में जाकर महाराजा अग्रसेन को कोल्हापुर अहिनगर (अग्रभागवत में मणिपुर लिखा हुआ है) के नागराज महीधर की पुत्री माधवी से विवाह करने की आज्ञा दी। (भिन्न-भिन्न मतानुसार तथा अनेक पुस्तकों में विद्वानों ने माधवी जी को नागराज **कुमुद** की पुत्री तथा सुंदरावती को महीधर की पुत्री बताया है जिनसे अग्रसेन जी ने विवाह किया, तथा नागराज दशानन की पुत्रियों से अपने पुत्रों के विवाह करवा कर संपूर्ण नागवंश को अपना हितैषी बना लिया ऐसा बताया गया है) -- महाराजा अग्रसेन प्रसंग में नागों के अहोधर (महीधर) और वासुकी दो नामों का उल्लेख आया है। महाभारत में भी इसका पर्याप्त उल्लेख मिलता है। दोनों ही श्रेष्ठ कुल के थे तथा इनकी मित्रता और विवाह संबंध देव और श्रेष्ठ मानवों से होते थे।

(नागवंश के बारे में आगे के अध्याय में बताया गया है)

''**अग्रवैश्यवंशानुकीर्तम्**'' तथा कुछ साहित्यकारों की पुस्तकों के अनुसार महाराजा अग्रसेन के 18 रानियां थीं, 54 पुत्र और 18 पुत्रियां थीं। उनके नाम भी दिये गये हैं। (किंतु ''अग्रसेन उपाख्यान'' में केवल एक ही रानी ''माधवी'' का ही वर्णन है और उनके 18 पुत्र व एक पुत्री हुई थी।)

(अग्रवैश्यवंशानुकीर्तम् में 18 रानियों के नाम इस प्रकार हैं - माधवी, सुंदरावती, मित्रा, चित्रा, शुभा, शीला, शिखा, शांता, रजा, चरा, शची, सखी, रंभा, भवानी, सरसा, रती, रूची और समा थे।) - अग्रसेन जी के 18 पुत्रों का विवाह भी नागवंश में ही हआ। इन सभी पुत्रों के वंश ने 16 पीढ़ियों तक अग्रोहा पर राज्य किया। उसके बाद भी 12वीं सदी तक अग्रवाल लोग अपनी भूमि पर बने रहे।

पुस्तक - THE Origin of agarwalas के अनुसार - यह वंशावली जनश्रुति और

प्राचीन लेखों से ली गई है परंतु इसका विशेष भाग भविष्य पुराण के उत्तर भाग में श्री महालक्ष्मी व्रत कथा से लिया गया है। इस बात का निर्णय महाराजा जयसिंह के समय में हुआ था कि वैश्यों में मुख्य अग्रवाल ही हैं। इन अग्रवालों का मुख्य देश पश्चिमोत्तर प्रांत है और इनकी बोली खड़ी बोली है।

अग्रसेन पुराण तथा आरंभ में लिखी गई कुछ पुस्तकों (डा. रामचंद्र, सुरेन्द्र कुमार गर्ग आदि) में महाराजा अग्रसेन की दो रानियों का तथा दोनों से 9-9 पुत्रों का उल्लेख है। बड़ी रानी सुंदरावती के नौ पुत्र -विशप देव अथवा गुलाब देव, - गेंदूमल, करन चंद, मणिपाल अथवा कानकुंद, बलन्दा अथवा बंधुमान, ढाउदेव, सिंधुपति, जीतजनक, मंत्रपति। छोटी रानी - धनपाला -के नौ पुत्र - राजकुमार तम्बोल, ताराचंद, वीरभान, वासुदेव, नृसिंह अथवा नारसेव, अमृत्तसेन, इंद्रमल अथवा इंद्रसेन, माधोसेन, गोधर।

अठारह यज्ञ व क्षत्रिय से वैश्य होना - प्राचीन समय में यज्ञ करना समृद्धि, वैभव और खुशहाली की निशानी के साथ-साथ प्रतिष्ठा का मापदंड भी माना जाता था। स्वंय महाराजा अग्रसेन ने अनेक यज्ञ किए। महर्षि गर्ग ने महाराजा अग्रसेन को 18 गणाधिपतियों (अर्थात् जनपदों के मुखिया) के साथ 18 यज्ञ करने का संकल्प करवाया। यज्ञ में बैठे इन 18 गणाधिपतियों के नाम पर ही अग्रवंश (अग्रवाल समाज) की स्थापना हुई। महर्षि गर्ग यज्ञ के आचार्य बने और अग्रसेन जी ने यज्ञ के यजमान का स्थान ग्रहण किया। 17 यज्ञ पूर्ण होने के बाद अग्रसेन जी को यज्ञ में दी जाने वाली ''पशुबलि'' से घृणा हो गई, पशुबलि व हिंसा से उनके हृदय में करूणा उत्पन्न हुई। उन्होंने पशुबलि देने से इन्कार कर दिया। ऋषियों ने काफी समझाया कि यज्ञ में पशुबलि दिये बिना यज्ञ अधूरा रहेगा तथा क्षत्रियों को पशुबलि देने से कोई दोष नहीं लगता लेकिन अग्रसेन जी ने पशुबलि देने से साफ मना कर दिया, तब यज्ञ में उपस्थित ऋषियों ने कहा कि आपको क्षत्रिय वर्ण से ''**वैश्य**'' वर्ण स्वीकार करना पड़ेगा। महाराजा ने घोषणा की कि, आज से मैं क्षत्रिय वर्ण का त्याग कर वैश्य वर्ण को ग्रहण कर रहा हूं। इस प्रकार एक ''**वैश्य**'' के रूप में, पशु बलि रहित उन्होंने अपना 18वां यज्ञ पूर्ण किया। उल्लेखनीय है कि - पुराणों में अनेक ऐसे राजाओं के नाम मिलते हैं, जो क्षत्रिय से वैश्य हो गए।

गोत्र स्थापना - अग्रवालों में गोत्र जीवित जागृत हैं। वे केवल लोगों को स्मरण ही नहीं हैं बल्कि व्यवहारिक जीवन में भी उनका प्रतिदिन प्रयोग होता है। विशेषतया - सगाई, विवाह, कर्मकांड, यज्ञ आदि में तो इनके बिना कार्य ही नहीं चल सकता। इसमें संदेह नहीं कि एक ही गौत्र को विभिन्न स्थानों पर कुछ उच्चारण भेद से बोला जाता है जैसे- **गर्ग** - गार्गीय, गार्गी आदि **बंसल** - बांसल, बांसिल, वात्सिल। **मित्तल** - मीतल, **सिंघल**-सैंगल, सिंगला (पंजाब व हरियाणा के कुछ इलाकों में), संगल (उत्तर प्रदेश)। **मधुकुल** - मुद्गल। **गोयल** - गोभिल, गोविल, गोविला। **मंगल** - मंगला (हरियाणा तथा पंजाब के कुछ इलाकों में)। **बिंदल** - बिंदलिस (हरियाणा तथा पंजाब के कुछ इलाकों में)। **कंसल** - कांसल, कांसिल आदि। स्थान भेद से उच्चारण भेद हो जाना स्वाभिक है। - **गंगल** - यह शब्द गोयन गोत्र का ही दूसरा रूप

है। **गंगल** गोत्री अग्रवाल भी काफी संख्या में हैं। अग्रवालों में मुद्गल गोत्रीय बंधु भी हैं, अ.भा. अ.स.ने मधुकुल को इसी का संशोधित रूप दिया है। वाराणसी का सुप्रसिद्ध शाह खानदान **मुद्गल** गोत्रीय है। इस गोत्र के भारत रत्न डा. भगवानदास, शाह गोपालदास, शाह मनोहरदास, डा. श्रीप्रकाश आदि प्रसिद्ध हैं। शाह मनोहर दास जी के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने टीपू सुल्तान से एक मूल्यवान तलवार और पेशकब्ज हस्तगत किया, आपने कोलकाता में मनोहर दास कटला तथा विशाल उद्यान की स्थापना की। बाबू दामोदर दास उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य भी रहे।

अ.भा.अ.सम्मेलन ने गंगल गोत्र को भी मान्यता प्रदान की है। अनेक विद्वानों ने अग्रवालों के गोत्रों को सूची बद्ध करने का प्रयत्न किया है। इनमें कुछ भिन्नता भी पाई जाती है। अ.भा.अ. सम्मेलन द्वारा मान्यता प्राप्त गोत्रों की सूची इस प्रकार है –

गोत्र – गर्ग, गोयल, गोयन, बंसल, कंसल, सिंघल, मंगल, जिंदल, तिंगल, ऐरन, धारण, मधुकुल, बिंदल, मित्तल, तायल, भंदल, नागल, कुच्छल। परंपरा से चले आ रहे विवाहित नियमों को तथा रक्त शुद्धता को ध्यान में रखकर महाराजा अग्रसेन ने अनुशासन में बांधकर यह नियम भी बना दिया कि भविष्य में इन्हीं 18 गौत्रों के मध्य स्वंय के गौत्र को छोड़कर परस्पर वैवाहिक संबंध होंगे। उल्लेखनीय है कि – अग्रसेन जी ने गोत्र द्वारा विवाह की नई परंपरा स्थापित कर समाज में वंशोत्पति का ऐसा सशक्त सूत्र दिया जिससे अग्रवाल जाति आज भी बुद्धि, बल, कौशल तथा धार्मिकता का प्रतीक बनी हुई है।

- उस समय रक्तशुद्धता की चिंता रहने के कारण साधारण लोग भी अपना गौत्र छोडकर वैवाहिक संबंध किया करते थे।
- 18 गोत्रों के संबंध में ये भी प्रचलित है कि ये महाराजा अग्रसेन के 18 पुत्रों के नाम पर आधारित हैं जो सर्वथा गलत है, जबकि रक्त शुद्धता के कारण एक ही गौत्र में विवाह करना महाराजा अग्रसेन ने सर्वथा वर्जित किया था। यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध भी है। – महाराजा अग्रसेन ने अपने राज्य के 18 कुलों के आधार पर ही गोत्रों का प्रवर्तन किया था न कि पुत्रों के आधार पर। आग्रेयगण के 18 प्रधान कुलों को आलंकारिक रूप से राजा अग्रसेन के मानस पुत्र माना गया हो,ऐसा संभव है।

सन् 1957 में लिखी गई पुस्तक, अग्रसेन और अग्रवाल, लेखक वैद्य कृपाराम अग्रवाल, मूल्य एक रूपया – 18 गणों को मिलाकर महाराजा अग्रसेन ने अपना साम्राज्य स्थापित किया, नाम रखा 'अग्रवंश' जो कि अग्र के **तालाब** बनवाने के कारण अग्रोदक (अग्रोतक) भी कहा जाता था। उसी के अनुसार उस वंश के शिलालेखों में किसी–किसी ने अपने को अग्रोत्कान्वय भी लिखा है और '**यवनों**' के समय में ''**वाल**'' प्रत्यय के चालू होने पर ''अगरवाल'' प्रसिद्ध हुआ। संकल्प विवाह आदि पर पढ़े जाने वाले शाखा प्रवर आदि को मिथ्या नहीं ठहराया जा सकता, चाहे वे भाटों व पुरोहितों द्वारा कथित हों या पश्चिमी विद्वानों द्वारा समर्थन न किये गए हों। 18 गण भिन्न–भिन्न थे, सगोत्र विवाह शास्त्र वर्जित हैं, इन 18 गोत्रों में स्वगोत्र छोड़कर

आपस में विवाह संबंध होते हैं, इसलिए राजा अग्र के 18 पुत्रों की संतान 18 पुत्र मानने वालों की कल्पना, मात्र कल्पना ही है।

डा. चंपालाल गुप्त की पुस्तक ''अग्रवाल समाज का गौरवपूर्ण इतिहास'' में लिखा है कि - **वास्तव में महाराजा अग्रसेन अग्रवाल जाति के संगठक थे, न कि जनक।** अत: अग्रवालों को एक ही पिता की संतान मानने अथवा भाई-बहिन के मध्य परस्पर विवाह की धारणा सही नहीं है।

भगवान शिव व महालक्ष्मी जी की आराधना - जनश्रुतियों व इतिहास से प्राप्त जानकारी के अनुसार, महाराजा अग्रसेन ने अपनी प्रजा की खुशहाली के लिये शिवजी की घोर तपस्या की, जिससे भगवान शिव ने प्रसन्न होकर उन्हें महालक्ष्मी जी की तपस्या करने की सलाह दी। माता लक्ष्मी उनकी घोर तपस्या से प्रसन्न हुई और अग्रसेन जी को दर्शन दिये तथा राज्य की खुशहाली का वरदान देते हुए कहा कि तुम्हारे वंशज सदा मेरी पूजा करेंगे, उनको कभी भी कमी का सामना नहीं करना पड़ेगा। महाराजा अग्रसेन ने अपने जीवन काल में प्रजा की खुशहाली के लिये तीन बार महालक्ष्मी जी की तपस्या की और अपने कुल की सुख समृद्धि का वरदान प्राप्त किया।

देवराज इंद्र से टकराव - शक्तिशाली नागवंश में माधवी जी से विवाह होने पर इंद्र क्रोधित हुआ तथा उनके राज्य में वर्षा को रोक दिया गया। लोग अकाल से परेशान होने लगे। अग्रसेन जी ने इंद्र से युद्ध छेड़ दिया, जिसमें अग्रसेन जी का पलड़ा भारी था, तब नारद मुनि ने मध्यस्थता कर दोनों के बीच संधि करवा दी। (कुछ पुस्तकों में लिखा है कि इंद्र ने अग्रसेन जी को ''मधुशालिनी'' अप्सरा दी, लेकिन अधिकांश इतिहासकारों एवं साहित्यकारों ने इसे भाटों व कुछ कथाकारों की कल्पना ही बताया है।)

आग्रेय गणराज्य - महाराजा अग्रसेन के राज्य में 18 कुल (गण) थे, कुलदेवी महालक्ष्मी की कृपा से अग्रसेन जी ने अपने 18 गणों को संगठित कर एक विशाल राज्य का निर्माण किया जो आग्रेय गणराज्य कहलाया। **डा. श्याम लाल दुबे** के अनुसार - महाराजा अग्रसेन ने अपनी योजना को कार्य रूप देने के लिये गणराज्य के 18 श्रेणियों के सर्वाधिक बलवान, बुद्धिमान कुटुम्बों के प्रतिनिधियों में प्रत्येक को एक पृथक गोत्र का नाम दिया। (प्राचीन जनपद प्रणाली में अधिकतम 18 श्रेणियों का संगठन होता था जहां प्रत्येक श्रेणी का एक मुखिया होता था। उस गणराज्य के निवासियों को राजा संतान मानता था।) महाराजा अग्रसेन ने अग्रोहा को 18 श्रेणियों का एक सशक्त जनपद बनाया। प्रत्येक श्रेणी को एक गोत्र का नाम देकर यह व्यवस्था दी कि सभी जनपद निवासी अपना गोत्र छोड़कर बाकी के गोत्रों में शादी करें।

आग्रेयगण का सबसे पहले स्पष्ट उल्लेख पाणिनी कृत अष्टाधायी में आता है। इसमें स्पष्ट लिखा है कि - आग्रेयगण के निवासी, आग्रेय, अग्रायण, अग्र आदि नामों से पुकारे जाते थे। पाणिनी का काल डा. वासुदेव शरण अग्रवाल ने ई. पूर्व 480 से 410 के बीच स्वीकार किया है। (मुनि नागराज ने भी इस काल का समर्थन किया है।) डा. वासुदेव ने लिखा है कि पाणिनी

तक्षशिला का निवासी था। आग्रेयगण से अत्यंत पास होने के कारण उसका इस गणराज्य से पर्याप्त संबंध था। पाणिनी के मतानुसार महाभारत युद्ध के बाद राज्य अनेक छोटे-छोटे संघ, गण, श्रेणी, निगम, जनपद आदि व्यवस्थाओं में बंट कर स्वत: संचालित होने लगे। इन गणराज्यों के नाम किसी कला पुरूष, समुद्र, प्राकृतिक या भौगोलिक स्थिति के नाम पर रखे जाते थे। स्वराजमणि जी - इसी आधर पर महाराजा अग्रसेन की प्रमाणिकता सिद्ध करते हुए हम कह सकते हैं कि अग्रसेन के नाम पर ''आग्रेयगण'' का नाम पड़ा।

राज्य का विस्तार - इतिहासकारों के अनुसार अग्रसेन जी का अग्रोहा गणराज्य परिसंघ एक बड़े भू-भाग में फैला था जिसमें वर्तमान हिसाार, हांसी, तोशम, सिरसा, नारनौल, रोहतक, पानीपत, दिल्ली, जींद, कैथल, मेरठ, सहारनपुर, जगाधरी, विधिनगर, नाभा, अमृतसर, अलवर और उदेपुर (शेखावटी) आदि के क्षेत्र सम्मिलित थे। **डा. स्वराजमणि** के अनुसार - उज्जैन के पास तांडव ऋषि के आश्रम में जहां उन्होंने शिक्षा पाई, **आगर** नाम का एक गांव बसाया जो आज भी विद्यमान है। इसी तरह बिहार में अग्रपुर, गुजरात में भी अग्र नाम का नगर बसाया। आगरा उनकी स्मृति में उनके वंशजों ने बसाया। अग्रसेन जी की 13 पीढ़ियां अग्रोहा की धरती पर रहीं।

अग्रोहा (राजधानी) - महाराजा अग्रसेन ने अग्रोहा नगर स्थापित कर उसे अपने गणराज्य की राजधानी बनाया। यहां वे गण प्रतिनिधियों की सहायता से शासन का संचालन करते थे। जहां कोई भी परिवार दुखी या लाचार नहीं था। मान्यता है कि अग्रसेन जी ने एक तंत्रीय शासन व्यवस्था को समाप्त कर विश्व में सर्वप्रथम अपने ढंग की अनोखी लोकतांत्रिक प्रणाली का शुभारंभ किया।

- (भारत में छोटे-छोटे राज्यों के लिये ''गण'' या ''संघ'' शब्द प्रयुक्त होता था, उस समय गण या संघ का विस्तार आजकल के जिले के बराबर होता था, इस प्रकार अग्रोहा भी गण पर आधारित एक महत्वपूर्ण गण राज्य था। उस समय राज्य के अंदर शासन प्रणाली में जनपदों का शासन चलता था। अग्रसेन जी का राज्य 18 जनपदों में बंटा हुआ था। जहां प्रत्येक जनपद का निर्वाचित प्रतिनिधि होता था। 18 जनपद प्रमुख या गणाधिपति बाद में 18 मानस पुत्र कहलाये। इन्हीं को लेकर 18 यज्ञों को संपन्न कराया गया। जिसमें बाद में ऋषियों द्वारा मिला प्रत्येक गोत्र एक-एक गणाधिपति को मिला। गोत्र व्यवस्था सुचारू रूप से चल सके, इसके लिये समान गोत्र में विवाह निषेध किया गया।)

एक ईंट और एक मुद्रा

महालक्ष्मीव्रत कथा के अनुसार महाराजा अग्रसेन ने आग्रेयगण राज्य की नवनिर्मित राजधानी अग्रोहा में हर नये आने वाले परिवार की सहायता स्वरूप ''एक ईंट और एक मुद्रा '' की क्रांतिकारी सामाजिक परंपरा का श्रीगणेश कर उसे अपने और जनता के जीवन में भी उतारा। यह समाज समृद्धि की ऐतिहासिक धारणा है। यह एक शाक्तिशाली राष्ट्र की मजबूत ईंट है, यह भावना असहाय का हाथ थाम कर उसे विकास के पथ चलने की प्रेरणा देती है। आज के परिवेश में इसको ''एक रूपया-एक ईंट'' कहा जाने लगा है।

इस आदर्श व्यवस्था के कारण कहा जाता है कि उनकी राजधानी अग्रोहा में बसने वाले परिवारों की संख्या एक लाख से अधिक हो गई। इस प्रकार स्थापित प्रत्येक परिवार, नवागन्तुक परिवार को एक मुद्रा-एक ईंट देता था, इस परंपरा से नव आगंतुक परिवार को अपना कारोबार करने के लिये ठोस पूंजी मिल जाती थी और अग्रोहा में बसने के लिये किसी प्रकार कठिनाई नहीं होती थी। इस प्रकार की सहायता सुव्यवस्थित परंपरा बन गई। समाजवाद और मानवता का इससे बड़ा सिद्धांत व्यवहार में कुछ हो ही नहीं सकता था, इसलिये महाराजा अग्रसेन को **''समाजवाद का अग्रदूत'' कहा गया है।**

- **इस परंपरा में** कुछ अश्योक्ति भी हो सकती है, पर यह कथा स्पष्ट करती है कि अग्रोहा में आने वाले प्रत्येक परिवार को थोड़ी-थोड़ी सहायता देकर उसे आत्मनिर्भर बना देते थे। जिससे कि वह अपना स्वतंत्र एवं ससम्मान जीवन आरंभ कर सके। चूंकि सहायता एक परंपरा थी, इसलिये उसे स्वीकार करने में किसी के आत्मसम्मान को ठेस नहीं लगती थी, इसलिये कोई इसे अपने आत्म सम्मान पर आघात नहीं मानता था और न ही वह किसी परिवार के लिये बोझ बनता था।
- **आचार्य रामरंग** - एक मुद्रा और एक इष्टिका जाति विचार किए बिना प्रत्येक नवांतुक को देने का विचार जिस मस्तिष्क में आया, वेह कितना चिंतन व मननशील रहा होगा, यह विचार करते ही रोम-रोम की एक-एक तंत्री झंकृत हो उठती है। आज का समाजवाद तथाकथित समाजवाद एक थोथा नारा व पाखंड बनकर रह गया है।
- **श्री शिवकुमार गोयल के अनुसार** - इन चार शब्दों की इस परंपरा ने अग्रोहा में क्रांति ला दी। उंच-नीच की भावना नहीं रही, गरीबी नहीं रहीं, विषमता नहीं रही और इन सबसे उत्पन्न होने वाली ईष्या नहीं रही। समाज के लोग एक-दूसरे के दु:ख-दर्द से जुड़ गए तो आपसी टकराव भी खत्म हो गए। समाज में सुख-शांति हो जाने से अग्रोहा को तेजी से विकास करने का स्वर्ण अवसर मिल गया। अंतत: यह परंपरा सत्ता के विकेंद्री करण का

सबसे सशक्त माध्यम बन गई। अग्रोहा में आधा अधूरा नहीं, हर दृष्टि से पूरा लोकतंत्र स्थापित हो गया। किसी भी चुनौती का सामना करने में न महाराज अकेले थे और न प्रजा अकेली थी।

- श्री ओमपकाश अग्रवाल के अनुसार - **एक मुद्रा-एक ईंट** की 5000 साल पहले स्थापित की गई परंपरा को परखा जाये तो सहज ही स्पष्ट हो जाएगा कि इस परंपरा से अनेक गंभीर समस्याओं के बहुत ही व्यवहारिक समाधान प्राप्त किए जा सकते हैं। महाराजा अग्रसेन ने ऐसी आदर्श पद्धति का प्रचलन कर समाज वाद का सही रूप और गरीबी हटाओ का नारा सार्थक कर दिखाया था। इससे परस्पर सहयोग की भावना का विकास हुआ।

संन्यास व मोक्ष - महाराजा अग्रसेन ने 108 वर्ष तक राज्य किया तत्पश्चात् महालक्ष्मी जी के आदेश से अपने सबसे बड़े पुत्र ''**विभू**'' को राजगद्दी सौंप कर वे माधवी जी के साथ वन में चले गये। दक्षिण में गोदावरी के तट पर जहां ब्रह्मसर है, वहां जाकर घोर तपस्या की। लेखक निरंजन लाल गौतम के अनुसार - ''अग्रहण मास की एकादशी'' के दिन कलियुग संवत् 119 में अग्रसेन जी ने ''ब्रह्मसर'' में तप करते हुए प्राण त्यागे, उस समय उनकी आयु 204 वर्ष की थी। महालक्ष्मी की कृपा से वे सपत्नी स्वर्ग गये।

जनश्रुति के अनुसार - राजपाट से संन्यास लेने के बाद महालक्ष्मी की कठोर आराधना करने के फलस्वरूप, उनसे खुश होकर लक्ष्मी जी ने वरदान दिया कि उनका वंश सदैव तेज से परिपूर्ण और विश्व में विख्यात होगा। ऐसी मान्यता है, कि यह वरदान उन्हें ''मार्गशीर्ष पूर्णिमा'' को प्रदान किया गया इसलिये इस दिन को अग्रवाल समाज द्वारा महालक्ष्मी वरदान दिवस के रूप में मनाया जाता है।

महाराजा अग्रसेन की वंशावली - वेद-शास्त्र-पुराण-इतिहास- भूगोल के प्रकांड पंडित विद्यावारिधि पं. ज्वाला प्रसाद जी मिश्र द्वारा संकलित-संपादित-विरचित ''जाति भास्कर'' में उनकी वंशावली है। भारतेंदु हरिशचंद्र जी के मन्तव्य के वे प्राय: समर्थक हैं। श्री सत्यकेतु विद्यालंकार - ''उरूचरितम्'' और ''अग्रवैश्यवंशानुकीर्तम'' में केवल अग्रसेन की कथा ही नहीं दी गई, बल्कि उनके पूर्वजों तथा वंश का भी वर्णन किया गया है। यह वर्णन बहुत उपयोगी है। ''कुक'' महोदय ने अग्रसेन संबंधी कथाओं का जो संग्रह किया है, उसके अनुसार उनका सबसे पहला पूर्वज धनपाल था, जो प्रतापनगर का राजा था। लेकिन उरूचरितम् में धनपाल के पूर्वजों का भी वर्णन मिलता है।

महाराजा अग्रसेन के सबसे बड़े पुत्र विभुसेन अपने पिता के समान बड़े ही शक्तिशाली राजा हुए। विभु की आयु सौ वर्ष हुई। उसके बाद उनका लड़का **नेमिनाथ** राजा बना। उसके बाद **विमल, शुकदेव, धनन्जय और श्रीनाथ** क्रमश: राजगद्दी पर बैठे। इन राजाओं के नाम ही मिलते हैं, कोई महत्व की घटना इनके संबंध में नहीं लिखी गई। श्रीनाथ का पुत्र **दिवाकर** था, जिसने ''**जैन धर्म**'' की दीक्षा ली। दिवाकर के बाद **सुदर्शन** राजा बना, इसके विषय में

मिलता है कि, वृद्धावस्था में राजगद्दी छोड़कर वह संन्यासी हो गया और काशी में निवास करने लगा। उसके बाद **महादेव** राजगद्दी पर बैठा, जो श्रीनाथ का पुत्र था। महादेव के बाद **यमाधर** और फिर **मलय** तथा **वसु** राजा बने। वसु के बहुत से पुत्र थे, जिन्होंने पृथक आठ राजवंशों की स्थापना की, लेकिन वसु का राज्य उसके भाई **नंद** को मिला। नंद के बाद **चंद्रशेखर** और फिर उसका पुत्र **अग्रचंद** राजा बना। अग्रचंद के साथ ''अग्रवैश्यवंशानुकीर्तम'' ने अग्रसेन जी की वंशावली समाप्त कर दी और यह शुभ इच्छा प्रकट की है, कि अग्रचंद के पुत्र-पौत्रों तथा वंशजों से यह नगर सदा सुशोभित रहे। (इस वंशावली में काफी नाम नहीं दिये गये हैं, संभवत: केवल प्रसिद्ध राजाओं के नाम ही दिये गये हैं। -सत्यकेतु विद्यालंकार)।

उपसंहार - आज भी इतिहास में महाराजा अग्रसेन परम प्रतापी, अहिंसा के पुजारी, समाजवाद के प्रेरक के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने **अग्रवाल वैश्य वर्ण** के रूप में एक अलग वैश्य उपजाति का निर्माण किया। उन्होंने 18 यज्ञों के माध्यम से अपना वंश और गौरव प्रदान किया। नवीन गणराज्य की स्थापना के लिये उन्हें शक्ति और धन की आवश्यकता थी। अत: उन्होंने शिव एवं लक्ष्मी जी की कठोर आराधना करके दैवी शक्ति प्राप्त की। उस समय के सबसे बलशाली नागवंश से अपने वैवाहिक संबंध जोड़कर अपनी राज शक्ति को सुदृढ़ बनाया। धर्म के क्षेत्र में उन्होंने यज्ञों को मान्यता दी किंतु बलि प्रथा को समूल बंद करा दिया। अहिंसा को उन्होंने राज्य धर्म का आधार बनाया, पूर्व के राजाओं द्वारा यज्ञ में पशु बलि का प्रचनल जोरों पर था। अग्रसेन ने धर्म की आड़ में की जा रही इस हिंसा से पशुओं को मुक्ति दिलाई। उन्होंने लोगों को तलवार तो पकड़ाई किंतु अपनी रक्षा के लिये। यही अहिंसा और शाकाहारी शुद्ध सात्विक जीवन ही अग्रवालों के जीवन की आधारशिला बनी है। इसीलिये वे आज भी लक्ष्मीपुत्र हैं। देश में अग्रवाल समाज द्वारा किये जो रहे सभी जनहित कार्य अग्रसेन जी के जीवन मूल्यों पर आधारित हैं।

स्वराजमणि जी अग्रवाल - राज्य की समृद्धि के लिये अग्रसेन जी देशाटन को गये। वे जहां-जहां गये, अग्र संस्कृति का प्रचार किया। ''उज्जैन'' के पास ''तांडव्य ऋषि'' के आश्रम में जहां उन्होंने शिक्षा पाई थी, ''आगर'' नाम का एक गांव बसाया जो आज भी विद्यमान है। इसी तरह बिहार में ''अग्रपुर'', गुजरात में भी ''अग्र'' नाम का नगर बसाया। ''आगरा'' उनकी स्मृति में उनके वंशजों ने बसाया।

- महाराजा अग्रसेन के जीवन वृत्त में 18 के अंक का वर्णन बार-बार आया है। जैसे - महाराजा अग्रसेन ने 18 यज्ञ किये, उनकी 18 रानियां बताई गईं, 18 गणप्रमुख, 18 गौत्र आदि।
- वैदिक ज्योतिष और सनातन धर्म में 18 के अंक को शुभ माना जाता है और इस संख्या का काफी महत्व भी है- 18 संख्या का योग 9 होता है जो न्यूमेरॉलाजी का यह सबसे पावर फुल अंक है। सांख्य दर्शन में 18 का महत्व है, पुराणों की संख्या-18 है, गीता में 18 अध्याय हैं, ज्ञान सागर में भी 18 हजार श्लोक हैं, मां भगवती के 18 प्रसिद्ध स्वरूप हैं, मां

भगवती की भुजाएं भी 18 हैं, महाभारत युद्ध 18 दिन चला, जैन धर्म से जुड़ी जिन सिद्धियों के बारे में सुनते हैं, उनकी संख्या भी 18 है, इत्यादि।

अग्रसेन जयंती का शुभारंभ - प्रत्येक वर्ष आश्विन शुक्ल प्रतिपदा या आसोज सुदी एकम (पहला नवरात्रा) को मनाई जाती है। (सन् 1976 में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा, अपनी पहली जयंती मनाई गई जिसे सम्मेलन ने 5100 वीं जयंती माना, इस आधार पर हर वर्ष जयंती वर्ष निर्धारित किया जाता है।) - **उल्लेखनीय है कि** - अग्रवाल समाज में ''एकरूपता'' की दृष्टि से अग्रवाल सम्मेलन ने अपनी मान्यता प्राप्त गौत्रों की लिस्ट, अग्रवाल झंडा, झंडा गान, अग्रवाल को अंग्रेजी में AGRAWAL लिखना व अग्रसेन जी की आरती, समय-समय पर जारी की है। 1976 में श्री श्रीकिशन जी मोदी अध्यक्ष तथा श्री रामेश्वर दास जी गुप्ता सम्मेलन के महासचिव थे।

❖ **स्व. ब्रह्मानंद ब्रह्मचारी जी** के प्रयासों से संवत् 1934 में अग्रवाल जाति के आदि पुरूष अग्रसेन की जयंती मनाने की घोषणा अग्रोहा में हुई। जयंती मनाने के विषय में कहा जाता है कि अग्रवालों के कुल पुरोहित स्वामी ब्रह्मानंद जी ने समाज के लोगों को प्रेरित किया कि वे अपने महापुरूष की जयंती ''आसोज सुदी एकम'' को धूमधाम से मनाएं। विक्रम संवत् 1964 यानि सन् 1907 के आस-पास स्वामी जी ने जयंती मनाने का श्रीगणेश अग्रोहा में किया तथा इस अवसर पर विशेष मेले का आयोजन भी किया गया और वहां उपस्थित लोगों के सामने जयंती मनाने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अग्रवाल बंधु जहां कहीं भी निवास करते हैं, वे **आसोज सुदी एकम (आश्विन शुक्ला प्रतिपदा)** को अपने आराध्य महाराजा अग्रसेन जी की जयंती अवश्य मनाएं। सन् 1923 में अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के मुंबई अधिवेशन में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया गया कि सभी अग्रवाल महाराजा अग्रसेन की जयंती पर्व आश्विन शुक्ल एकम को मनाएं। उसके बाद से ही संपूर्ण भारत में अग्रसेन जयंती मनाने का प्रचलन हुआ।

दिल्ली में अग्रसेन जयंती - श्री बशेसर नाथ गोटेवाले ने सन् 1938 में अपने चार साथियों के साथ दिल्ली के नया बाजार में महाराजा अग्रसेन जयंती पर चर्चा की, लेकिन अंग्रेजी शासन होने के कारण आने वाली बाधाएं भी कम नहीं थीं। अतंत: 1938 में ही आपने अपने साथियों के साथ दिल्ली में पहली बार अग्रसेन जयंती का शुभारंभ किया और सारे देश को बताया कि अग्रसेन जी हमारे कुल प्रवर्तक हैं।

महाराजा अग्रसेन जी के महान् गुण

महाराजा अग्रसेन की स्मृति उनके असाधारण जीवन और व्यक्तित्व के कारण जीवित है। यह भी सत्य है कि उनका शासन काल शांति और समृद्धि का काल था। महापुरूष के रूप में, कुशल प्रशासक के रूप में, सम्राट के रूप में और एक महान् वंशकर्त्ता के रूप में महाराजा अग्रसेन के ''महान् गुणों'' व उनकी ''उपलब्धियों'' पर गर्व किया जा सकता है। हालांकि महाराजा अग्रसेन अवतारी नहीं हैं, लेकिन उनके आदर्श तथा उनकी उपलब्धियां, उनके महान् गुणों का बखान करती हैं और उन्हें ''भगवान'' के रूप में मान्यता प्रदान करती हैं ताकि उनकी कीर्ति का बखान हो, समाज उनको अपना आदर्श माने और उनके गुणों को आत्मसात करे।

दूरदर्शिता - महाराजा अग्रसेन की महत्वपूर्ण उपलब्धि जनपद प्रणाली के आधार पर स्थापित आग्रेय गणराज्य की एक नई राजधानी अग्रोहा की स्थापना थी। आपने अपनी राज्य की व्यवस्था बडे ही अच्छे ढंग से की। नगर को एक मजबूत परकोटे से घेरा, अनेक तालाब बनवाये, मंदिर बनाये गये जो सभी जातियो के लिये खुले रहते थे।

जनतंत्रीय शासन व्यवस्था - महाराजा अग्रसेन ने एकतंत्रीय शासन व्यवस्था को समाप्त कर विश्व में सर्वप्रथम अपने ढंग की अनोखी लोकतांत्रिक प्रणाली का शुभारंभ किया। शासन की जनतंत्रीय शैली अपनाई और उसका संघटन संघीय रूप में किया। उन्होंने किसी विशेष पूजा पद्धति अथवा देवी -देवताओं का बंधन प्रतिपादित नहीं किया। आप सभी जातियों में समानता व भाईचारे व अहिंसा के समर्थक थे।

सह-अस्तित्व एवं सहकारिता के पोषक - अग्रसेन ऐसे पहले शासक थे जिन्होंने ''एक ईंट और एक मुद्रा'' जैसे सहकारिता के सिद्धान्त को व्यवहारिकता का रूप देकर सामाजिक जीवन में अपनाया और सभी परिवारों को एक ही मंच पर एकत्रित कर परस्पर भाई-चारे की भावना को विकसित किया। इस प्रकार की सहायता सुव्यवस्थित परंपरा बन गई थी, इसलिये कोई इसे अपने आत्म सम्मान पर आघात नहीं मानता था और न ही वह किसी परिवार के लिये बोझ बनता था।

समानता के अग्रदूत - अपने पुत्रों का सामूहिक विवाह कर आपने सामूहिक विवाह की परंपरा का शुभारंभ कर सभी परिवारों में समानता का भाव उत्पन्न किया। कहा जाता है कि उनके राज्य में कोई छोटा-बड़ा नहीं था।

एकता के मसीहा - शांति व अहिंसा के क्षेत्र में अग्रसेन जी का योगदान अद्वितीय है। आप जन कल्याण की ओर उन्मुख अनेक परंपराओं के भी जनक थे तथा अहिंसा धर्म का प्रतिपादन किया।

महाराजा अग्रसेन ने **महालक्ष्मी** को **आराध्य देवी** के रूप में प्रतिष्ठित करके एक समृद्ध

समाज की स्थापना का प्रयत्न किया।

18 गौत्र पर आधारित समाज की संरचना – अग्रोहा गणराज्य परिसंघ में सम्मिलित 18 गणों में से प्रत्येक को एक अलग गोत्र का नाम देकर सभी को न केवल एकता के सूत्र में ही पिरो दिया बल्कि रक्तशुद्धि के आधार पर अपने ही गौत्र में विवाह करने पर प्रतिबंध लगाकर अग्रवाल वैश्य जाति की स्थापना की।

समता – अग्रोहा में बसने वाले प्रत्येक परिवार को समता के सिद्धान्त पर उन्होंने शस्त्र विद्या में निपुण किया, ताकि वे वैश्य कर्म (कृषि, गोपालन, वाणिज्य आदि) करते हुए भी अपनी रक्षा स्वयं करने में समर्थ हो सकें।

उदार, सत्यनिष्ठ, परिश्रमी तथा आत्मविश्वासी समाज की स्थापना – यह महाराजा अग्रसेन की सबसे बड़ी देन है। अहिंसा, निरामिष भोजन, धार्मिक जीवन, सत्यनिष्ठा, त्याग और बलिदान से ओत-प्रोत अपने व्यवसाय को करते हुए उन्होंने एक मित्तव्ययी, संयमी एवं दानी समाज की स्थापना की। यही कारण है कि इस जाति में कठोर श्रम साधना के साथ जोखिम उठाने का साहस है और अपने साधनों को गुप्त रखना, मित्तव्ययता, अपनी शक्तियों का अपव्यय न होने देना, दानशीलता, राष्ट्र प्रेम, आदि के गुणों से ओत-प्रोत है यह समाज ।

राजा और प्रजा में समानता – महाराजा अग्रसेन ने स्वंय छत्र और चंवर धारण किया तथा अपनी प्रजा को भी यह अधिकार दिया कि विवाह के समय दूल्हा छत्र और चंवर धारण कर अग्रवंशीय परंपरा का पालन कर गौरव का अनुभव करे। राजा और प्रजा में समानता लाने का यह अद्‌भुत दृष्टिकोण था।

वैश्य वंश को स्थिरता प्रदान करना – अग्रसेन ने वैश्य वंश को स्थिरता दी, उन्हें राज्य के रूप में संगठित किया, गोत्र परंपरा दी और अग्रवालों के पूर्व पुरूष बने।

महाराजा अग्रसेन के सिद्धांत – सर्वेभवंतु सुखिन, सर्वे संतु निरामया

महाराजा अग्रसेन का आदर्श – जीओ और जीने दो।

साम्राज्य का निर्माण – महाराजा अग्रसेन का आग्रेय गणराज्य – समाजवाद, मानवता, अपनत्व, सत्य एवं अहिंसा के गुणों पर आधारित था।

महाराजा अग्रसेन का मूल मंत्र –

1. सर्वजन सुखाय – सर्वजन हिताय।
2. परिश्रम और उद्योग से अर्थोपार्जन और उसका समान रूप से वितरण।

महाराजा अग्रसेन और भारत सरकार

1. महाराजा अग्रसेन पर डाक टिकट – 24 सितंबर 1976 को तत्कालीन राष्ट्रपति श्री फकरूद्‌दीन अली अहमद ने विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में 25

पैसे मूल्य का डाक टिकट विमोचन किया। भारत में किसी भी महापुरूष की समृति में जारी किये गये टिकट की 80 लाख प्रतियां पहली बार छपीं और दो सप्ताह में ही ये बिक गये।

2. महाराजा अग्रसेन पार्क - दिल्ली नगर निगम के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय बस अड्डा, कश्मीरीगेट के निकट स्थित निकल्सन पार्क में 19 सितम्बर 1990 को अग्रसेन जयंती के अवसर पर महाराजा अग्रसेन की अष्टधातु से निर्मित 12 फीट उंची प्रतिमा स्थापित की गई। जिसका अनावरण तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा ने किया। इस पार्क का नाम निकल्सन पार्क से ''महाराजा अग्रसेन पार्क'' किया गया।

3. महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय राजमार्ग - भारत सरकार ने सन् 1993 में राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 10 का नाम बदल कर ''महाराजा अग्रसेन मार्ग'' कर दिया। यह राजमार्ग दिल्ली से अग्रोहा, राजस्थान तथा पंजाब के बीच से होता हुआ भारत की पाकिस्तान से मिलती हुई सीमा फाजिलका तक जाता है।

4. महाराजा अग्रसेन जलपोत - 350 करोड़ की लागत तथा 1,40,000 टन के विशाल इस तेल वाहक जलपोत का अनावरण केंद्रीय परिवहन मंत्रालय द्वारा 25 जनवरी 1995 को दक्षिण कोरिया में हुआ। जलपोत का अनावरण सिओल (कोरिया) में श्रीमती प्रभा एम. एम. अगवाल ने किया था जिसमें श्री बनारसीदास गुप्ता, श्री एम.एम. अग्रवाल सहित अनेक गणमान्य अग्रजन उपस्थित थे। इस जलपोत की क्षमता 110 टन माल ढोने की है।

5. महाराजा नेशनल हाइवे नं. 1 - सन् 1995 में भारत सरकार ने दिल्ली से मुंबई, बैंगलूरू से कन्याकुमारी तक जाने वाले एक सुपर नेशनल हाइवे के निर्माण का निर्णय किया। इस मार्ग का नामकरण भी ''महाराजा नेशनल हाइवे नं. 1'' किया गया।

6. महारजा अग्रसेन महाविद्यालय - दिल्ली सरकार ने सन् 1995 में दिल्ली में खोले गए अपने एक महाविद्यालय का नाम ''महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय'' रखा है। यह वसुन्धरा, पूर्वी दिल्ली में है।

7. महाराजा अग्रसेन तार विभाग की शुभकामना सूची में - महाराजा अग्रसेन जी के नाम को केंद्रीय संचार मंत्रालय दिल्ली ने कई वर्ष पहले ही शुभकामना सूची में मान्यता प्रदान कर दी थी। तार विभाग द्वारा स्वीकृत दोनों लाइनें निम्नानुसार हैं -

कोड नं. 43 (क) - छत्रपति महाराजा श्री अग्रसेन जी की जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं ।

कोड नं. 43 (ख) – आयोजित कार्यक्रम की सफलता के लिए महाराजा श्री अग्रसेन के चरणों में प्रार्थना करता हूं।

महाराजा अग्रसेन के नाम पर कुछ प्रमुख उपलब्धियां

1. महाराजा अग्रसेन पर बनी फिल्म – भारत सरकार–केंद्रीय फिल्म प्रसारण बोर्ड ने महाराजा अग्रसेन पर हिंदी में रंगीन फिल्म बनाई जिसका प्रसारण दिनांक 28.8.1997 को किया गया, यह 120 मिनट की है। अरूण गोविल ने इसमें अग्रसेन जी की भूमिका निभाई थी, गायक महेन्द्र कपूर थे। – (पहले इसकी बड़ी कैसिट बनी थी जो मार्केट से कैसिट प्लेयर (वी.सी.आर.) किराए पर लाकर दिखाई जाती थी। अखिल भारतीय अग्रवाल सममेलन ने यह बड़ी कैसिट कुछ संस्थाओं को दी थी।)

इसके अलावा

श्री ओमप्रकाश अग्रवाल द्वारा महाराजा अग्रसेन पर एक ''डाक्यूमेंट्री'' सन् 1991 बनाई गई यह जी टी वी व दूरदर्शन पर प्रसारित भी हुई है।

एम. डी. दानिश खान ने भी महाराजा अग्रसेन के जीवन पर आधारित वृत्त चित्र ''एक ईंट–एक रूपया'' बनाया है। **महाराजा अग्रसेन दर्शन समिति** द्वारा भी महाराजा अग्रसेन की गौरव गाथा पर एक ''वृत्त चित्र'' बनाया गया है।

2. अग्रसेन की बावड़ी – दिल्ली में अग्रवाल समाज की पुरानी विरासतों का जिक्र करें तो अग्रसेन की बावली सर्वप्रथम आती है। यह बावड़ी लगभग 800 साल पुरानी है। कहते हैं कि जैन अग्रवाल विभूति नट्टल साहू ने इसका पुनस्द्धार करवाया। इस ऐतिहासिक बावड़ी पर ''पीके'' ''झूम बराबर झूम'' सहित कुछ और फिल्मों की शूटिंग भी हो चुकी है। नि:संदेह इन फिल्मों ने पर्यटकों के मन में यहां आने की रूचि पैदा कर दी है।

महाराजा अग्रसेन के नाम पर निर्मित दिल्ली की सबसे कलात्मक व भव्य रूप से सुंदर यह बावड़ी, हैली रोड,कनाट प्लेस में स्थित है। पुरातत्व विभाग के अनुसार इसका निर्माण 700–800 वर्ष पूर्व हुआ। इस बावड़ी पर भारत सरकार द्वारा ''**विशेष आवरण**'' दिनांक 17 फरवरी 2018 को तथा 15 रूपये के मूल्य का ''**डाक टिकट**'' 29 दिसम्बर 2017 को जारी किया गया।

इस बावड़ी के दाहिनी ओर हिंदी में तथा बाईं ओर का लेख अंग्रेजी भाषा में है। हिंदी लेख जो अंग्रेजी का अनुवाद है निम्न प्रकार है - ''भूतल पर उत्तर दक्षिण में 60 मीटर लंबी तथा 15 मीटर चौड़ी अग्रसेन की बावली अनगढ़ और तराशे गये पत्थरों से बनी है तथा यह दिल्ली की सर्वश्रेष्ठ बावलियों में से एक है। दोनों ओर मेहराबदार गवाक्षों की कतार से युक्त एक मोटी दीवार के बीच लंबी सीढ़ियों वाली इस बावली के निचले हिस्से कुछ पानी में डूबे रहते हैं तथा ऊपरी हिस्से सतह से निकलते हुए मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करते हैं। उत्तरी छोर पर एक गोलाकार कुंआ है और उसके तथा सीढ़ियों के बीच भूतल पर सपाट स्थान है। दोनों दीवारों के बीच जल स्तर तक नीचे जाने के लिये सीढ़ियां हैं। वास्तु की दृष्टि से इसके निर्माण का समय तुगलक काल के अंत अथवा लोधी काल का है। मान्यता है कि इसका निर्माण अग्रवाल समाज के किसी पूर्वज ने करवाया है।''

इस बावड़ी पर असामाजिक तत्वों ने कई बार कब्जा करने की कोशिश की। वैश्य इंटरनेशनल परिवार संस्था का यह समाज आभारी है कि जिन्होंने अपने पूर्वजों की देन इस भव्य बावड़ी को असामाजिक तत्वों के हाथों में पड़ने से बचाया। इनके अथक प्रयासों से पुरातत्व विभाग ने इसकी मरम्मत करवाई तथा इसकी सुरक्षा की व्यवस्था भी की है। यहां कई वर्ष तक महाराजा अग्रसेन जयंती का भी आयोजन किया जाता रहा है। श्री मनोहर लाल चांवरिया तथा इनकी चार पीढ़ियां भी इस बावड़ी की देखभाल करती रही हैं। चांवरिया जी ने बताया कि- तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू के व्यक्तिगत रूचि लेने के कारण इस बावड़ी का पानी निकालकर अतुल गहराई तक पहुंचने का प्रयास किया गया, परंतु इसका पानी समाप्त नहीं हुआ। कुंआ पाताल तोड़ है। गोताखोर गहराई तक उतरे तथा दूरबीन से देखकर बताया कि पानी के नीचे बावड़ी की चार मंजिलें और हैं, इनमें कमरे बने हुए हैं जिनमें मजबूत ताले भी लगे हुए हैं।

ध्यातव्य - पुस्तक - दिल्ली की बावड़ियों के अनुसार - दिल्ली के ज्ञात इतिहास में बावड़ी बनाने का सबसे पहले काम इल्तुतमिश के शासन काल के दौरान आरंभ हुआ था। उपलब्ध ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर महरौली में बनी 'गंधक की बावड़ी' (इसे इल्तुतमिश ने 1211-36 दौरान बनवाया) को दिल्ली की सबसे पुरानी बावड़ी का जा सकता है। कुछ इतिहासकार कुतुबमीनार के पास बनी अनंग ताल को दिल्ली की सबसे पुरानी बावड़ी कहते हैं, जो राजपूत तोमर शासकों के समय की बताई जाती है। बावड़ियों को सर्वप्रथम हिंदुओं द्वारा (जन उपयोगी शिल्पकला के रूप में) विकसित किया गया और उसके बाद मुस्लिम शासकों ने भी इसे अपनाया। बावड़ी निर्माण की परम्परा कम से कम छठी शताब्दी में गुजरात के दक्षिण-पश्चिम भाग में आरंभ हो चुकी थी।

3. अग्रवालों की बावड़ी – सन् 1458 का एक शिलालेख राजस्थान के अलवर जिले के मोचड़ी नामक गांव में स्थित एक बावड़ी पर लगा है जो अग्रवालों की बावड़ी कहलाती है।

4. महाराजा अग्रसेन आश्रम हरिद्वार – अखिल भारतीय अग्रवाल सभा ने सन् 1974 में कुंभ के अवसर पर 15 दिवसीय शिविर लगाया। आयोजक महान् समाज सेवी, कुशल संगठन कर्ता श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल ने शिविर हेतु भूमि की कठिनाई को देखते हुये एक विशाल अग्रसेन भवन बनवाने का संकल्प लिया। 1975 में महाराजा अग्रसेन आश्रम का पंजीकरण कराया गया। अग्रवाल दानवीरों की सहायता से 1976 में सप्त सरोवर मार्ग, हरिद्वार में 3000 वर्ग गज भूमि गंगा के किनारे खरीद ली गई। 9 अप्रेल 1978 को भूमि पूजन व आश्रम का शिलान्यास हुआ। 31 मार्च 1986 को आश्रम में महाराजा अग्रसेन की भव्य प्रतिमा स्थापित की गई। 09 अप्रेल 1986 सामाजिक एवं धार्मिक नेता, महान् शिक्षाविद् लाला शिवदत्त जी गुप्ता द्वारा यह भव्य एवं विशाल आश्रम समाज को समर्पित कर दिया गया। इस आश्रम में सभी सुविधायुक्त 70 कमरे, प्रवचन कक्ष व दो विशाल सभागार भी हैं। हर की पौड़ी से यह तीन किलोमीटर दूर है।

5. अग्रसेन घाट हरिद्वार – अग्रसेन आश्रम के ठीक सामने गंगा मैया की मुख्य धारा पर 110 फीट उंचे, 180 फुट लंबे सात बड़े प्लेटफार्मों वाले विशाल घाट का निर्माण ट्रस्ट के तत्कालीन प्रधान लाला श्याम लाल जी अग्रवाल तथा स्व. लाला हुकमचंद जी गुप्ता के अकथनीय परिश्रम से केवल 17 महीने के अल्प समय में पूरा हो गया। इस घाट का निर्माण पूर्णत: संगमरमर तथा गुलाबी रंग के पत्थरों से किया गया है। घाट की मजबूती, सुंदरता, स्नानार्थियों की सुरक्षा तथा स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा गया है। ट्रस्ट के महामंत्री श्री जयभगवान गुप्ता के अनुसार इस घाट के निर्माण में 30 लाख रूपये का खर्च आया था। 25 मार्च 1993 को इस घाट पर मां गंगा की आरती व पूजा अर्चना का जो सिलसिला आरंभ हुआ वह अग्रसेन आश्रम की ओर से चल रहा है। इस घाट का भूमि पूजन ट्रस्ट ने दिल्ली के प्रसिद्ध व्यवसायी लाला रामेश्वरदास जी बंसल से 15 सितम्बर 1991 को करवाया था। 30 मई 1993 को गंगादशहरा के दिन दिल्ली के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री विजय कुमार जी तायल द्वारा यह घाट समाज को समर्पित किया गया, समारोह के मुख्य अतिथि महामंडलेश्वर स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि जी महाराज थे। महाराजा अग्रसेन घाट पर अग्रसेन जी की मूर्ति का अनावरण श्री दक्षिण काली मंदिर पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानंद ब्रह्मचारी महाराज ने किया था। इस अवसर पर मेयर श्री मनोज गर्ग भी उपस्थित थे।

6. महाराजा अग्रसेन ज्योति रथ यात्रा - अग्रोहा विकास ट्रस्ट की स्थापना के बाद उसके नेतृत्व में इस विशाल ज्योति रथ यात्रा का शुभारंभ 15 अप्रैल 1995 को श्रीगंगानगर- राजस्थान से हुआ। यह रथ यात्रा चार वर्ष तक लगातार चली।

7. महाराजा अग्रसेन मेडिकल कालेज व अस्पताल - 267 एकड़ में स्थापित इस विशाल मेडिकल कॉलेज का अग्रोहा में उद्घाटन 7 अगस्त 1994 को हुआ। ग्रामीण क्षेत्र में स्थापित यह देश का पहला अस्पताल है।

8. महाराजा अग्रसेन हॉस्पीटल - पंजाबी बाग, दिल्ली में काफी बड़ा व सभी

श्री अग्रसेन जी की जन्म कुण्डली एवं एक दुर्लभ चित्र

प्रस्तुत जन्मकुण्डली और चित्र वैद्य कृपाराम जी अग्रवाल द्वारा सम्वत् २०१४ (ई० सन् १९५७) में लिखित 'अग्रसैन और अग्रवाल' पुस्तक से साभार उद्धृत। अग्र जन्म कुण्डली एवं नीचे प्रकाशित चित्र वैद्य कृपाराम जी को पैतृक सम्पत्ति के रूप में अपने वंशजों से प्राप्त हुआ था। श्री अग्रसेन जी की जन्म कुण्डली को उन्होंने ज्योतिष शास्त्र के प्रमाणों द्वारा सिद्ध भी किया है।

जन्मांगमिदम्

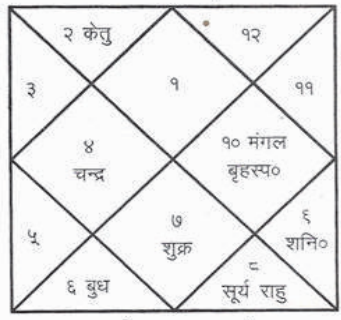

दशादौ - श० बु० के० सू०

अथात्र कलौ प्रथम चरणे (वर्षे) वृश्चिकार्के वदि पंचम्यां मार्गशीर्ष
मासे शनिवारेष्ट २३/३८
तिष्य भे अत्र क्षणे मेष लग्नोदये .०.१५.४.३८
सायं काल ५.३० बजे (आज कल)
प्रताप नगर दक्षिण के वैश्य राजा बल्लभ जी
तस्य सौभाग्यवती महिषी पुत्र रत्नमजिजनत्

अंग धीशः स्वगेहे उद्धु धं गुरू कविभिः संयुक्तः केन्द्र भोगाः ।
स्वीये तुङ्गे सुमित्रे यदि शुभ भवन विक्षितः सत् स्वरूपाः ।।१।।
स्यान्नूनं पुण्य शीलं सकल जन्मतः सर्व सम्पन्निधानम् ।
ज्ञाने मंत्री च भूपः सुरचिरनयनो मानगो मान पानः ।।२।।
(जातकालकार अध्याय २ श्लोक १.२)
धर्म्मकर्माधिनेतारौ अन्यान्याश्रय संस्थितौ।
राजयोगाविति प्रोक्तो विख्यातो विजयी भवेत ।।१।।
(पाराशरी० बृहज्जयोतिष पृ० ३५३)
त्रिभि स्वस्थैभवेन्मन्त्री त्रिभिरुच्चै नराधिपः ।
त्रिभि नीचैर्भवेद्दा सस्त्रि रस्तगतैर्जड़ः ।।१।।

अध्याय दो

अग्रोहा

मानवता का तीर्थ (पांचवा धाम)

पुण्यधरा है, पितृभूमि है, अग्रोहा एक धाम।
अग्रवंश का हुआ जहां से, आविर्भाव निष्काम।।
अग्रसेन की गौरव गाथा, इस मिट्टी में सिमटी।
कुलदेवी महालक्ष्मी भी, इसी भूमि में प्रगटीं ।।

''अग्रोहा'' - साम्राज्यवाद के युग से पूर्व जब भारत में बहुत से छोटे छोटे गणराज्य थे, तब ''आग्रेय गण'' भी उनमें से एक था। आग्रेय जनपद एक छोटा सा राज्य था। भारत के इतिहास में इसने, किसी विशाल साम्राज्य का निर्माण नहीं किया। यह समृद्धशाली गणराज्यों में से एक था। इसकी राजधानी अग्रोतक अथवा अग्रोदक (अग्रोहा) थी। अग्रवालों का उद्गम यहीं से माना जाता है, अग्रवाल वहां सदियों तक रहे और यहीं से भारत के विभिन्न भागों में फैले।

महाराजा अग्रसेन अपने पिता वल्लभसेन जी के निधन के बाद उनकी अस्थियों की विसर्जन के लिये ''लोहा गढ़'' तीर्थ (या लोहार्गल) गये। मार्ग में हरियाणा की वीर प्रसूता भूमि ने उन्हें आकर्षित किया, और उन्होंने वर्तमान में अग्रोहा ग्राम क्षेत्र को अपनी राजधानी बनाया। जल संकट के निवारण के लिये उन्होंने एक विशाल तालाब का निर्माण करवाया और उसका नाम 'अग्रोदक' रखा।

अग्रोहा राज्य की स्थापना महाराजा अग्रसेन ने ऋषि गर्ग की प्रेरणा तथा महालक्ष्मी जी के आशीर्वाद से की और लंबें समय तक शासन किया। उस समय आजकल की तरह बड़े-बड़े राज्य नहीं थे। भारत के छोटे-छोटे राज्यों के लिये गण या संघ शब्द प्रयुक्त होता है। अग्रोहा भी इसी प्रकार का गण पर आधारित महत्वपूर्ण जनपद था। डा. सत्यकेतु विद्यालंकार का मत है कि भारत में अनेक जातियों का उद्भव व विकास प्राचीन गणराज्यों के जनपदों से हुआ, जैसे-खत्री, अरोड़ा, अग्रवाल, सैनी, रोहतगी आदि। उसी के अनुरूप माना जाता है कि अग्रवाल जाति का उद्भव आग्रेय जनपद (गणराज्य) से हुआ और यहीं से अग्रवाल भारत के विभिन्न भागों में फैले।

डा. स्वराजमणि अग्रवाल – महाराजा अग्रसेन की कथा में है कि – उनकी पीढ़ी में नेमीनाथ नाम का राजा हुआ, जिसने नेपाल बसाया। हमारे नेपाल प्रवास में वहां एक पुस्तक देखने को मिली ''**प्राचीन नेपाल**'' वहां यह अंकित है कि प्रथम तीन पीढ़ी गुप्त राजाओं ने नेपाल पर राज्य किया। – नेमीनाथ के वंश में ''**गुर्जर**'' हुआ, जिसने ''गुजरात देश'' बसाया, यही कारण है कि **गुजरात के प्राचीन इतिहास मे अग्रसेन जी की कथा** आती है। सृष्टि का यह नियम है कि – ''जब कोई जाति अपना निवास छोड़कर अन्य स्थानों पर बसी तो उसने अपने पूर्वजों की कथा का स्मरण बनाए रखा।'' आपने आगे लिखा कि – अग्रसेन जी की 12वीं पीढ़ी के बाद गुप्त साम्राज्य ने जो देश का विकास किया वह तो अविस्मरणीय है। उनके बाद भी आग्रेयगण के लोग अपने निवास स्थान पर साधारण नागरिक की भांति रह कर अपना धर्म निर्वाह करते रहे।

इतिहास के आइने में – महाभारत में कर्ण दिग्विजय प्रसंग में आग्रेयगण का वर्णन है जो अग्रोहा की उपस्थिति बताता है, यह महाभारत के युद्ध से पहले की घटना है। पाणिनी रचित व्याकरण ग्रंथ अष्टाधायी में भी आग्रेय गणराज्य का उल्लेख है, आदिकाल से भाटों द्वारा गाये जाने वाले गीतों में अग्रसेन द्वारा स्थापित अग्रोहा नगर का वर्णन है, भविष्य पुराण में महाराज अग्रसेन से संबंधित अनेक कथाएं हैं जिन्होंने अग्रोहा बसाया। अग्रोहा के पास ही ऐसे अनेक स्थान हैं, जिनका संबंध भी अग्रवाल जाति के इतिहास के साथ हैं। इनमें से एक का नाम ''**रिसालू खेड़ा**'' है, वास्तव में यह टीब्बा है, और सरकारी कागजों में ''मौजा रिसालखेड़ा'' के नामा से उसका उल्लेख मिलता है। इसी के पास ही सतियों की अनेक मढ़ियां (समाधियां) हैं। मुख्य सती शीला देवी थीं। खुदाई में प्राप्त कुषाणों के सिक्के तथा प्रचलित ''रिसालू खेड़ा'' में सती शीला की कथा, अग्रोहा में कुषाणों के साम्राज्य का प्रमाण देती है। इस प्रकार और भी अनेक प्रमाण अग्रोहा के बारे में मिलते हैं, अर्थात् यह निश्चित है कि अग्रोहा 2500 वर्ष से पहले भी आबाद था।

''आग्रेयगण'' की प्रमाणिकता तथा अग्रोहा का इतिहास सर्वप्रथम (सी.टी.राजर्स) राजर्स की खुदाई के बाद स्पष्ट रूप से सामने आया। सन् 1888–89 में राजर्स ने यह प्रमाणित कर दिया कि यह स्थान (अग्रोहा) प्राचीन काल में अत्यंत समृद्ध तथा वैभवशाली नगर के रूप में विद्यमान था, यहां के रहने वाले अग्रवाल वैश्य थे, जो कालांतर में बिखर कर आस–पास इकालों में जा बसे।

विदेशी यात्रियों के यात्रा वर्णन

1. सन् 1325 में फारसी यात्री इब्नबतूता ने अपनी भारत यात्रा पर लिखा है कि – जब वह दिल्ली से 110–115 मील दूर गया तो उसे एक शहर सड़क के ऊपर मिला जो देखने में बड़ा मालूम होता था और जान पड़ता था कि वह हिंदुस्तान की राजधानी है किंतु वहां कोई रहता न था।

2. सन् 1351 से 1388 के बीच बादशाह फिरोजशाह तुगलक ने दिल्ली के साथ हिसार को भी अपनी राजधानी बनया। उसने अपने किले और महल में जो पत्थर लगवाये वे अग्रोहा के खंडहरों से ही मंगवाकर लगवाए गये थे।
3. 1781 में फ्रैंच यात्री ''बर्नियर'' ने अपनी भारत यात्रा संबंधित पुस्तक में ''अग्रोहा'' के प्राचीन वैभव का उल्लेख किया है, और लिखा है कि 'अब यह उजड़ गया है।'
4. चीनी यात्री ची युंग ने अग्रोहा की स्थिति का वर्णन किया था।
5. सिकंदर का प्रमाणिक इतिहास लिखने वाले यूनानियों के विवरणों में भी अग्रोहा से संबंधित भूखंड का विवरण है।
6. यूरोप के प्रसिद्ध अंग्रेज विद्वान ''रेनेल'' ने भी 18वीं सदी के अंत एक भूगोल लिखा है, इसमें दिए गये उस वक्त के भारत के एक नक्शे में अग्रोहा का भी उल्लेख है।
7. 1932 में लिखी गई पुस्तक ''मौर्य साम्राज्य का इतिहास'' में आग्रेय गणराज्य भी भारत के मानचित्र में उपस्थित है।

अग्रोहा देश के ही नहीं बल्कि विश्व भर में फैले करोड़ों अग्रवाल बंधुओं को जोड़ने का सशक्त माध्यम है। यह वह गौरवपूर्ण स्थान है जहां से महाराजा अग्रसेन ने समाजवाद की नींव रखी। कहते हैं कि इस नगर का विस्तार 12 योजन लंबा और 4 योजन चौड़ा था। अग्रोहा के अवशेषों की सन् 1889 में पहली बार खुदाई हुई, तत्पतश्चात् 1938, 1979, 1980, 1981 व 1983 में हुई। **पुरातत्व विभाग, निदेशालय हरियाणा ने** रिपोर्ट में लिखा कि – ''यह स्थान महाभारत में वर्णित आग्रेय गणतंत्र की राजधानी था। ऐसा विश्वास है कि इसे महाराजा अग्रसेन ने बसाया था।'' **पंजाब प्रांत के गजेटियर** में लिखा है कि– अग्रोहा एक बहुत ही प्राचीन नगर है, यह अग्रवालों का जन्म स्थान कहा जाता है, जो आज से दो हजार वर्षों पहले बहुत शक्तिशाली थे तथा यह नगर किसी समय बहुत विख्यात था। खुदाई के दौरान अग्रोहा में मिट्टी की मोहरें, जला हुआ अनाज, जले हुए हस्तलिखित ग्रंथ, एक सोने की मनका, कुछ अन्य मूर्तिया आदि महत्वपूर्ण वस्तुएं प्राप्त हुई हैं। अग्रोहा–दिल्ली से 180 किलोमीटर तथा राष्ट्रीय राजमार्ग नं.10 पर, हिसार (हरियाणा) से 22 किलोमीटर दूर है। यहां पर खंडहरों को देखने से पता चलता है कि कभी यह वैभवशाली और शक्तिशली नगर था।

भारत के प्रसिद्ध विद्वान **स्व. डा. वासुदेव शरण अग्रवाल** ने अपनी मृत्यु से कुछ ही समय पूर्व मई 1966 में लिखा था कि – ''सौभाग्य से अग्रवाल जाति के मूल स्थान अग्रोहा का सुनिश्चित पता चल गया है। इसका पुराना नाम अग्रोदक था और यह अग्रजनपद की राजधानी था। यह एक संघ राज्य था। उसके शासक चुने हुए अधिपत और शासन सभा के सदस्य प्रतिनिधि होते थे। प्रतिनिधित्व का अधिकार 18 मुख्य कुटुम्बों में बंटा था। ये ही मिलकर शासन चलाते थे। उन 18 कुलों के गोत्र ही अग्रवाल जाति के 18 गोत्र हैं।'' **डा. सत्यकेतु विद्यालंकार जी** ने अग्रोहा मे दिनांक 3 जुलाई 1973 को एक बैठक कर बताया कि अग्रोहा की खुदाई में जो दूसरा सिक्का मिला है उस पर लिखा है ''अग्रेय जनपदस्य परिषद'' जो समाजवाद और गणतंत्र

का प्रबल प्रमाण है। श्री कालीचरण केशान की मान्यता है कि - महाभारत में अग्रजनपद का उल्लेख है और हर जगह **18 संख्या का साम्य,** निश्चित रूप से इस तथ्य की ओर इंगित करता है कि, महाभारत काल में अग्रजनपद (अग्रोहा) का अस्तित्व था और उसकी स्वतंत्र पहचान थी।

अग्रोहा गणराज्य का पतन

अग्रोहा पर बार-बार आक्रमण हुए तथा वह अनेक बार बसा और फिर उजड़ा। अग्रोहा कुशानवंश के अधीन हो गया था। **सिकंदर का आक्रमण** - ईसा के 326 वर्ष पूर्व सिकंदर ने भारत पर आक्रमण किया था जिसकी छाया अग्रोहा पर भी पड़ी। हालांकि सिकंदर ने अग्रोहा पर आक्रमण नहीं किया, परंतु उसने मार्ग में आने वाले कई गणराज्यों को रौंद डाला। विद्वानों के अनुसार सिकंदर के संभावित युद्ध के भय से बहुत से लोग अग्रोहा छोड़कर सिरसा, हिसार, महेम आदि स्थानों पर जाकर रहने लगे। जब चाणक्य ने एक शक्तिशाली राज्य मगध की स्थापना की और चंद्रगुप्त ने छोटे-बड़े गणराज्यों को अपने राज्य का अंग बना लिया तब अग्रोहा भी इससे अछूता नहीं रहा।

सन् 702 ईस्वी में अग्रोहा निवासी कुल घातक शिवानंद एवं धर्मसेन के निमंत्रण पर धाम नगर के तोमर वंशी राजपूत राजा समरजीत ने अग्रोहा पर आक्रमण किया और इसे दिल भर कर लूटा। यहां के निवासियों को बहुत हानि तथा कष्ट उठाना पड़ा। सन् 712 ई. में समरजीत ने दिल्ली पर विजय पाकर अग्रोहा को अपने राज्य में मिलाने के लिये इस पर पुन: आक्रमण किया। समरजीत के भय के कारण सिरसा के रतनसेन तथा गोकुलचंद ने मुहम्मद बिन कासिम से सहायता मांगी। समरजीत तो चला गया परंतु मुहम्मद बिन कासिम ने अग्रोहे को लूटने तथा नष्ट करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। 997 ई. तक सुबुक्तगीन तथा महमूद गजनबी ने अग्रोहा पर अनेक बार आक्रमण किये और बहुत हानि पहुचाई।

वैद्य निरंजन लाल गौतम के अनुसार - चौहानों ने तोमरों को परास्त कर दिल्ली पर अधिकार कर लिया तब अग्रोहा चौहानों के अधिकार में आ गया। इस प्रकार तोमरों व चौहानों के आक्रमणों से तंग आकर बहुत से परिवार अग्रोहा छोड़कर राजस्थान तथा अन्य स्थानों पर चले गये। सन् 1134 में बिजनौर जिले के मंडावर नामक स्थान को अग्रवालों ने पुन: बसाया और वहीं रहने लगे। वहां अग्रवालों का बनाया हुआ एक किला अभी भी मौजूद है। लेकिन काफी कुछ परिवार अग्रोहा ही में रहे। मंडावर एक बहुत पुरानी बस्ती है। चीनी यात्री हू यूनत्सांग ने भी इस शहर का उल्लेख किया है। मंडावर की आबादी में अग्रवालों का मुख्य स्थान है।

शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी का आक्रमण - 12 वीं सदी के अंत में मु. गौरी ने पंजाब को बुरी तरह नष्ट कर दिया तथा वहां लूट-पात मचाई थी। अग्रोहा भी उनमें से एक था। 1194 इस्वीं में शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी ने अग्रोहा पर भीषण आक्रमण किया। उसने अग्रोहा को तहस-नहस कर डाला। शहाबुद्दीन की लड़ाई में बहुत से लोग मारे गये और उनकी स्त्रियां सती हुईं, जो अब भी अग्रवालों में घर में पूजी जाती हैं। यह अग्रवालों के विनाश का समय था, अग्रोहा

बिल्कुल खाली हो गया। इतिहासकारों के अनुसार अग्रोहा इस बार जो उजड़ा तो वह पुन: बस नहीं पाया।

पलायन – गौरी द्वारा अग्रोहा नष्ट किये जाने के बाद अग्रवालों ने वहां से जाकर दूसरे स्थानों पर बसना आरंभ किया। कुछ लोग निकटवर्ती स्थान पानीपत, करनाल, नानौल, दिल्ली मेरठ बुलंदशहर, मुजफ्फर नगर आदि स्थानों में जा बसे। कुछ मारवाड़ हिमाचल प्रदेश, अमृत्तसर, अंबाला, मंदसौर, उज्जैन, इंदौर तथा मैसूर, बंगलौर तक गये। मारवाड़ में उन्होंने अपनी बस्तियां बसाईं। राजपूतानें के अन्य भागों में भी वे गये। अनेक अग्रवाल बंधु आयोध्या, लखनऊ, काशी, प्रयाग, कानपुर पटना, कलकत्ता, गोहाटी में जा बसे और कुछ सुदूर दक्षिण में जा बसे। हिसार के मार्ग से फतेहपुर (शेखावटी) का व्यापारिक संबंध पुराने समय से होने के कारण अनेक अग्रवाल परिवार शेखावटी के इलाकों में चले गए। 15 वीं शताब्दी में झुंझनू अग्रवालों की बहुत बड़ी बस्ती बन चुका था। शेखावटी के अन्य शहरों में भी अग्रवालों की संख्या बढ़ती गई। **इस प्रकार अग्रवाल जाति का निकास अग्रोहा से हुआ है, यह निर्विवाद सत्य है।**

धीरे–धीरे अग्रोहा मिटटी–धूल की परत से थेह में बदल गया। पंजाब सरकार के गजेटियर में लिखा है कि – अग्रोहा एक बहुत प्राचीन नगर था। यह स्थान अग्रवालों की जन्मभूमि कहा जाता है जो लगभग 2000 वर्ष पहले बहुत शक्तिशाली था। आग्रेयगण अग्रवालों का निकास स्थान है, यह सत्य सी. टी. राजर्स के उत्खनन कार्य के बाद स्पष्ट हो चुका था। राजर्स ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि, ''इस वैभवशाली नगरी के रहने वाले अग्रवाल वैश्य थे, जो कालांतर में बिखर कर आस–पास के इलाकों में जा बसे।

श्री ओमप्रकाश अग्रवाल के अनुसार – अग्रोहा सिकंदर के आक्रमण के बाद कमजोर पड़ गया, अत: अन्य पड़ौसियों के साथ मिलकर पुन: संगठित हुआ और ''अगाच्च मित्र पदा'' गणराज्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अगाच्च मित्र पदा के सिक्के भी अग्रोहा की खुदाई में मिले हैं। अगाच्च मित्र पदा के प्रमुख भाग इस प्रकार हैं – हिसार, हांसी, तोशाम, सिरसा, नारनौल, रोहतक, पानीपत, जींद, कैथल, मेरठ, दिल्ली, सहारनपुर, जगाधरी, विद्योनगर, नाभर, अमृतसर, अलवर व उदेपुर (शेखावटी)। –– शहाबुद्दीन की लड़ाई में बहुत से लोग मारे गये और उनकी अनेक स्त्रियां सती हुईं जो अब भी अग्रवालों के घर में पूजी जाती हैं। यह अग्रवालों के विनाश का समय था। जब मुगलों का राज्य हुआ तब अग्रवालों को अपना वजीर बनाया उसी काल से अग्रवालों की विशेष वृद्धि हुई – अकबर के मुख्य और प्रसिद्ध वजीर थे मधुशाह। मधुशाही पैसा इन्ही के नाम से चला है।

प्राचीन खंडहरों का विनाश – इस संबंध में ''**पंडित छज्जूमल**'' का मार्मिक विवरण पढ़ने योग्य है, जिसके अनुसार – 566 एकड़ के घेरे में फैले अग्रोहे के थेह इस वक्त सरकार के कब्जे में है। इसके अतिरिक्त हजारों बीघे जमीन वर्षा के कारण समतल हो गई, यहां पर बसने वाले लोगों ने उस पर यहां मालिकाना हक ले लिया है। इसको भी काफी वर्ष हो चुके

हैं। इस समतल जमीन में अभी भी ईंटें निकलती हैं। थेह की अभी भी सुरक्षा की और जरूरत है क्योंकि लोग यहां से ईंटे निकाल कर ले जा रहे हैं। इन्होंने अपने विवरण में लिखा है कि- लोगों की स्वार्थ परता के कारण अग्रोहा के चिह्न तीव्र गति से मिटते जा रहे हैं। मुझे बहुत दु:ख है। वे आगे लिखते हैं - यह जगह (अग्रोहा) हमारे भाई अग्रवाल वंशीय वैश्यों की जन्मभूमि है, और दो बार मैं यहां आया हूं। प्रथम बार जब मैं सन 1904 में पटवारी होकर यहां आया तब मेरी उम्र 23-24 साल की थी, तथा दूसरी बार 1931 में तब्दील होकर पटवार में आया। दूसरी बार मैंने बड़ा उलट फैर देखा, जिसे देखकर रोना आता था।

(यहां संक्षिप्त में यह विवरण दिया गया है, वैसे काफी बड़ा है। सोर्स - वैश्य अग्रवाल एक परिचय)

अग्रोहा का पुन: उद्धार - पतन के बाद भी अग्रोहा को पुन: बसाने के लिये कई बार प्रयत्न किए गये। एक प्रयास मेहम के बावन करोड़ी सेठ हरभजनशाह ने भी किया था। सेठ हरभजनशाह अग्रोहा का सर्वाधिक धनी व्यक्ति था, अग्रोहा में आई विपत्ति के समय वह जिला रोहतक के महम नामक स्थान पर आकर बस गया था। इन्होंने अग्रोहा के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया तथा वहां अपनी मंडी बसाई और लोगों को यहां आकर बसने के लिये प्रेरित किया। अग्रोहा को बसाने के लिये उन्होंने घोषणा करवा दी कि अग्रोहा में आकर बसने वाले को लोक-परलोक की शर्त पर रूपया उधार दिया जायेगा। इनको श्रीचंद नामक व्यापारी के पत्र से यह प्रेरणा मिली। इस प्रकार अग्रोहा पुन: बस गया।

1701 ईस्वी में जोधपुर रियासत के कुछ लोग अग्रोहा में आकर बस गये किंतु आस-पास के ग्रामीणों ने इनको तंग किया। अत: उन्होंने पटियाला के राजा अमर सिंह के **दीवान नानूमल अग्रवाल** से इसकी शिकायत की। दीवान नानूमल ने सन् 1774 में महाराजा अग्रसेन के किले के ऊपर **''नये किले का निर्माण''** अपने खर्चे से किया (यह सरकारी कागजात से प्रमाणित है, क्योंकि यह इलाका पहले महाराजा पटियाला के अधीन था।) और उसको अपने अधिकार में ले लिया। नानूमल अग्रवाल एक योग्य शासक थे, अपनी योग्यता के कारण ही वे राज्य में उंचे पदों पर रहे, मुगलों से उनके युद्ध भी हुए, जिनमे वे हमेशा विजयी रहे। पटियाला राज्य के उत्कर्ष में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। 1857 में अंग्रेजों ने इस शहर को तोपों से उड़ाकर पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया। आज भी इस किले की टूटी दीवार और 650 एकड़ में फैले किले के पुराने खंडहर तथा सतियों की मढ़ियां (छतरियां) देखी जा सकती हैं।

वर्तमान अग्रोहा निर्माण की कहानी – सन् 1912 में जब कुछ अग्रवाल बंधु अग्रोहा की थेह को जिज्ञासा भरी नजरों से देख रहे थे, तब अचानक एक ब्रह्मचारी अपने हाथ में झंडा लेकर उपस्थित हुए, अग्रवालों ने हाथ जोड़कर उनका परिचय पूछा तो उन्होंने अपना नाम ब्रह्मानंद ब्रह्मचारी बताया और थेह की ओर इंगित कर गंभीर वाणी में शोक व्यक्त करते हुए कहा कि – ''यह अग्रवाल जाति की अधोगति का का चिह्न है। इसी कारण यह अनुपम नगर उजाड़ पड़ा है। भारत वर्ष में करोड़ों की संख्या में अग्रवाल संतान के होते हुए भी आज कोई सज्जन अग्रोहा का जीर्णोद्धार करने वाला नहीं है। तभी यह दुर्दशा है। इस जाति में ध्वाजा धारी धनवान होते हुए भी इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा। यह कितनी शोक व शर्म की बात है। ब्रह्मानंद ब्रह्मचारी जी से इतनी भर्त्सना सुनकर मंडली के नेता लाला भोलाराम डालमिया ने ब्रह्मचारी जी के हाथ से ध्वज लेकर मंडली से सामूहिक रूप से प्रतिज्ञा करवाई कि हम सब मिलकर पितृभूमि का पुन: उद्धार करेंगे। -- (श्री निरंजन लाल गौतम ने अपनी पुस्तक के पेज नं. 67 पर लिखा है कि- हमें स्वामी ब्रह्मानंद जी के सुपुत्र श्री मनुदत्त शर्मा जी से भेंट करने का अवसर प्राप्त हुआ जो अग्रोहा के निवासी हैं और आजकल हिसार में ज्ञानोदय के संपादक हैं। स्वामी जी का अग्रोहा से विशेष संबंध रहा है। यह बात 1982 की है।) कहना होगा कि अग्रोहा के **पुन:निर्माण** में सर्वप्रथम **स्वामी ब्रह्मानंद** जी ने प्रयत्न किया। उन्होंने स्थान-स्थान पर घूम कर अग्रवालों में यह भावना भरी कि वे अपनी मातृभूमि का विकास कर उसे पुन: वैभव प्रदान करें।

सन् 1919 मे **अग्रवाल महासभा** का अधिवेशन अग्रोहा में हुआ, जिसमें अग्रोहा निर्माण का संकल्प लिया गया। 1935 में श्री सत्यकेतु विद्यालंकार, प्रो. रामसिंह, लाला तनसुखराम जैन आदि का दिल्ली से अग्रोहा में आगमन और निर्माण पर विचार किया गया। 1952 में श्री कमल नयन बजाज की अध्यक्षता में अग्रवाल सभा का पुन: अधिवेशन हुआ, लाला लाजपतराय के भतीजे श्री चंपतराय एडवोकेट की अध्यक्षता में भी एक अधिवेशन अग्रोहा को बसाने के लिए हुआ किंतु कोई प्रगति नहीं हुई। 1965 में दिल्ली के वयोवृद्ध समाजसेवी मास्टर लक्ष्मीश्नारायण जी अग्रवाल ने महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग कालेज की स्थापना हेतु महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग एंड टेक्निकल सोसायटी के नाम से अग्रोहा के थेह के पास 234 एकड़ जमीन खरीदी और इंजीनियारिंग कॉलेज खोलने की योजना बनाई, लेकिन यह योजना सफल नहीं हो सकी। फिर यहां मंडी बनाने का विचार किया गया, परंतु यह विचार भी सिरे नहीं चढ़ पाया।

आधुनिक अग्रोहा – धर्म भवन, साउथ एक्सटैंशन, नई दिल्ली में 5-6 अप्रैल सन् 1975 को श्री रामेश्वरदास जी गुप्त के प्रयासों से ''अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन'' का आयोजन हुआ और उसमें अग्रोहा निर्माण का संकल्प लिया गया। फलत: 1975 में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन का गठन हुआ। पर्याप्त प्रयास के बाद भी सम्मेलन को कानूनी अड़चनों के कारण इनकम टैक्स से छूट का प्रमाण-पत्र प्राप्त नहीं हो सका। अग्रोहा निर्माण के लिये धन एकत्र करने में इसकी आवश्यकता थी। इस बात को ध्यान में रखते हुए सम्मेलन ने ''अग्रोहा विकास ट्रस्ट'' के नाम से एक ट्रस्ट की स्थापना की। इसके लिये एक

विधान तैयार किया गया, जिसे सम्मेलन ने अपने इंदौर अधिवेशन में सर्वसम्मति से स्वीकार किया।

9 जुलाई 1976 ट्रस्ट का विधिवत पंजीकरण हो गया तथा 4 अक्टूबर 1976 को इनकम टैक्स में छूट का प्रमाण-पत्र मिल गया। अग्रोहा को तीर्थ के रूप में विकसित करने के लिये अग्रसेन इंजीनियरिंग कॉलेज सोसायटी के पदाधिकारियों ने अग्रोहा में अपनी 23 एकड़ भूमि अग्रोहा विकास ट्रस्ट को नि:शुल्क प्रदान की। इस भूमि की 5 अक्टूबर 1976 को विधिवत रजिस्ट्री हुई। 29 सितम्बर 1976 को अग्रोहा में आयोजित समारोह में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बनारसीदास जी गुप्ता से शिलान्यास के लिये आग्रह किया गया, अस्वथ होने के कारण वे अग्रोहा नहीं आ सके। श्री राममेश्वर दास जी के अनुज श्री कृणावतार गुप्ता, श्री तिलक राज जी के अनुज श्री बलदेवराज अग्रवाल और श्री ओम प्रकाश अग्रवाल ने चंडीगढ़ जाकर सीमेंट से निर्मित पांच ईंटों का मुख्यमंत्री श्री बनारसीदास जी से पूजन करवाया। गुप्ता जी ने अग्रोहा विकास कार्य के लिये अपना आशीर्वाद भी दिया। यही पांच ईंटें नींव में रखी गईं, परम्परा के अनुसार नींव में ताम्र पर अंकित नाग-नागिन जोड़े के साथ ताम्र पत्र और सिक्के भी रखे गये। ताम्र पत्र में अग्रवाल सम्मेलन व अग्रोहा विकास ट्रस्ट का नाम व निर्माण तिथि अंकित की गई।

अग्रोहा में पानी की व्यवस्था - अग्रोहा तथा आस-पास के क्षेत्र का पानी खारा होने के कारण वहां पीने के पानी की बहुत किल्लत थी। हरियाणा सरकार ने वहां वाटर वर्क्स का निर्माण आरंभ किया, जो बहुत छोटा बनाया जा रहा था, इसके लिये श्री बनारसीदास गुप्ता नें उस समय के वित्त मंत्री श्री रामशरण चंद्र मित्तल से संपर्क किया गया। इनके प्रयासों से वाटर वर्क्स चार गुना बड़ा बनाया गया। अग्रोहा निर्माण समिति के मंत्री श्री सुरेश कुमार गुप्ता ने अग्रोहा के आरंभिक निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही उन्होंने अपने टैंकरों द्वारा हिसार से अग्रोहा पानी भेजने की व्यवस्था की। श्री चाननमल बंसल ने अपने अध्यक्षीय काल में हरियाणा सरकार से अग्रोहा तीर्थ के लिये नहर से सीधे पानी लाने की मंजूरी ली। इसके बाद श्री नंदकिशोर गोयनका ने इस काम को आगे बढ़ाया और सीधे नहर से पानी मिल गया। अग्रोहा विकास ट्रस्ट का अपना वाटर वर्क्स बनवाया गया, टंकिया बनवाई गईं, इन्हीं से पानी साफ कर सप्लाई की व्यवस्था की गई।

अग्रोहा की रीति - ''एक मुद्रा और एक ईंट'' यानि सब एक के लिए - एक सब के लिए की भावना से ओत-प्रोत महाराजा अग्रसेन की कर्मस्थली अग्रोहा ने अब विश्व के मानचित्र पर अपना स्थान अंकित कर लिया है। यहां अग्रोहा विकास ट्रस्ट व अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा काफी कार्य किया गया है और यह अनवरत जारी है। आज अग्रोहा जिसे ''**पांचवा धाम**'' कहा जाता है, जहां शक्ति माताओं की अनेक मढ़ियां आज भी हजारों भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण करती हैं।

अग्रोहा में दर्शनीय स्थल

''अग्रोहा'' जहां कभी चारों तरफ रेत के टीले तथा रेत ही रेत हुआ करती थी तथा वीरानी का मंजर हुआ करता था, आज भव्य मंदिरों और दर्शनीय स्थलों की तीर्थ स्थली बन गया है। स्वामी ब्रह्मानंद जी ने यहां सन् 1908 में एक कच्चे कुएं का निर्माण करवाया जिसे बाद में विश्वेश्वर दयाल डालमिया ट्रस्ट ने पक्का करवा दिया तथा प्याऊ का निर्माण करवा दिया।

श्री अग्रसेन वैष्णव गौशाला – ये हरियाणा की सबसे पुरानी गौशालाओं में से एक है। स्वामी ब्रह्मानंद जी की प्रेरणा से इसकी स्थापना संवत् 1971 (सन् 1914) में भिवानी के सेठ भोलाराम डालमिया व लाला सांवलराम के प्रयत्नों से की गई। सन् 1915 में गौशाला के व्यय के लिये एक आटा चक्की भी लगवा दी गई। इस गौशाला का नया भवन बनाया गया है जो आधुनिक सुविधायुक्त व साज-सज्जा के कारण दर्शनीय बन गया है। इस गौशाला में हजारों गायों को रखने की सुविधा है।

महाराजा अग्रसेन जी का प्राचीन मंदिर – अग्रोहा के मुख्य मार्ग पर ही, विक्रम संवत् 1995 (1938-39) में कोलकाता के सेठ रामजीदास बाजोरिया ने एक धर्मशाला एवं एक मंदिर का निर्माण करवाया तथा इसी धर्मशाला में महाराजा अग्रसेन की संगमरमर की विशाल प्रतिमा भी स्थापित करवाई। कुछ वर्ष पूर्व अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा इसका जीर्णोद्धार किया गया तथा अब यह एक दर्शनीय स्थल है।

अग्रोहाधाम में अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा में बनाए गए – 250 कमरों सहित महाराजा अग्रसेन मंदिर, कुलदेवी महालक्ष्मी मंदिर, मां सरस्वती मंदिर, हनुमान मंदिर व 90 फीट उंची हनुमान जी की प्रतिमा, मां वैष्णोदेवी, तिरूपति बालाजी, रामेश्वर धाम, बाबा भैरवनाथ मंदिर, द्वारकाधीश मंदिर, द्वादश ज्योतिर्लिंग, **झांकियां** जिसमें – महालक्ष्मी जी का अग्रसेन जी को वरदान, राम दरबार, भगवान श्री कृष्ण, गंगावतरण, नौका विहार, पवित्र शक्ति सरोवर, अप्पूघर, डायनोसार, मां अन्नपूर्णा भोजनशाला, सिंहद्वार, तथा और भी अनेक मंदिर बनवाये गये हैं। सभी अपनी मनोहारी छवि के लिये प्रसिद्ध हैं।

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा निर्मित – स्थापित एवं संचालित **श्री अग्रसेन फाउंडेशन,** (अग्रोहा शक्तिपीठ) – महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय राजमार्ग पर 10 एकड़ जमीन पर ''अग्रोहा शक्तिपीठ'' का निर्माण किया गया है। इसमें – अग्रविभूति स्मारक, भगवान अग्रसेन जी एवं महारानी माधवी व उनके 18 पुत्रों का भव्य मंदिर, अटल लक्ष्मी मंदिर, मां माधवी अन्न क्षेत्र, ''अग्र सरोवर'' जिसमें 108 तीर्थों का जल भी प्रवाहित किया गया है, वातानुकूलित 54 ए.सी. कमरों का अतिथि भवन, धर्मशाला सफलतापूर्वक चलाई जा रही है। म्यूजियम हॉल – इसमें अनेक महापुरूषों के चित्र लगाए गये हैं, महाराजा अग्रसेन शोध संस्थान,

अब वहां पर म्यूजियम, लाइब्रेरी और रिसर्च सेंटर बन रहा है। इस शक्तिपीठ में अग्र भागवत कथा का पहली बार आयोजन किया गया।

शीला माता शक्ति मंदिर – यह भव्य मंदिर शीला माता की प्राचीन मढ़ी (प्राचीन मंदिर) के ऊपर त्रिशक्ति मंदिर के रूप में श्री तिलक राज जी अग्रवाल (मुंबई) ने अग्रोहा विकास संस्थान के माध्यम से सन् 1982 में बनवाना आरंभ किया। अचानक तिलकराज जी का देहांत हो गया, तत्पश्चात उनके पुत्र श्री शीतल कुमार अग्रवाल तथा श्री विनोद कुमार अग्रवाल और उनके परिवार कि सदस्यों ने इस भव्य मंदिर के निर्माण कार्य को पूरा किया। मंदिर में धार्मिक प्राण प्रतिष्ठा समारोह 16 फरवरी 1992 को पुरी के जगद्गुरू शंकराचार्य के कर कमलों द्वारा संपन्न किया गया। इसलिये यहां हर साल फरवरी माह के दूसरे या तीसरे सप्ताह में वार्षिक उत्सव मनाया जाता है। इस वर्ष 2020 में 29वां वार्षिक उत्सव मनाया गया। लाल पत्थर से राजस्थानी वास्तुशिल्प पैटर्न पर बनाये गये इस मंदिर का मुख्य गुंबद जमीन से 85 फीट ऊंचा है। जिसके अंदर राधाकृष्ण, श्री राम दरबार, माता दुर्गा, शिव परिवार, लक्ष्मी जी, सरस्वती देवी, हनुमान जी आदि के भव्य प्रकोष्ठ बने हैं। मंदिर के मुख्य द्वार के ऊपर महाराजा अग्रसेन जी की प्रतिमा स्थापित है। मंदिर के सामने हाथ जोड़ते हुए स्वर्गीय तिलकराज जी अग्रवाल की भव्य मूर्ति है। जो अग्रोहा के विकास में उनके योगदन की याद दिलाती है। मंदिर के वास्तुकार अहमदाबाद के श्री हर्षद चावड़ा थे। हर साल भाद्रपद अमावस्या (सितंबर) के दौरान मंदिर क्षेत्र में एक **मेले** का आयोजन किया जाता है।

महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज एवं शोध संस्थान तथा अस्पताल – 267 एकड़ विशाल भूमि पर बने इस कॉलेज का उद्घाटन 7 अगस्त 1994 को हुआ। 12 मार्च 1988 को नई दिल्ली स्थित हरियाणा भवन में बोर्ड के चैयरमैन पद्मश्री घनश्याम दास जी गोयल के सभापतित्व में हुई मीटिंग में कॉलेज की स्थापना का प्रस्ताव प्रयास किया गया। 8 अप्रैल 1988 को महाराजा अग्रसेन मेडिकल एजुकेशन एंड साइंटिफिक रिसर्च सोसायटी का सोसायटीज एक्ट में रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860 के अंतर्गत चंडीगढ़ में पंजीकरण करा दिया गया। 21 मई 1989 को श्री बनारसीदास गुप्त जी की अध्यक्षता में एक भव्य समारोह में मेडिकल कॉलेज तथा परिसर का शिलान्यास किया गया। 16 जुलाई 1990 को मुख्यमंत्री बनारसीदास जी गुप्ता द्वारा भूमि पूजन के साथ ही कॉलेज भवन के निर्माण में तेजी आ गई। कॉलेज परिसर में ही एक

हजार बिस्तर वाले अस्पताल का उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री देवगोड़ा जी द्वारा किया गया। ग्रामीण अंचल में बनने वाला यह भारत का सबसे बड़ा अस्पताल है। इस संस्थान को आगे बढ़ाने में प्रसिद्ध उद्योगपति स्व. ओम प्रकाश जिंदल का सर्वाधिक योगदान रहा है। इनके पुत्र सांसद श्री नवीन जिंदल इसके अध्यक्ष रहे तथा इसके निर्माण में आपका भी बहुमूल्य योगदान रहा।

अग्रोहा के थेह व पुराने किले के पुरातात्विक अवशेष – यह थेह (टीला) 566 एकड़ भूमि में फैला तथा 87 फीट ऊंचा है तथा प्राचीन अग्रोहा के वैभव को अपने आंचल में छुपाये हुए है। इस टीले के ऊपर पटियाला राज्य के दीवान नानूमल अग्रवाल द्वारा बनवाये हुए किले के खंडहर, प्राचीन नगर के अवशेष, ईंटों से बने मकानों की टूटी हुई दीवारें आदि स्पष्ट दिखाई देते हैं। इसी थेह पर ऊपर प्राचीन सतियों की मढ़ियां हैं, जिन्होंने जौहर किया था।

मेले – अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा प्रति वर्ष **''शरद पूर्णिमा''** को यहां विशाल मेला लगता है। चैत्र सुदी पूर्णिमा और फिर आश्विन पूर्णिमा को यहां हनुमान मंदिर पर भी मेला लगता है।

अग्रोहा में प्रथम **''महाकुंभ''** का आरंभ सबसे पहले 24-25 अक्टूबर 1982 को **शरद पूर्णिमा** के अवसर पर हुआ। लेखक स्व. श्री ओमप्रकाश जी लिखते हैं कि – इस महाकुंभ में लगभग 50 हजार अग्रबंधु उपस्थित थे। समारोह में तत्कालीन कांग्रेस महासचिव श्री राजीव गांधी, केंद्रीय मंत्री श्री सीताराम केसरी, हरियाणा के मुख्य मंत्री श्री भजन लाल, श्री बनारसीदास गुप्ता सहित सैंकड़ों समाज के प्रतिष्ठित नेता इस महाकुंभ में सम्मिलित हुए। श्री राजीव गांधी ने कुरीतियों को दूर करने व समाज विकास के साथ राष्ट्र रक्षा की भी शपथ दिलाई। मंचासीन पदाधिकारियों ने भी **श्री राजीव गांधी** के साथ शपथ पड़ी।

कहानी – अग्रोहा के विकास की

अग्रोहा में समय-समय पर मुख्य मंत्री, केंद्रीय मंत्री, राज्यपाल, विधायक, पत्रकार, दानदाता, समाज सेवी, कुलपति, न्यायाधीश आदि आये हैं तथा सभी ने अपनी तरह से विकास में योगदान दिया है। श्री नंदकिशोर गोयनका ने अग्रोहाधाम बनाने में जबरदस्त मेहनत की, पूरे भारत की यात्राएं कीं। महाराजा अग्रसेन ज्योति रथयात्रा तथा मासिक अग्रोहा धाम पत्रिका ने भी पूरे भारत में अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल की ज्योति जगाई है।

आरंभ में अग्रोहा विकास के संक्षिप्त बिंदु

12 अक्टूबर 1975 को श्री श्रीकिशन मोदी, श्री रामेश्वरदास गुप्ता, श्री तिलकराज अग्रवाल, श्री देवकीनंदन गुप्ता, श्री बद्रीप्रसाद अग्रवाल, श्रीमती स्वराजमणि अग्रवाल,मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, श्री बाबूलाल सलमे वाले, वैद्य निरंजन लाल गौतम, श्री बलदेवराज अग्रवाल, श्री एम.एम. बंसल, श्री राधेश्याम अग्रवाल तथा सिरसा के श्री गंगाविशन एडेवोकेट आदि अग्रोहा गये। सबने अग्रोहा के टीले का सर्वेक्षण किया, उस भूमि का भी निरीक्षण किया जिसे तीर्थ के रूप में विकसित करना था।

1. 1957–58 स्व. मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, दिल्ली के प्रयत्नों से अग्रवाल समाज में अग्रोहा विकास के प्रति चेतना जागृत करने हेतू अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के अधिवेशन में आयोजन और देशभर से अग्र विभूतियां उपस्थित।
2. 1962– अग्रोहा में वृहत् अग्रवाल सभा का आयोजन तथा हिसार, हांसी आदि से भारी संख्या में अग्र बंधुओं का आगमन।
3. 1965 – स्व. मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल तथा सेठ तिलकराज अग्रवाल द्वारा अग्रोहा में इंजीनियरिंग कॉलेज एवं टैक्नीकल ईंस्टीट्यूट स्थापित करने तथा अग्रोहा में मंडी बनाने की योजना और भूमि का क्रय।
4. 5–6 अप्रैल 1975 को धर्म भवन में आयोजित अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन में अग्रोहा को अग्रवालों का तीर्थ घोषित करने तथा वहां मेला लगाने का निर्णय लिया गया। 6–7 सितंबर प्रदर्शनी का आयोजन। स्मारिका का प्रकाशन, स्थान–स्थान पर समितियों का गठन।
5. 1975 – श्री तिलकराज अग्रवाल, मुंबई को अग्रोहा के निर्माण कार्यों का संयोजक नियुक्त किया गया।
6. 9 जुलाई 1976 को अग्रोहा विकास ट्रस्ट का पंजीयन कराया गया।
7. 29 सितंबर 1976 में श्री बनारसीदास गुप्ता द्वारा पूजित ईंटों से निर्माण का शिलान्यास। श्री देवीसहाय जिंदल ने समारोह की अध्यक्षता की ।
8. महाराजा अग्रसेन मंदिर – 31 अक्टूबर 1982 को इसका उद्घाटन मुख्यमंत्री श्री भजनलाल ने किया।
9. महालक्ष्मी जी का मंदिर – 28 अक्टूबर 1985 को इसका उद्घाटन पूर्व विता मंत्री श्री रामसरन चंद मित्तल ने किया।
10. 22 सितम्बर 1985 को श्री सुभाष गोयल ट्रस्ट के अध्यक्ष बने। उन्होंने नया मास्टर प्लान बनवाया। कभी धन की कमी नहीं आने दी।
11. 1985 में श्री नंदकिशोर गोयनका निर्माण समिति के अध्यक्ष बने, निर्माण कार्य को विशेष गति मिली। उन्होंने अपना तन–मन–धन सबकुछ अग्रोहा निर्माण के लिये समर्पित कर दिया।
12. 10 फरवरी 1989 अग्रोहा में शक्ति मंदिर के निर्माण का शुभारंभ।
13. 13 अप्रैल 1989 प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र का शुभारंभ।
14. 1989 – अग्रोहा विकास बोर्ड के प्रशासक के रूप में हरियाणा सरकार द्वारा श्री एस.सी. गुप्त की नियुक्ति।
15. 21 मई 1989 – हरियाणा के मुख्यमंत्री चौधरी देवीलाल द्वारा महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट परिसर का शिलान्यास। 54 छात्रों को मेडिकल कॉलेज में

प्रवेश।

16. 02 अक्टूबर 1989 मुंबई में भव्य सम्मेलन का आयोजन। श्री अटल बिहारी बाजपेयी मुख्य अतिथि।
17. 27 अक्टूबर 1989 – दूरदर्शन द्वारा महाराजा अग्रसेन वृत्तचित्र का प्रसारण।
18. 13 नवंबर 1989 में ट्रस्ट के प्रयासों से भारत माता मंदिर, हरिद्वार में महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा स्थापित।
19. 1989-90 – तीनों मंदिर, हॉल,रैम्पों का निर्माण, अतिथि शाला, 10 कर्मचारी क्वाटर्स, मंदिरों के गुम्बदों का निर्माण, पेड़ व घास का मैदान विकसित, डाक घर का निर्माण करवाकर उसे चालू करवाया गया। पत्रकार सम्मेलन का आयोजन किया गया। श्री रामकुमार रावलवासिया निर्माण समिति के अध्यक्ष मनोनीत। नव निर्वाचित अग्रवाल सांसदों व विधायकों का अभिनंदन। हरियाणा सरकार द्वारा 267 एकड़ भूमि मेडिकल कॉलेज के निर्माणार्थ सोसायटी को दी गई। 16 जुलाई 90 को ओपीडी ब्लॉक की नींव। महाराज अग्रसेन टैक्नीकल इंस्टीट्यूट की 10.5 एकड़ भूमि मेडिकल कॉलेज को हस्तांतरित, मेडिकल कॉलेज का निर्माण आरंभ।
20. 04 अक्टूबर 1998 – अग्रोहाधाम में प्राकृतिक चिकित्सा, योगसाधना एवं वानप्रस्थ आश्रम का उद्घाटन।
21. नवंबर 1990 – तारकोल की सड़कों का निर्माण, शाक्ति सरोवर मे मध्य समुद्र मंथन की झांकी के निर्माण का आरंभ, मुख्य द्वार पर कैंटीन का निर्माण।
22. 27 अक्टूबर 1991 अग्रोहाधाम में शरद पूर्णिमा के मेले का आयोजन।
23. 1992 में कलकत्ता के बाजोरिया परिवार द्वारा अग्रोहा के प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार। 11-16 फरवरी 1992 अग्रोहा विकास संस्थान के तत्वावधान में पुरी के पीठाधीश्वर जगतगुरू शंकराचार्य के सान्निध्य में शक्ति शीला मंदिर में देव प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा एवं भव्य शोभायात्रा।
24. 1992 – गाजियाबाद में अटल बिहारी बाजपेयी जी द्वारा महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा का उद्घाटन।
25. सितम्बर 1992 में शाक्ति सरोवर में भव्य समुद्रमंथन की झांकी का उद्घाटन।
26. 11 नवंबर 92 को अग्रोहा की प्राचीन धर्मशाला मंदिर में हनुमान जी की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा।
27. 1993 – 27 जनवरी को हरियाणा के राज्यपाल श्री धनिक लाल मंडल द्वारा अग्रोहाधाम की यात्रा और प्राचीन थेह की खुदाई का निरीक्षण, 22 फरवरी गुयाना में नियुक्त भारतीय दूतावास के श्री प्रवीण गोयल का सम्मान, 06 अप्रैल-हनुमान जयंती पर विशाल मेले का आयोजन।
28. मां सरस्वती का मंदिर – 1993 में अग्रोहा मेले के दिन इसका उद्घाटन किया गया।

29. विद्युत्त गृह – मुंबई के श्री शिवचरण गुप्ता ने पांच लाख खर्च कर एक बडे जनरेटर की व्यवस्था की, इससे विद्युत्त की अनिश्चितता खत्म हो गई।
30. 1994 – शक्ति सरोवर पर 68 कमरों की दूसरी मंजिल का निर्माण, स्नानगृहों एवं शौचालयों का निर्माण, अप्पूघर का शुभारंभ।
31. 16 अक्टूबर 1994 को जी.टी.वी द्वारा अग्रोहाधाम के वृत्तचित्र का प्रसारण।
32. फरवरी 1995 दिल्ली स्थित निकलसन पार्क का महाराजा अग्रसेन के नाम पर नामकरण।
33. 14 मार्च 1995 – महाराज अग्रसेन जलपोत पर 80 किलो वजन का पीतल से निर्मित अग्रसेन स्मारक चिह्न प्रतिस्थापित।
34. 15 अप्रैल 1995, हनुमान जयंती के अवसर पर श्रीगंगानगर के लिये महाराजा अग्रसेन ज्योति रथयात्रा का प्रस्थान। सेठ द्वारिका प्रसाद सर्राफ, सिरसा द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिये 5,11,101 रूपये दान देने की घोषणा। महाराजा अग्रसेन ज्योति रथ यात्रा का जी टी वी पर प्रसारण।
35. जुलाई 1995 केंद्रीय भूतल परिवहन मंत्री श्री जगदीश टाइटलर द्वारा दिल्ली से कन्याकुमारी तक सुपर नेशनल हाईवे क्रमांक एक का नामकरण महाराजा अग्रसेन के नाम पर करने की घोषणा।
36. 27 सितम्बर 1995 दिल्ली दूरदर्शन पर अग्रोहा धाम का वृत्त चित्र का प्रसारण।
37. फरवरी 1997 प्रधानमंत्री श्री देवगौड़ा द्वारा म. अग्रसेन मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पीटल, अग्रोहा में 300 बिस्तरों के भवन का शिलान्यास।
38. 02 अगस्त 1998 अग्रसेन–अग्रोहा–अग्रवाल संबंधित वेबसाइट का श्री ओम प्रकाश जिंदल द्वारा इंटरनेट पर उद्घाटन।
39. अक्टूबर 1998 में महाराजा अग्रसेन अनाज मंडी, अग्रोहा में दुकानों का आवंटन।
40. जनवरी 1999– हनुमान जी की 90 फीट प्रतिमा का निर्माण कार्य आरंभ।
41. 2001 अग्रोहा में तिरूपति बालाजी के भव्य मंदिर का निर्माण प्रारंभ।
42. 2001 बाबा अमरनाथ की पवित्र गुफा और शिवलिंग निर्माण का कार्य प्रारंभ।
43. 07 अगस्त 2001 – म. अग्रसेन मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के ढाई करोड़ की लागत से नवनिर्मित भवन के प्रथम खंड का मुख्य मंत्री श्री ओम प्रकाश चौटाला द्वारा उद्घाटन।

सन् 2001 के बाद से आज तक अग्रोहा का भव्य निर्माण जारी रहा है, आज अग्रोहा अपनी भव्यता लिये विश्व के मानचित्र पर सुर्खियां बटोर रहा है। देश व विदेश से अनेक अग्रवाल बंधु यहां पर आ रहे हैं।

एक सामान्य सी घटना, जो निर्माण का इतिहास बन गई।

अखिल भारतीय महाराजा अग्रसेन हॉकी प्रतियोगिता के पारितोषिक वितरण समारोह के अवसर पर 8 मार्च 1985 को हरियाणा के तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री भजन लाल, मुख्य अतिथि थे। आयोजकों व खिलाड़ियों को आशीर्वाद देने के बाद जब उन्होंने अपनी परंपरा के प्रतिकूल, अनुदान घोषित किये बिना ही स्थान ग्रहण कर लिया तो उपस्थित सभी दर्शक एवं आयोजक संकोच वश हो गये। उस अवसर पर श्री नंदकिशोर गोयनका जी ने मुख्य मंत्री से अनुदान हेतु उनके द्वारा स्थापित परंपरा का स्मरण कराया। मुख्य मंत्री ने यद्यपि 21000/- रूपयों का अनुदान घोषित किया परंतु उससे पूर्व उन्होंने अग्रोहा में चल रहे निर्माण कार्य पर असंतोष प्रकट करते हुए श्री गोयनका जी को कहा कि, आप के समाज को अनुदान क्या दूं, आप कुछ करने वाले तो हो नहीं, मैं जब भी अग्रोहा से गुजरता हूं, काम बंद ही दिखाई देता है। लक्ष्मी पुत्र वैभवशाली समाज अपनी जन्म भूमि के प्रति उदासीन क्यों है ?

मुख्य मंत्री के उपरोक्त शब्द श्री गोयनका जी के हृदय में एक वेदना उत्पन्न कर गये। इतिहास अपने आप को दोहराता है। गोयन्का जी ने हरभजन शाह की तरह इस चुनौती को स्वीकार किया तथा उनके हृदय में अग्रोहा निर्माण हेतु निष्ठा, लगन एवं तड़प जाग उठी। संयोगवश 12 मई 1985 को गोयनका जी को अग्रोहा निर्माण समिति का अध्यक्ष मनोनीत किया। आज उनकी तपस्या का परिणाम अग्रोहा धाम के रूप में हमारे सामने है। श्री गोयनका जी इसका संपूर्ण श्रेय समाज को देते हैं।

(सौजन्य - अग्रोहाधाम-स्वर्ण जयंती विशेषांक-अक्टूबर-नवम्बर 2001)

''**अग्रोहाधाम**'' को अग्रवाल-वैश्य समाज का पंचमधाम माना गया है, जिसका सार्वभौमिक संदेश कल भी शाश्वत- सनातन था, आज भी प्रासंगिक-सार्थक है और भविष्य में भी रहेगा। इसीलिए महाराजा अग्रसेन जी के प्रत्येक वंशज से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने जीवनकाल में, कम से कम एक बार, अग्रोहाधाम के दर्शन अवश्य करेगा। यदि आपने अभी तक यह सांस्कृतिक-आध्यात्मिक यात्रा संपन्न नहीं की है, तो बैठे क्यों हैं ? तत्काल खड़े हो जाइये और बंधु-बांधवों सहित अग्रोहाधाम-दर्शन के लिए निकल पड़िये।

पुस्तक-''अग्रोहाधाम-अंखियाँ कहिन'' से

अग्रोहा नव-निर्माण के आधार स्तंभ

आधुनिक अग्रोहा के बारे में स्व. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि - यह वह समय था जब, अग्रोहा में पीने का पानी सुलभ नहीं था। मुझे याद है कि जब अग्रोहा जाते थे तब दिल्ली से ही खाना-पानी साथ ले जाते थे। जब अग्रोहा विकास हेतु वहां की जमीन के नक्शे आदि लेने के लिये अग्रोहा जाता था तो बसें अग्रोहा मोड़ पर ही उतारती थीं और हमें अपनी जमीन तक पहुंचने के लिये पैदल ही जाना पड़ता था। उस समय अगोहा में एक भी अग्रवाल परिवार नहीं रहता था। हिसार के श्री महादेव कन्दोई के साथ पटवारी के अनेक चक्कर लगाने पड़े थे। उस समय पानी की बोतल भी बाजार में नहीं मिलती थी।

जिस 23 एकड़ जमीन पर आज अग्रोहा तीर्थ स्थल निर्मित हुआ है, वहां पर पैर आधा फीट तक जमीन में धंस जाया करता था। खेती के नाम पर लोगों ने जमीन पर कब्जा कर रखा था। शायद कुलदेवी महालक्ष्मी ने उसी जमीन को छुड़ाने के लिये बनारसीदास जी गुप्ता को उस समय मुख्य मंत्री बनाया था, उन्होंने रातों-रात जमीन को अनधिकृत कब्जे से मुक्त करा दिया था।

मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, दिल्ली

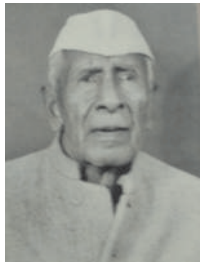

आप आधुनिक अग्रोहा निर्माण की नींव के कीर्ति स्तंभ थे। जन्मभूमि अग्रोहा को विकसित देखने के लिये आपने उस समय दिल्ली एवं अन्य स्थानों के मौहल्लों-मौहल्लों में जाकर अग्रसेन-अग्रोहा की अलख जगाई, उस समय जब बहुत कम लोग अग्रोहा के बारे में परिचित थे। आपने 1939 में दिल्ली में वैश्य कॉ ऑपरेटिव कॉमर्शियल बैंक की स्थापना कर हजारों कमजोर बंधुओं की आर्थिक सहायता की। 1965 में मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल ने अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग कॉलेज के स्थापना के लिये महाराज अग्रसेन इंजीनियरिंग एंड टेक्निकल सोसायटी के नाम से अग्रोहा के थेह के समीप 234 एकड़ जमीन खरीदी। 29 सितम्बर 1976 को अग्रोहा में निर्माण कार्य हेतु सोसायटी ने अपनी 23 एकड़ भूमि अग्रोहा विकास ट्रस्ट को प्रदान कर दी। आपने 1977 में महाराजा अग्रसेन ट्रस्ट की स्थापना कर हरिद्वार में विशाल अग्रसेन आश्रम का निर्माण करवाया। अग्रवालों में जागृति के लिये अग्रोहा तीर्थ पत्रिका का प्रकाशन किया। 50 वर्ष तक अग्रवाल समाज की सेवा कर आप 3 दिसम्बर 1983 को स्वर्गवास हुए। आपका जन्म 10 जून 1900 को दिल्ली में प्रख्यात समाज सेवी लाला प्रभुदयाल जी बंसल के यहां हुआ। लगभग 50 वर्षों तक आपने वैश्य समाज की नि:स्वार्थ सेवा की। महाराजा अग्रसेन जी की जयंती धूम-धाम से मनाने की प्रथा के प्रचलन में मास्टर जी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। आपके सहयोग से सर्व प्रथम शाक्ति नगर क्षेत्र में अग्रवाल भवन का निर्माण हुआ। इसके बाद तो स्थान-स्थान पर ''अग्रवाल भवन'' तथा ''अग्रसेन भवन'' नाम से धर्मशालाओं तथा सामुदायिक केंद्रो का तांता ही लग गया। ''अग्र गौरव'' संस्थापक के रूप में आपको हमेशा याद किया जाता रहेगा।

श्री रामेश्वर दास गुप्ता

संकल्प चाहे जो हो, धर्म भवनों को बनाने का हो, सामाजिक पत्रिका मंगल मिलन चलाने का हो, सारे भारत में अग्रवाल सभा संगठित करने का हो, पूर्वजों की धरती। अग्रोहा के पुनर्निर्माण का हो, योग पर ग्रंथावली लिखने का हो, देश में हिंदी व्यवहार बढ़ाने का हो, सरल विवाह पद्धति बनाने का क्रांतिकारी संकल्प हो – रामेश्वर दास जी हर काम में पूर्ण एकाग्रता के साथ जुट जाते थे। पहले लक्ष्य संधान होगा, फिर समय सीमा बंधेगी और युद्ध स्तर पर कार्य आरंभ हो जाएगा बचपन से ही प्रतिकूल परिस्थिति के प्रवाह में तैरते हुए पार हो जाने की कला उन्हें विरासत में मिली। उन्होंने अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन का अपूर्व संगठन खड़ा किया और सशक्त हाथों में संभला दिया। अग्रोहा को अग्रोहाधाम बनाने में उनकी मेहनत, लगन और निष्ठा गजब की थी। जीवन के अंतिम क्षणों तक उन्होंने सक्रियता के साथ समाज कार्यों की ज्योति जगाए रखी। आपका जन्म 16अप्रैल 1923 को नरेला गांव में हुआ। आपको अग्रवाल समाज का भीष्म पितामह कहा जाता है। अग्रोहा में न तो मीठा पानी मिलता न ही खाने-पीने की व्यवस्था थी, ऐसी परिस्थिति में भी आप महीने में अनेक बार अग्रोहा जाया करते थे। 1976 में डाक टिकट विमोचन समारोह के समय आपको दिल्ली पुलिस ने गिरफतार करने की धमकी दी थी। धमकी का कारण समाज के ही अपने लोग थे, लेकिन मनमानी करने वालों का आपने डटकर सामना किया। मनमानी करने वालों के विरोध में आपने अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन का त्याग कर दिया। लेकिन यह भी सच है कि आप ही के कारण समाज को एक नई पहचान मिली।

आप निष्काम समाज सेवी थे, अ.भा.अ.स. व अग्रोहा विकास ट्रस्ट के संस्थापक महामंत्री रहे। आप अग्रवाल समाज के उन पांच व्यक्तियों में प्रमुख थे, जिसे अग्रोहा में नवनिर्माण के शिलान्यास का गौरव प्राप्त है। आपको हिंदू धर्म के चारों जगद्गुरू शंकराचार्यों को एक स्थान पर मिलाने का श्रेय भी प्राप्त है। आपने भारत के अग्रवाल परिवार एवं दिल्ली के अग्रवाल परिवार के नाम से तीन निर्देशिकाओं का प्रकाशन किया, जिनकी संपूर्ण आय अग्रोहा विकास ट्रस्ट को सौंप दी।

श्री बनारसीदास गुप्ता

अग्रवाल समाज में श्री बनारसीदास जी का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। समाज के प्रति समर्पण की, उनकी एक गाथा है। वे अग्रवाल एवं वैश्य समाज की एकता और उसमें नव जागरण के प्रतीक बन गए। ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध लंबे समय तक चले स्वतंत्रता संग्राम के अथक सेनानी, राजनीति के पितामह, प्रगतिशील समाज सेवक तथा वैश्य एकता के मसीहा श्री बनारसीदास जी का जन्म 5 नवम्बर 1917 को हुआ। हरियाणा के आप दो बार मुख्यमंत्री रहे, सांसद रहे, अखिल

भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के लंबे समय तक अध्यक्ष पद पर रहते हुए आपने समाज हित के अनेक कार्य किये, अग्रोहा में मेडिकल कॉलेज व अस्पताल आपकी ही देन है। तीर्थ अग्रोहा के रूप में अग्रोहा के विकास कार्य को आपने न केवल तेजी से आगे बढ़ाया बल्कि अग्रोहा के समग्र विकास के लिये हरियाणा सरकार से अग्रोहा विकास बोर्ड का गठन करवाया। वे अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के अध्यक्ष भी रहे और अनेक कार्य उनके द्वारा संपन्न किये गए। अग्रवाल समाज के लिये आपने तीन सूत्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया जो अग्रवाल समाज और वैश्य समाज के लिये जागरण का मंत्र बन गये। सूत्र पहला – समाज में व्याप्त दहेज आदि कुरीतियों का उन्मूलन। इसके लिये आपने संपूर्ण देश में परिचय सम्मेलन तथा सामूहिक विवाह आयोजित करने में अहम भूमिका निभाई । दूसरा – सिर्फ अग्रवाल ही नहीं, सारे वैश्यों का एक सूत्र में संगठन। तीसरा – महाराजा अग्रसेन की प्राचीन राजधानी 'अग्रोहा' का समग्र विकास। आपका निधन 29 अगस्त 2007 को हुआ। अग्रोहा में मीठा पानी सुलभ नहीं होने के कारण निर्माण कार्य में बहुत बाधा हा रही थी। आपके और श्री रामशरण चंद मित्तल, (जो उस समय हरियाणा के वित्त मंत्री थे) के प्रयासों से भाखड़ा नहर से पानी लानेकी योजना भी क्रियान्वित हुई।

श्री तिलकराज जी अग्रवाल

श्री तिलकराज जी अग्रवाल को ''तीर्थराज अग्रवाल'' के नाम से भी संबोधित किया जाता है। आपकाा जन्म 29 नवम्बर 1922 को स्यालकोट में हुआ। आर्य समाज द्वारा हैदराबाद आंदोलन तथा पंजाब व्यापार मंडल के ब्रिकी कर के विरूद्ध सत्याग्रह में आपको 25 दिन तक के कारावास की सजा हुई। दिल्ली में आपने अग्रवाल सभा की स्थापना की। दिल्ली में ही अग्रवाल हॉस्पीटल, अग्रसेन बगीची ट्रस्ट तथा महाराजा अग्रसेन आश्रम ट्रस्ट- हरिद्वार सहित अनेक सामाजिक संस्थाओं की स्थापना में भी आपका योगदान रहा। लंदन, अमेरिका, कनाडा आदि में भी आपने अग्रसेन सभा की स्थापना की। 1965 में अग्रवाल सेवा समाज, मुंबई के अध्यक्ष बने।

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, अग्रोहा विकास ट्रस्ट तथा महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज के गठन में भी आपका योगदान रहा। अग्रोहा नव-निर्माण के लिये 1965 में मास्टर लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल के साथ अग्रसेन इंजीनियरिंग एंड टैक्नीकल कॉलेज सोसायटी के गठन में सहयोग दिया। सोसायटी का रजिस्ट्रेशन करवा कर अग्रोहा में 300 बीघा जमीन खरीदवानें में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। सितम्बर 1975 को आपको अग्रोहा का संयोजक बनाया गया। जुलाई 1976 में अग्रोहा विकास ट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन हुआ। अक्टूबर 1976 को श्री तिलक राज जी अग्रवाल अध्यक्ष- अग्रसेन इंजीनियरिंग एंड टैक्नीकल कॉलेज सोसायटी द्वारा 23 एकड़ जमीन अग्रोहा विकास ट्रस्ट को निर्माण हेतु प्रदान की गई। ट्रस्ट के उस समय के संयोजक श्री तिलकराज के द्वारा मई 1977 में पानी के अभाव में हिसार से टेंकरों द्वारा पानी मंगवाकर 22 कमरों की अतिथि शाला का निर्माण संपन्न करवाया।

तिलकराज जी तन-मन-धन से अग्रोहा का विकास करने का संकल्प ले चुके थे इसलिए अग्रोहा के विकास में अपना व्यक्तिगत योगदान देने के लिये आपने अग्रोहा विकास संस्थान के नाम से एक नई की संस्था की स्थापना की। ट्रस्ट से एक किलोमीटर दूर सती शीला माता की मढ़ी बनी हुई थी। उसी पर एक भव्य मंदिर बनाने का निर्माण कार्य वर्ष 1982 में प्रारंभ किया गया। 8 जनवरी 1988 को अचानक हृदय गति रूक जाने से आपका स्वर्गवास हो गया। श्री तिलकराज जी की अग्रोहा के प्रति समर्पण लगन, निष्ठा, संगठन प्रेम, दानशीलता को देखते हुए अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा 1996 में मेजर श्री रामप्रसाद पोद्दार पुरस्कार उनके पुत्र श्री शीतल कुमार अग्रवाल को प्रदान किया गया। धुन के धनी श्री तिलकराज जी अग्रोहा निर्माण के लिये पूरी तरह समर्पित थे, 1976 के इंदौर अधिवेशन में अग्रोहा नवनिर्माण हेतु सौ रूपये की एक हुंडी नीलाम की गई, आपने यह हुंडी 70 हजार रूपये में खरीदी। अग्रोहा निर्माण के कार्य को देखने के लिये आप मुबई से दिल्ली हवाई जहासे से आते और हवाई अड्डे से टैक्सी से अग्रोहा जाते, दिनभर वहां रहकर वापस रात को ही मुंबई लौट जाते थे। इस प्रकार आप अनेक बार अग्रोहा आये और गये।

श्री श्री किशन मोदी

24 अक्टूबर 1922 को राजस्थान के नीम का थाना कस्बे में आपका जन्म हुआ। आप वहां से सांसद भी रहे। 1975 में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन की स्थापना काल से आप जुड़े रहे और पहले अध्यक्ष बने। आपने अग्रोहा को एक नया रूप देने की घोषणा इंदोर में हजारों अग्रबंधुओं के समक्ष की। सबसे पहले आपने अपने पास से अग्रोहा के विकास के लिये 2.5 लाख रूपये की भेंट कर समाज को एक नई राह दिखाई। 29 सितम्बर 1976 को आपके कर कमलों से अग्रोहा के विकास की नींव रखी गई। अग्रोहा विकास ट्रस्ट के आप संस्थापक अध्यक्ष थे। आपके अथक प्रयासों से ही, 24 सितम्बर 1976 को भारत सरकार ने महाराजा अग्रसेन पर डाक टिकट जारी किया। 1971 से 1977 तक आप सांसद रहे।

श्री नंदकिशोर गोयनका

अग्रोहा को पंचमधाम-अग्रोहाधाम बनाने में आपके योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता। सन् 1985 में जब आपको निर्माण समिति का अध्यक्ष बनाया गया तभी से आपने तन-मन-धन के रूप में अपना सबकुछ अग्रोहाधाम को समर्पित किया है। आपके कुशल निर्देशन में ही कुलदेवी महालक्ष्मी, माता सरस्वती, वैष्णो देवी गुफा आदि अनेक दर्शनीय स्थलों का निर्माण हुआ। 28 नवंबर 1988 को हरियाणा सरकार के योजना विभाग द्वारा श्री नंद किशोर गोइनका को अग्रोहा विकास प्राधिकरण के सदस्य के रूप में मनोनयन किया गया। अग्रोहाधाम हेतु अपना पूर्ण जीवन समर्पित कर एक महान् आदर्श आपने

प्रस्तुत किया है। आपने अग्रोहा निर्माण के लिये जो कुछ किया, निष्ठा और समर्पण भाव से किया।

श्री सुभाष चंद्रा – सन् 1985 में आप अग्रोहा विकास ट्रस्ट के अध्यक्ष बनाये गए। अग्रोहा निर्माण के लिये आपने धन संग्रह में कमी नहीं होने दी। अग्रोहा मंदिर का वर्तमान स्वरूप आपके ही मस्तिष्क की उपज है। लक्खी सरोवर और उसके चारों ओर भव्य भवन का निर्माण भी आपके कार्यकाल में हुआ। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अग्रोहा की पहचान ''अग्रोहाधाम'' के रूप में बनाने में आपका बहुत बड़ा योगदान है।

डा. चंपालाल गुप्त – अग्रवाल समाज के इतिहास के मर्मज्ञ डा. चंपालाल जी, उन नींव के पत्थरों में से हैं, जिन्होंनें अपनी लेखनी के माध्यम से समाज में नई चेतना जाग्रत की। अग्रोहा को पंचमधाम के रूप में विकसित करने में अपनी अहम भूमिका निभाई। आपने अग्रवाल वैश्य समुदाय पर शोध के कार्य को अपने हाथ में लिया। अग्रोहाधाम मासिक पत्रिका के आप 15 वर्ष तक मानद संपादक रहे, आपके संपादन में इस पत्रिका की इतनी लोक प्रियता हुई कि तीस हजार से अधिक आजीवन सदस्य बने, इसको राष्ट्रीय पत्रिका का स्वरूप प्रदान किया, अग्रवालों में चेतना आई, अग्रोहा की तरफ अग्रवालों का ध्यान आकर्षित हुआ, दानदाताओं की संख्या बढ़ी, पूरे देश से अग्रवालों की अग्रोहा यात्राओं की संख्या बढ़ी।

श्री हरपतराय टाटिया – आप अग्रवाल समाज के उन पांच व्यक्तियों में से एक थे जिन्हें अग्रोहा निर्माण के शिलान्यास के अवसर पर ईंट रखने का सौभाग्य मिला। श्री नंदकिशोर गोयनका जी के साथ आप हमेशा कंधे से कंधा मिलाकर हर कार्य में अपना योगदान देते रहे। धन जुटाना हो, अग्रोहा का प्रचार-प्रसार करना हो, साहित्य प्रकाशन हो या अन्य कोई भी महत्वपूर्ण कार्य हो, आपने हर प्रकार से किया। सन् 1994 में महाराजा अग्रसेन ज्योति रथ यात्रा का संचालन पूरे देश में आपने सफलता पूर्वक किया। इस रथयात्रा के माध्यम से हजारों-लाखों की संख्या में अग्रवाल अग्रोहा से जुड़े। काफी धन भी एकत्रित हुआ। आपका पूरा जीवन समाज को समर्पित रहा। यह मेरा (लेखक) भी सौभाग्य रहा कि, मैं भी अनेक जगहों पर महाराजा अग्रसेन ज्योति रथ यात्रा में आपके साथ रहा और अपना योगदान दिया।

अग्रोहा नव निर्माण में अनेक जानी मानी अग्रबंधु हस्तियों का योगदान रहा है, जिसको कभी भुलाया नहीं जा सकता। श्री बालेश्वर अग्रवाल (आपके द्वारा सन् 1951 में ''हिंदुस्तान समाचार'' नाम से समाचार समिति का गठन किया। यह देश की पहली भाषाई संवाद समिति थी।), लाला बशेशर नाथ गोटेवाला, श्री सत्यकेतु विद्यालंकार, प्रो. रामसिंह, लाला तनसुखराम जैन, डा. स्वराजमणि अग्रवाल, श्री शिव कुमार गोयल, पिलखुआ, श्री ओमप्रकाश जी जिंदल, श्री देवी सहाय जिंदल, श्री नवीन जिंदल, चौधरी वृंदावन कानूनगो, श्री स्वरूप चंद गोयल, श्री शीतल कुमार अग्रवाल आदि अनेक अग्रवाल विभूतियों ने अपना योगदान दिया।

अग्रवाल समाज का समृद्धशाली व ऐतिहासिक ''साहित्य''

इतिहास अतीत का अध्यन है, जो सदियों तक स्थाई रहता है और दुनियां के किसी भी कोने में पहुंचने की योग्यता रखता है।

हर **जाति** की अपनी एक परंपरा होती है, जिसका उस जाति के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान होता है। उरूचरितम ग्रंथ में महाराजा अग्रसेन का उल्लेख मिलता है। भाटों के गीत भी अग्रवाल जाति के इतिहास का आधार हैं। भाटों के द्वारा गाये जाने वाले गीतों में अग्रसेन तथा अग्रवालों के बारे में बहुत कुछ विद्यमान है। ''**सन् 1920**'' से ही अग्रवाल समाज के इतिहास व साहित्य को समृद्धशाली बनाने के लिये अनेक विद्वान लेखकों ने अपना योगदान दिया। **तब,** जब – ''उस जमाने में आवागमन के साधन अत्यंत सीमित थे, यात्राएं कष्ट दायक थीं, विदेशियों द्वारा इतिहास संबंधी ग्रंथों को नष्ट कर दिया गया था, आज जैसी तकनीकी उन्नति नहीं थी, सुविधाओं का अभाव था।'' सामग्री-संकलन हेतु सैंकड़ों मील की यात्रा करना उनकी पूर्ण समर्पण शीलता को दर्शाता है। सीमित साधनों व सुख-सुविधाओं के अभाव के चलते, इन सभी लेखकों का निष्ठापूर्वक अध्ययन, चिंतन-मनन व अपनी जाति के प्रति जुनून साफ व स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इतिहास-लेखन में भी उन्होंने पुराने दस्तावेजों, भाटों के गीतो, श्रुतियों, शिला लेखों, सिक्कों, विभिन्न इतिहासकारों व यात्रियों द्वारा उल्लेख, तथा उस समय उपलब्ध शोध-सामग्री को आधार बनाया है।

जाति व राष्ट्र-धर्म के प्रति समर्पित, इतिहास का महत्त्व समझने वाले तथा अग्रवाल-समाज का भला व उत्थान चाहने वाले इन विद्वानों का मानना था कि – इतिहास बड़े गर्व और गौरव की चीज़ होती है, जिससे हमें अपने देश एवं जाति की उन्नति एवं अवनति जानने का सुअवसर मिलता है। **अपने बच्चों को गौरवशाली इतिहास पढ़ाकर ही, हम उनमें देश, जाति व समाज के प्रति समर्पण-भाव पैदा कर सकते हैं।** सबसे पहले स्व.भारतेंदु हरिशचंद्र जी ने ''**अग्रवालों की उत्पत्ति**'' नाम से एक छोटी सी पुस्तक सन् 1871 में लिखी, जिसे 1920 में श्री खेमराज कृष्णदास वैंक्टेश्वर प्रेस ने प्रकाशित किया। छोटी किंतु इस महत्वपूर्ण पुस्तक ने अग्रवाल जगत में हलचल पैदा कर दी, जिससे अग्रवालों को अपने गौरवशाली इतिहास का ज्ञान हुआ। इसे परंपरागत अनुश्रुति और महालक्ष्मी व्रत कथा नामक एक प्राचीन हस्तलिखित संस्कृत पुस्तक के आधार पर लिखा गया था।

भारतेंदु जी के बाद अग्रवाल समाज के इतिहास लेखन की बात करें तो ''अग्र साहित्य'' लिखने में अनेक प्रयत्न हुए हैं। यह सन् 1915-1920 से आरंभ हुआ। सन् 1915 में चुन्नी लाल अग्रवाल ने – अग्रवाल इतिहास भाग 1, सन् 1920 में गुरू ब्रह्मानंद ब्रह्मचारी ने – श्री विष्णु

अग्रसेन वंश पुराण, 1920 में ही हीरालाल शास्त्री ने - अग्रवाल वैश्योत्कर्ष, 1921 में बख्शीराम इन्दौरी ने - महाराजा अग्रसेन का जीवन-चरित्र, इसी समय बिहारी लाल जैन अग्रवाल सी.टी. ने - अग्रवाल इतिहास, 1924 में डा. रामचंद्र गुप्ता ने - अग्रवंश, 1938 में गुलाब चंद ऐरन ने - अग्रवाल जाति का प्रमाणिक इतिहास, 1938 में सत्यकेतु विद्यालंकार ने - अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास, 1934 व 1938 में श्री चंद्रराज भंडारी ने - अग्रवाल जाति का इतिहास, भाग एक व दो, 1942 में परमेश्वरी लाल गुप्त ने - अग्रवाल जाति का विकास, 1957 में वैद्य कृपाराम अग्रवाल ने - अग्रसेन और अग्रवाल, इसके बाद डा. स्वराजमणि अग्रवाल, डा.चंपालाल गुप्त, श्री शिवशंकर गर्ग, वैद्य निरंजन लाल गौतम, चौधरी वृंदावन कानूगो आदि अनेक विद्वानों ने अग्रवाल समाज के साहित्य को प्रकाश में लाने के लिये अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्री चिरंजीलाल अग्रवाल ने महाकाव्य ''अग्रकथा'' की रचना की जिसमें 16 सर्ग हैं तथा काव्य पंक्तियों की कुल संख्या 4300 है। श्री रमेश अधीर ने ''अग्रपथी'' खंडकाव्य लिखा। **डा. सत्केतु विद्यालंकार लिखते हैं** - भारत की वर्तमान जातियों में अग्रवाल जाति का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। अग्रसेन ''आग्रेय गणराज्य'' के संस्थापक थे। सन् 1934 में मेरा ध्यान अग्रवाल जाति के इतिहास की ओर गया और इसके लिये शोधकार्य मैंने संपन्न किया, वह 1938 में पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ।

प्रसिद्ध अग्रवाल झंडागान के लेखक - डा. विष्णुचंद्र गुप्त, महाराजा अग्रसेन जी की प्रसिद्ध आरती के लेखक अजमेर के स्व. श्री त्रिलोक गोयल ''जीजा'', अग्रसेन चालीसा को तो अलग-अलग पांच विद्वानों ने लिखा है, वीरता की विरासत - कैप्टीन कमल किशोर बंसल ने लिखी। नि:संदेह अग्रवाल समाज का साहित्य समृद्धशाली है, जरूरत है इसको संजोये रखने की। साहित्य व इतिहास के रूप में महाराजा अग्रसेन जी पर अब तक 160 से भी अधिक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। इनके अलावा काव्य रूप में, कहानियों तथा उपन्यासों के रूप में भी अग्रसेन जी की गाथा पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इन पुस्तकों के लेखकों को पढ़े तो उनकी पूजा करने का मन करता है, परंतु उनकी पुस्तकों का विलोप होना दु:खदायी है।

1. अग्र साहित्यकार **श्री सूबेसिंह गुप्ता** लिखते हैं कि - आज की पीढ़ी को जब अपने कोर्स की पुस्तक पढ़ने की फुर्सत नहीं हो तब कोई अग्रवाल समाज का साहित्य पड़ेगा, इसमें संशय ही है। सही भी है। श्री सूबेसिंह गुप्ता अपनी मासकि पत्रिका ''पंचमधाम' जनवरी 2016 के अंक में लिखते हैं कि - **यदि किसी व्यक्ति ने अपना दिवाला निकालना हो तो वह वैश्य-अग्रवाल के इतिहास पर व अन्य साहित्यक की रचना करके प्रकाशित करवायें।** पुस्तकों को खरीदकर वैश्य अग्रवाल समाज में कोई नहीं पढ़ता। जो लेखक 1000 पुस्तकें प्रकाशित करवाता है, वे वर्षों रखी रहती हैं। उन पर किया हुआ खर्च भी वापिस प्राप्त नहीं होता। इसी कारण वैश्य अग्रवाल समाज पर कोई भी पुस्तक को प्रकाशक छपवाने के लिये तैयार नहीं होता। यदि संस्थाओं के पास अपने इतिहास और साहित्य की पुस्तकें होंगी तो कोई न काई उसको अवश्य पढ़ेगा।
2. **श्री रामरंग जी** अपनी पीढ़ा व्यक्त करते हुए लिखते हैं - जो त्यागी तपस्वी विद्वान दाने-दाने

को तरस कर मर गये, उनकी अनपढ़-आक्रोषित संतान उन दुर्लभ कृतियों को, अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर को कबाड़ मानकर घूरे पर डाल रही है। आज भी यह परंपरा ज्यौं की त्यौं चल रही है जो अनुसंधान पूर्वक, एक-एक पंक्ति के लिये 10-10 ग्रंथो का अवलोकन कर प्रमाणिकता से लेखन कर रहे हैं, उन्हें स्वनाम धन्य कौन कुबेर दाने डाल रहा है।

3. **डा. रामचंद्र गुप्ता** ने अपनी सन् **1924** में लिखी पुस्तक में लिखा है कि - आजकल ऐसे नौजवान बमुश्किल से मिलते हैं जिनका झुकाव इतिहास साहित्य लेखन की तरफ हो। यानि यूं कहें कि झुकाव नहीं रखते।
4. इन विद्वानों ने अपनी लेखनी के लिये एक दोहे की रचना इस प्रकार की है कि - दो गज धरती व कफन, यही हमारा मोल, जीवन भर संग्रह किया, मिला तुझे क्या मोल। सत्य भी यही है कि एक लेखक को अनेक पुस्तकों का संग्रह कर उनका अध्ययन करना पड़ता है, एक-दो साल एक पुस्तक लिखने में लग जाते हैं।
5. इन लेखकों के स्वर्गवास के बाद कोई व्यक्ति या संस्था इनकी रचनाओं को जागृत नहीं कर सकीं। कहा भी गया है कि - जो कार्य व्यक्तिगत प्रतिभा के आधार पर पूरे होते हैं, उनका उत्तराधकारी कोई नहीं होता। लेकिन लेखक को किसी संस्था का संरक्षण मिलना बहुत कठिन है।

(लेखक के पास अग्रवाल समाज से संबंधित ''समृद्धशाली साहित्य'' का अद्भुत व अनमोल संग्रह है।)

पुस्तक - ''अग्रवंश अर्थात् अग्रवाल इतिहास''

अग्रवंश
अर्थात्
अग्रवाल इतिहास
लेखक – डॉ. रामचन्द्र गुप्ता
पुत्री श्री लाला शोभाराम अग्रवाल
प्रकाशक एस आर गुप्ता
अनीठ गंज, शेखा रियासत, पटियाला

सितंबर 1924 में उर्दू
में छपी पुस्तक है।

आठ अध्यायों में विभक्त ''अग्रवंश अर्थात् अग्रवाल इतिहास'' सन् 1924 में ''**उर्दू**'' भाषा में **डा. रामचंद्र गुप्ता** पुत्र श्री लाला शोभाराम अग्रवाल (निवासी - अनीठ गंज, शेखा रियासत, पटियाला) ने लिखी थी। सन् 1920 में प्रकाशित बाबू भारतेंदु हरिश्चन्द्र की 'अग्रवालों की उत्पत्ति' नामक पुस्तिका को वे नहीं देख पाये। इतिहास पर आक्रांताओं के दुष्प्रभाव से भी वे परिचित थे। आप लिखते हैं कि - विदेशियों ने न-केवल हमारे ग्रंथों को नष्ट किया, बल्कि

ऐतिहासिक रूप से हमें पिछड़ा व जाहिल भी बताया है। आपका कहना है कि - इतिहास बड़े गर्व और गौरव की चीज़ होती है, जिससे हमें अपने देश एवं जाति की उन्नति एवं अवनति जानने का सुअवसर मिलता है। डा. गुप्ता का जन्म अग्रवाल जाति के मशहूर खानदान ''कटारिया खानदान'' में वि.सं.1921 में लाला ऊधममल, निवासी शेखां, रियासत पटियाला, के घर में हुआ था।

आश्चर्य तो तब हुआ जब आपने संदर्भ पुस्तकों की जो सूची दी, और जिनका अध्ययन कर इस पुस्तक को लिखा। जैसे - महाभारत, वायुपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, हर्षचरित, विक्रमचरित, रघुवंश, अग्निपुराण, अग्रपुराण, विष्णुपुराण, मनुस्मृति, महावंश, भारत की प्राचीन सभ्यता का इतिहास, प्राचीन राजवंश (भाग दो), महाराजा अशोक का जीवन-चरित, महाराजा विक्रम महान् का जीवन-चरित, भारत की तारीख, तारीखे हिन्द (प्रथम भाग), लाला लाजपतराय, दुनियां का इतिहास (दो भाग) The Early History of India by V.A. Smith, Oxford History of India by V.A Smith, Epigraphy Indica, तारीख हिन्दुवान् (प्रथम भाग), जीवनचरित प्रह्लाद, मैगस्थनीज़ का भारत-वर्णन, ह्वेनसांग का सफरनामा, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, श्रीमद्भागवत, सत्यपुराण, Indian & the Western World, बम्बई गज़ेटियर (जिल्द - प्रथम व द्वितीय), भर्तृहरि नाटक, वंशावली राजा मानमौरी, अग्रवाल-वैश्य इतिहास, वंशावली राजा रत्नसिंह, चेतराम, बाली द्वीप का इतिहास आदि-आदि। पुस्तक में दी गई संदर्भ ग्रंथों की सूची बताती है कि उनकी मेहनत और उनका अध्ययन कितना गहरा था।

पुस्तक की ''भूमिका'' में आर्य समाज के विद्वान ''श्री काशीराम, नरवाना'' लिखते हैं - किसी जाति और राष्ट्र का विवरण ज्ञात करना हो, तो उसके इतिहास का अध्ययन कर लो। दुर्भाग्य से, प्राचीन समय में, हमारे यहाँ बाक़ायदा इतिहास लिखने का बहुत कम रिवाज़ था, और खासकर, जाति-इतिहास तो बहुत कम मिले हैं। इतिहास लिखने में जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, उनसे वही लोग परिचित हैं, जिन्होंने इस क्षेत्र में पदार्पण किया है। दिन-रात की मेहनत, हजारों मील का सफर, सैंकड़ों पुस्तकों का अध्ययन, वरिष्ठ जनों से साक्षात्कार करके वस्तुस्थिति ज्ञात करना, एक ऐसे आदमी का काम है, **जिसके सिर पर जातीय इश्क का भूत सवार हो।** आजकल के नौजवान ऐसे मुश्किल काम की तरफ झुकाव नहीं रखते। अग्रवाल जाति को डॉ0 रामचन्द्र जी का शुक्रगुजार होना चाहिए, जिन्होंने बहुत मेहनत और जान लगाकर, सैंकड़ों किताबों की छान-बीन करके और हजारों मील के सफर की मुसीबतें उठाकर, यह इतिहास तैयार किया है। कांशीराम जी आर्य ने लिखा है कि - जिन कौमों को अपने इतिहास का ज्ञान नहीं होता उनका अपने बुजुर्गों से संबंध टूट जाता है। परिणाम स्वरूप उन कौमों का इकबाल नीचे गिर जाता है और उनकी उन्नति अवनति में बदल जाती है, क्योंकि वे कौमें अपने बुजुर्गों के कामों से बेखबर हो जाती हैं।

हॉल ही में दुर्लभ किंतु अनुपलब्ध इस ''उर्दू पुस्तक'' का हिंदी अनुवाद **श्री तरसेम मित्तल, कुरूक्षेत्र** द्वारा करवाया गया है, तथा इस पुस्तक के हिंदी संस्करण को काफी मेहनत करके छपवाया है।

रोचक जानकारी - पुस्तक - ''अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास''

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष, बम्बई ने - सर्वप्रथम अग्रवाल जाति का इतिहास लिखने के लिये विद्यालंकार जी से आग्रह किया, संस्था के स्थापित कोष से 175 रूपये की मासिक आर्थिक सहायता दी जाती रही, फलस्वरूप 1938 में डा. सत्यकेतु विद्यालंकार जी कृत ''अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास'' समाज के सम्मुख आया। डा. सत्यकेतु विद्यालंकार जी ने 1934 में अग्रवाल समाज पर शोध कर पुस्तक लिखने का प्रण किया। आपको जानकर यह आश्चर्य होगा कि यह पुस्तक सबसे पहले ''**फ्रांसीसी भाषा**'' में प्रकाशित हुई, और लेखक को पेरिस विश्वविद्यालय ने ''**डी.लिट. की डिग्री**'' प्रदान की। फ्रांसीसी भाषा की इस असल किताब का हिंदी अनुवाद स्वंय विद्यालंकार जी ने तैयार किया था। यह **हिंदी** की पुस्तक ''अखिल भारत वर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष बंबई'' ने छापी। उस जमाने में ''उर्दू'' का बोलबाला था, अत: अग्रवाल बंधुओं व विद्वानों ने जोरदार मांग की, कि - इस हिंदी पुस्तक का अनुवाद ''**उर्दू**'' में किया जाए। इसी मांग को ध्यान में रखकर हिंदी की पुस्तक का अनुवाद ''श्री बाबू बालकृष्ण, एम.ए.'' ने ''**उर्दू**'' में किया जिसका प्रकाशन सन् 1939 में हुआ। ''**उर्दू**'' में लिखी इस पुस्तक की ''**भूमिका**'' जो उस समय के विद्वान, स्वंय ''श्री बाबू बालकृष्ण, एम.ए.'' ने लिखी थी। बंधुओं - सन् 1938 के जमाने में एम.ए. होना व अनेक भाषाओं का ज्ञाता होना बहुत बड़ी बात थी, कोई बिरला इंसान ही ऐसा होता था। आपने इस पुस्तक में ''महालक्ष्मी जी के वरदान'' को भी लिखा है।

अग्रबंधुओं के लिये प्रस्तुत है सत्यकेतु विद्यालंकार जी की पुस्तक की --- महत्वपूर्ण भूमिका --

वर्तमान समय में हर एक देश व जाति अपने प्राचीन इतिहास को ठीक-ठीक जानने का प्रयत्न करती है। हर एक जाति व देश के इतिहास पर हर जगह जबरदस्त खोज हो रही है। ये बात प्रमाणिक तौर पर मानी जा रही है कि किसी जाति का भविष्य उस समय तक शानदार नहीं बन सकता जब तक कि उसके शानदार भूतकाल का नक्शा उसके सामने न हो। भूतकाल की रोशनी में ही कोई भी जाति भविष्य के रास्ते पर मुस्तैदी, उम्मीद, होंसला और जोश से कायम हो सकती है।

सभी अग्रवाल भाई इस बात को पारंपरिक रूप से जानते हैं कि **इनका भूतकाल किसी समय में बड़ा शानदार रहा है।** मुद्दत से जरूरत महसहूस की जा रही थी कि अग्रवालों का विश्वसनीय इतिहास तैयार किया जाए। इसके लिये कई लोगों ने समय-समय पर कोशिश की, मगर अब तक पक्के ऐतिहासिक तौर पर, कोई किताब इस बारे में किसी लेखक द्वारा लिखी नहीं

गई। शुक्र है कि हिंदुस्तान के प्रसिद्ध ''इतिहासकार डा. सत्यकेतु विद्यालंकार'' ने इस काम को अपने हाथ में लिया और वर्षों की सख्त मेहनत के बाद अग्रवालों का इतिहास कायम हुआ। इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि अग्रवाल जाति का इतना मुस्तैद, आला और मुकम्मल इतिहास अब तक कहीं भी प्रकाशित नहीं हुआ। इस बात की विशेषता, इस बात से पता चलती है कि इस लेखक को पेरिस विश्वविद्यालय ने ''डी.लिट.'' की डिग्री प्रदान की। **असल किताब फ्रांसीसी भाषा** में प्रकाशित हुई, जिसका हिंदी अनुवाद लेखक ने खुद तैयार किया था। हिंदी संस्करण बहुत जल्दी प्रसिद्ध हो गया। उर्दू जानने वाले लोगों की तरफ से यह मांग की गई कि इसका उर्दू संस्करण भी निकाला जाए ताकि उर्दू जानने वाले बहुत सारे लोग भी इसका लाभ उठा सकें। लिहाजा हमनें उर्दू जानने वाले लोगों के लिए ये ''उर्दू संस्करण'' तैयार किया है। उम्मीद है कि सभी लोग इसको इसी तरह अपनाएंगे जिसको तैयार करने के लिए हमसे मांग की गई थी।

बाबू बालकृष्ण एम.ए

तारीख :- 18 जून 1939

महालक्ष्मी का महाराजा अग्रसेन को वरदान

- तुम्हारे खानदान में भूमि हमेशा हरि-भरी रहेगी।
- तुम्हारे खानदान में धर्म व इंसानों की रक्षा करने वाले पैदा होंगे।
- आज से लेकर तुम्हारा खानदान तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा।
- तुम्हारे बाजुओं में सदा ताकत रहेगी और तुम कभी किसी पर अत्याचार नहीं करो।
- हे राजन्, युग-युग में तुम्हें कामयाबी मिले और तुम हमेशा अग्रणी रहो।
- तुम्हारा ''**अग्रवंश**'' ऐसा होगा कि जिसमें मेरी पूजा हमेशा बनी रहेगी।

अनुवादक - बाबू बालकृष्ण,एम.ए. सन् - 1939
मूल्य - एक रूपया आठ आना
आग्रेयगण (अग्रवाल कुल) के पैत्रिक महान् राजा का
अपना अलग खानदान, यानि नया खानदान चलाने वाले
महाराजा अग्रसेन
और
वैश्यों के संरक्षरक, वेद मंत्रों के रचने वाले
''**राजा मांकिल**'' की पवित्र याद में ।

पता - इतिहास सदन, फायर ब्रिग्रड के पीछे, कनाट सर्कल, नई दिल्ली

श्री सत्यकेतु विद्यालंकार इतिहासकार भी थे जिन्होंने इतिहास पर अनेक पुस्तकें लिखीं जैसे - भारतीय संस्कृति का विकास, मध्य एशिया तथा चीन में भारतीय संस्कृति, प्राचीन भारतीय इतिहास का वैदिक युग, यूरोप का आधुनिक इतिहास - तीन भाग, विश्व का संक्षिप्त इतिहास्र, भारत में राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास आदि।

अग्रसेन-अग्रोहा पर ''किवदंतियां''

भारत में ही नहीं बल्कि समस्त संसार में एक परंपरा चली आ रही है कि रोचक, रोमांचकारी तथा गौरवशाली इतिहास धीरे-धीरे लोक कथाओं में बदलता रहता है और **इसका ऐतिहासिक पक्ष लोप होकर चमत्कारिक लोक कथा का रूप ले लेता है।** यही नागवंशी वैश्यों के साथ हुआ और ऐसा ही महाराजा अग्रसेन की कथा के साथ जुड़ गया जिसमें - उनकी पुत्र वधुएं मानव व सर्प दोनों रूप धारण कर लेती थीं। डा. परमेश्वरी लाल गुप्त ने इस कथा को निराधार बताया है। वैसे महाराजा अग्रसेन व अग्रोहा राज्य के विषय में अनेक किवदंतियां प्रचलित हैं, जिनमें - **''एक रूपया और एक ईंट''** सर्वाधिक लोकप्रिय है। प्राय: ऐसा होता आया है कि कई ऐतिहासिक पुरूष अपने जन-नायाकत्व के कारण महाकाव्य और लोक गीतों आदि के नायक के साथ-साथ चारणों, भाटों एवं लोक गाथाओं के विषय बन जाते हैं, जिससे उनके जीवन के साथ अनेक चमत्कार, चमत्कारिक घटनाएं और अतिश्योक्तियां जुड़ जाती हैं। यह ग्रामीण लोक देवताओं में बहुतायत से देखा जा सकता है। वैसे चारण-भाटों का तो पेशा ही विरूदावली को आकाश पर चढ़ा देना था।

- विदुषी डा. स्वराजमणि के अनुसार - अग्रसेन के बारे में आज जितनी भी भ्रांतियां बनी हुई हैं उनका मुख्य कारण यह है कि इतिहासकारों ने मूल आधार पर ध्यान न देकर, इतिहास लिखने की चेष्टा की और मनगढ़ंत किस्से कहानी अग्रसेन के महत्व को दर्शाने के लिये उनके साथ जोड़ दिये। जैसे लक्ष्मी जी का वरदान, इंद्र युद्ध, यज्ञ में अश्व मांस का बोल उठना, नाग कन्यांओं से विवाह आदि। कथा में चमत्कार पैदा करने के लिये इनको जोड़ा गया है। यद्यपि - चमत्कार व अतिश्योक्ति प्राचीन लोक साहित्य की एक विधा रही है।
- परम्पराएं जब प्रमाणिक रूप ग्रहण करती हैं तब उनके साथ और भी कई कथाएं, अतिश्योक्तियां आदि जुड़ जाती हैं। - **अग्रसेन ने कभी अवतार के रूप में जन्म नहीं लिया।** वे लोकतंत्रीय शासन की एक नई सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था के करण वे प्रसिद्ध हुए।

-- पुस्तक -स्वराजमणि अग्रवाल-पेज 34

- डा. स्वराजमणि की पुस्तक में प्रसिद्ध समाज सेवी श्री नंदकिशोर जी गोइनका ने भी लिखा है कि - लोग बहुत अनाप-शनाप लिखते हैं। अनेकों से अनेकों बातें सुनी। भांति-भांति की तरह-तरह की सुनी लेकिन बोलते क्या ?
- सत्यकेतु जी ने 1938 में लिखा था कि - अग्रसेन जी की घरों में देवीय रूप में पूजा की जाती है, इस कारण अग्रसेन जी का वास्तविक व ऐतिहासिक स्थिति पर पर्दा डाल दिया गया है।

- डा. स्वराजमणि – इस संबंध में इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि जब अग्रसेन जी की कथा लिखी गई थी तब उस समय चमत्कारिक देवी सहायता तथा अन्य चमत्कारिक घटनाओं द्वारा महान् कार्यों के संपन्न होने की कल्पना की जाती थी। जैन ओर बौद्ध पुराणो में ऐसी घटनाएं भरी पड़ी हैं।

1. गोकुलचंद-रतनसेन की कथा

कहते हैं कि – सिकंदर के आक्रमण के समय अग्रोहा में गोकुलचंद और रतनसेन नामक राजवंशी वैश्य अग्रवाल रहते थे। कहा जाता है कि, सिकंदर ने जब अग्लसेई पर आक्रमण किया तो इन वीरों में आपस में फूट पड़ गई और रतनसेन तथा गोकुलचंद अपने नगर-राज्य के विरोधी हो गये। सिकंदर ने जब देखा कि वह अग्रोहा पर किसी तरह विजय नहीं प्राप्त कर सकता तो उसने भेद नीति का सहारा लिया और उन्हें राजगद्दी सौंपने का प्रलोभन देकर आपने साथ मिला लिया।

गोकुलचंद और रतनसेन ने अवसर पाकर एक रात नगर का द्वार खोल दिया। सिकंदर के सिपाही नगर में घुस गये। उन्होंने चौतरफा लूट मचा दी, जिससे अग्रोहा के वीर घबरा गये, गोकुलचंद ने मौका देखकर शस्त्रागार में आग लगा दी। अग्रोहा के वीरों ने अपने नगर की रक्षा में कोई कसर नहीं छोड़ी। नगर का बच्चा-बच्चा इस युद्ध में काम आया। इसमें नंदकुमार, इंद्रसेन, अमरसेन तथा कुमार उत्तमचंद के नाम उल्लेखनीय हैं। इन अमर शहीदों ने अपने जीवन की आहुति देकर नगर की शौर्य गाथा में चार चांद लगाए। सिकंदर विजयी तो हुआ, वह नगर के मन पर विजय प्राप्त नहीं कर सका। हजारों की संख्या में नारियां सती हो गईं। उनकी वीरता पर मुग्ध होकर सिकंदर उन्हें राज्य सौंपकर अपने देश वापस चला गया।

आचार्य रामरंग – सिकंदर के समय रत्नसेन व गोकुलचंद देशद्रोही हो गये तो हो गये। यह हिंदुओं को विधाता का शाप है। फूट उपहार में मिली है।

2. अग्रोहा के जलने की कथा

कथा है कि – अग्रोहा की खुदाई में अग्रोहा नगर जला हुआ पाया गया है। यद्यपि यह नगर किसी यूनानी, शक व हूण के द्वारा जलाया गया है, जिसे कहानी का रूप दिया गया है।

कथा इस प्रकार है कि – एक बार अग्रोहा में श्रृंगनाथ नाम के संन्यासी अपने शिष्य कीर्तिनाथ के साथ आये। नगर की भव्यता व शांति को देखकर उन्होंने वहां समाधि लगाने का निश्चय किया। शिष्य को आज्ञा दी कि तुम धूनी को जलाये रखना साथ ही नगर से अपने पोषण के लिये भिक्षा मांगकर लाते रहना। शिष्य को भिक्षा मांगना रास नहीं आया। वह भूखा ही सो गया।

दूसरे दिन एक कुम्हारिन को उस पर दया आ गई। उसने उसे भरपेट भोजन दिया और एक कुल्हाड़ी दी ताकि वह जंगल से लकड़ी काटकर अपना निर्वाह कर सके। इस प्रकार

लकड़ी बेचकर वह पेट भरता रहा और गुरूजी की सेवा करता रहा। 06 महीने बीत गये। एक दिन बाबा ने आंखें खोलीं और शिष्य का हालचाल पूछा। शिष्य कीर्तिनाथ ने सारी बातें बता दीं और कहा कि उसने काम करके अपनी उदर पूर्ति की। समाचार जानकर बाबा ने कहा यह नगर कल तक जलकर समाप्त हो जाएगा। शिष्य ने कहा, मैं अपनी दादी कुम्हारिन से मिलकर आता हूं। शिष्य ने बात कुम्हारिन को बताई और कहा कि कल सवा पहर के अंदर यह नगर जलकर राख हो जाएगा, तुम यहां से तुरंत निकल जाओ। कुम्हारिन ने यह बात पूरे नगर में फैला दी और स्वयं सुरक्षित स्थान पर चली गई। दूसरे दिन नगर में लपटें उठने लगीं, अग्रोहा जलकर भस्म हो गया। जो बचे वो आस-पास के नगरों मे चले गये।

- ऐसा कहा जाता है कि यह घटना विधर्मियों द्वारा हुई लेकिन रोचकता के साथ इसे कथा का रूप दे दिया गया।
- जाने-माने विद्वान आचार्य रामरंग जी के अनुसार - अग्रोदक के नर-नाहर प्रत्यक्ष समर में लोहा लेते रहे। वहां की नारियों ने अपने सतीत्व की रक्षा के लिय जौहर किए। अग्रोदक का भीषण अग्नि कांड किसी के शाप से हुआ, यह कथा जोड़ी गई प्रतीत होती है। अनेकों सतियों की समाधियां प्रबल संघर्ष का प्रमाण हैं। यहां के टीले-कोट-कंगूरे इसके साक्षी हैं। **वे आगे लिखते हैं** - यदि यह कांड 25000 वर्ष पहले या 1200-1300 वर्ष पहले हो गया होता तो 1194 ई. में मोहम्मद गौरी यहां की खाक छानने नहीं आता। हिसार अंचल जिसमें आज के जिले फतेहाबाद और सिरसा तक आते हैं। यह प्रदेश अंतिम हिंदू सम्राट पृथ्वीराज चौहान के विस्तृत साम्राज्य का एक प्रधान क्षेत्र था। उसकी स्मृति में हिसार से कुछ पूर्व मुख्य मार्ग पर चौहान सम्राट की घुड़सवार मूर्ति धनुष बाण सहित स्थापित है। इन्हें छल पूर्वक बंदी बनाने के बाद गौरी अथवा गुलाम वंश के शासकों ने अग्रोहा की समृद्धि से आकर्षित होकर अक्रमण किया, फिर तो हमलों की बाढ़ों का सूत्रपात हो गया।
- अग्रोहा की खुदाई में यह नगर जला हुआ पाया गया। श्री एच.एल.श्रीवास्तव ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि यह नगर निश्चय ही किसी यूनानी, शक व हूण द्वारा जलाया गया है, फिर भी भारतीय परंपरा में प्रत्येक ऐतिहासिक घटना को कहानी के रूप में सुरक्षित रखने की जो पद्धति रही है, उसके अनुसार अग्रोहा को जलाए जाने के बारे में भी एक कथा पंजाब में परंपरा के रूप में कही-सुनी जाती है।
- **अग्रोहा का जलना** - डा. चंपालाल गुप्त की पुस्तक, पेज 118 - यह भी संभव है कि योगिराज के दूत, चेले, शिष्य आदि दूरस्थ स्थान पर भ्रमण करते रहते हों और अग्रोहा पर होने वाले भावी अक्रमण की पूर्व भनक पाकर उन्होंने उसकी जानकारी योगिराज धुंगनाथ को दे दी हो तथा बाद में योगीराज के शिष्यों ने इस घटना को भवियवाणी का रूप दे दिया हो क्योंकि इस प्रकार की चमत्कारिक घटनाएं अधिकांश योगियों के साथ जुड़ी हुई पाई जाती हैं।

3. हरभजन शाह की कथा

महम नगर में जाकर बसने वाले हरभजन शाह को एक दिन श्रीचंद नामक व्यापारी मिला जो 1100 उंटों पर केशर लेकर महम आया था। इसके कारिंदों को आदेश था कि समस्त केशर एक ही व्यक्ति को बेची जाये। सब जगह घूमने पर भी सारी केशर खरीदने वाला कोई एक व्यक्ति नहीं मिला। अंत में व्यापारी महम नगर पहुंचा जहां सेठ हरभजन शाह की हवेली का निर्माण हो रहा था। सेठजी से व्यापारी के कारिंदों ने बात की। हरभहन शाह समझ गये कि यह प्रतिष्ठा का विषय है। महम से कोई व्यापारी खाली न जाये, ऐसा कहकर उन्होंने अपने मुनीम-गुमाश्तों को आज्ञा दी कि वे सारी केशर खरीदकर तहखाने में भरवा दें।

हरभजन ने केशर खरीद ली यह सूचना श्रीचंद व्यापारी को मिली तो उसने हरभजन शाह को पत्र लिखा कि तब तक कोई गौरव नहीं है जब तक उसकी जन्मभूमि निराश्रित ओर उपेक्षित पड़ी है। हरभजन शाह को यह बात लग गई। उसने तत्कालीन स्यालकोट के राजा रिसालू से सहायता की प्रार्थना की। राजा ने उन्हें अग्रोहा पुन: आबाद करने की आज्ञा दी। हरभहजन शाह ने अग्रोहा से दो मील की दूरी पर एक दुकान खोल ली तथा इहलोक और परलोक की बद पर रूपये उधार देकर वह इच्छुक व्यक्ति को अग्रोहा में जाकर रहने का आग्रह करने लगा। इस प्रकार अग्रोहा धीरे-धीरे आबाद हुआ।

4. लक्खी तालाब और हरभजन शाह

अग्रोहा को बसाने के समय एक बनजारे लक्खीसिंह ने परलोक की बद (शर्त) पर हरभजन शाह से एक लाख रूपये उधार लिए। कुछ समय उसके मन में विचार आया कि यह रूपया वह लौटाएगा कैसे? और यदि ऐसा नहीं कर पाया तो उसे अगले जन्म में हरभजन शाह का बैल बनकर उसे यह रकम चुकानी पड़ेगी। उसने विचार किया कि बैल बनकर पिसने से बेहतर है, रूपये यूंही वापस कर दे। वह पुन: उसी दुकान पर गया और कहा कि वह रूपये वापिस करना चहता है। हरभजनशाह ने कहा कि वे रूपये तो उसने परलोक के बद पर लिये हैं, अत: वे इस लोक में वापिस नहीं हो सकते।

लक्खीसिंह निराश होकर वापिस आ रहा था कि उसे मार्ग में एक साधु मिला। उन्होंने उसकी चिंता कारण पूछा। लक्खीसिंह ने कहा ''महाराज मुझे इन रूपयों से छुटकारा दिलवाइये, नही ंतो मैं जीवन भर चैन से नहीं सो सकूंगा।'' साधु ने कहा- ''अग्रोहा में जल की कमी है। अत: तुम इन रूपयों से एक ऐसे तालाब का निर्माण करवाओ जो अग्रोहा ही नहीं वरन् आस-पास के क्षेत्रों के निवासियों की प्यास भी बुझा सके।'' लक्खी सिंह ने उन्हीं रूपयों से 80 एकड़ भूमि पर एक तालाब का निर्माण करवाया। तालाब तैयार होने पर उसने पहरेदार नियुक्त करके आज्ञा दी कि तालाब का पानी कोई नहीं पी सके। कारण पूछने पर उसने बताया कि यह तालाब तो हरभजन शाह का निजी तालाब है जिसका पानी उनकी आज्ञा के बिना प्रयोग में नहीं लाया जा सकता। जब हरभजन शाह को पता चला कि पानी के किनारे से लोग प्यासे लौट रहे हैं, तो

उसको बड़ा दु:ख हुआ। उसने लक्खीसिंह को बुलाकर कहा कि –उसका रूपया जमा कर लिया गया है। तब से उस तालाब का नाम लक्खीसागर पड़ा।

- यह तालाब आज सूखा पड़ा है। वहां की जमीन पर खेती हो रही है। इसके पास ही वह खेड़ा भी मौजूद है जहां राजा रिसालू की फौजें अग्रोहा में बसने वालों की रक्षा में आकर रहीं।
- उल्लेखनीय है कि अनेक जातियों में लक्खी तालाबों का उल्लेख है, जब किसी तालाब की ऐतिहासिक जानकारी नहीं मिलती तब उसे लक्खी बनजारे से जोड़ दिया जाता है। कुछ पुस्तकों में इसको ''लक्ष्मी तालाब'' कहा गया है, स्थानीय बोलचाल की भाषा में यह लक्ष्मी का लक्खी तालाब हो गया। वैसे – अग्रपुराण में यह लक्ष्मी तालाब के नाम से प्रसिद्ध है।
- चौ. वृंदावन कानूनगो की पुस्तक – पदमपुराण में भी लक्ष्मी सरोवर का वर्णन आता है। हरियाणवी भाषा में लक्ष्मी देवी को लछी देवी या लखी देवी कहा जाता है। गुजरात में भी लक्ष्मी को लखी कहा जाता है। इसी प्रकार अग्रोहा में लक्ष्मी तालाब होने से उसका देहाती नाम लखी तालाब पड़ गया। प्रमाण स्वरूप जींद से चार कोस दूर रामसराय के पास भगवती लक्ष्मी का मंदिर तथा सरोवर है उसे भी लखी देवी के नाम से पुकारा जाता है। यह तो ठीक है कि किसी लक्खी बनजारे ने खुदाई आदि करवाई हो परंतु यह स्थान लक्ष्मी सरोवर के नाम से ही विख्यात था।

5. सती शीला

अग्रोहा के बावन करोड़ी सेठ हरभजन शाह की पुत्री शीला अपने रूप और गुण में अद्वितीय थी। हरभजन शाह ने अपनी पुत्री का विवाह राजा रिसालू के दीवान महिताशाह से कर दिया। राजा रिसालू स्वंय उससे विवाह करना चाहता था, पर विदेशी होने के कारण हरभजन शाह ने उसे अपनी पुत्री देन से इंकार कर दिया। महिता शाह का शीला के प्रति अगाध प्रेम था। राजा रिसालू यह देख नहीं सकता था। वह निरंतर शीला को पाने का उपाय सोचता रहता था। अचानक उसको एक उपाय सूझा, उसने महिता शाह को किसी काम के बहाने रोहतास गढ़ भेज दिया। महिता शाह राजा के मन का कपट नहीं जान सका। रिसालू ने शीला ने के पास दूती भेजी और कहलाया कि यदि शीला उससे विवाह करले तो वह उसे पटरानी बनाकर रखेगा।

शीला अत्यंत गुणवति पति परायण नारी थी। उसने राजा रिसालू की दासी को फटकार कर भगा दिया। फिर भी रिसालू को चैन नहीं पड़ा। वह स्वंय शीला के घर आया और उससे प्रेम का इजहार करने लगा। शीला अडिग रही। रिसालू प्रतिदिन उसके घर आता और अनेक प्रलोभन देकर अपने साथ चलने की प्रार्थना करता, पर शीला पर उसकी एक न चली। अंत में उसने छल से उसको मार्ग से डिगाने की कोशिश की। उसने सुन लिया कि महिताशाह कल आने वाला है। अत: उसने दासी से शीला के शयनगार में अपनी अगूंठी रखवा दी। इधर महिता शाह के नगर में घूसते ही रिसालू के दूतों ने उसके कान भरना आरंभ कर दिये कि राजा रोज आपके मकान में जाता था। महता के मन में शंका का बीज अंकुरित हो गया। घर आने पर उसने अपने पलंग पर

तकिये के नीचे राजा रिसालू की अंगूठी देखी, तो उसका संदेह विश्वास में बदल गया। उसने शीला को बुरा-भला कहा, शीला ने अनेक प्रकार से सफाई दी, पर उसे विश्वास नहीं हुआ। उसने शीला का परित्याग कर दिया। शीला अग्रोहा जाकर रहने लगी।

कुछ दिन बाद महिता शाह को द्वारपाल हीरासिंह व सेविका चंद्रावती से सत्य का पता चला, नौकरानी ने अंगूठी रखने का अपनीा अपराध स्वीकार कर लिया। महिता शाह बहुत दु:खी हुआ। वह घर बार छोड़कर जंगल- जंगल भटकने लगा। उसे शीला का अग्रोहा जाने का पता नहीं था। हरभजन शाह की आज्ञा थी कि शीला का पता किसी को न दिया जाये। शीला की खोज में महिता शाह भटकता हुआ अग्रोहा आया, वहीं पर पत्नी के वियोग में प्राणांत हो गया। शीला को इसकी खबर लगी, वह अपने पति केशव को गोद में लेकर सती हो गई। उसके बाद रिसालू वहां आया।

सती शीला की समाधि आज भी अग्रोहा में बनी हुई, जिसकी मढ़ी पर एक विशाल मंदिर श्री तिलकराज जी अग्रवाल द्वारा बनवाया गया। अग्रोहा में राजा रिसालू जहां आकर ठहरा था वह स्थान भी **''रिसालू टिब्बे''** के नाम से आज भी सरकारी कागजातों में विद्यमान है। इसका चक पृथक है तथा मौजा रिसाल खेड़ा के नाम से आज भी वह जमीन कागजातों में लिखी हुई है।

6. लोहागढ़ जहां अग्रसेन ने पिंडदान दिया

कहा जाता है कि एक दिन महाराजा अग्रसेन के पिता वल्लभ, कहीं जा रहे थे। मार्ग में उनकी दृष्टि तालाब में स्नान कर रही एक ब्राह्मण कन्या पर पड़ी। कन्या को राजा का इस प्रकार देखना अच्छा नहीं लगा। उसने राजा को शाप दिया कि- तूने मुझ ब्राह्मण कन्या को बुरी नीयत से देखा है अत: तेरी मुक्ति न होकर तू प्रेत योनि में भटकता रहेगा। राजा शाप की बात जानकर चिंतित हो उठा। उसने कन्या से क्षमा मांगी। परंतु ब्राह्म्ण कन्या तो शाप दे चुकी थी, अत: उसने कहा - जब तुम्हारा पुत्र लोहागढ़ में जाकर पिंडदान करेगा, तभी तुम्हारी मुक्ति होगी।

राजा वल्लभ की मृत्यु हुई। बल्लभ ने अपने पुत्र अग्रसेन को स्वप्न में कहा मैं ब्राह्मण कन्या से शापित हूं अत: पिंडदान नहीं ले सकता। मेरी मुक्ति तो तभी होगी जब तुम लोहागढ़ में जाकर पिंडदान करोगे। उस समय पंजाब का इलाका बीहड़ जंगलों से भरा हुआ था। अग्रसेन ने वहां जाने का निश्चय किया और सारी बाधाओं को पार कर लोहागढ़ पहुंचे, तथा पिंडदान कररके पिता को मुक्ति दिलाई।

मार्ग में लौटते समय जंगल में अग्रसेन को एक सिंहनी दिखाई जो शावक को जन्म दे रहीं थी। राजा के आगमन से उसे बाधा हुई। नवजात शावक क्रोध से उछला, उसने राजा के हाथी पर वारकिया और हाथी तत्काल मर गया। राजा को इस घटना से बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने पंडितों और मंत्रियो से सलाह ली। उन्होंने कहा कि यह स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहीं पर आप एक नवीन नगर की स्थापना राजधानी के रूप में कीजिये। राजा अग्रसेन ने उनकी बात मानकर वहीं अग्रोहा की स्थापना की। जो आग्रेयगण के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

• **लोहागढ़** – यह स्थान आज भी पंजाब में है, लेकिन वहां पर अग्रसेन जी से संबंधित कोई चिह्न प्राप्त नहीं होते हैं।

7. जसराज तथा नाग कन्याओं की कथा

कथा है कि महाराजा अग्रसेन ने अपने 18 पुत्रों का विवाह नाग कन्याओं से किये। नागराजा दशानन व विशानन के 18 पुत्रियां थीं। अग्रसेन जी की प्रतिज्ञा थी कि वे अपने 18 पुत्रों का विवाह एक ही घर में करेंगे। अत: उन्होंने अपने पुत्रों का विवाह 18 नाग कन्याओं से किया। अपनी शक्ति बढ़ाने के लिय नाग शक्ति से संबंध बढ़ाना आवश्यक जान पड़ा।

उनके पुत्र उदास रहने लगे। अपने जासूसों के माध्यम से उन्होंने अपने पुत्रों के उदास रहने के कारण का पता किया। जासूसों ने बताया कि नाग कन्याएं सदैव सर्पिणी के रूप में रहती हैं इसलिये आपके पुत्र उनके पास जाने से डरते हैं। राजा को बहुत दु:ख हुआ। उन्होंने जसराज से उपाय पूछा। जसराज इस गुत्थी को सुलझाने में जुट गया। जसराज को पता चला कि नाग कन्याएं श्रावण शुक्ला पंचमी को अपना चाला उतार कर नदी में स्नान करती हैं। यदि उस समय कोई इन चालों को लेकर आग में प्रवेश कर जाये तो वे पुन: नाग रूप में नहीं आ सकेंगी। श्रावण शुक्ला पंचमी के दिन चोलों के लेकर स्वंय जसराज ही अग्नि में प्रवेश कर गये और अपने जीवन का बलिदान कर दिया। यह जानकर अग्रसेन बड़े दुखी हुए। इधर नाग कन्याएं अपने चोले नहीं पाकर रोने लगीं। राजा अग्रसेन ने उन्हें आश्वासन दिया कि इन चोलों के प्रतीक रूप में हमारे घर-घर पूजा की जायेगी और परंपरा रूप में उनको याद किया जाता रहेगा।

आज भी जसराज के उत्तराधिकारी, भाट इस कथा को बताते हैं। ''श्रावण शुक्ला पंचमी'' को नागों की पूजा अग्रवालों में की जाती है। शादी विवाह में वर-वधु के घर जो थापे लगाये जाते हैं, उनमें कहीं-कहीं तो स्पष्ट नागों की आकृति तथा कहीं हथेली का थापा बनाकर नाग के फन के रूप में उनकी पूजा होती है।

इस घटना के संदर्भ में इतिहास मर्मज्ञ आचार्य रामरंग लिखते हैं कि – महाराजा अग्रसेन के पुत्रों की पत्नियां नागवंशी थीं न कि नागिन – वे नागिन थीं और नागपंचमी को चोला उतारती थीं, उनके चोलों का हरण कर जला दिया गया। यह सारी **कल्पना ही जलाने के योग्य है।** मेघनाथ की पत्नी सुलोचना अपने पति का शीष मांगने प्रभु राम के पास जाती हैं तो शालीनता से विनती करती हैं, फुंकार नहीं मारती। उलूपी अर्जुन के पराक्रम पर विमोहित होकर पुत्र की याचना कनती है, डंक मारकर उसे बाध्य नहीं करती। महारानी माधवी को महाराजा अग्रसेन भी बीन बजाकर नहीं लाते, पूर्व जन्म के संस्कार वश लाते हैं। नाग वैश्यों के ''**मामा**'' माने जाते हैं, महाराजा अग्रसेन का विवाह शक्तिशाली नागवंश में हुआ।

8. परशुराम और अग्रसेन

एक और काल्पनिक कथा है कि - महाराजा अग्रसेन का समय द्वापर युग का है और भाटों के गीतों में उन्हें त्रेता युग के प्रथम चरण से जोड़ते हुए भाट एक कथा भी कहते हैं कि - त्रेता युग में जब रामचंद्र जी ने सीता स्वयंवर में धनुष तोड़कर धनुष की अजेयता खंडित कर दी तो पता चलते ही परशुराम क्रोध में शोला बने और जनक दरबार की ओर प्रस्थान कर गये। रास्ते में उन्हें महाराजा अग्रसेन शिकार को जाते हुए मिले। अग्रसेन ने उन्हें नहीं देखा इसलिये अभिवादन भी नहीं किया। अत: परशुराम ने अग्रसेन को शाप दिया कि वह नि:संतान हो जावे। तब अग्रसेन दुखी होकर विश्वमित्र के पास गये। उन्होंने क्षत्रिक धर्म त्याग कर वैश्य धर्म स्वीकार करने की आज्ञा दी। राजा अग्रसेन ने यही किया।

क्रोधित परशुराम को मार्ग में आता देख अग्रसेन ने तराजू पकड़ लिया और चीजें तोलने लगे और इस प्रकार वह क्षत्रिय से वैश्य हो गये। कुछ का कहना है कि परशुराम की युद्ध की ललकार को उन्होंने स्वीकार कर लिया और इसीलिए परशुराम ने उन्हें नि:संतान होने का शाप दिया। इसी शाप के प्रभाव को मिटाने के लिये राजा अग्रसेन ने महालक्ष्मी की तपस्या की जिसके फलस्वरूप उन्हें पुत्रों की प्राप्ति हुई।

आचार्य राम रंग - श्री परशुराम जी एवं महाराजा अग्रसेन - यह किसी अपरिपक्व बुद्धि के अग्रसेन के नादान मित्र की घड़ी कथा है। यह कत्थक, महाराजा अग्रसेन को त्रेतायुग तक घसीट कर ले तो इस लोभ में गया कि उन्हें त्रेताकालीन जन्मना वैश्य सिद्ध कर सके किंतु पिछड़ गया अपने ही दांव पर। इन कत्थक महोदय ने एक ही कृपा की कि महाराजा अगसेन को शिव-धनु भंग करने जनकपुर नहीं भेजा।

- **डा. स्वराजमणि** - अग्रसेन को त्रेता युग से जोड़ना तर्क संगत नहीं है, जाति व्यवस्था का आरंभिक काल त्रेता व द्वापर युग नहीं था, बल्कि कलियुग के भी हजारों साल बाद ''अग्रवाल'' शब्द भारतीय साहित्य में प्राप्त होता है।

9. सिकंदर का अग्रोहा पर आक्रमण

स्वराजमणि अग्रवाल के अनुसार - सिकंदर ने ''अग्लसोई'' नामक नगर पर आक्रमण किया था। इस अग्लसोई को कुछ विद्वानों ने ''अग्रोहा'' मानकर कहा कि सिकंदर ने अग्रोहा पर आक्रमण किया। कुछ विद्वानों का मानना है कि - ईसा के 326 वर्ष पूर्व सिकंदर ने भारत पर आक्रमण किया था जिसकी छाया अग्रोहा पर भी पड़ी। हालांकि सिकंदर ने अग्रोहा पर आक्रमण नहीं किया परंतु उसके संभावित युद्ध के भय से बहुत से लोग अग्रोहा छोड़कर चले गये। प्रो. सत्यकेतु विद्यालंकार के अनुसार ''आग्रेयगण'' पर पहला आक्रमण मेसीडोन के राजा सिकंदर का हुआ था तथा अन्य गणों के साथ आग्रेय या अग्लस्सि भी सिकंदर द्वारा परास्त हुआ।

डा. स्वराजमणि के अनुसार- उन्होंने सिकंदर कालीन इतिहास की चारों पुस्तकें पढ़ी

हैं। इनमें कहीं भी अग्रोहा का नाम नहीं है। सिकंदर के साथ तो अग्रोहा वासियों का युद्ध भी नहीं हुआ। वह व्यास नदी को पार ही नहीं कर सका। लौटते वक्त वह भद्र, मालव, कठोई आदि जातियों से जूझता हुआ वापस गया है, तब भी अग्रोहा की सीमा में नहीं पहुंच सका। अत: सिकंदर का युद्ध अग्रसेन से हुआ, यह सरासर गलत स्थापना है। मैं यह मानती हूं कि **अग्रसेन की 13वीं पीढ़ी में पुनः राजा ''अग्र'' नाम का राजा हुआ है।** संभवत: उसकी लड़ाई सिकंदर के सिपाहियों से मानी जा सकती है, पर सिकंदर के मार्ग व युद्ध का नक्शा जो मैंने अपनी किताब में दिया है, उससे पता चलता है कि सिकंदर अग्रोहा तक आया भी नहीं। हो सकता है उसका युद्ध अग्रोहा के किसी एक गणराज्य से हुआ हो, जो उसकी युद्ध की सीमा में आया हो।

स्वराजमणि अग्रवाल जी का, अग्रोहा धाम पत्रिका, अक्टूबर 1994 में छपा लेख – सिकंदर के साथ आए यूनानी इतिहासकारों की पुस्तक में अग्लसोई जाति की वीरता का विवरण तो स्पष्ट है, लेकिन वहां अग्रसेन जी के इतिहास संबंधी कोई भी कथा या कोई किवदंती अंकित नहीं है।

स्व. विद्यालंकार जी ने ''अग्रवाल जाति का इतिहास'' लिखते समय, फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन की लाईब्रेरी का अवलोकन किया था, वहां उन्हें कुछ प्राप्त नहीं हुआ। उन्होंने भी टोल्मी, डायडोरस की पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद पढ़ा है, वहां भी अग्रसेन जी की कथा कहीं नहीं है। बल्कि ''अग्गलसोई'' जाति के सिवाय यहां किसी व्यक्ति का नाम नहीं लिखा।

पुस्तक ''अग्रवाल इतिहास'' के विद्वान लेखक स्व. चौ.वृंदावन कानूनगो जी ने अपनी किताब लिखने के लिये काफी शोध किया, काफी पैसा खर्च किया, लंबी-लंबी कष्टदायक यात्राएं भी कीं, बहुत मात्रा में पुरातात्विक सामग्री का संकलन किया। उन्हीं की पुस्तक का अंश –

प्राचीन भारत का इतिहास पृष्ठ 85 से 96 तक का सारांश – सिकंदर 331 ई. पू. विजय यात्रा के लिये गोग मेला से चला। सीस्तान वाह्लीक सिकंदरया को विजय करता हुआ काबुल नदी तट पर आया और निकाईया (जलालाबाद) के पश्चिम में ठहरा। अपनी सेनाओं के दो भाग किये और अलीसांग कुमार घाटी के अस्पसिओई (संस्कृत के अश्व) जतियों को विजय किया। फिर उसने अस्सके नोईयों (संस्कृत के अश्वक) को पराजित किया। इनका दुर्ग मरसग था। यहां पर सिंकदर को भारी युद्ध करना पड़ा। वह 326 ई.पू. तक्षशिला आ गया। यहां के राजा अम्मी ने सिकंदर से मित्रता कर ली तथा पोरस पर चढ़ाई कर दी। पोरस को जीतकर सिकंदर ने ग्लाउसाई (संस्कृत के गलौचकायनक) जाति पर आक्रमण किया। फिर रावी नदी को पार कर प्रिप्रमा (पाणिनी का अरिष्ट) दुर्ग पर अधिकार किया। इसके बाद कठों के महत्वपूर्ण नगर संगल (अमृतसर) पर आक्रमण किया तथा व्यास नदी के तट पर आया। जब सिकंदर व्यास नदी से ही वापस चला गया तो अग्रोहा पर आकमण कैसे हुआ? जो ''सिकंदर लोधी'' का अग्रोहा पर अक्रमण माने, उस समय अग्रोहा आजाद नहीं था। इतिहास फिरोजशाही पृष्ठ 322 पर लिखा है कि फिरोजशाह तुगलक ने अग्रोहा मे मलबे से हिसार फिरौजा बनवाया है। वे अपने लेखकीय के पृष्ठ 3 पर लिखते हैं कि – सूर्यवंश की जम्मुलोचन शाख में हरिवर्मन

राजा हुआ, वह कुरूक्षेत्र आ गये। उसके वंश में सिकंदर के आक्रमण के समया राजा अग्रमीस (आगरा) का राजा था।

वृंदावन जी की पुस्तक के पेज सं. 99 पर इतिहास राजस्थान बाई कर्नल टॉड परिच्छेद 51 पृष्ठ 542 के अनुसार – वि.सं. 759 में अग्रोहा पर राजा पुष्पदेव का राज्य था। उस समय अग्रोहा राज्य की जनसंख्या 1,25,000 थी और अग्रोहा से आंसी (हांसी), धर्मगढ़ (घरोड़ खेड़ा), रमागढ़, मांडोगढ़, अंगदगढ़, जेयंतगढ़ (जींद), बारहगढ़ (बरवाला) आदि 12 गढ़ थे। जींद का भाग बहत्तर का इलाका कहा जाता था। वर्तमान में भी बहतरा कहते हैं। बहत्तरे के मुखिया रतनसेन और गोकुलचंद थे। अरब में बादशाह **''सिकंदर रूमी''** शासन करता था। इसने भारत पर आक्रमण किया और भटनेर (हनुमानगढ़) को विजय करके वहां से दक्षिण की ओर दुन्दसार नगर को नष्ट करके अग्रोहा पर आक्रमण किया। तोमर राजपूत राजा समरजीत भी था। शाह ने अग्रोहा के निवासियों में फूट डालने का षड़यंत्र किया और रतनसेन व गोकुलचंद को अपने साथ मिला लिया। भयानक युद्ध हुआ, गद्दारी के कारण वह अग्रोहा को जीतने में सफल हो गया। 12000 स्त्रियों सती हुईं। इसका वर्णन भाटों की बहियों में मिलता है।

10. अश्व-मांस के बोलने की घटना

महालक्ष्मी व्रत कथा के अनुसार अग्रसेन को हिंसा से घृणा हो गई। इस कथा में चमत्कार दिखाने के लिये कथा में अश्व-मांस के बोलने की घटना जोड़ी गई। वस्तुत: इस कथा का संबंध केवल इतना है कि उन्हांने हिंसा के विरूद्ध अपने अंत:करण की आवाज सुनी और उसके उपरांत यज्ञों में बलि के निषेध की परंपरा प्रचलित की। किसी भी कथा में रोमांचकता एक विशेष लक्षण है जो अग्रसेन जी की इस कथा में भी दिखाई देता है। – डा. स्वराजमणि

11. इंद्र के साथ युद्ध

दुर्भिक्ष से लड़ने की व्यवस्था को इंद्र के साथ युद्ध की संज्ञा दी गई। इंद्र से युद्ध होना कोई नई बात नहीं है यह आज भी हो रहा है। आगम और जातक कथाएं इंद्र के चमत्कारों से भरी पड़ी हैं। राजा अग्रसेन के राज्य में अकाल पड़ा और उन्होंने इस अकाल पर विजय पाई। इंद्र उस समय वैभव का सर्वोत्कृष्ट प्रतीक था, जिससे तुलना करके लेखक राजा के शौर्य तथा वैभव का प्रदर्शन दिखाया करते थे। – **डा. स्वराजमणि**

-- ध्यातव्य --

- विद्वानों के अनुसार, ये किस्से केवल कल्पना मात्र हैं। जिसने जो मन में आया लिखा, सुनी-सुनाई बातों में अपने मन से भी जोड़ दिया गया है। ये **भ्रम की स्थिति को जन्म** देते हैं। इनमें से अधिकांश कथाओं का आधार भाटों के गीत व श्रुतियां हैं जो निश्चित रूप से काल्पनिक हैं और रोचकता पैदा करने के लिये गढ़ी गई हैं। सती शीला की कथा इतिहास से जुड़ी हुई है। लक्खी बनजारे की कथा तो सभी समाजों की कहानियों में मिल जाती है।

जब किसी तालाब का इतिहास नहीं मिलता है तब लक्खी बनजारे का तालाब कह दिया जाता था। चोला बदलने व अन्य किवदंतियों को ऐतिहासिक व शास्त्रीय आधार पर प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

- कुछ अग्र लेखकों ने अग्रसेन जी की कथाओं पर ''कहानियों की पुस्तकें'' लिखीं हैं। कुछ ने ''काव्य'' व ''खंडकाव्य'' भी लिखे हैं जिनमें इन किवंदतियों को बड़े रोचकता के साथ मन से जोड़कर भी लिखा गया और मनगढंत कहानी-किस्सों को जन्म दिया।
- आचार्य राम रंग - देखने में यह भी कई स्थानों पर आया है कि ये भाट-चारण अपने यजमानों की जानकारी के अभाव का लाभ उठाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते रहे हैं। यदि कोई इनके मंतव्य पर कुछ शंका करे तो इनका रटा-रटाया एक ही उत्तर होता है कि, ''म्हारी तो बही में तो योई लिख्योड़ा है जो असत ना हो सके'' अब इसका उत्तर किसी के पास हो तो देकर देख ले। और तो क्या कहा जा सकता है।
- आचार्य राम रंग - अग्रोहा में भीषण अग्निकांड हुआ तो एक सज्जन कहते हैं कि - यह खांडव दहन के समय हुआ। अब देखना यह है कि खांडव वन कहां है? इसकी स्थिति इंद्रप्रस्थ दिल्ली के पास है। आज का पुराना किला ही युधिष्ठर का स्थान है। पुरातात्विकों ने ग्रीन पार्क से महरौली तक का क्षेत्र खांडव वन माना है तो खांडव वन की चिंगारी कई सौ मील अग्रोहा तक कैसे पहुंची गई? प्रभु कृपा से अग्रोहा के अग्निकांड को लंका दहन से जोड़ने की महान् बुद्धिमत्ता नहीं दिखाई। आचार्य जी लिखते हैं कि - यदि यह कांड 25000 वर्ष पहले या 1200-1300 वर्ष पहले हो गया होता तो 1195 ई. में मोहम्मद गौरी यहां की खाक छानने नहीं आता।
- शूरसेन प्रदेश की स्थापना अग्रसेन जी के भाई शूरसेन ने की इस एक और भ्रांति के बारे में आचार्य रामरंग लिखते हैं कि - जहां तक महाराजा अग्रसेन के अनुज शूरसेन के नाम पर शूरसेन प्रदेश (ब्रज प्रदेश) को बसाने की चर्चा है, वह केवल भ्रांति है। नाम की समानता के कारण कुछ लोग अज्ञानता वश अथवा महत्वकांक्षा के कारण ही ऐसा बोलते हैं। इसके अतिरिक्त महालक्ष्मी व्रत कथा के 106वें श्लोक में ''शूरसेन गते देशे'' अर्थात् अग्रसेन शूरसेन देश में आए। जिसका स्पष्ट अर्थ है कि महाराजा अग्रसेन से पूर्व शूरसेन प्रदेश अस्तित्व में आ चुका था। कुछ विद्वानों का कहना है कि शूरसेन प्रदेश का नाम भगवान राम के भाई शत्रुघ्न के नाम पर पड़ा था। कुछ लेखकों का कहना है कि - अग्रसेन के भाई शूरसेन के नाम पर इस देश की कल्पना असंगत है।
- विभिन्न पुस्तकों में महाराजा अग्रसेन की दी गई वंशावलियों के बारे में **आचार्य रामरंग** लिखते हैं कि - कुछ महानुभाव अपने अथाह ज्ञान का परिचय देने के लिये वंशावली भी प्रकाशित कर रहे हैं। यह वंशावली नहीं बल्कि नामावली है। नामावली को वंशावली मानने से काल निर्णय के मार्ग में अनेक समस्याएं आती हैं। इसी का लाभ उठाकर विदेशियों ने भारतीय इतिहास की लाखों वर्षों की मांन्य तिथियों को धकेलते हुए कुछ बी.सी. तक ला दिया।

महालक्ष्मी व्रतकथा (अग्रवैश्यवंशानुकीर्तम्)
विद्यालंकार जी की पुस्तक, अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास

महालक्ष्मी व्रतकथा-अग्रवैश्यवंशानुकीर्तम् में जिस राजा की लक्ष्मीपूजा की कथा उल्लिखित है, उसका नाम 'अग्र' दिया गया है। अग्रसेन नाम उसमें नहीं है। इससे सूचित होता है, कि राजा अग्रसेन को केवल अग्र भी कहते थे। संभवत:, उसका असली नाम **अग्र** ही था। अग्रसेन नाम बाद का है। यही कारण है कि उसने जो अपना पृथक वंश चलाया, वह अग्रवंश कहलाया। उसके गणराज्य का नाम भी आग्रेय पड़ा। इस संस्कृत ग्रंथ में केवल अग्र नाम का होना महत्व की बात है। पाणिनी की अष्टाधायी में भी केवल अग्र का उल्लेख आता है। इस ग्रंथ में साढ़े सत्रह अंक का बार-बार उल्लेख आया है, जो अग्रवालों के इतिहास में महत्व की बात है।

विद्यालंकार जी आगे लिखते हैं कि - महालक्ष्मीवृत कथा में राजा अग्र के जीवन चरित्र का वर्णन करते हुए तिथियां दी गई हैं, जो महत्व की हैं जैसे -

1. राजा अग्र ने मार्गशीर्ष मास में लक्ष्मी की पूजा की। ''लक्ष्मीव्रत'' मार्गशीर्ष प्रथमा से मार्गशीर्ष पूर्णिमा तक रखा जाता है। पूर्णिमा के दिन देवी महालक्ष्मी प्रकट हुई।
2. एक अन्य स्थान पर फिर लिखा है, कि राजा अग्र ने अग्रहण (मार्गशीर्ष) मास में लक्ष्मी की पूजा कर मंदिरा को प्राप्त किया। इससे सूचित होता है, कि लक्ष्मीपूजा का मास मार्गशीर्ष है और मार्गशीर्ष पूर्णिमा का अग्रवालों के इतिहास में विशेष महत्व है क्योंकि इसी दिन देवी लक्ष्मी का वर राजा अग्र को प्राप्त हुआ था।
3. वैशाख मास की पूर्णिमा को राजा अग्रसेन ने अपने ज्येष्ठ पुत्र विभु को राजगद्दी पर बिठाकर स्वंय तापस जीवन का प्रारंभ किया था।

विद्यालंकार जी लिखते हैं - अग्रवाल इतिहास के लिये जो संयुक्त पुस्तकें उपलब्ध हैं, उनमें राजा अग्रसेन के जीवन के साथ केवल दो तिथियों का संबंध है, मार्गशीर्ष पूर्णिमा और वैशाख पूर्णिमा।

यहां महालक्ष्मी व्रतकथा (अग्रवैश्यवंशानुकीर्तम्) के कुछ श्लोकों का अर्थ दिया जा रहा है जो पुस्तक में दिया हुआ है।

1. **श्लोक 98-99** - महालक्ष्मी ने राजा अग्र से कहा कि, नागराज का अवतार महीरथ नाम का राजा है। कोल का विध्वंश करने वाले उस राजा की कन्या अत्यंत सुंदर है। तू जाकर उसका पाणिग्रहण कर, वह तेरे लिए ही तपस्या कर रही है। उसके पुत्रों से यह पृथ्वी वैसे ही व्याप्त हो जाएगी, जैसे कि यह आकाश तारों के समूह तथा सैंकड़ों चंद्रमाओं से शोभायमान होता है।

2. **श्लोक 122 से 127** – राजा ने यमुना के सुंदर तट पर दो युग तक तपस्या की। देवी लक्ष्मी प्रकट हुईं। दया से पूर्ण, प्रसन्न हुई लक्ष्मी ने मधुर वाणी से इस प्रकार कहा। हे राजन्, हे वैश्य वंश के प्रकाश, इस तप को बंद करो। गृहस्थ धर्म बड़ा अनुपम है, इसको समझो। तुम मेरी आज्ञानुसार करो, मैं तुम्हें सब वैभव, ऋद्धि प्रदान करूंगी। यह सारी पृथ्वी तेरे वंश से पूरित होगी। तेरे वंश में सब जाति और वर्णों के कुल नेता होंगे। आज से लगाकर यह कुल तेरे नाम से प्रसिद्ध होगा।
3. **श्लोक 122 से 127** – साढ़े सत्रह यज्ञों से मधुसूदन (विष्णु) को संतुष्ट किया। एक बार यज्ञ के बीच में घोड़े के मांस ने इस प्रकार कहा – हे राजन! मांस तथा मद्य द्वारा स्वर्ग को जय मत करो। हे दयानिधे! इन दोनों के रहित जीव कभी पाप से लिप्त नहीं होता।
4. **श्लोक 150** – एक बार पूजा में लक्ष्मी ने राजा से कहा – हे राजन्! तुम अपने स्वधर्म का पालन करो, पुत्र को अब राज सिंहासन प्रदान करो।
5. **श्लोक 153 से 155** – वैशाखमास की पूर्णिमा को विभु को राज्याभिशिक्त कर स्वंय वैश्यों तथा ब्राह्मणों से घिरा हुआ सब कुटुम्बीजनों से अनुमति लेकर वह अपनी पत्नी के साथ वन को चला गया, जहां पंच गोदावरी तथा ब्रह्मसर है। वहां जाकर उसने बहुत तप किया, तथा लक्ष्मी जी की आज्ञा से सदेह तथा सपत्नीक स्वर्गधाम को गया।
6. **श्लोक 156 से 163** – विभु ने अपने पिता के राज्य का शासन किया। जब कोई कुटुम्ब मे दरिद्र हो जाता था, तब वह उसे लाख मुद्रायें देता था। सौ वर्ष बीत जाने पर वह अपने पुत्र नेमिरथ को राज्य अभिशिक्त कर चुका तो मृत्यु हुई, और उसके साथ ही उसकी रानी ने भी अग्नि में प्रवेश किया। फिर विमल, शुकदेव, फिर उसका लड़का धनन्जय – ये राजा हुए। उसका पुत्र श्रीनाथ हुआ। श्रीनाथ का पुत्र दिवाकर हुआ। दिवाकर जैन मत में गया, उसने पर्वतशिखर पर जाकर, जैनों के समूह से घिरा रहकर जैन मत का पालन किया। इसके अनन्तर सुदर्शन राजा हुआ। उसने पुत्रों को सिंहासन पर बिठाकर स्वंय वाराणसी तीर्थ जाकर संन्यास द्वारा शरीर त्याग किया। श्रीनाथ का महादेव, उसका लड़का यमाधर, उसका शुभांग फिर मलय और वसु हुए। वसु के दाशीदश (?) (अनेक) पुत्र हुए, जिनसे आठ शाखाएं हो गईं। मलय कवि के नंदी फिर विरागी चंद्रशेखर हुआ। उसके अग्रचंद्र हुआ। जिससे कलि में राज्य .....। उसके पुत्र, पौत्र तथा वंशजों से नगर सदा सुखी रहे।

श्री सत्यकेतु जी ने अपनी पुस्तक में उरूचरितम् के श्लोकों की भी व्याख्या की है। वे लिखते हैं कि **उरूचरितम** संस्कृत की एक **हस्तलिखित** पुस्तक है, इसकी एक प्रति मुझे मेरठ की अखिल भारतीय वैश्य महासभा के कार्यालय से प्राप्त हुई थी। सभा के प्रचारक पंडित मंगलदेव जी ने इसे मैनपुर, उत्तर प्रदेश जिले के एक गांव से नकल किया था। पं.मंगलदेव जी बताया था, कि उन्होंने स्वंय लाला अवधबिहारी लाल जी के पास विद्यमान मूल हस्तलिखित ग्रंथ से नकल किया है। यह पुस्तक बढ़े महत्व की है। इसमें अग्रसेन के पूर्वजों के संबंध में जो बातें लिखी हैं, वे अवश्य ही प्राचीन ऐतिहासिक अनुश्रुति पर आश्रित प्रतीत होती हैं। इसमें वैश्यों के ''प्रवर'' भलंदन, वात्सप्री और मांकी के साथ इन वंशों का संबंध बताया गया है।

-- अग्रपुराण --

वैसे पुराणों में अग्रसेन पुराण का नाम नहीं मिलता है, लेकिन महाराजा अग्रसेन जी के नाम से - **अग्रपुराण** की चर्चा कुछ विद्वानों ने अपनी पुस्तकों में की है। जैसे -

1. डा. रामचंद्र गुप्ता पुत्र श्री लाला शोभाराम अग्रवाल (निवासी - अनीठ गंज, शेखा रियासत, पटियाला) ने अपनी पुस्तक ''अग्रवंश अर्थात् अग्रवाल इतिहास'' लिखी, (यह पुस्तक सन् 1924 में उर्दू भाषा में छपी थी)। इस पुस्तक में लेखक ने लिखा है कि - उनके पास ''**अग्रपुराण की हस्तलिखित प्रति**'' है। इनकी इस पुस्तक का **आधार** भी **अग्रपुराण** ही है। हालांकि इस पुस्तक को लिखने में लेखक ने - महाभारत, वायुपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, हर्षचरित, विक्रमचरित, रघुवंश, अग्निपुराण, विष्णुपुराण, मनुस्मृति, महावंश, भारत की प्राचीन सभ्यता का इतिहास, श्रीमद्भागवत, सत्यपुराण, भर्तृहरि नाटक, अग्रवाल-वैश्य इतिहास, आदि का भी सहारा लिया है।

2. चौधरी वृंदावन कानूनगो (सफींदो, जींद-हरियाणा) ने अपनी पुस्तक ''अग्रवाल इतिहास (शोध ग्रंथ)'' में पेज 7 पर लिखा है कि - इस पुस्तक को लिखते समय 24 अगस्त 1984 को अकस्मात ''प्राचीन हस्तलिखित अग्रपुराण'' जिसका भाटों के पास होना बताया जाता था, बहुत खोज करने पर भी प्राप्त न हो सका था, वह प्राप्त हो गया, उसका फोटो स्टेट करवा लिया है। उन्होंने लिखा है कि - गुणपाल भाट के पास से यह अग्रपुराण मिला तथा उसके वंशजों के पास आज भी है। अग्रपुराण पर शोध करके अपनी पुस्तक में उन्होंने विस्तार से लिखा है। **संक्षिप्त में यह इस प्रकार है** -

यह पुराण हिंदी लिपि में कुछ राजस्थानी भाषा का मिश्रण लिये हुए 17वीं शताब्दी का लिखा प्रतीत होता है। इसमें राजा अग्रसेन को ईक्षवाकु कुल में राजा अंबरीश भागीरथ व राम के वंश में सूर्यवंश अवतंश लिखा है और साथ ही दूसरी वंशावली भी दी है जो कि ऋषि कुल की है, लिखा है कि ब्रह्मा का पुत्र भारद्वाज हुआ। (आगे ऋषियों का पूरा वर्णन लिखा है।) - ''महेश ऋषि (जो अग्रसेन जी के गुरू थे) के एक कन्या ''**कमोदी**'' थी जो कि अपने पिता के यहां रहती थी। उसका पुत्र ''**जसराज**'' था। गुरू परंपरा के अनुसार कमोदी अग्रसेन जी की बहिन हुई, इसी कारण अग्रसेन जी ने जसराज को अपना ''**भांजा**'' माना था।''- अग्रसेन का विवाह चंपावती नरेश राजा महीधर की पुत्री देवमणी से हुआ। (इसके बाद अग्रसेन जी की पूरी कथा का वर्णन लिखा है, जिसमें पुत्रों और नागकन्यांओं का भी वर्णन है।)

वृंदावन जी ने लिखा है कि - यह अग्रपुराण भाटों ने लिखा है और अग्रवाल समाज में अपनी प्रतिष्ठा करवाने के लिये अपने ऋषि कुल की वंशावली में अग्रसेन जी को जोड़कर अपने पूर्वज को उनका भानजा तथा नाग कन्याओं के चोले जलाने के लिये बलिदान देने की काफी कथा रचकर लिख दी है। ऐसा प्रतीत होता है कि गुणपाल भट्ट के पास यह पुराण था। जब उसके वंशजों में कई पीढ़ी बाद केशोदास भाट हुआ, उसने गुणपाल द्वारा लिखित पुराण का दूसरी बार लेखन किया तो उसमें कुछ घटनाएं जोड़ दीं जिससे महाभारत काल की घटनाओं की भ्रांति

उत्पन्न हो गई।

चौ. वृंदावन कानुनगो अपनी भूमिका के पेज नं. 8 पर लिखते हैं कि – महाराजा अग्रसेन से लेकर राजा अनंगपाल तक की अग्रोहा राज्यावली भी इसी पुस्तक में दी गई है। अग्रपुराण के पेज 42 पर लिखा है कि – राण्डु राजा के अर्जुन हुआ, अर्जुन के अभिमन्यु और अभिमन्यु के परीक्षित हुआ। **अग्रपुराण की यह कथा अर्जुन के पौत्र अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को सुनाई गई।** जिससे शंका उत्पन्न होती है, कि राजा परीक्षित महाभारत के बाद अर्थात् ई.पू. 1388 वर्ष जन्म हुआ तो यह कथा उन्होंने कैसे सुनी? जब इस कारण की खोज की गई तो पता चला कि चंदोभा नगर (दुबकुंड शिलालेख जो कि वि.सं.1145 का है, उसमें लिखा है कि राजा पांडु का पुत्र अर्जुन हुआ।) का राजा पांडु था। उसका पुत्र अर्जुन था। अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु था, अभिमन्यु के विजय हुआ, विजय के विक्रम हुआ, विजय का कार्य काल सन् 1088 था। उसे यह कथा सुनाई गई। अर्थात प्रमाणित होता है कि अग्निपुराण में वर्णित परीक्षित राजा (विजयपाल) था। जिसने संवत् 1145 में यज्ञ किया तथा यह कथा भाट गुणपाल ने संवत् 1145 में यज्ञ में लोगों को अग्रवालों का परिचय देने वास्ते सुनाई तथा गुणपाल द्वारा हस्तलिखित पौथी की नकल केशोदास ने की, जिसकी हमने फोटोस्टेट कराई है। ऐसा प्रतीत होता है कि 300 वर्ष पूर्व जब यह अग्रपुराण जिसकी हमने फोटोस्टेट ली है, को भाट ने जिस पुरानी पुस्तक से नकल की और उसने परीक्षित के स्थान पर विजय लिखा देखकर अपने अल्पज्ञान द्वारा इन्हें महाभारत का पांडु वंशी समझकर परीक्षित लिखा।

पेज 32 से 37 तक इन्होंने अग्रपुराण के बारे में लिखा है – इस अग्रपुराण में नागकन्याओं के चोले बदलने की कथा दी गई है। (यही कथा आगे जाकर जन श्रुति बन गई)। अग्रपुराण में अन्य पुराणों की तरह कपोल कल्पित कथाएं लिखी हैं। परंतु इन पर विचार करने से अनेक महत्वपूर्ण सत्य-तथ्य सामने आते हैं – महाराजा अग्रसेन सूर्यवंशी थे, उनके 18 पुत्र थे (इसमें जो नाम लिखे हैं, वे अन्य पुस्तकों में भी मिलते हैं।), उनका विवाह महीधर की पुत्री देवमणी से हुआ, महेश ऋषि अग्रसेन जी के गुरू थे, गोत्रों के बारे में भी विस्तार से बताया गया है, अग्रोहा राज्य सामंती रूप से मोहम्मद गौरी तक चला, इसका अंतिम राजा धीरपाल था तथा सन् 1194-1195 में छिन्न-भिन्न हो गया। अग्रपुराण में अग्रोहा के राजाओं की वंशावली लिखी है। इन राजाओं के कुछ सिक्के भी प्राप्त हुए हैं। अग्रपुराण में अग्रोहा के राजाओं की वंशावली लिखी है।

3. श्री सत्केतु विद्यालंकार – गत वर्षों में (1938 में पुस्तक लिखने से पहले) अनेक पुराण ऐसे भी उपलब्ध हुए हैं, जिनमें ब्राह्मण और वैश्य वंशों के प्राचीन इतिवृत्त दिये गए हैं। ये पुराण प्राय: गुजरात से मिले हैं। इनका **रचना काल 9वीं से 14 वीं शताब्दी** तक है। इनमें प्राचीन अनुश्रुति संकलित है। **अनुश्रुति मनगढंत नहीं होती, यद्यपि समय के बीतने के साथ-साथ उसमें कुछ ऐसी बातों का भी समावेश हो जाता है, जो मूल अनुश्रुति से भिन्न होती है। भाटों के गीत भी एक प्रकार से आनुश्रुति ही हैं।**

4. लक्ष्मीराम पुत्र श्री शिवप्रताप ने **''राजा अग्रसेन का जीवन चरित्र''** नाम की एक पुस्तिका इंदौर से प्रकाशित की थी, जिसकी भूमिका में उन्होंने लिखा है कि – श्रीमान् राजा अग्रसेन ने अपने भांजे जसराज जी को अपना कुलभट्ट नियुक्त किया था। इनके वंश के भट्ट घनश्याम और तुलाराम जी आदि निवासी जसपुर ग्राम जो कि अग्रोहे के खंडहरों के निकट बसता है, अजमेर आये थे। उनके पास एक **अग्रपुराण नामक ग्रंथ** है, जिसमें केवल अग्रवाल जाति ही का पूर्ण रूप से परिचय दिया हुआ है।

5. अग्रपुराण कथा – (सर्वप्रथम) – जनवरी सन् 1912 में इस **अग्रपुराण** की कथा अजमेर में कराई गई और फिर इन्हीं भाटों ने 20 अप्रैल सन् 1919 में **अग्रपुराण** की कथा इंदौर में की। अग्रपुराण से हमें वह वृतांत ज्ञात होता है कि भाट लोग – राजा अग्रसेन तथा उनके वंश के संबंध में सुनाते हैं।

6. श्री शिवप्रताप द्वारा लिखित **''राजा अग्रसेन वंश पुराण''** उल्लेखनीय है। इसे भाटों के गीतों के आधार पर लिखा गया था।

7. अग्रवालों के गुरू ब्रह्मानंद ब्रह्मचारी ने, भाटों के गीतों के आधार पर **''श्री विष्णु अग्रसेन वंश पुराण''** पुस्तक 1920 में लिखी थी।

8. श्री गुलाबचंद ऐरन (पुस्तक – अग्रवाल जाति का प्रमाणिक इतिहास) तथा श्री सुरेन्द्र प्रताप गर्ग ने अपनी पुस्तक – अग्रवाल 18 गौत्र व्यवस्था (बीसा, दस्सा विवरण) में साढ़े सत्रह गौत्र का वर्णन इसी अग्रसेन पुराण के आधार पर किया है।

9. अग्रपुराण के अनुसार 18 गोत्रों के नाम इस प्रकार हैं – गर्ग, गोयल, कंसल, बंसल, मित्तल, सिंहल, चित्तल, ऐरण, टेरण, तायल, तुंगल, मंगल, जिंदल, बिंदल, कुच्छल, बांछिल, गोयन व गुणराज। -- **संवत् 1161 में** अनंतपाल के समय बांछिल गुणराज गोत्र पुरोहित (गुरू) बदलने के कारण **ढालन का ढाकल साढ़े सत्रह गोत्रों** में परिवर्तित हो गया। **इन गोत्रों के नाम इस प्रकार हुए** – गर्ग, गोयल, कंसल, बंसल, मित्तल, सिंघल, चित्तल, ऐरण, टेरण, तायल, तुंगल, मंगल, जिंदल, बिंदल, कुच्छल, ढालन/ढाकन, गोयन।

श्री अग्र भागवत
(शोध, संकलन व भाष्यकार - श्री रामगोपाल अग्रवाल 'बेदिल')

श्री अग्र उपाख्यानम् - सदियों से विलुप्त, युगदृष्टा अग्रसेन जी की लोक कल्याणकारी जीवन गाथा ''श्री अग्र उपाख्यानम्'' रहस्मयी परिस्थितियों में 9 अगस्त 1991 को आमगांव-महाराष्ट्र के रामगोपाल अग्रवाल ''बेदिल'' जी को ब्रह्मकुंड, आसाम प्रदेश में ''ब्रह्मसर'' के पास बनी एक कुटिया में साधनारत सिद्ध तपस्वी के कर कमलों से प्राप्त हुआ (यह ब्रह्मकुंड, परशुराम कुंड से भी जाना जाता है, असम सीमा पर स्थित यह कुंड प्रशासनिक दृष्टि से अरूणाचल प्रदेश के लोहित जिले में आता है। मकर संक्रांति के दिन यहां भव्य मेला लगता है।) यह उपाख्यान फूलों की पंखुड़ियों से हल्के और महीन भोजपत्रों पर, (30 ग्राम वजनी, 431 भूर्ज पत्र) तत्कालीन प्राचीन लिपि में ''अमिट'' अक्षरों में अंकित हैं, जो पानी में डुबोने पर ही पढ़ी जा सकती है। इसमें महाराजा अग्रसेन के जन्म से लेकर संन्यास तक के जीवन का सजीव ढंग से वर्णन किया गया है।

श्री बेदिल जी के अनुसार उनके श्रमसाध्य, 14 वर्ष की कठोर तपस्या के परिणामस्वरूप जनकल्याण हेतु अग्रोपाख्यानम् की कथा को वर्तमान संस्कृत लिपि एवं हिंदी में अनुवाद सहित 4 अक्टूबर 2005 को अग्रसेन जयंती के अवसर पर **।। श्री अग्रभागवत।।** नाम से पुस्तक के रूप में जन कल्याण पब्लिकेशन एंड मीडिया (प्रा.लि.) मुंबई द्वारा प्रकाशित किया जा सका। इस ग्रंथ को रामगोपाल बेदिल जी ने जन-जन तक पहुंचाया है। गौरव की बात है कि अग्रभागवत का हिंदी के अलावा 13 भाषाओं में भी अनुवाद किया जा चुका है। इन 14 भाषाओं (हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, नेपाली, मराठी, बंगाली, तमिल, तेलगु, गुजराती, कोन्नी, पंजाबी, उड़िया, कन्नड़ एवं ब्राह्मी लिपि) में यह पुस्तक के रूप में उपलब्ध है।

यह अग्रवालों का प्रमाणिक ग्रंथ है, (ऐसा माना जाता है) श्री अग्रोपाख्यान की भाषा संस्कृत में है जो महर्षि वेदव्यास जी के प्रधान शिष्य सांख्यशास्त्र व सामवेद के रचियता जैमिनी ऋषि द्वारा लिखित है। इसकी प्रमाणिकता का उल्लेख महाभारत के शांति पर्व में कई स्थानों पर है, **''(ऐसा लिखा गया है लेकिन प्रमाणिकता नहीं दी गई है)।''** महर्षि जैमिनी ने राजा परिक्षित के पुत्र जनमेय जी को अधर्म एवं अहंकार के मार्ग से पुन: लोकधर्म एवं साधना का मार्ग प्रशस्त करने हेतु अपने गुरू वेदव्यास जी के कहने पर ''अग्रोपाख्यानम्'' कथा का ज्ञान प्रदान किया। अग्रोपाख्यानम् की कथा में हमारे कुल प्रवर्तक महाराजा अग्रसेन के पुरूषार्थ पूर्ण जीवन की गाथा सुनाई गई है। अग्रोपाख्यान को शास्त्रों में ''जय-प्रसंग'' के नाम से भी वर्णित किया गया है। इसमें कुल 27 अध्याय हैं, जिनमें अग्रसेन जी के जीवन चरित्र, उनकी नीतियों एवं शिक्षाओं का वर्णन 1400 संस्कृत के श्लोकों में किया गया है। महाराजा अग्रसेन को जीवन में तीन बार महालक्ष्मी ने दर्शन देकर वरदान दिया।

विदूषी **डा. स्वराजमणि जी** लिखती हैं कि - महाभारत का प्राथमिक स्वरूप जयभारत था। यह सवा लाख श्लोकों का वृहद् ग्रंथ था, पर काल के प्रभाव से इसके विलुप्त श्लोक बहुत ढूंढने पर भी नहीं मिले। तरह-तरह की अटकलों पर इतिहास बनते बिगड़ते रहे। उपलब्ध ग्रंथ के

विषय को लेकर भाई रामगोपाल 1994 में मेरे संपर्क में आये। श्री अग्र उपाख्यानम् का संपूर्ण कथानक अत्यंत प्राचीन संस्कृत में है। मेरा यह परम सौभाग्य है कि – मैं इस पावन ग्रंथ की प्रथम दृष्टा रही।

इस महान् प्रसाद को जन-जन में बांटने के लिये इसका संस्कृत की वर्तमान देवनागरी लिपि में लिपिकरण, भावार्थों सहित सरल हिंदी अनुवाद तथा आदर्शों की व्यापक व्याख्या आवश्यक थी। भाई रामगोपाल ने ऋषि के प्रदत्त वचनों के अनुरूप ''कर्त्तव्यभाव'' से स्वंय को इस महायज्ञ की वेदी बना, अपने तन-मन-धन और जीवन की आहुति दे इस महायज्ञ को सफल किया। इस सारे कार्य में मैं सतत् इनके संपर्क में रही तथा अपने लेखों के माध्यम से इस विषय में प्रकाश डालने का निरंतर प्रयत्न करती रही।

''**अग्रभागवत**'' की पुस्तक के आरंभ में आदरणीय **बेदिल जी**, अपने उद्‌बोधन ''**सत्य कहूं**'' में लिखते हैं -- जगन्माता महालक्ष्मी ने मुझपर अनंत कृपा करके मुझे स्वप्न में अपने दिव्य दर्शन व निर्देशन देकर उपकृत किया। मां भगवती के निर्देशानुसार मैं **समित्र** ब्रह्मकुंड पहुंचा। देवयोग से संवत् 2048 श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की 14 तिथि को अरूणाचल प्रदेश के ब्रह्मसर के किनारे एक सिद्धऋषि द्वारा महर्षि जैमिनीकृत जयभारत ग्रंथ के भविष्यपर्व का सर्वथा अनुपलब्ध यह अतिदिव्य व अद्‌भुत ग्रंथ अग्रोपाख्यानम् मुझे प्रदान किया गया।

तदपि, जैसे धृतराष्ट्र को महाभारत की युद्ध की कथा सुनने के लिये, एक रथ हांकने वाले सारथी संजय को महर्षि वेदव्यास जी ने दिव्यदृष्टि प्रदान कर दी थी, और वह संजय महाभारत का साक्षात दृष्टा व वक्ता हो गया, उसी प्रकार, दैवयोग से महर्षि जैमिनी प्रणीत अग्रोपाख्यानम् का यह ।।श्रीमद् अग्रभागवत।। स्वरूप मेरे द्वारा ऋषि के कृपा प्रसाद के रूप मे ही संभव हो गया है।

संक्षिप्त में -

अग्रभागवत के बारे में अनेक विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। कुछ ने इसे माना है तो कुछ ने नहीं। लेकिन श्री रामगोपाल अग्रवाल ''बेदिल'' जी के अथक प्रयासों की सराहना होनी ही चाहियें।

वैसे अग्रभागवत (अग्रउपाख्यानम्) में दी गई सामग्री लगभग वही है जिनको अनेक विद्वानों ने वर्षों पहले अपनी पुस्तक में लिखा है। डा. सत्यकेतु विद्यालंकार सहित कुछ विद्वानों ने ''**शोध**'' करके पुस्तकें लिखी हैं, **जिनकी बातें** अग्रउपाख्यान (अग्रभागवत) - में मिलती हैं। इससे पता चलता है कि - अनेक विद्वानों द्वारा किया गया शोध व लिखी गई पुस्तकों की सत्यता है। अग्रभागवत से पहले उन विद्वानों को अग्रसेन जी के बारे में इतनी जानकारी कैसे हुई? उन विद्वानों की जानकारी की पुष्टि अग्रभागवत से भी होती है।

1. डा. चंपालाल गुप्त (अग्रवाल समाज का गौरवशाली इतिहास) - अग्रसेन उपाख्यान - यह श्रीमद् भागवत का अंतिम कथानक बताया जाता है। इसमें महाराजा अग्रसेन के जन्म से लेकर अंत तक की कथाएं थीं। यह भाग श्रीमद्‌भागवत से कैसे अलग हुआ, इसका उल्लेख नहीं मिलता। इस ग्रंथ को भी अन्य ग्रंथों की तरह कुछ विद्वानों ने प्रमाणिक माना है तो कुछ

ने अप्रमाणिकता तथा उसकी प्रमाणिकता को लेकर अनेक प्रश्न उठाए हैं।

2. अग्र साहित्य मनीषी श्री ओमप्रकाश गर्ग ''मधुप'' के अनुसार – अग्रउपाख्यान (अग्रभागवत) के अनुवाद में श्री रामगोपाल जी अग्रवाल ने काफी जगहों पर कुछ प्राप्त श्लोकों का अनुवाद नहीं किया है तथा कुछ मन से भी जोड़ा गया है पुस्तक में यह नहीं बताया है कि, कहां पर जोड़ा और कहां छोड़ा है। जब कभी शोध की आवश्यकता होगी तब कठिनाई भी होगी और विद्वान लोग अपनी राय भी नहीं दे सकेंगे। अच्छा होता बेदिल जी इसका उल्लेख अपनी पुस्तक में कर देते। माननीय रामगोपाल बेदिल के लिये **'महर्षि'** तथा **'अग्रभागवत कथा के प्रणेता'** जैसे अलंकरणों का प्रयोग किया गया है। वे अग्रोपाख्यानम् मूल ग्रंथ के अनुवाद कर्त्ता, अन्वेषक, उद्घाटक तो कहे व माने जा सकते हैं, लेकिन 'प्रणेता' नहीं।
3. प्रसिद्ध विद्वान आचार्य रामरंग जी ने अपनी पुस्तक **राष्ट्रपुरूष महाराजा अग्रसेन** – में पेज 36 पर लिखा है कि बेदिल जी की अग्रभागवत को पढ़ा, क्षमा करें, वहां भी अग्रसेन जी के चरित्र के तारतम्य का अभाव लगा। नाग कन्या माधवी की प्रस्तुति नागिन के रूप में तो एकदम कचोट कर रह गई। पांडव अर्जुन की पत्नी उलूपी भी इस क्षेत्र की कन्या है किंतु वह न तो कहीं फन फटकारती है और न ही फुंफकार मारती है। नागवंशी क्षत्रियों को नाग बना डाला। उन्होंने भयंकर विषधर नाग पाले हुए थे जिनका वे शस्त्र के रूप में प्रयोग करते थे, यह तो मान लिया जा सकता है। दूसरी पत्नी सुंदरावती से विवाह के संबंध में आचार्य जी लिखते हैं कि – सुंदरावती से विवाह तो कृष्ण की प्रतिज्ञा के समान है कि शस्त्र नहीं उठाऊंगा। महाराजा कह रहे हैं अन्य विवाह नहीं करूंगा। अत: विवाह भी हुआ किंतु वैवाहिक जीवन नहीं हुआ।
4. कुछ अग्रबंधुओं का मत है कि – वर्तमान में, कुछ अग्रभागवत कथावाचक अपनी कथाओं में रोचकता उत्पन्न करने के लिये मन से कुछ जोड़ देते हैं। जिससे भ्रांतियां फैलती हैं, 10–15 साल बाद इन भ्रांतियों को लोग सच मान लेंगे। जब कोई बंधु शोध करेगा तब उसकी बातों को कोई नहीं मानेगा।
5. वरिष्ठ अग्र साहित्य लेखक **श्री ओमप्रकाश गर्ग 'मधुप'** – बाड़मेर, राजस्थान के अनुसार – महाराजा अग्रसेन वैश्य नाभाग के वंशज थे। नाभाग मनु के पुत्र नभग का पुत्र था। नभग के भलंदन, वात्सप्री तथा मांकील तीन मंत्रदृष्टा वंशज लगातार हुए, जिनके मंत्र वेदों में समाहित होने से उन्हें मंत्रदृष्टा कहा गया। वात्सप्री के प्रांशु और मांकील दो पुत्र हुए। मांकील के वंश में द्वापर के अंत समय में महाराजा अग्रसेन का जन्म हुआ। उनके पिता वल्लभसेन तथा माता वैदर्भी थे। मांकील के ही वंश में लगभग 18वीं – 19वीं पीढ़ी में धनपाल हुए जिनके 8 पुत्रों के साथ प्रांशु की 20वीं पीढ़ी में हुए विशाज की आठ पुत्रियों से विवाह संबंध जुड़े। धनपाल को देवताओं तथा ब्राह्मणों ने मिलकर दक्षिण का दिक्पाल पद पर विभूषित किया। धनपाल की ही 21वीं या 22वीं पीढ़ी में वल्लभसेन व उनके पुत्र अग्रसेन हुए। इन्हीं अग्रसेन के भाई शूरसेन थे तथा उनकी एक ही पत्नी नागराज महीधर (मणिपुर) की पुत्री माधवी थीं।

अध्याय छः

जानकारी

-- भाट --

प्राचीन समय में भारत में ''सूत'' लोग होते थे, जो विविध राजवंशों, ऋषियों व अन्य सांभ्रात कुलों की वंशावलियों को याद रखते थे और उनके पुरातन इतिवृत्त व महत्वपूर्ण घटनाओं को सुनाया करते थे। सूतों के वर्तमान प्रतिनिधि **भाट** हैं। वे गा-गाकर महिमा मंडित गीत सुनाते हैं। महाराजा अग्रसेन तथा अग्रवाल इतिहास की बहुत सी महत्वपूर्ण बातें उनसे ज्ञात होती हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से भाटों के गीतों में सुरक्षित प्राचीन अनुश्रुति का बहुत उपयोग है। अग्रवालों के भी भाट विद्यमान हैं, वे प्राय: लंबा पीला चोगा पहनते हैं और बड़े लहजे के साथ कवित्त सुनाते हैं। बहुत से भाट मुसलमान हो चुके हैं, पर इससे उनके पेशे में कोई परिवर्तन नहीं आया और न ही उनका अपने यजमान अग्रवाल लोगों के साथ संबंध हटा है। वर्तमान समय में भाटों का महत्व बहुत ही कम हो गया है। यहां **यह कहना उचित होगा कि** - "जब पुस्तकों की प्रथा नहीं थी, उन्होंने ऐतिहासिक अनुश्रुति को जीवित और जारी रखने के लिये बड़ा उपयोगी कार्य किया।" भाटों के गीतों में अग्रोहा ही अग्रवालों का आदि निकास स्थान है।

अनेक विद्वानों ने महाराजा अग्रसेन का जीवन चरित्र **''भाटों के गीतों''** के आधार पर लिखा। पर महाराजा अग्रसेन और अग्रवाल जाति की उत्पत्ति के संबंध में गंभीर शोध का आरंभ श्री सत्यकेतु विद्यालंकार जी ने किया। अखिल भारतीय महासभा से प्रोत्साहन प्राप्त कर वे अग्रवाल समाज के प्राचीन इतिहास की खोज में लग गए। जिसके परिणामस्वरूप 1938 में उनकी पुस्तक ''अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास'' प्रकाशित हुई। इस पुस्तक का आधार साहित्यिक था। वे लिखते हैं कि भाटों के गीत भी एक प्रकार की अनुश्रुति ही हैं और इतिहास के लिये उनसे भी सहायता ली जा सकती है। प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल टाड ने भी उनका उपयोग किया था। ब्रह्मानंद ब्रह्मचारी जी ने भाटों के गीतों का संकलन किया था।

सत्यकेतु जी लिखते हैं कि - हमने स्वयं कुछ भाटों को आमंत्रित कर उनसे पुराने गीतों को सुना। यद्यपि इनके वृतांतों में परस्पर बहुत मतभेद है, तथापि ये एक प्रकार के **''हिंदी या बंगारू''** भाषा के **नये जमाने के पुराण हैं।** सत्यकेतु जी, भाटों के गीतों के संबंध में लिखते हैं कि - भाटों के गीतों में एक बात बहुत महत्व की है। इनमें उन 18 बस्तियों का उल्लेख है, जिन्हें अग्रोहा छोड़कर अग्रवालों ने बसाया। अग्रोहा से चलकर अग्रवाल बहुत दिनों तक तोशाम, महिम, सिरसा आदि 18 बस्तियों में बसते रहे। वहां से फिर ये अन्य स्थानों पर गये । इन 18 बस्तियों में आज भी अग्रवाल बहुत संख्या में रहते हैं। अग्रवालों की अनुश्रुति में फिर यहां **18 अंक का महत्व है।**

डा. स्वराजमणि – प्राय: ऐसा होता आया है कि कई ऐतिहासिक पुरूष अपने जन-नायाकत्व के कारण महाकाव्य और लोक गीतों आदि के नायक और चारणों, भाटों एवं लोक गाथाओं के विषय बन जाते हैं, जिससे उनके जीवन के साथ अनेक चमत्कार, चमत्कारिक घटनाएं और अतिश्योक्तियां जुड़ जाती हैं। यह ग्रामीण लोक देवताओं में बहुतायत से देखा जा सकता है। वैसे चारण-भाटों का तो पेशा ही विरूदावली को आकाश पर चढ़ा देना था।

भाटों के गीत – इन गीतों के अनुसार महाराजा अग्रसेन ने अपने भांजे जसराज को अपना कुल भाट बना लिया। इन्हीं की पीढ़ी के अन्य भाटों द्वारा गाये जाने वाले गीतों में अग्रसेन व अग्रवालों के बारे में बहुत कुछ विद्यमान है। ये भाट महाराजा अग्रसेन व अग्रवंश के अन्य वीर पुरूषों की वंशावली तथा वंश परंपरा को बड़े ही लयबद्ध तरीके से सुनाते हैं। अग्रोहा का वर्णन भी इनके गीतों में मिलता है। इन भाटों में शिवकरण का नाम विशेष है। बताया जाता है कि इन्हीं भाटों में से एक भट्ट घनश्याम, तुलाराम आदि के पास ''**अग्रपुराण**'' है। अग्रवालों की वंशावलियों का उल्लेख भी उनकी बहियों में मिलता है।

महाराजा अग्रसेन द्वारा ''भाट'' नियुक्त करना

सन् 1924 में उर्दू में छपी डा. रामचंद्र गुप्ता की पुस्तक के अनुसार – महाराजा अग्रसेन ने अग्रोहा को आबाद कर, पुरोहितों की इच्छा के अनुसार, **अपनी बहन ''कम्बोदी''** की शादी सूरजपुर के महाराजा सूरजभान से की थी। उसके गर्भ से एक लड़का उत्पन्न हुआ, जिसका नाम ''जसराज'' था। यह होनहार बालक चौदह वर्ष की अवस्था को प्राप्त होते ही, वैराग्यवश घर-बार त्यागकर, जंगल में चला गया और ईश्वर-भक्ति में मग्न रहने लगा। महाराजा अग्रसेन ने अपने भान्जे जसराज को बुलवाया और अपने वंश का भाट नियुक्त करके अपनी गोद में बिठाया तथा अपनी रानी सहित प्रणाम करके प्रतिज्ञा की कि जब तक तेरा कुल मौजूद रहेगा, तब तक अग्रवाल-वंश का बच्चा-बच्चा तेरे कुल की इज्जत करेगा। तुझको मेरा कुल अपना भाट मानकर पूजा करेगा। जसराज को भाट नियुक्त करके महाराजा अग्रसेन ने उसे यह दान दिया-7000 गायें, 1100 बहली (गाड़ी), 500 हाथी, 700 वर्ण दखौरी, सवामन मोती और 17 लाख रुपए की जागीर। इस दान को हर्ष पूर्वक ग्रहण कर, महाराजा अग्रसेन को आशीर्वाद देकर, जसराज जंगलों को रवाना हो गया। उस दिन से ही अग्रवालों के भाट महात्मा जसराज के कुल से चले आते हैं, जो ''भूपतिया'' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

अग्रपुराण के अनुसार – ''**महेश ऋषि** (जो अग्रसेन जी के गुरू थे) के एक कन्या **कमोदी** थी जो कि अपने पिता के यहां रहती थी। उसका पुत्र **जसराज** था। गुरू परंपरा के अनुसार **कमोदी** अग्रसेन जी की बहिन हुई, इसी कारण अग्रसेन जी ने **जसराज** को अपना **भांजा** माना था।'' तथा इसी को अपना ''कुलभाट'' नियुक्त किया।

नागवंश

नागवंश के लोग भी हमारी तरह के होते थे। नागवंशियों का इतिहास बड़ा ही गौरवशाली रहा है। जिस तरह सूर्यवंशी, चंद्रवंशी और अग्निवंशी माने गये हैं उसी तरह नागवंशियों की भी प्राचीन परंपरा रही है। नागवंश प्राचीन काल का एक महत्वपूर्ण व शक्तिशाली राजकुल था। इनकी गाथाएं पुराणों में पाई जाती है। अथर्ववेद में भी कुछ नागों के नामों का उल्लेख मिलता है। अग्नि पुराण में 80 प्रकार के नागों का उल्लेख है तथा महाभारत में नाग जाति की लंबी वंशावली मिलती है। प्राचीन काल में नागों की पूजा की परंपरा रही है। ईसा से 3000 वर्ष से भी पूर्व भारत में नागवंशियों के कबीले रहा करते थे जो सर्प की पूजा किया करते थे, इनके देवता सर्प थे। नागपूजा का प्रचलन पुराण पर आधारित है।

नागों की मानव से सर्पाकार आकृति में आने के विकास की प्रक्रिया में डा. परमेश्वरी लाल गुप्त ने ''**टोटेम**'' को ही कारण माना है। उनके अनुसार ये जाति भी जंगलों–तालाबों के नजदीक रही होगी तथा ये सर्प पूजक रहे होंगे। यह चिह्न प्राचीन काल में अनेक जातियों में प्रचलित था। अंग्रेजी में इसे **टोटेम** कहते हैं। ऐसा लगता है कि इसी टोटेम को धारण करने के कारण लोगों में यह धारणा फैल गई कि यह मुख्य रूप मनुष्य नहीं सर्प हैं। माना जाता है कि गुप्तवंशी राजाओं ने नागवंशियों को परास्त किया था, समुद्र गुप्त ने गणपति नाग को पराजित किया था। सिकंदर जब भारत आया था तब उससे सबसे पहले तक्षशिला का नागवंशी राजा ही मिला था। तिब्बती भी अपनी भाषा को नागभाषा कहते हैं।

प्राचीन काल में नागवंशियों का शासन भारत के अनेक स्थानों में था तथा यह जाति संपूर्ण भारत में फैली हुई थी। वासुकी का कैलाश पर्वत के पास ही राज्य था। भगवान कृष्ण के काल में नाग जाति ब्रज व मथुरा में आकर बस गई। इन स्थानों पर नाग देवताओं के अनेक मंदिर अभी भी विद्यमान हैं। **मथुरा संग्रहालय** में ऐसे अनेक नागों की मूर्तियां पाई गई हैं, जहां उन्हें शक्ति एवं बल के प्रतीक के रूप में पूर्ण मानव रूप में दिखाया गया है। इन मूर्तियों में नागों की शक्ति का स्पष्ट आभास होता है। **छत्तीसगढ़** के अनेक भागों में नाग वंशियों का उल्लेख मिलता है। पुराणों में भी मध्यप्रदेश के विदिशा पर शासन करने वाले नाग वंशीय राजाओं का उल्लेख है। मध्यप्रदेश के ग्वालियर व उज्जैन में भी नागवंशियों का राज था। पुराणों के अनुसार एक समय ऐसा था जब नागा समुदाय पूरे अखंड भारत के शासक थे। विष्णु पुराण के अनुसार पद्मावती से मथुरा तक नागों का शासन था। बहुत सी महार जाति भी नागवंशियों की ही एक जाति थी। कांगड़ा, कुल्लू व कश्मीर सहित अन्य पहाड़ी स्थानों में नाग ब्राह्मणों की एक जाति आज भी मौजूद है। सरयू नदी के तट पर भी इनकी बस्ती पाई जाती थीं। सपेरा जाति का कालबेलिया नृत्य आज भी लोकप्रिय है।

अनेक राज्यों के ''**नाग**'' नामक कई शहरों और गांवों के संबंध में कई किवदंतियां जुड़ी हुई हैं। उल्लेखनीय है कि – शहरों के नाम राजाओं, महाराजाओं तथा अन्य महापुरूशों के नाम पर रखे जाते हैं न कि किसी सर्प अथवा पशु–पक्षी के नाम पर। भारत के कई शहर और गांव

नाग शब्द पर आधारित हैं। मान्यता है कि महाराष्ट्र का नागपुर शहर नागवंशियों ने ही बसाया था। वहां की नदी का नाम नाग नदी भी नागवंशियों के कारण ही पड़ा। नागपुर के पास ही नागरधन नामक एक महत्वपूर्ण प्रागैतिहासिक नगर है। कश्मीर के शहर अनंतनाग, बैरीनाग तथा कुकरनाग आदि इनकी शक्ति का परिचायक हैं। अनंतनाग ''नाग'' समुदायों का गढ़ रहा है। कश्मीर के काफी इलाके भी नागों के अधीन थे। नागा आदिवासियों का संबंध भी नागों से माना गया है। अग्रोपाख्यानम में नागलोक के सात तल (नगर) बताए गये हैं- तल, अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, पाताल। नागलोक के प्राचीन तलों को वर्तमान में - असम, मेघालय, मनिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम, नागालैंड, एवं अरूणाचल प्रदेश के नाम से जाना जाता है।) इन प्रदेशों में भी नागा जातियों का बाहुल्य है।

मेघनाथ की पत्नी सुलोचना नागकन्या थी। भगवान राम के पुत्र कुश ने नाग कन्या से विवाह किया था। नागों ने भीम को विष से बचाया था। शूरसेन का जन्म नागराज कन्या से हुआ। कुंती शूरसेन की पुत्री थी। नागराज वासुकि की बहिन का विवाह जरत्कारू ऋषि से हुआ और उन्हीं के पुत्र आस्तीक ऋषि थे जिन्होंने जनमेजय तथा नागों के पारस्परिक युद्ध बंद कराके तक्षक नाग की रक्षा की। स्वंय लक्ष्मण, बलराम, पुंडरीक, आदि नागवंशी थे। भीम के पुत्र घटोत्कच का विवाह भी एक नाग कन्या से हुआ था जिसका नाम अहिलवती था। अर्जुन ने नागकन्या उलूपी से विवाह किया जो नागराज वासुकी की पुत्री थी। खांडव वन इनका शासित क्षेत्र था, पांडवों ने इसे जीतकर इंद्रप्रस्थ नाम दिया।

भारतीय इतिहास में नागवंश का बड़ा महत्व रहा है। नाग राजाओं का ''वैश्य अग्रवंश'' से पुराना संबंध था। नागवंशी वैश्य इतने शक्तिशाली थे कि **दिनकर जी** ने इनके बारे में लिखा है कि ''नागवंश का इतिहास अत्यंत वैभवशाली रहा है। इस वंश में संबंध जोड़ने में लोग अपना गौरव समझते रहे।'' वास्तव में नाग वंश प्रसिद्ध एवं शक्तिशाली वैश्य वंश था जिसके साथ संबंध स्थापित करना गौरव की बात समझी जाती थी। इसके लिये सभी राजे-महाराजे लालायित रहते थे। इस वंश के साथ कोई टक्कर लेने का साहस नहीं करता था। **महाराजा अग्रसेन** ने भी नागवंश से अपना संबंध जोड़कर तथा इनके सहयोग से अपनी शक्ति को इनता बढ़ा लिया था कि युद्ध में पराजय का मुंह देखने के बाद देवराज इंद्र को भी इनसे संधि करने के लिये विवश होना पड़ा।

कोल्हपुर (अहिनगर) के नागराज ''महीधर'' की पुत्री माधवी से महाराजा अग्रसेन का विवाह हुआ। (अनेक विद्वान लेखकों ने नागराज ''**कुमुद**'' लिखा है।) अग्रसेन जी का नागवंश में विवाह होने के कारण अग्रवाल नागों को मामा कहते हैं। आस्तीक मुनि की माता नागराज वासुकि की बहिन थीं। इन्होंने तक्षक नाग की रक्षा की थी, इसी कारण अग्रवाल आस्तीक मुनि की भी पूजा करते हैं। उत्तरी भारत के प्रसिद्ध देवता ''गूगा पीर'' का भी नागों के साथ संबंध रहा है। राजस्थान के अग्रवाल लोग गूगा पीर की पूजा करते हैं। अग्रोहा के उत्खनन में प्राप्त नागों की मूर्तियां इस बात का प्रमाण है कि अग्रवालों का नागवंश से बड़ा घनिष्ठ संबंध रहा है। हाथ का थाप बनाकर नाग के फन की कल्पना की जाती है।

- श्री टी, डब्ल्यू हाइस डेविड्स के अनुसार - यह नाग जाति संभवत: उस अद्‌भुत प्रभावशाली जातियों के साथ संबंधित जान पड़ती है, जिनकी परम्पराएं नाग-पूजा, वृक्ष-पूजा, नदी-पूजा के पर्ववर्ती सिद्धान्तों के साथ घुल - मिल गई हैं।
- श्री बलराम श्रीवास्तव के मतानुसार- पश्चिमोत्तर भारत में नाग पूजा की परंपरा सिंधु घाटी की सभ्यता काल से भी पुरानी बताई जाती है।
- नाग कन्याओं से संबंधित गाथाएं, उस महत्वपूर्ण घटनाओं की ओर इशारा करती हैं, जिसमें प्राचीन भारतीय अनेक प्रतापी राजाओं ने अपने राज्य को सुदृढ़ करने हेतु नागकन्याओं से विवाह किया।
- ऋग्वेद काल से ही नाग जाति भारत की अत्यंत शक्तिशाली जाति रही है।
- मान्यता है कि-राजा महीधर ने अग्रसेन की शादी के उपलक्ष्य में एक नगर बसाया जो ''**अगरतला**'' के नाम से आज भी ख्याति प्राप्त है।
- **शेष** (नाग) को ही अनंत कहा गया है। ये कद्रू के बेटों में सबसे पराक्रमी थे और प्रथम नागराज थे। कश्मीर का अनंतनाग जिला इनका गढ़ था। **वासुकि** - नागों के इस दूसरे राजा का इलाका कैलाश पर्वत के आस-पास था। **तक्षक** - इनका राज तक्षशिला के आस-पास था। इतिहासकारों के अनुसार तक्षक नाम की एक जाति थी, जिनका चिह्न सर्प था। इनका राजा परीक्षित के साथ भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें परीक्षित मारे गये। तब उनके पुत्र जनमेजय ने तक्षकों के साथ युद्ध कर उन्हें परास्त कर दिया। **कर्कोटक** - और ऐरावत नाग कुल का इलाका पंजाब की इरावती नदी के आस-पास का माना जाता है। कर्कोटक शिव के गण थे (शिवजी की स्तुति के कारण ये जनमेजय के यज्ञ से बच निकले थे।) **पद्‌म** - गोमती नदी के पास के नेमिश नामक क्षेत्र पर इनका शासन था, बाद में ये मणिपुर में बस गये। असम के नागवंशी इन्हीं के वंश से हैं।
- श्री ब्रजलाल गुप्ता की पुस्तक - वैश्य अग्रवाल-एक परिचय - प्रताप नगर दो हैं - एक भड़ोच में अंकलेश्वर रेलवे स्टेशन के पास और दूसरा प्रताप नगर वासंदा (वैश्यों का) जिला सूरत में है। दोनों स्थानों पर डाकघर हैं। इसी प्रकार कोल्हापुर भी दो हैं, एक सतारा के पास और दूसरा उससे नीचे दक्षिण में। इन दोनों में भी डाकघर हैं। ये चारों नगर दक्षिण में समुद्र के पश्चिमी तट पर स्थित होने के कारण व्यापार का केंद्र थे। ''नाग या नाक'' अर्थात् जलपोतों द्वारा विदेशों से व्यापार करने के कारण ये लोग ''नागवंशी वैश्य'' कहलाये।

अग्रवाल कहलाता हूं मैं, स्वर्ण लिखा इतिहास है, ।
मेरे जाति के पुरखों ने, जग में किया प्रकाश है ।

जातियों के विविध प्रकार

भारत में जो अनेक जातियां वर्तमान में विद्यमान हैं, उन्हें निम्नलिखित वर्गों में विभक्त किया जा सकता है जैसे–

1. नस्ल व कबीले पर आधारित – भील, संथाल, गोंड आदि अहीर व गूजर जैसी जातियां भी पहले कबीलों के रूप में ही थीं।

2. संप्रदायों पर आधारित – जोगी, विश्नोई, गुंसाई, लिंगायत आदि

3. प्रादैशिक जातियां – अनेक जातियां ऐसी हैं जिनका किसी विशेष प्रदेश के साथ संबंध है। चौरसिया, पनगड़िया, महोबिया, जैसवार, गंगापारी आदि।

4. प्राचीन गणराज्यों से विकसित जातियां – बहुत सी ऐसी जातियां हैं जिनका विकास गणराज्यों में हुआ है। खत्री, अरोड़ा, सैनी, अग्रवाल, रोहतगी आदि।

5. पेशों पर आधारित जातियां और उनका विकास – उन श्रेणियों में हुआ, जो प्राचीन काल के विविध जनपदों में संगठित थीं। सभ्यता के विकास के साथ–साथ प्राचीन भारत में अनेक प्रकार के शिल्प और व्यवसाय भी विकसित हो गये थे, तथा लुहार, बढ़ई, सुनार, जुलाहा, कुम्हार, नाई आदि विविध शिल्पों का अनुसरण करने वाले लोगों ने अपने अलग–अलग संगठन बना लिये थे, जिन्हें श्रेणी (Guild) कहा जाता था। प्रत्येक श्रेणी का एक मुखिया होता था जिसे आचार्य भी कहते थे और श्रेणी के अन्य सब सदस्य उसके नेतृत्व की स्थिति में उसके अधीन रहकर कार्य किया करते थे। श्रेणी में संगठित शिल्पी (लुहार, बढ़ई, सुनार, जुलाहा, कुम्हार,नाई आदि) अपने व्यवसाय के साथ संबंध रखने वाले नियमों का स्वंय निर्माण करते थे और उनका उल्लघंन करने वालों को दंड देने का अधिकार भी रखते थे। श्रेणियों में अपने अलग धर्म (कानून) चरित्र और व्यवहार होते थे जिनमें राज्य संस्था की ओर से कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाता था। श्रेणियां स्वशासित या स्वायत्त संस्थाएं थीं जिनके कानून और व्यवहार राज्य द्वारा मान्य थे। इन श्रेणियों का संगठन पंचायती आधार पर था, और इन्हें कानून बनाने तथा न्याय करने के अधिकार प्राप्त थे। बाद में इन श्रेणियों ने ही जातियों का रूप प्राप्त कर लिया। भारत में पेशों पर आधारित जो बहुत सी जातियां हैं, उनका विकास प्राचीन समय की उन श्रेणियों द्वारा ही हुआ है। यहां यह कह सकते हैं कि – जाति भेद का विकास भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

इतिहास में ऐसे अनेक वैश्य आते हैं, जिन्हें विविध लेखकों ने ''वैश्य'' लिखा है। ऐतिहासिक प्रमाणों से पता चलता है कि गुप्त वंशीय शासक वैश्य सम्राट ही थे। यह उनकी गुप्त उपाधि से भी स्पष्ट होता है।

- मनुस्मृति, बौधयान गृह सूत्र, पारस्कर संहिता में उल्लेखानुसार ''वैश्यान्त, गुप्तेति'' गुप्त वंशीय राजाओं ने गुप्त उपाधि का प्रयोग कर अपना वैश्य होना प्रकट किया है।
- गिरनार से प्राप्त शिलालेखों में भी गुप्त वंश को वैश्य लिखा गया है।

- विष्णुगुप्त ''चाणक्य'' ने ''गुप्तेति वैश्य'' कहा, चाणक्य वैश्य थे। चाणक्य का पुत्र वात्सायन मल्लिनाथ भी वैश्य था। नंदराय जी और यशोदा भी वैश्य थे।
- आदि काल में वर्ण व्यवस्था कठोर नहीं थी। वर्ण परिवर्तन के अनेक उदाहरण मिलते हैं जैसे – विश्वामित्र क्षत्रिय थे तथा अपने तप से महर्षि बन गये, परशुराम ब्राह्मण थे, अपने युद्ध प्रियता के कारण क्षत्रिय कहलाये, मनु का एक पुत्र पृणव गोवध कर देने के कारण शूद्र हो गया।
- हरिवंश पुराण में नाभाग को वैश्य बताया गया है, उनके दो पुत्र ब्राह्मण हो गये। मार्कण्डेय पुराण में भी कथा आती है कि वैश्य कुमारी से विवाह करने के कारण नाभाग स्वंय वैश्य हो गया। उसका एक पुत्र–भलंदन भी वैश्य था, पर वह आगे चलकर क्षत्रिय हो गया।
- इसी प्रकार माना जाता है कि महाराजा अग्रसेन क्षत्रिय से वैश्य हुए।
- मंजूश्रीमूलकल्प नामक जो बौद्ध ग्रंथ उपलब्ध हुआ है। इसमें विविध राजाओं की जाति भी साथ में दी गई है। इसमें नागवंश को भी वैश्य लिखा गया है। भारतीय इतिहास में नागवंश का बड़ा महत्व है। नाग राजाओं का वैश्य अग्रवंश से पुराना संबंध था। मंजूश्रीमूलकल्प में इतिहास के प्रसिद्ध गुप्तवंश को वैश्य लिखा है।
- पुराणों में बहुत सी वंशावलियां दी गई हैं। इनमें से केवल वैशालक वंश ही ऐसा है, जिसके कुछ राजा वैश्य लिखे हुए हैं।
- गुप्त अभिलेखों में वैश्य जाति के बारे में आया है कि, ''वैश्यों का प्रधान कर्म वाणिज्य ही था।''
- **आचार्य रामरंग** – धृतराष्ट्र का वैश्य कन्या से उत्पन्न पुत्र 'युयुत्सु' तो कुरूक्षेत्र युद्ध में पांडव पक्ष की ओर से लड़ा। सत्यनारायण कथा में अपने पति दर्शन की उत्कट अभिलाषा के वशीभूत 'वैश्य कन्या' लीलावती प्रसाद छोड़कर आ जाती है। ''जय लक्ष्मी रमणा और वैश्य मनोरथ पायो'' की आरती पूरा संकेत करती है कि वैश्य समाज लक्ष्मी को अपनी आराध्य मानता है।

भारत में जिन सैंकड़ों जातियों की सत्ता है, उन सबको किसी वर्ण के अंतर्गत कर सकना संभव नहीं है। जैसे – जाट, कायस्थ गूजर, आदि। अहीर, गडरिया आदि को किस वर्ण के अंतर्गत रखा जाए यह भी निर्विवाद नहीं हैं। शास्त्रों के अनुसार कृषि और पशुपालन वैश्यों के कार्य माने गये हैं।

(स्त्रोत– नेट व सत्यकेतु विद्यालंकार जी की पुस्तक)

गणराज्य व जनपद

प्राचीन भारत में अनेक गणराज्य, जनपद व महाजनपद हुए हैं। भारत में बहुत छोटे-छोटे राज्य होते थे, जिन्हें गणराज्य कहा जाता था (उस समय प्राय: सभी देशों में छोटे-छोटे राज्य हुआ करते थे, जिन्हें भारत में **जनपद** कहा जाता था। कहा जाता है कि राजा परिक्षित के अधीन छोटे-छोटे 536 राज्य थे, जिन्हें गणराज्य कहा जाता था।) प्रत्येक गणराज्य के अपने कानून, अपने रीति-रिवाज तथा अपनी पृथक विशेषताएं होती थीं। वर्तमान समय की अनेक जातियों की उत्पत्ति प्राचीन भारतीय गणराज्यों में ढूंढी जा सकती है। इन जनपदों (नगर-राज्य) में एक ''**पुर**'' (राजधानी) होता था। राज कार्य का संचालन पुर से ही किया जाता था। पुर के चारों ओर नगर-राज्य (जनपद) के प्रदेश को भी जनपद कहा जाता था। जिनमें कृषक व अन्य लोग खेती व श्रम करके अपना जीवन निर्वाह किया करते थे।

शासन की दृष्टि से जनपद दो प्रकार के होते थे, एक वे जिनमें किसी वंशानुगत राजा की सत्ता हो और दूसरे वे जिनमें शासन का कार्य ''गण'' द्वारा संपादित किया जाए, जिनमें कोई वंशानुगत राजा न हो। कुछ गणराज्यों में केवल कुल के मुख्य ही शासनकार्य संपादित किया करते थे। यद्यपि प्राचीन भारत के जनपदों में अनेक प्रकार की शासन पद्धतियों की सत्ता थी, पर उनमें यह बात समान थी कि उनके निवासी ''सजात' हुआ करते थे। जिसे कबीला (Tribe) कहा जाता है। संस्कृत में उसी के लिये ''जन'' शब्द का प्रयोग हुआ है। किसी अत्यंत प्राचीन समय में जन अनवस्थित दशा में थे, वे किसी प्रदेश पद स्थाई रूप से बसे हुए नहीं होते थे। पर जब वे स्थाई रूप से किसी प्रदेश पर बस गये तो उनका प्रदेश जनपद कहलाने लगा। ये जनपद छोट-छोटे स्वतंत्र राज्य थे, जिनके निवासियों में सजात होने के कारण एकता की भावना विद्यमान थी। ये अपने कानून स्वयं बनाते थे, अपने देव-देवताओं की पूजा करते थे, और अपनी परंपरागत मर्यादाओं का पालन करने में तत्पर रहा करते थे। इनमें से अनेक अपनी चरम सीमा प्राप्त कर काल के गाल में समा गये तो कुछ अपने स्वर्णिम युग में पहुंचकर पतन की ओर बढ़ते चले गये। -- जब भारत में साम्राज्यवाद का विकास हुआ तो इन जनपदों की राजनीतिक स्वतंत्रता नष्ट हो गई। साम्राज्यवाद के काल में भी इन जनपदों का सामाजिक और आर्थिक अस्तित्व पृथक रूप से कायम रहा।

श्री ओमप्रकाश अग्रवाल - ''अग्रोहा जिस प्रदेश की राजधानी थी वह एक जनपद था। प्राचीन भारत में जनपदों का वही स्थान था, जो किसी समय यूनान देश में वहां के पुर राज्य का था। जनपद राज्य दो प्रकार के थे एक-राज्याधीन, दूसरा-गणाधीन। गणाधीन जनपद एकजातीय भूमि के रूप में स्वतंत्र विकास करता रहता था, वहां के निवासी प्राय: शांतिप्रिय रहकर कृषि, वाणिज्य, गो पालन और छोटे-मोटे उद्योग धंधों से अपना निर्वाह करते थे। युद्ध के समय वे शस्त्र धारण करके अपने देश की रक्षा भी करते थे। ऐसा ही एक जनपद ''अग्रोदक'' था जिसकी राजधानी अग्रोहा थी। यहां संघीय शासन प्रणाली थी।''

महाभारत का युद्ध किस तारीख को हुआ

1. पौराणिक मान्यता और साहित्य के अनुसार महाभारत का युद्ध 5000 वर्ष पहले हुआ।
2. अ.भा. इतिहास संकलन योजना ने राष्ट्रीय स्तर पर विद्वानों की सहमति प्राप्त करके महाभारत युद्ध और भगवान श्रीकृष्ण की ऐतिहासिकता सुनिश्चित करते हुए युद्ध की तिथि 3139-38 ई.पू. निश्चित की है। युद्ध के पश्चात् धर्माराज युधिष्ठर ने 36 वर्ष 8 माह और 25 दिनों तक शासन किया था। उसी दिन, उसी समय 28वें कलियुग का प्रारंभ हो गया था। इस प्रकार कलियुग का आरंभ, महाभारत युद्ध के 36 वर्ष बाद (3138-36) अर्थात् 3102 ई.पू. में हुआ। इस गणना से कलियुग का वर्तमान में (3102 + 2020) = 5122 वां वर्ष तथा महाभारत के युद्ध का 3138 + 2020 = 5158 वां वर्ष चल रहा है। जो भारत में प्रचलित सभी पंचागों द्वारा मान्य है। नवीनतम पुरातात्विक खोजें भी इस योजना की उपर्युक्त मान्यता को पुष्ट करती हैं।
3. इतिहासकारों ने खगोलिय प्रमाण के आधार पर 22 नवबंर 3067 ईसा पूर्व ही वह तिथि मानी है, जब महाभारत युद्ध आरंभ हुआ। इस बात का प्रमाण इस बात से मिलता है कि युद्ध आरंभ होने के 13 दिन बाद पूर्ण सूर्य ग्रहण लगा था। यही वो दिन था, जब अर्जुन ने जयद्रथ वध किया। यह ग्रहण उस वर्ष कार्तिक और अश्विन मास में लगे थे। इस घटना ने महाभारत युद्ध की वास्तविक तिथि का निकटतम अनुमान सिद्ध किया है।
4. ताजा शोध के अनुसार ब्रिटेन में कार्यरत न्यूक्लियर मेडिसिन के फिजिशियन डा. मनीष पंडित ने महाभारत में वर्णित 150 खगोलीय घटनाओं के संदर्भ में कहा है कि - महाभारत का युद्ध 22 नवबंर 3067 ईसा पूर्व हुआ था। उस वक्त भगवान कृष्ण 55-56 वर्ष के थे। इसके कुछ माह बाद ही महाभारत की रचना हुई, ऐसा माना जाता है।
5. भारतीय मूल के प्रोफेसर बी. एन. नरहरि ने प्लैटेरियम सॉफ्टवेयर की मदद से महाभारत युद्ध की तिथि 22 नवबंर 3067 ईस्वी पूर्व की निकाली है।
6. इतिहासकार डी.एस. त्रिवेदी ने भी विभिन्न ऐतिहासिक एवं ज्योतिष संबंधी आधारों पर बल देते हुए युद्ध का समय 3137 ईसा पूर्व निश्चित किया है। वी.बी. अठावले के अनुसार युद्ध की तिथि 3016 ईसा पूर्व है।
7. आर्यभट्ट के अनुसार महाभारत युद्ध 3137 ईसा पूर्व हुआ और कलियुग का आरंभ श्री कृष्ण के निधन के 35 वर्ष बाद हुआ।
8. अन्य - महाभारत का युद्ध और महाभारत ग्रंथ की रचना का काल अलग-अलग रहा है। इसमें भ्रम की स्थिति उत्पन्न होने की जरूरत नहीं। यह सभी और से स्थापित सत्य है कि भगवान श्रीकृष्ण का जन्म रोहिणी नक्षत्र तथा अष्टमी तिथि के संयोग से ''जयंती'' नामक योग में लगभग 3112 ई.पू. हुआ था। ज्योतिषियों के अनुसार रात 12 बजे उस वक्त ''शून्य काल'' था। इस मान से यह माना जाएगा कि महाभारत का युद्ध भी 31वीं सदी ईसा से पूर्व

ही हुआ था।

9. इतिहासकार डी.एस. त्रिवेदी ने विभिन्न ऐतिहासिक एवं ज्योतिष संबंधी गणनाओं के आधारों पर बल देते हुए युद्ध का समय 3137 ईसा पूर्व निश्चित किया।
10. पी.सी.सेनगुप्ता के अनुसार – महाभारत में आये कुछ ज्योतिषिय संबंधी प्रमाण, युद्ध का समय 2449 ईसा पूर्व निश्चय करते हैं।

(स्त्रोत – नेट से प्राप्त सामग्री के आधार पर)

श्री अग्रउपाख्यान ग्रंथ (अग्र–भागवत) के अनुसार महाभारत युद्ध में जब महाराजा अग्रसेन ने भाग लिया तब उनकी आयु 15 वर्ष थी। (कुछ विद्वानों ने 16 वर्ष लिखा है।) इस गणना के आधार पर महाराजा अग्रसेन का जन्म आज से (3138 वर्ष + 15वर्ष + 2020 = **5173) वर्ष** पहले हुआ। ऐसा माना जाता है।

चारों युगों के विषय में रोचक जानकारी

ईक्ष्वाकु राजाओं की कथाएं-8 में प्रसिद्ध विद्वान डा. मोहन लाल जी गुप्ता ने सभी युगाों के बारे में विस्तार से इस प्रकार बताया है –

सतयुग – राजा धुंधुमार के बार सतयुग में ईक्ष्वाकु के वंश के सात और राजा हुए किंतु उनके काल की बड़ी घटनाएं पौराणिक साहित्य में नहीं मिलती हैं। ''युवनाश्व'' द्वितीय को सतयुग का अंतिम ईक्ष्वाकु वंशीय राजा माना जाता है। सतयुग को कृतयुग भी कहा जाता है। पुराणों में वर्णित कथाओं में सतयुग में धर्म रूपी वृषभ चारों पैरों पर मजबूती से खड़ा रहता है। पुराणों की मान्यता है कि – सतयुग के नायक महाराज मनु थे।

त्रेता युग – यह मानव सृष्टि का द्वितीय युग माना जाता है। यह काल इक्ष्वाकु वंश के राजा मान्धाता से आरंभ होता है तथा श्री राम चंद्र की लौकिक लीलाओं के साथ समाप्त होता है। इसमें धर्म रूपी वृषभ तीन पैरों पर खड़ा रहता है, अत: वह लंगड़ाते हुए चलता है। इस युग के नायक श्रीराम थे। **द्वापर युग** – यह मानव सृष्टि का तृतीय युग माना जाता है। इसमें धर्म रूपी वृषभ दो पैरों पर खड़ा रहता है। इस युग के नायक भगवान श्री कृष्ण थे। **कलि युग** – यह मानव सृष्टि का अंतिम युग माना जाता है। इसमें धर्म रूपी वृषभ का एक ही पैर रह जाने के कारण वह चलने में असमर्थ रहता है, अर्थात् धर्म महत्वहीन हो जाता है। इस युग में भगवान विष्णु का अवतार होगा तथा वे ही इस युग के नायक होंगे।

जब द्वापर युग में गंधमादन पर्वत पर महाबली भीमसेन हनुमान जी से मिले तब हनुमान जी ने उनको बताया कि – सबसे पहले सतयुग आया, इस युग में मनुष्य के मन में जो भी कामना होती थी, वह पूरी हो जाती थी। इसलिये धर्म की कभी हानि नहीं होती थी। बाद में त्रेता युग आया, इस युग में लोग कर्म करके कर्म फल प्राप्त करते थे। फिर द्वापर युग आया, जिसमें लोग

सत्य एवं धर्म से दूर हो गये और अधर्म का बोलबाला हो गया। इसके बाद कलियुग आएगा जिसमें चारों ओर अधर्म का साम्राज्य दिखाई देगा और मनुष्य को उसकी इच्छा के अनुसार फल नहीं मिलेगा।

बहुत से पुराणों में यह भी मान्यता दी गई है कि – सतयुग में मनुष्य की लंबाई 32 फीट तथा आयु एक लाख वर्ष बताई गई है। इस युग का तीर्थ पुष्कर माना गया है। इस युग में मुद्रा रत्न की, पात्र सोने के हुआ करते थे। पुण्य 100 प्रतिशत तथा पाप शून्य प्रतिशत था। **त्रेता युग** में मनुष्य की लंबाई 21 फीट तथा आयु 10,000 वर्ष बताई गई है। इस युग का तीर्थ पुष्कर माना गया है। इस युग में मुद्रा सोने की, पात्र चांदी के हुआ करते थे। पुण्य 75 प्रतिशत तथा पाप 25 प्रतिशत था। **द्वापर युग** में मनुष्य की लंबाई 11 फीट तथा आयु 1000 वर्ष बताई गई है। इस युग का तीर्थ कुरूक्षेत्र माना गया है। इस युग में मुद्रा चांदी की, पात्र तांबे के हुआ करते थे। पुण्य तथा पाप का प्रतिशत बराबर था। **कलि युग** में मनुष्य की लंबाई 5 फीट 5 इंच तथा आयु 100 वर्ष बताई गई है। इस युग का तीर्थ गंगाजी को माना गया है। इस युग में मुद्रा लोहे की, पात्र मिट्टी के बताए गये हैं। पुण्य 25 प्रतिशत तथा पाप 75 प्रतिशत बताया गया है। अवतार कलकि तथा बुद्ध को बताया गया है।

पुराणों की यह भी मान्यता है कि एक युग में एक वर्ण का शासन होता है। – **सतयुग** में ब्राह्मणों का अर्थात् ऋषियों–मुनियों का शासन था। इस काल में जप–तप तथा वैदिक नियमों का पालन किया जाता था। **त्रेता युग** में क्षत्रिय वंश का शासन हुआ। इस युग में धरती पर युद्धों की भरमार थी। **द्वापर युग** में वैश्यों की अधिकता हुई, इस युग में व्यापार एवं वाणिज्य ने खूब वृद्धि की। **कलियुग** को शूद्रों का अर्थात् नौकरी करने वालों का युग कहा गया है। पुराणों के अनुसार कलियुग का वर्णन इस प्रकार किया जाता है – जब कलियुग के 10,000 वर्ष शेष रहे जाएंगे तब भगवान विष्णु पृथ्वी छोड़ देंगे। जब 5000 वर्ष शेष रह जाएंगे तब गंगा जी का जल पृथ्वी को छोड़ देगा और जब 2500 वर्ष बाकी रह जाएंगे तब ग्राम देवता गांवों को त्याग देंगे। पुराणों के अनुसार कलियुग में अधर्म इतना बढ़ जाएगा कि चारों ओर पाप और अत्याचार होते दिखाई देंगे। सूर्य की गर्मी बढ़ जाएगी, धरती के समस्त जलस्त्रोत सूख जाएंगे। हिंदू धर्मशास्त्रों के अनुसार चारों युगों का क्रम अनवरत चलता है और कलियुग के बार प्रलय होती है। भगवान शिव प्रलय के देवता माने गए हैं और उन्हीं के द्वारा श्रृष्टि का प्रलय किया जाता है। सृष्टि का नाश होने के बाद पुन: सृष्टि रची जाती है।

गोरख पंथी योगियों की चारों युगों के बारे में धारणा

हरियाणा नाथ योगियों का उदय स्थान रहा है, इस संप्रदाय में चारों युगों का वर्णन दिया गया है। सुंदर नाथ जी ने भी अपने दोहों में चारों युगों का वर्णन किया है। **श्री गोरखनाथ जी योगेश्वर का कथन है कि** – सतयुग तब जानो जब योगी जन तथा जनता मिट्टी के बर्तन, मिट्टी के जेवर, मिट्टी की माला तथा मिट्टी की मुद्रा आदि का प्रयोग करते हैं। त्रेता युग तब

जानों जब ताम्र का प्रचलन हो यानि तांबे के जेबर, मुद्रा आदि का प्रयोग हो। द्वापर युग में सफेद नाम की यानि चांदी की मुद्राओं, जेवर आदि का प्रयोग हो। कलियुग तब जानो जब योगीजन गृहस्थियों से भी ज्यादा स्वर्ण संचय करें और मानव भी सोने को अधिक महत्व दे। अर्थात् जब मिट्टी का प्रयोग होता है उसे सतयुग, ताम्रकाल को त्रेता, रजत काल को द्वापर युग, स्वर्ण का जब योगी ज्यादा इस्तेमाल करें उसे कलियुग। वर्तमान काल में कुछ टीलों की खुदाई से एक हजार ईस्वी पूर्व मिट्टी की वस्तुएं प्राप्त होती हैं। ईसा पूर्व 500 के लगभग ताम्र की वस्तुएं प्राप्त होती हैं। जो गोरखनाथ के कथन की पुष्टि करती हैं। इसी आधार पर भविष्य पुराण में आल्हा–उदल के संग्राम की द्वापर का अंत बताया गया है तथा महाभारत से तुलना की गई है।

मनु स्मृति के अध्याय 01 के श्लोक 301–302 के अनुसार – सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर तथा कलियुग सब राजा के बर्ताव के अनुसार हैं। राजा अपनी प्रजा को सत्य, तप आदि पर लगाता है तब सतयुग जानो। जब राजा यज्ञों आदि द्वारा अपनी प्रजा को शुभ कर्मों में व अनुष्ठानों में लगाता है तब त्रेता युग जानो। जब राजा और प्रजा समभाव से रहें तो द्वापर युग जानो। जब राजा प्रजा की भलाई तथा धर्म से विचलित हो जाता है, प्रजा भी मनमानी और मनचाहे अधर्म कार्य करती है उसे कलियुग जानो, अत: जैसा राजा व प्रजा का आचरण हो वही युग का नाम होगा।

पुस्तक – अग्रवाल इतिहास, चौ.वृंदावन कानूनगो, पेज–10 व 22

भ्रांतियां

अग्रबंधुओं, क्षमा साहित कहना चाहूंगा कि, आज अग्रसेन जी के बारे में अनेक भ्रामक तथा तथ्यहीन भ्रांतियां फैलाई जा रहीं हैं, वाट्सऐप पर तथा कुछ पत्रिकाओं में भी अनेक अग्रबंधु अति उत्साह में निराधार व कपोल-कल्पित ऐसी काल्पनिक कहानियां गढ़ रहे हैं जिनको पढ़कर कष्ट होता है। जैसे - एक पत्रिका में समाज के एक गणमान्य अग्रबंधु ने लिखा था कि - ''इस सत्य से समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग अनजान है कि महाभारत के युद्ध में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा दिए गये गीता ज्ञान को अर्जुन के अलावा केवल दो लोगों ने सुना- एक संजय जो राज दरबार में बैठकर धृतराष्ट्र को महाभारत के युद्ध का आंखो देखा हाल सुना रहा था, दूसरे भगवान अग्रसेन जिन्होंने 15 वर्ष की आयु में पांडवों की ओर से महाभारत के युद्ध में भाग लिया।'' एक अन्य लेख में लिखते हैं कि - महाराजा अग्रसेन हमारे पूर्वज ही नहीं बल्कि साक्षात ईश्वर के अवतार हैं। अग्रवाल ही नहीं बल्कि 36 बिरादरियों द्वारा अग्रसेन जी को भगवान के रूप में मान्यता मिली है तथा गीता का संदेश घर-घर तक अग्रसेन जी ने ही पहुंचाया है तथा मोहम्मद गजनवी ने सोमनाथ पर 17 बार आक्रमण किया और 17 बार ही अग्रोहा पर भी आक्रमण किया। एक अन्य अगबंधु ने लिखा है कि - महाराज अग्रसेन 18 पुत्रों के साथ यज्ञ में बैठे, इन पुत्रों को 18 गोत्र 18 गुरूओं के नाम पर दिये गए हैं। सच तो यह है कि - इस प्रकार की किवदंती कहीं किसी भी पुस्तक व इतिहास में नहीं मिलती है और न ही किसी विद्वान ने लिखा। ये भ्रांतियां इतिहास को विकृत्त करती हैं तथा भ्रम की स्थिति बनी रहती है। यदि इनके बारे में नहीं बताया जाये तो कुछ समय पश्चात् यही भ्रांतियां संदर्भ के रूप में काम में ली जा सकती हैं।

- डा. स्वराजमणि अग्रवाल का मत - **अग्रसेन ने कभी अवतार के रूप में जन्म नहीं लिया। वे लोकतंत्रीय शासन की एक नई सामाजिक, आर्थिक ओर राजनीतिक व्यवस्था के करण प्रसिद्ध हुए**।
- इस संबंध में सतना के श्री जय कुमार अग्रवाल का कहना है कि - संप्रेषण यदि सही नहीं हो तो यह समाज के लिये घातक होता है। ये कपोल-कल्पित बातें नुकसान पहुंचाती हैं और एक से दूसरे के पास पहुंचते-पहुंचते इसमें काफी कुछ जुड़ जाता है, जो भ्रम की स्थिति पैदा करता है।

❖ वाट्एप पर एक महोदय ने **रहीम जी के दोहे** को **अग्रसेन जी का दोहा** बता कर प्रसारित कर दिया। कि - अग्रसेन बड़े दानवीर थे, उनकी ये खास बात थी कि जब वो दान देने के लिये हाथ बढ़ाते तो अपनी नजर नीचे झुका लेते थे।

- **कहते हैं कि** - अब्दुल रहीम खानखाना इतने अधिक उदार और दानी थे कि जो भी याचक उनके द्वार पर आया, उसे दोबारा दान मांगने की जरूरत नहीं पड़ी। वे याचक को इतना देते

थे कि उसे इतना दान देते थे कि उसे पुन: मांगने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी। वे हमेशा कहते थे -- देने वाला और कोई है और लोग कहते हैं कि - मैं देता हूं। मुझे यह सोचकर लज्जित होना पड़ता है।

अधूरे दोहे के रूप में तुलसीदास जी ने रहीम जी से हंसी ठिठोली की थी, जिसका जवाब भी रहीम जी ने दोहे को पूरा करके दिया। इस प्रकार की हंसी-मजाक दो साहित्कार विद्वानों में होती रहती थी। किसी ने दो लाईन लिख दी, अगले ने उसे पूरा कर दिया। -- विद्वान श्री दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने कहा कि, अग्रसेन जी के बारे में भ्रांतियां किस प्रकार फैला दी जाती हैं ये उसका उदाहरण है।

- इसी प्रकार **जनगणना संबंधी** भ्रांति है कि फलां राज्य में इतने अग्रवाल हैं। ये तथ्यों पर आधारित नहीं है। और किसने की ?किसके द्वारा करवाई गई ?कब की ? क्या किसी राज्य की किसी संस्था ने इसे प्रमाणित किया या किसी राज्य के किसी शहर की संस्था ने इसे प्रमाणित किया ?इतना बड़ा कार्य हो गया और किसी अग्रबंधु को पता भी न चला ? ऐसा कुछ भी नहीं बताया गया है। केवल मनगढ़ंत और भ्रमित आंकड़े दिये गये हैं।
- अग्रसेन जी के इतिहास से संबंधित भी अनेक भ्रांतियां हैं जैसे - अग्रसेन जी का जन्म काल, उनकी ऐतिहासिकता, अग्रभागवत की प्रमाणिकता और उसकी पूर्णता के बारे में। अनुश्रुति के आधार पर अग्रसेन जी से जुड़े हुए किस्से-कहानियां। जैसे- साढ़े सत्रह गौत्र, 18 यज्ञ में पुत्रों का बैठना व उनको गौत्र देना, शेरनी की कहानी, नागवंश्से जुड़ी हुई भ्रांतियां, नागकन्यांओं का चोला बदलना और धोखे से जला देना, दस्से, बीसे, पंजे व ढईया में अंतर आदि। अग्रबंधुओं में ये भ्रांतियां बनी रहेंगी तब-तक, जब-तक कि वे सही तथ्यों से अवगत नहीं होंगे। आज तो हम अनेक माध्यमों से इसका प्रचार कर सकते हैं। अग्रवाल समाज का साहित्य भी समृद्धशाली है। केवल नेट पर सभी सामग्री सही रूप में नहीं मिलती है, नेट में तो जो डालेंगे, वही पढ़ेंगे।

भ्रांति संबंधी जानकारी

वैश्यों में ''गुप्ता'' जाति के रूप में लिखा जाना

गुप्त या गुप्ता - पारस्कर संहिता के अनुसार ''गुप्त' उपाधि का प्रयोग वैश्य समुदाय के लोगों के लिये होता है। ''गुप्तेति वैश्यस्यं'' संभवतः अपने व्यापारिक रहस्यों को गूढ़ (गोपनीय) बनाये रखने के कारण ही उनके लिये इस संबोधन का प्रचलन हुआ। अंग्रेजी के प्रभाव के कारण यहां गुप्त शब्द अपभ्रंश होकर गुप्ता हो गया। इसलिये अग्रवाल समाज में भी इस शब्द का व्यापकता से प्रयोग किया जाता है। इसके साथ ही विष्णु पुराण में भी एक श्लोक आया है जिसके अनुसार भी वैश्यों को गुप्त कहा जाता है -

शर्मा देवस्य विप्रस्य वर्मा गाता च भू भर्वः।
भूर्वि गुप्तस्य वैश्यस्य दास शुद्रस्य कारयेतः ।।

लेकिन **गुप्ता** शब्द का प्रयोग संपूर्ण वैश्य समाज के लिये होने के कारण उससे केवल अग्रवाल होने का बोध नहीं होता। इसे अग्रवाल समाज के अलावा अनेक वैश्य समुदाय के लोग प्रयोग में लाते हैं जैसे- खंडेलवाल, केसरवानी, रोनियार, माथुरिये, गहोई, वार्ष्णेय, तेली आदि। प. बंगाल में सेनगुप्ता, दास गुप्ता, वैद आदि। महाराष्ट्र में इसे गुप्ते के नाम से लिखा जाता है। दक्षिण के कोमती शेट्टी समुदाय के लोग भी अपने को गुप्ता शब्द से संबोधित करते हैं। इस शब्द का शुद्ध रूप ''**गुप्त**'' है न कि गुप्ता। पुराने समय में वर्ण व्यवस्था के आधार पर तथा कर्म के आधार पर अपने नाम के साथ जाति लिखी जाती थी। (जो पीढ़ी दर पीढ़ी आज भी विद्यमान है) जिससे यह बोध होता था कि वह परिवार क्या करता है। जैसे :-

1. **क्षत्रिय** - अर्थात् देश, राज्य या साम्राज्य की सुरक्षा का दायित्व निभाने वाला। इस प्रकार राज्य की सुरक्षा करने वाला या सेना में रहने वाला क्षत्रिय होता था तथा इसको **सिंह** लगाने का अधिकार होता था। ये सिंह नाम से जाने जाते थे। हम देखते हैं कि अनेक जातियाँ तथा वैश्य समाज के लोग भी सिंह लगाते हैं। इनके पूर्वज भी सिंह लगाते थे। -- वैसे क्षत्रियों के बारे में यह भी कहा जाता है कि - क्षत्रिय एक वर्ण है, यानि युद्धप्रिय जातियों का समूह, जिसमें गुर्जर, राजपूत, मराठा, जाट, यादव आदि जातियां आती हैं।
2. **ब्राहम्मण** - ब्राहम्णत्व कर्म करने वाला अथवा शिक्षा या उपदेश देने वाला ब्राहम्मण कहलाता था तथा ब्राहम्मणों को शर्मा लिखने का अधिकार था। आज सैंकड़ो तरह के ब्राहम्मण शर्मा लिखते हैं।

ठीक इसी प्रकार -

3. **वैश्य** - का कर्म करने वाला अर्थात् व्यापार करने वाले वैश्य कहलाते थे तथा सभी वैश्य कर्म करने वाले अपने नाम के साथ ''गुप्त'' का प्रयोग करते थे। यह गुप्त आज गुप्ता हो

गया। (गुप्त अर्थात् व्यापार संबंधी बातों को गुप्त (मन में) रखने वाला व्यापारी) शब्दकोश में गुप्त का अर्थ गहन, गहरा, गूढ, रक्षित, प्रकांड व कठिनता से जानने योग्य माना गया है। अंग्रेजी में व्यंजन (Consonant) के साथ स्वर (Vowel) शामिल नहीं होता लेकिन हिंदी में व्यंजन के साथ मिला होता है। इसलिए अंग्रेजी में संज्ञा (नाम) के साथ व्यंजन में स्वर लगाना पड़ता है। इसलिए GUPT में A जुड़ा तथा GUPTA हो गया। जैसे - RAMA, KRISHNA, BUDDHA आदि। गुप्त लगाने की परंपरा वैश्यों में ही है और धर्मग्रंथों में भी इसका विधान है।

ऐलन, अयंगर, अल्टेकर जैसे प्रसिद्ध इतिहासकारों ने गुप्त शासकों को वैश्य माना है। उन्होंने अपने मत की पुष्टि में धर्मशास्त्र विष्णु पुराण का वह श्लोक उद्धृत किया है, जहां पर यह लिखा है कि - ''वैश्य अपने को गुप्त लिखें।'' चद्रगुप्त द्वितीय की पत्नी ध्रुव स्वामिनी ''धारण'' गोत्रीय थीं जो अग्रवालों का एक गोत्र है।

4. बाकी सब जातियां अपने कर्म अर्थात् काम के आधार के हिसाब से पहचानी जाती थीं। जैसे - नाई, धोबी, कुम्हार, सुनार, बढ़ई, लुहार, मोची, रंगरेज, लखारा, ठठेरा आदि। (वर्ण व्यवस्था के अनुसार)।

इस प्रकार कोई भी व्यापार का कर्म करने वाला व्यक्ति अपने नाम के साथ गुप्त लगा सकता है। भारत में लगभग 100 से भी अधिक वैश्य जातियां गुप्ता का प्रयोग करती हैं। ये वैश्य जातियां देश के हर भाग में रहती हैं। जैसे- अग्रवाल, खंडेलवाल, वार्ष्णेय (बारहसेनी), केसरवानी, मथुरिये, विजयवर्गीय, गहोई, महावर, बरनवाल, हेहई, रोनियार, भुंजिया, तेली, पोरवाल आदि। अब तो यह भी देखने भी आया है कि कुछ अन्य जातियों में भी गुप्ता का लिखा जाना प्रचलन में है। जानकारी के अभाव में हम कई बार गुप्ता लिखने वाले को अग्रवाल मान लेते हैं और उनके द्वारा किए गए कार्यों से गौरवान्वित होते हैं। जैसे - राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त तथा सियारामशरण गुप्त-गहोई वैश्य थे। श्री श्याम लाल गुप्त पार्षद जिन्होंने विश्व विजयी तिरंगा प्यारा लिखा था - दोसर वैश्य थे तथा दोसर वैश्य सभा कानपुर के संस्थापक भी थे। प्रसिद्ध कवि व साहित्यकार श्री जयशंकर प्रसाद गुप्त-कान्यकुब्ज हलवाई वैश्य थे इन्होंन 1900 में हलवाई युवक दल संगठित किया था। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य मंत्री श्री चंद्रभानु गुप्त - माहौर वैश्य थे आपका जन्म अलीगढ़ में हुआ था। प्रसिद्ध गायक जुबिन गर्ग ''बोरकर ब्राह्म्ण'' हैं व आसाम के रहने वाले हैं। आसाम में बोरकर ब्राह्मणों में गर्ग गोत्र है। अनेक गुप्ता लिखने वाली महान् विभूतियों को पद्म विभूषण, पद्म भूषण सहित अनेक सम्मान मिले हैं तथा समय-समय पर डाक टिकट भी छपे हैं। अज्ञानता वश या अति उत्साह में हम इनका उल्लेख अग्रवाल जाति में कर देते हैं कुछ अग्रवाल साहित्यकारों ने भी अपनी पुस्तक में इनका उल्लेख किया है।

(अग्रोहा में स्थित अग्र विभूति स्मारक में मूर्ति के रूप में स्थापित कुछ विभूतियां वैश्य हैं, लेकिन अग्रवाल नहीं हैं। जानकारी नहीं होने के अभाव में ऐसी गलतियां होती रहती हैं। जैसे -

म.गांधी-मोढ़ वैश्य, भामाशाह-कावड़या, ओसवाल जैन वैश्य, हेमू - भार्गव ढूसर वैश्य, मैथिलीशरण गुप्त - गहोई वैश्य, आदि) **आग्रह** - हम अपने नाम के साथ अग्रवाल का प्रयोग कर सकते हैं। बच्चों को स्कूल में एडमिशन दिलाते समय ही अग्रवाल लिखवा दिया जाए तो भ्रांति से बचने में सहायता मिल सकेगी। स्थान, क्षेत्र, प्रसिद्धि, कार्य, व्यापार आदि के आधार पर जाति लिखने वाले अग्रबंधु साथ में अग्रवाल लिखने की कोशिश कर सकते हैं।

गुप्त अथवा वैश्य

वामन पुराण में कहा गया है कि **वैश्य गण** यज्ञाध्ययन से संपन्न दाता, कृषिकर्त्ता तथा वाणिज्य जीवी हों तथा पशुपालन का कर्म करें। अर्थात् उस काल में वर्ण - व्यवस्था में परिवर्तन आया। उसका मुख्य कारण विज्ञान में होने वाले नये आविष्कार होना था, इसके आधार पर जो व्यक्ति जिस कार्य में निपुणता औार कुशलता ग्रहण कर लेता वे उसी व्यसाय से जाने गये। इस प्रकाण वर्ण व्यवस्था जन्म के आधार पर स्थाई हो गई। इनमें कुंभकार, लुहार चर्मकार, सुनार आदि अनेक जातियों का प्रादुर्भाव हुआ। परंतु उस काल में अपनी पहचान बनाने के लिए किसी विशेष विशेषण को नाम के साथ जोड़ने का प्रचलन जानने में नहीं आया।

ईस्वी सन् से लगभग 350 वर्ष पूर्व तक इतिहास में वैश्य समाज के देश से बाहर जाकर व्यापार करने वालों के नाम तो उपलब्ध हैं परंतु तब उन व्यक्तियों ने जिसको अग्रोहा छोड़ना पड़ा उन्होंने गोत्र अथवा अग्रवाल शब्द का प्रयोग किया हो, ऐसी जानकारी नहीं है। ईस्वी सन् के आरंभ के 300 वर्षों में कुछ शासक हुए हैं जिन्होंने गुप्त अथवा 'गुप्ता' शब्दों का नाम के साथ प्रयोग किया। आधुनिक काल में गुप्त अथवा गुप्ता शब्दों का नाम के साथ प्रयोग उसको वैश्य जाति का होना माना जाता है। चंद्रगुप्त को मौर्य साम्राज्य का संस्थापक माना गया है। डा. नरेन्द्र नाथ वसु ने अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत करते हुए कहा कि 'गुप्तेति वैस्यस्ये'। उन्होंने गिरनार पर्वत से मिले एक शिलालेख का प्रमाण देते हुए बताया कि चंद्रगुप्त मौर्य का विवाह एक वैश्य कन्या से हुआ था और उसके साले का नाम पुष्पगुप्त था जो वैश्यवंशी था। गुप्त काल लंबे समय तक रहा। उस काल में पहचान बनाने के लिये किसी शब्द को प्रयुक्त नहीं किय गया परंतु अन्य वर्ग के लोग इसके लोगों को वणिक, बनिया, गुप्त या गुप्ता, महाजन, शाह, सेठ और श्रेष्ठ शब्दों से बुलाते थे। आधुनिक काल में इस वर्ण के व्यक्ति उपरोक्त शब्दों के प्रयोग के अतिरिक्त अग्रवाल और उपने गोत्रों का उपयोग करते हैं।

-- गोत्र --

गोत्र - इसकी व्युत्पत्ति कई प्रकार से बताई गई है। गोत्र पूर्व पुरूषों का उद्घोष करता है, इसलिये गोत्र कहलाता है। कुछ विद्वानों के अनुसार गोत्र शब्द का अर्थ गोष्ठ है, परंतु इसका संबंध प्राय: वंश परंपरा से ही है। गोत्रों के आदि पुरूष ब्राह्म्मण ऋषि थे इसलिये ब्राह्म्मणों के

जो गोत्र हैं, वे ही पौराणिक परंपरा से क्षत्रिय, वैश्य व अन्य जातियों के भी गोत्र हैं। जिसकी पौराणिक परंपरा छिन्न हो गई है और जिनके गोत्र का पता नहीं चलता उनकी गणना **कश्यप गोत्र** से की जाती है, क्योंकि कश्यप सबके पूर्वज माने जाते हैं। **कश्यप** - नाम के कई ऋषि हुए हैं। जिनमें एक की गणना प्रजापतियों में होती है। कश्यप एक गोत्र का नाम भी है। यह गोत्र इतना व्यापक है कि जिसके गोत्र का पता नहीं चलता, उसका गोत्र कल्पना करके कश्यप मान लिया जाता है, सभी जीवधारियों की उत्पत्ति कश्यप से ही मानी जाती है, ऐसी मान्यता है। (कादम्बिनी-नवम्बर 2001)

अग्रवालों में गोत्र ऋषियों के नाम पर हैं। अग्रवाल समाज में 18 गोत्र हैं। कुछ गोत्र इनका बिगड़ा रूप भी हैं। वैसे अल, बंक, फांक, स्थान परक, व्यापार के अनुसार तथा पीढ़ी से चले आ रहे नाम जाति के रूप में लिखने का रिवाज है। अन्य वैश्यों में भी अग्रवाल समाज के गौत्र मिलते जुलते हैं। अभी अनेक जातियों में भी इन गोत्रों का प्रयोग भी होता है जैसे- गोयल, गर्ग, सिंहल, मित्तल, बंसल, मंगल आदि। राजस्थान में तो अनेक जातियों में ये गोत्र मिलते हैं। ये गोत्र किसी न किसी प्रसिद्ध ऋषि के नाम से या आचार्य के नाम से हैं। हर जातियों में इन ऋषियों व आचार्यों का महत्व है। हम ये भी देखते हैं कि राजपूत जाति के गौत्र अन्य जातियों में भी हैं। कारण कि हर जाति भगवान राम के वंश से जुड़ी होना मानती है तथा प्रसिद्ध ऋषियों के आधार पर गोत्रों का निर्धारण होना माना जाता है और प्रसिद्ध ऋषि तो सीमित ही थे।

आसाम की कुछ ब्राह्म्ण जाति में गर्ग गोत्र भी पाया जाता है। जैसे बोरकर ब्राह्म्ण जाति में। इसी जाति के गायक कलाकार जुबिन गर्ग हैं जिनको हम गलती से अग्रवाल मान बैठते हैं। हांसी के श्री बी.आर.मित्तल ने बताया कि चित्रकूट में एक विद्वान से मिलना हुआ, वे गर्ग लिखते थे, मैंने कहा कि आप अग्रवाल समाज का गौरव हैं, तो उन्होंने कहा कि वे अग्रवाल नहीं हैं, ब्राह्मण हैं। एक बंधु, पहले नाम के साथ सिंगले लिखते थे, कुछ वर्ष बाद वे सिंघल लिखने लगे।

प्राचीन भारत में ज्यों-ज्यों आबादी बढ़ती गई और समाज का विकास होता गया, स्वाभिक रूप से कुलों व परिवारों की संख्या भी अधिक होती गई। पहले से विद्यमान कुलों के विभाजन होने लगे। विशेष योग्यता के प्रतापी पुरूषों ने अपना अलग से कुल स्थापित किया और इस तरह नये गोत्र का आरंभ हुआ। आज कल हजारों गोत्र पाये जाते हैं।

गोत्र - गोत्र मूल रूप से एक ब्राह्मण संस्था है। अग्रवाल जाति में भी मूल 18 गोत्र पाए जाते हैं और ऐसा कहा जाता है कि इनके नामों की विभिन्नता के कारण आज इन गोत्रों की संख्या 32 हो गई है। गोत्रों की परंपरा ऋषियों से चली आ रही है। समस्त ब्राह्मणों की उतपत्ति किसी न किसी ऋषि से मानी जाती थी, जिनके नाम के आधार पर गोत्रों का नामकरण हुआ। किंतु स्वाभिक था कि समय के अंतराल से नए-नए परिवार बने और विकसित हुए, जो आगे चलकर विशिष्ट वंशों के रूप में प्रसिद्ध हुए और इस प्रकार गोत्रों के नाम प्रचलित हो गए। वे गोत्र जो समाज में अन्य परिवारों के माध्यम से आये उन्हें अल्ल, ख्यालों, बंकों गोत्रावय कहा जाता था। गोत्रों के साथ प्रवरों का महत्व भी उस समय कम न था। ब्राह्मणों में इसका विशेष

चलन था।

गोत्र और प्रवर में संबंध – गोत्र प्राचीनतम पूर्वज हैं या किसी व्यक्ति के प्राचीनतम पूर्वजों में एक हैं, जिसके नाम से युगों से कुल विख्यात रहा है किंतु प्रवर उस ऋषि या उन ऋषियों से बनता है जो अति प्राचीन रहे हैं, और जो गोत्र ऋषि के पूर्वज या कुछ दशाओं में अत्यंत प्रख्यात ऋषि रहे हैं। प्रवर और गोत्र दो समानार्थी शब्द होते हुए भी अलन-अलग अर्थों मे लिये जाते थे। प्रवर से उनका अर्थ था जिन ऋषियों ने मंत्र रचना की हो। एक अन्य विवेचना के अनुसार प्रवर – अपने कर्मों द्वारा ऋषिकुल में प्राप्त की गई श्रेष्ठता के अनुसार उस गोत्र प्रर्वतक मूल ऋषि के बाद होने वाले व्यक्ति, जो महान् हो गये, वे उस गोत्र के प्रवर कहताले हैं। इसका अर्थ यह है कि कुल परंपरा में गोत्र प्रर्वतक मूल ऋषि के अनन्तर अन्य ऋषि भी विशेष महान् हुए।

1. गोत्रों की उत्पत्ति निश्चित रूप से रक्त संबंध के आधार पर हुई। **जाति और गोत्र में अंतर** – जाति का आधार श्रम का विभाजन है, जबकि गोत्र का आधार रक्त की शुद्धि है। क्षत्रियों तथा वैश्यों ने उन्हीं गोत्र नामों को अपनाया जो कि ब्राह्मणों के थे ।
2. **गोत्र का महत्व** – समाज के प्राचीन संगठन में प्रत्येक गृहपति अपने घर का प्रतिनिधि माना जाता था। वही उस बिरादरी की पंचायत में अपने परिवार की ओर से प्रतिनिधि बनकर बैठता था। ऐसा व्यक्ति उस परिवार में मूर्धाभिशिक्त होता था। परिवार में सबसे ज्येष्ठ होने के कारण उसी के सिर पर पगड़ी बांधी जाती थी। पगड़ी बांधने की यह प्रथा आज भी प्रत्येक हिंदू परिवार में प्रचलित है।

   आचार्य रामरंग – गौत्र – जैसे अन्य बांध्वों आदि में दत्तक (गोद) जाने पर पुरूषों का और विवाह बाद हिंदू देवियों के गौत्र परिवर्तित हो जाते हैं वैसे ही वर्ण परिवर्तन पर महाराजा के सूर्यवंशी गोत्र का भी समापन हो गया। संन्यास ग्रहण करने पर भी गुरू का गौत्र शिष्य का हो जाता है। दूर दृष्टि संपन्न धर्मनिष्ठ अग्रसेन जी ने विचार किया कि यदि सभी 18 पुत्रों को एक ही गौत्र दे दिया तो भविष्य में आचार-विचार की दृष्टि से वैवाहिक संबंधों में समस्या आ जाएगी। क्योंकि समाज में सगौत्र विवाह वर्जित है। अत: प्रत्येक पुत्र का यज्ञ जिन ऋषि-महऋषियों के आचार्यत्व में संपन्न हुआ, उसे वही गौत्र धारण करा दिया गया। गौत्र समाधान सहज ही हो गया।
3. परिवार की संज्ञा कुल थी, कुल की प्रतिष्ठा पर बहुत ध्यान दिया जाता था। अनेक विद्वानों ने अग्रवालों के गोत्रों को सूची बद्ध करने का प्रयत्न किया है। इनमें कुछ भिन्नता भी पाई जाती है।

महाराजा अग्रसेन ने राजा होते हुए भी गणतंत्र पद्धति की नींव रखी, जिसे आधुनिक काल में पारदर्शी और लोक कल्याणकारी माना गया है। जब अग्रोहा पर विपत्ति आई और अग्रवाल नगर छोड़कर अन्य स्थानों पर जाना पड़ा, तब अग्रोहावासी महाराजा अग्रसेन से प्राप्त अपनी इस विरासत को साथ लेकर गये तथा गोत्र प्रणाली जारी रखी और एक ही गोत्र में विवाह नहीं करने

के सिद्धांत का अनुसरण किया। कुछ अग्रवाल स्वंय को गोत्रों के नाम से कहलाना पसंद करते हैं।

कुछ काल के बाद लोगों के रिवाज, जीवन स्तर और पसन्द में परिवर्तन आया। उसी के अनुसार पहचान में भी परिवर्तन आया। जो परिवार अपने गांव या नगर को छोड़कर गये वे उसी गांव-नगर का नाम प्रयोग करने लगे। जैसे - झुनझुनवाला, केजड़ीवाल, नवलगढ़िये आदि। व्यवसाय के वैभव और शान को महत्व देते हुए जैसे - गुड़वाले, गोटेवाले, रूईया, बजाज आदि। कुछ व्यक्तियों ने अपने समय में अपने गुणों और योग्यता के कारण ख्याति अर्जित की तो उनके परिवारों ने उनके नाम को अपना लिया जैसे - खेतान, हरभजनका, हरलालका, हिम्मतरायका आदि।

गौत्रों के अतिरिक्त अग्रवालों में ऐसे नाम भी प्रचलित हैं जिनसे गोत्रों का भ्रम होता है। वास्तव में वे गोत्र नहीं बंक, अल्ल, खाता, स्थान, घराने या प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम के सूचक हैं। **जैसे** -

1. **अग्रवाल जाति में वंश प्रर्वतक अल्ल** - झुंझनू में सेठ तुलसीराम ओर जालीराम नाम के दो प्रसिद्ध पराक्रमी व्यक्ति हुए, जिनके नाम से तुलस्यान एवं जालान व जालानी वंश का उद्‌भव हुआ। (इनका गोत्र बंसल है।) इसी प्रकार 600 वर्ष पूर्व पौद्‌दार वंश के प्रर्वतक सेठ रामचंद जी हुए, खेतान वंश के प्रर्वतक सेठ खेतसीदास जी, भोजान वंश के सेठ प्रहलाद राय जी, मानसिंहका वंश के सेठ मानसिंह जी, वागला वंश के सेठ वागमल जी और खेमका वंश के प्रवर्तक सेठ खेमचंद जी। --- **इसी प्रकार** - रूंगटा - यशस्वी पुरूष रूद्यान जी, नाथूराम जी - नाथूरामका, हिम्मतसिंहका - हिम्मतसिंह जी, गोविंद दास जी - गोयनका, चौखानी - चोखराम जी, सेठ सवाईराम जी - सवाईका, छीतरमल जी - छीतरका, नेपानी - नोपचंद जी, तोलारामका - तोलाराम जी, वाराणसी का प्रसिद्ध राय खानदान - राय राम प्रताप आलीशाह अकबर के दरबार में विशेष सम्मानित ओहदेकार थे, जिन्हें ''राय'' खिताब वंश परम्परा के लिये मिला।
2. राजाओं के यहां कार्य के अनुसार जैसे - कानूगो, दीवान, कामदार, मोदी आदि।
3. कुछ राजाओं से प्राप्त पदवी के अनुसार - रायबहादुर, राय, राजा बहादुर।
4. समाज द्वारा प्रदान उपाधि जैसे - चौधरी, सिंह आदि।
5. **स्थान के आधार पर** - डालमिया - शेखावटी के डालमा गांव , केडिया - झंझनु के पास केड गांव, चूड़ीवाले - जयपुर के पास चूड़ी गांव, हालवासिया - हालवासा,हरियाणा, मुरारका - मूल स्थान मुरार, बैराठी - बैराठ, जयपुर, कैजड़ीवाल - मूल स्थान केजड़ी, सिंघानिया - सिंघाणा गांव, बाजोर - गांव बाजोर, नेवटिया- गांव नेवटा शेखावटी के पास आदि।
6. **व्यवसाय के आधार पर** - कापड़िया, चामड़िया, रूईया, सर्राफ, लोहिया, तुरकाषवाला, आदि।

दस्सा - बीसा - पंजा - ढईया आदि

वैश्य-समाज में आए बदलाव के कारण आजकल इनके बारे में कम ही बातें होती हैं। आज से कुछ वर्ष पूर्व इनके बारे में हमारे बुजुर्ग बातें किया करते थे और मानते भी थे। अग्रवालों की उपजातियों के विषय में सर्वाधिक मतभेद दस्सा, बीसा, पंजा की समस्या को लेकर रहा है। ये भेद किस काल में कैसे ?और क्यों उत्पन्न हुए ? इनका कोई स्पष्ट प्रमाण ग्रंथों में उपलब्ध नहीं है। जैन साहित्य में इन शब्दों का उल्लेख 12वीं सदी से मिलने लगता है। कुछ विद्वानों का मानना है कि वैश्य-अग्रवाल समाज में एक व्यक्ति से 20 गुणों व नियमों के पालन की अपेक्षा की जाती थी। जो उन 20 नियमों का पालन करते थे, वे 'बीसा' कहलाते थे। जो पूरी तरह पालन नहीं करते थे, वे 'दस्सा' कहलाते थे और जिन दस्साओं द्वारा इनसे भी कम नियमों का पालन किया जाता था, वे 'पंजा' कहलाते थे।

एक मत के अनुसार- अगवालों का एक महत्वपूर्ण भेद नस्ल या रक्त शुद्धि के आधार पर है। यह भेद बीसा और दस्सा का है। मान्यता है कि-जो अग्रवाल रक्त की शुद्धि से पूर्णतया शुद्ध हैं, (सौ फीसदी) वह बीसा हैं। इसके विपरीत जिन लोगों ने कुल मर्यादा के प्रतिकूल किसी दूसरी जाति की स्त्री से विवाह कर लिया उनकी शुद्धता बीस में से दस यानि पचास फीसदी रह गई। इसलिये ये लोग दस्सा कहलाए।

एक अन्य मत - जो लोग जातीय व्यवस्थाओं का पूर्ण रूप से पालन नहीं कर पाते या सुधारवादी होने के नाते समाज की रूढ़ियों या परंपराओं से विद्रोह करते थे, या न्यून गुणों का पालन करते थे वे दस्सा कहलाने लगे। उनका अलग संगठन हो जाता था। पुराने जमाने में जो लोग विधवा से विवाह कर लेते थे, उनकी संतानों को दस्सा कहा जाने लगा। :-- यह भी माना जाता है कि पूर्वज राजाओं की बहुत सी उप पत्नियां थीं, जो अग्रवाल समान के कुल और वर्ण की नहीं थीं। उनकी जो संतानें हुई वे दस्सा के नाम से प्रसिद्ध हुईं तथा जो संताने जातीय पत्नियों से हुई वे बीसे अग्रवाल के नाम से मशहूर हुईं। कुछ विद्वान शूरसेन की संतानों को दस्सा मानते हैं।

कुछ साहित्कारों का मानना है कि - इस प्रकार के भेद अग्रसेन व उनके वंशजों के राज में नहीं थे। ऐसा प्रतीत होता है कि - अग्रोहा से निकले हुए वे लोग जिन्हें अपना गोत्र, नाम, वंश और परम्परा ज्ञात थी वे अपने को अन्य अग्रवालों से विशिष्ट मानते रहे इसलिये अपने को ''बीस-बिस्वा'' शुद्ध मानते रहे। दूसरे वे अग्रवाल थे जो अग्रोहा से तो निकले थे, उन्हें न अपना वंश याद रहा, न गोत्र इसलिये उनको पुराने अग्रोहा वासियों ने अपने से हीन माना और उन्हें दस्सा कहने लगे। बिरादरी के नियमों से इतर किसी ने कुछ निकृष्ट कार्य किया होता था तो उसे भी वे बिरादरी से च्युत कर देते थे। दस्सा, बीसा का वर्ण सर्व प्रथम जैन ग्रंथों में देखने में आया। वहां ये शब्द गुरू परम्परा के द्योतक थे। पंजे, अढईया, सवईया भी उनके गुरू परम्परा के ही प्रमाण माने जाते थे। अग्रवालों में इस प्रकार के भेद ऊंच-नींच, गरीब-अमीर के कारण भी बनते गये।

वैद्य कृपाराम – अग्रवालों के विविध वर्ग – बीसा, दस्सा, पंजा – देखने से स्पष्ट है कि ये शब्द परिमाण अथवा संख्या सूचक हैं। दूसरी संख्या पहली की आधी है। प्राचीनकाल में 20 की संख्या शत-प्रतिशत सही या प्रामाणिक की द्योतक थी। सामान्यता: लोग वस्तुओं के भव भी बीस की संख्या में ही बताते थे। जैसे 70 कहना होता था तो कहा जाता – तीन बीसी, उपर दस। 19-20 का अंतर। 20-21 का फर्क। आदि।

डा. स्वराजमणि अग्रवाल ने बीसा, दस्सा के इन भेदों के कारणों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि मुगलों के आक्रमण के समय जाति के जो लोग अपने मूल स्थानों को छोड़ दूसरे स्थानों पर जा बसे, वहां उस जाति के मूल निवासियों के साथ उनका तालमेल न हो सका तथा कटटर धार्मिक या असहिष्णुता प्रवृत्ति के लोगों ने उन्हें अपने से भिन्न समझ दस्सा, पंजा आदि संज्ञा दे दी हो।

वैद्य निरंजन लाल गौतम – दस्सा अग्रवालों की मान्यता है कि – महाराजा अग्रसेन के पुत्रों से विवाहित दशानन की कन्या से उत्पन्न संतान दस्सा और विशानन की कन्य से उत्पन्न संतान बीसा अग्रवाल हुई। कुछ मानते हैं कि रक्त भेद के कारण दस्सों की उत्पत्ति हुई । -- **डा. परमेश्वरी लाल गुप्त** ने जाति से बहिष्कृत लोगों के समूह को दस्सा माना है।

सत्यनारायण प्रसाद (अग्रवंश का इतिहास) के अनुसार – अग्रवाल वंश में कुछ ऐसी उपजातियां बन गई हैं, जिनके भेद, नस्ल और रक्त के आधार पर माने जाते हैं। कहा जाता है कि जो रक्त की दृष्टि से पूर्णतया शुद्ध हैं वह बीसे कहलाते हैं और जो इस दृष्टि से कम उतरते हैं वे दस्से कहलाते हैं। मध्य तथा मुंबई महारष्ट्र प्रांत में कुछ पंजे कहलाते हैं। असामाजिक अपराधों के कारण दंड स्वरूप बीसा व वैश्य समाज से बाहर किये हुए परिवार दस्से कहलाने लगे। सत्यनारायण जी कहते हैं कि – ऐसा होना संभव है क्योंकि कहीं-कहीं इन दस्सा अग्रवाल को **'गोठ बनिया'** के नाम से पुकारा जाता है।

अग्रसात्यिकार **सूबेसिंह जी गुप्ता** अपनी पंचमधाम पत्रिका दिसम्बर 2018 के अंक में लिखते हैं कि – गुणों के अनुपात का अनुमान कौन कर सकता है? इसलिये 20 गुण और 10 गुणों के आधार पर बीसा-दस्सा का भेद अज्ञानता के सिवा कुछ नहीं है। इस भेद का प्रमाणिक स्त्रोत अब तक उपलब्ध नहीं है। केवल अनुमान के आधार पर कोई बात कहना या मानना, इतिहास को झूठ से अलंकृत करना है। आज समाज जागृत हो गया है। उसमें इन भेदों का अब कोई महत्व नहीं रह गया है। अग्रवाल वही है जिसके पास गोत्र है, जो अग्रसेन को अपना पूर्वज मानता हो। बस यही परिभाषा अग्रवाल शब्द, अग्रवाल समाज की प्रमाणिकता मानी गई है।

वैसे दस्सा-बीसा में अनेक विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि – दस्सा, बीसा, पंजा – का कारण भी पुराने समय की पंच-पंचायतों के पचड़े हैं। **निष्कर्ष रूप में** – इस व्यवस्था के पीछे सामाजिक आचार-विचार की दृढ़ता ही मुख्य रूप से विद्यमान थी। (मैंने भी अपने पुरखों से दस्सा-बीसा के बार में सुना था। पर वे सही परिभाषा नहीं बता सके। लेकिन अब यह भेद दिखाई नहीं देता। – लेखक)

साढ़े सत्रह गोत्र या आधे गोत्र की मान्यता का आधार

अग्रवाल समाज में यह धारणा है कि उनके साढे सत्रह गौत्र हैं व अंतिम गौत्र आधा है। वास्तव में गौत्र 18 ही हैं। आधे गौत्र का कोई मतलब नहीं है। गौत्र पूरा ही होता है। अग्रवालों में सैंकड़ों अल्ल, बंक, उपनाम भी पाये जाते हैं। स्थान, व्यवसाय, वंश, गौत्र आदि के भेद से अनेकानेक अल्ल, बंकों, उपनामों का प्रयोग होने लगा जैसे – गोयनका, लोहिया, पौद्दार, केजड़ीवाल, गुटगुटिया, फतेहपुरिया, टमोटिया, पंसारी, खजांची, खेतान चूड़ीवाले, तुरकाषवाला, जालान आदि। फिर भी यह धारणा आई कहां से और क्यों आई, इस संबंध में कुछ पुस्तकों में लिखा हुआ है। हमारे यहां अनेक बुजुर्ग ऐसे थे, जिन्होंने अपना इतिहास नहीं पढ़ा, तथा जिन्होंने पुरानी पुस्तकें पढ़ी, वे गोत्रों के बारे में सुनाते थे, यही बातें श्रुति के आधार पर समाज में फैलती गईं। यहां कुछ पुस्तकों छपे मत को भी दिया जा रहा है।

विद्वान **आचार्य रामरंग** जी के अनुसार – जब अंतिम यज्ञ की पूर्णाहूति विधिवत हुई तो आधा कैसे? लोकमत भेड़चाल के सामने समस्त चाल व्यर्थ? अग्रसेन जी की कथा जो साढ़े सत्रह गौत्रों के मूल में है वह काल्पनिक है।

डा. वासुदेव शरण अग्रवाल का अमूल्य तर्क संगत मत – इस प्रश्न की ऐतिहासिकता पर आपने लिखा है कि – ''अग्रश्रेणी'' के संविधान के अनुसार प्रत्येक गौत्र का एक प्रतिनिधि ''अग्र-जनपद'' सभा में जा सकता था। यह प्रतिनिधि गौत्र का कुल वृद्ध कुलपति या स्थविर होता था। पाणिनी की अष्टाध्यायी में भी इन नामों का उल्लेख मिलता है। अग्रजनपद विधान के अनुसार प्रतीत होता है कि एक कुल में गौत्र संज्ञक एक व्यक्ति के रहते हुए, किसी अन्य युवक को कुल का प्रतिनिधि बनकर अग्रजनपद में जाने का अधिकार नहीं था।

इस संवैधानिक मान्यता के होते हुए भी समस्याएं उत्पन्न हो जाती थीं। कई बार ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती थी कि किसी कुल में उसके बड़े-बूढ़े, कुलपति या स्थविर के जीवित रहते भी दूसरा कोई युवक सदस्य इतना प्रभावशाली हो जाया करता था कि उस युवक को वृद्ध कुलपति के जीवित रहते हुए भी कुल के दो प्रतिनिधि के रूप में सभा में भाग लेने का अधिकार दे दिया जाता था। **उदाहरण स्वरूप :-** अग्रवाल जाति में गौत्र ''गर्ग'' कुल का बड़ा बूढ़ा प्रतिनिधि ''गार्ग्य'' कहलाता था और युवा प्रतिनिधि गार्ग्यागण के नाम से पुकारा जाता था। वह यह विधि थी, जिसके अनुसार एक कुल के दो प्रतिनिधि अग्र राज्य सभा में भाग लेते थे। इस प्रकार मूल गौत्र के सत्रह प्रतिनिधि हुए और इस मूल प्रतिनिधि के साथ युवा प्रतिनिधि आया, वह आधा कहलाया और इस प्रकार सत्रह के साढ़े सत्रह गौत्र हुए जो कालांतर में साढ़े सत्रह गौत्रों की कथा के रूप में प्रचलित हुए।

वैसे – आधे गौत्रों या आधी जातियों की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। जैन साहित्य में अनेक आधी जातियों का उल्लेख मिलता है। सिंहासन बत्तीसी में भी साढ़े बारह वैश्य जातियों का उल्लेख है। परवार मूर गौत्रावली में भी साढ़े बारह जातियां गिनाई गई हैं। महाराष्ट्रीयन दोशस्थ ब्राह्मणों के बारे में साढ़े बारह जाति के सच्छूद (मराठी) आदि यजमान कहे जाते हैं।

- डा. रामचंद्र गुप्ता एवं सुरेन्द्र प्रताप गर्ग की पुस्तक के अनुसार – अग्रसेन जी के पुत्र यानि राजकुमार जैसे–जैसे विद्याध्ययन के योग्य होते जाते थे, उन्हें ऋषियों के आश्रम मे भेज दिया जाता था। उन्होंने सबसे बड़े व सबसे छोटे राजकुमार को एक ही ऋषि के आश्रम में भेजा था। इन 18 राजकुमारों के नाम से ऋषियों के नाम भी जुड़ गये, इससे यह पहचान होती थी कि किस राजकुमार ने किस ऋषि के आश्रम में शिक्षा–दीक्षा प्राप्त की। चूंकि सबसे बड़े पुत्र और सबसे छोटे पुत्र ने एक ही ऋषि के आश्रम में शिक्षा–दीक्षा प्राप्त की थी, इसलिए 18 पुत्रों में 17 गोत्र ही बने। लेकिन सबसे छोटे राजपुत्र की पहचान के लिये उसे ''**गोयन**'' गोत्र दिया गया। इसे आधा गोत्र माना गया। यानि कुल साढ़े 17 गोत्र हुए।
- डा. रामचंद्र गुप्ता के अनुसार – 'गोन' दरअसल कोई ऋषि नहीं था और न ही कुंवर गऊधर ने किसी गोन से शिक्षा ग्रहण की थी। कुंवर विश्वदेव और गऊधर ने तो महात्मा गर्ग ऋषि से विद्या प्राप्त की थी। इसलिए गऊधर का गोत्र भी गर्ग होना चाहिए था, परन्तु बगैर–पहचान गऊधर की औलाद का गोत्र 'गोन' मानकर प्रचलित हुआ, जबकि गोत्र गर्ग ही होना चाहिए था। इसलिए अग्रवाल जाति में गोन की आधे गोत्र के रूप में गिनती होती है और कुल साढ़े सत्रह गोत्र माने जाने लगे। लेकिन आज यह 18 गोत्र की माने जाते हैं।
- 1938 में छपी, बाबू गुलाबचंद ऐरन की पुस्तक–पेज 25 – इस आधे गोत्र का नामकरण इस प्रकार हुआ कि – महाराजा अग्रसेन के 18 पुत्र थे, जिन्होंने 17 ऋषियों के आश्रम में शिक्षा पाई थी, गर्ग ऋषि के आश्रम में दो राजकुमार विशपदेव और गोधरसेन ने शिक्षा पाई थी। इसलिये दोनों का गर्ग गोत्र ही होता था। किंतु दोनों के वंशधरों की पृथक पहचान के लिये गोत्रों में परिवर्तन रखना आवश्यक था। अत: कुमार गोधरसेन का गोत्र गोतम रखा। दोनों गोत्र के अधिष्ठाता ऋषि एक ही होने से यह भी निश्चित किया गया कि गर्ग और गौतम (गोइन) गोत्र वाले आपस में विवाह न करें। इसी नियमानुसार आज भी गर्ग और गौतम गोत्र वालों में आपस मे विवाह संबंध नहीं होता है। यही गौतम **(गोइन)** गोत्र सर्व साधारण में आधा माना जाता हैं इस प्रकार कुल साढ़े सत्रह गोत्र गिने जाते हैं।
- बाबू गुलाबचंद आगे लिखते हैं कि – कुछ इतिहासकार विद्वानों का इस विषय में यह भी मत है कि – महाराजा अग्रसेन जी ने वैदिक रीति से ''पुत्रेष्ठि यज्ञ'' कर पुत्र प्राप्त किये थे। इस प्रकार महाराज ने 18 यज्ञ भिन्न–भिन्न ऋषियों से करवाये, किंतु 18वें यज्ञ में महाराजा को पशु बलि से घृणा हो गई और उन्होंने उस यज्ञ को अधूरा छोड़ दिया। उस यज्ञ से जो पुत्र पैदा हुआ उसका गोत्र आधा ही माना गाया। इस प्रकार साढ़े सत्रह यज्ञों के संपन्न होने से गोत्र भी साढ़े सत्रह कहलाये।
- चौ.वृंदावन कानूगो की पुस्तक – अग्रवाल इतिहास, पृष्ठ 95 के अनुसार – संवत् 1961 में राजा अनतपाल के समय ''बाछिल'' गुणराज गौत्र, पुरोहित (गुरू) बदलने के कारण ''ढालन'' साढ़े सत्रह गौत्रों में परिवर्तित हो गया।

महाभारत व पुराणों में महाराजा अग्रसेन का उल्लेख न होना

कुछ विद्वानों ने जिनमें प्रसिद्ध पुरातात्विक श्री परमेश्वरी लाल जी गुप्त भी हैं, ने अग्रसेन जी को काल्पनिक माना है। लेकिन अनेक विद्वानों ने अग्रसेन जी के अस्तित्व को अपनी पुस्तकों में सिद्ध किया है। इन विद्वानों की संख्या ज्यादा है। वैसे पुराणों की सूची में अग्रसेन का नाम नहीं है। उग्रसेन नाम के कई व्यक्तियों के नाम पाए जाते हैं।

महाराजा युधिष्ठर से तेहरवीं पीढ़ी में भी एक राजा अग्रसेन का होना पाया जाता है। इनका समय ईसा से करीब सात सौ वर्ष पूर्व पड़ता है। -- ईस्वी सन् 83 में आबू के पंवार वंश में भी एक राजा अग्रसेन नामक व्यक्ति हुए थे। -- सम्राट समुद्रगुप्त के समय में कवि हरिषेण के एक लेख में भी एक राजा उग्रसेन का उल्लेख है। यह राजा मद्रास प्रांत के नल्लौर जिले में पल्लव नगर का स्वामी था। राजा समुद्रगुप्त ने इसको अपना अनुयायी बनाया था। इनका समय भी सन् 326 से 375 तक का है। ये राजा उग्रसेन पल्लव जाति के थे और इनका देश कावेरी तट पर था। चंद्रराज भंडारी जी की पुस्तक - हरिशचंद्र जी ने भी लिखा है कि - महाराजा अग्रसेन के पूर्वजों ने कावेरी के तट पर बहुत से मंदिर बनवाए थे। इस समय वैश्य जाति का प्रताप बहुत बड़ा हुआ था।

प्रसिद्ध इतिहासकार **नरेन्द्रनाथ बसु** - राजा अग्रसेन से ही संभवत: अग्रवालों की पश्चिम शाखा की उत्पत्ति हुई होगी। अग्रसेन के पूर्व परिचय से मालूम होता है कि उनके पूर्वज वृंदावनवासी थे और वृंद का पुत्र गुर्जर ही गुजरात जाकर राजा हुआ था। मथुरा से जाकर गुजरात में जिन लोगों ने शासन फैलाया था, वे शुल्लिक और अग्रवाल वैश्यगणों के पूर्वज थे इसमें संदेह नहीं ।

महाभारत युद्ध के काल के बाद माना जाता है कि यही काल था जब कुरूवंश की शक्ति क्षीण होने लगी थी और भारत में नये-नये गणराज्यों को निर्माण हो रहा था। प्रत्येक महापुरूष एक छोटे से भू भाग को गठित कर अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लेता था। राज्यों की यह वृद्धि कालान्तर में इतनी बढ़ी कि इनकी कोई संख्या नहीं रह गई, न कोई महत्व रह गया। यही कारण है कि महाभारत के बाद का इतिहास बहुत कम मिलता है।

डा. स्वराजमणि के अनुसार-पुराणों में किसी राजा का उल्लेख नहीं मिलने के कारण उसके अस्तित्व को अस्वीकार कर देना सर्वथा तर्क रहित होगा, क्योंकि पुराणों में उन सभी राजाओं का वर्णन नहीं मिलता, जिन्होंने समय-समय पर भारत के भू-भागों पर राज्य किया। दूसरा यह कि-उनमें वर्ण परंपरा के अनुसार केवल क्षत्रिय राजाओं की ही वंशावलियां दी गई हैं, जनपदीय शासकों का उल्लेखनहीं किया गया है। महाराजा अग्रसेन की वंशावली का उल्लेख न किये जाने के दो प्रमुख कारण रहे होंगे - पहला - यह कि वे वैश्य वर्ण के थे। दूसरा - उन्होंने जनपदीय शासन व्यवस्था को स्वीकार किया था।

प्रख्यात विद्वान **राजबली पांडे** के अनुसार - किसी शासक के अस्तित्व को केवल पुराणों में उल्लिखित न होने के कारण अस्वीकार नहीं किया जा सकता। उदाहरण स्वरूप - पुराण गणराज्यों को जो प्राचीन भारत में विद्यमान थे अपने वंशानुचरित में उल्लेख तक नहीं करते, किंतु

उनका इतिहास बौद्ध तथा जैन साधनों से ज्ञात होता है।

आचार्य रामरंग – महाराजा अग्रसेन का चरित्र जो महाभारत कालीन होते हुए भी महाभारत में नहीं मिलता। हरिवंश सन्त्सुजातीय जैमिनी अश्वमेद्य महाभारत के अंश होते हुए भी स्वतंत्र रूप से से प्रकाशित हैं। उसी प्रकार जैमिनीकृत अग्रचरित्र भी है। भविष्य पुराण में अन्य चरित्रों के होने की भी कथा है, परंतु वे मिलते नहीं हैं।

वैद्य निरंजन लाल गौतम – के अनुसार – महाराजा अग्रसेन अवश्य हुए। ये वैश्यगण राज्य के संस्थापक थे। उन्होंने अग्रोहा नगर का निर्माण करवाया, वे वैश्य जाति के संगठनकर्ता थे और उन्हीं के नाम पर वैश्य गणराज्य का नाम और उन्हीं के नाम से वैश्य गणराज्य का नाम अग्रगण राज्य पड़ा। अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन के वंश सहित राज्यों में बसे एक लाख वैश्यों का प्रतिनिधित्व 18 कुटुम्बो में बंटा हुआ था अत: वे 18 कुटुम्ब ही महाराजा अग्रसेन की अध्यक्षता में अग्रगण राज्य का प्रबंध चलाते थे। इन 18 कूलों के गौत्र ही अग्रवालों के 18 गौत्र हैं।

मूलत: – आज अग्रवालों की परंपरा ही अग्रसेन जी के होने का सबसे बड़ा प्रमाण है, इस बात से कोई इतिहासकार इन्कार नहीं कर सकता है। ''पार्टिजर'' ने लिखा है कि – ''नए राज्य की स्थापना विजयी राजाओं के द्वारा हुआ करती थी तथा उसके उत्तराधिकारी की उपलब्धियों के विषय के ''लोकगीत'' गाए जाते थे।'' महाराजा अग्रसेन और उनके वंशजों पर यह बात अक्षरत: सत्य होती है।

टोडरमल

टोडरमल का अर्थ होता है खजाने अथवा टकसाल की देखभाल करने वाला खजांची। राजा लोग खजांची रखते थे तथा उनको टोडरमल कहते थे। ये वीर होते थे तथा युद्धों में भी भाग लिया करते थे। बादशाह इन्हें अनेक उपाधियां देता था जिसमें राजा की उपाधि भी होती थी। इतिहास में कई टोडरमल हुए हैं और इनका उल्लेख कुछ जातियों में मिलता है। **जैसे** – टोडरमल जो अकबर के नौ रत्नों में से एक थे, अग्रवाल नहीं थे। **भारतेंदु हरिशचंद्र जी** की पुस्तक में इन्हें ''**खत्री**'' बताया है। शिवपुर द्रौपदी कुंड के लेख में छपा था कि टोडरमल अग्रवाल नहीं बल्कि खत्री जाति के थे। यह लेख हरिशचंद्रकला – खंगविलास प्रेस बांकीपुर में छपा है। अनेक पत्र/पत्रिकाओं के लेख तथा अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी भी अपने भाषणों में इनका भूलवश उल्लेख करते हैं, कारण उनकी कही गई बात को मानना भी पड़ता है क्योंकि हम साहित्य नहीं पढ़ते, हमें फुर्सत नहीं है।

श्री काशी अग्रवाल शतवार्षिकी – 1995 के अनुसार – अकबर के मंत्री टोडरमल अग्रवाल प्रमाणित नहीं हो सके। तथापि एक जैन ग्रंथ में एक साहु टोडर का वर्णन वंशानुक्रमपूर्वक दिया है। यह टोडर अग्रवाल थे तथा अकबर के समकालीन थे। कवि ने इन्हें भी नाना टकसारदक्षक बताया है। अर्थात् वह टकसाल संबंधी कार्यों में प्रवीण थे। यह अलीगढ़ के आसपास (कोलभटानिया) के निवासी थे और इनका गौत्र गर्ग था। -- **रायभरत कुमार**

(ऐरन-गौत्र) ने दिल्ली के अग्रवाल नामक पुस्तक (पेज 487) में बताया कि इनके पूर्वज अकबर के समय राजा टोडरमल के नाम से प्रसिद्ध थे, अकबर ने आपके खानदान को दक्षिण को छोड़कर भारत के करीब-करीब हर प्रदेश में जमींदारी माफी इलाके दिए और रायसाहब की उपाधि दी।

राजा टोडरमल पोरवाल समाज के महापुरुष (सन् 1601 से 1666 ई.) -जन्म 18 मार्च 1601, बूँदी के एक पोरवाल वैश्य परिवार में। हाड़ौती (कोटा-बूँदी क्षेत्र) तथा मालवा क्षेत्र में जहाँ भी पोरवाल रहते हैं, वहाँ टोडरमल की कीर्ति के गीत गाये जाते हैं। राव भोजराज जी के यशस्वी पुत्र टोडरमल - ने उदयपुरवाटी की बागडोर संभाली। टोडरमल भोजराज जादव की ठकुरानी के पुत्र थे। वि.स.1684 के करीब अपने पिता के जीवनकाल में ही वे उदयपुर में रहने लगे थे।

श्री लक्ष्मीशंकर जिंदल के मत में सन् 1556 से 1605 ईस्वी के मध्य में जब अकबर राज्य करता था **पंजाब** के **राजा टोडरमल** अग्रवाल की पुत्री को जो अति सुंदरी थी, अकबर ने जबरदस्ती ले लिया। तब अग्रवाल जाति के पंचों ने टोडरमल अग्रवाल को जाति से पृथक कर दिया। इस बात को सुनकर जो लोग बादशाह के भय से टोडरमल अगवाल के साथी रहे, वे लोग दस्सा कहलाने लगे ओर जिन लोगों ने राजा टोडरमल को जाति से च्युत कर दिया वे बीसा अग्रवाल माने गये।

नेट से प्राप्त जानकारी - टोडरमल - उन्होंने ही सबसे पहले भूमि की पैमाइश की। जाति से ''**खत्री बनिया**'' थे, उनका वास्तविक नाम ''अल्ल टंडन'' था, वे अकबर के नवरत्नों में से एक थे तथा पैसे-कौड़ी के मामले में उस्ताद थे। हालांकि कुछ इतिहासकार कहते हैं कि वे कायस्थ थे। वे ब्रज भाषा में कविता भी करते थे। उनके पिता का निधन हुआ तब वे बहुत छोटे थे। उनके जन्म स्थान को लेकर भी विवाद है। जानकारों का कहना है कि उनका जन्म अवध प्रांत (उत्तर प्रदेश) के सीतापुर में हुआ। कहते हैं कि अकबर ने टोडरमल को आगरा के कामकाज को देखने की भी जिम्मदारी दी थी। उनका निधन 8 नवम्बर 1589 को लाहौर में हुआ। उनके पुत्र धारी और कल्याण दास भी अकबर के दरबार में ही थे। अकबर उन्हें पुत्रों की तरह ही स्नेह करता था।

टोडरमल की कविता -

जार को विचार कहा गनिका को लाज कहा, गदहा को पान कहा आंधरे को आरसी ।।
तिगुनी को गुन कहा दान कहा दारिदी को, सेवा कहा सूम को अरंडन की डार सी ।।
मदपी की सुचि कहा सांच कहा लम्पट को, नीच को बचन कहा स्यार की पुकार सी ।।
टोडर सुकवि ऐसे हठी ते न टारे टरे, भवै कहो सूधी बात भावै कहो फारसी ।।

श्री ओमप्रकाश लिखते हैं - हालांकि देश के बहुत से शहरों में बीरबल और राजा मानसिंह के नाम पर सड़कें और चौराहे हैं, पर टोडरमल के नाम पर दिल्ली के अलावा शायद ही कहीं और सड़क हो। वैसे विभिन्न जातियों में टोडरमल का उल्लेख मिलता है।

राजा टोडरमल का भात

हो सकता है कि - ''इस ऐतिहासिक कहानी'' के आधार पर ही आज कहा जाता रहा है कि ''टोडरमल'' अग्रवाल थे।

अग्रोहाधाम पत्रिका - जुलाई-1996 में राजा टोडरमल की इस ऐतिहासिक कहानी के बारे में लिखा है कि - टोडरमल के बारे में भ्रांतियां हैं। लेकिन विवाह के अवसर पर अग्रवालों द्वारा गाये जाने वाले गीतों में इनका उल्लेख मिलता है। **किस्सा इस प्रकार लिखा हुआ है कि --**

हरियाणा में **नारनौल** एक कस्बा है। बादशाह अकबर के समय यहां एक प्रतिष्ठित और धनी अग्रवाल परिवार रहता था। टोडरमल का इस परिवार से मैत्री का संबंध था। वे आते-जाते इनके यहां एक-दो दिन के लिये ठहर जाते थे। एक बार वे दो-तीन साल तक नारनौल नहीं आये। इस परिवार में संतान के नाम पर एक लड़का था, जिसका विवाह संबंध समीप के प्रसिद्ध नगर सेठ की कन्या के साथ निश्चित हुआ। दुर्भाग्वश संबंध तय होने के कुछ समय बाद ही लड़के के पिता का देहांत हो गया। मुनीमों ने बेईमानी से सेठजी का सारा धन हड़प लिया गया। उनका सारा व्यापार छिन्न-भिन्न हो गया।

सूचना लड़की वालों के यहां पहुंची, उन्होंने सोचा कि अब विवाह करना उचित नहीं होगा लेकिन संबंध विच्छेद करना भी सरल न था। अत: लड़की वालों ने एक मीठा बहाना बनाया। उन्होंने सुपारियों की एक थैली नारनौल भेजी और लिखा था कि विवाह लग्न फाल्गुन मास का है। कृपया आप सुपारियों जितनी संख्या में बाराती प्रतिष्ठित परिवारों के ही लायें। सेठानी पत्र पाकर सब बातें समझ गई। संपन्न परिवारों का मतलब हाथी-घोड़े व लावलश्कर, सेठानी यह व्यवस्था व खर्च नहीं कर सकती थी। संयोगवश टोडरमल का पंजाब जाते हुए सेठानी के यहां ठहरना हुआ, सेठानी उनकी ''**मुंहबोली बहिन**'' थी। उदासी का कारण पूछने पर सेठानी ने सारी बात भाई को बता दी। भाई ने बारात का जिम्मा अपने ऊपर ले लिया। भाई ने मूंगो से भरा थाल लड़की वालों के यहां भेज दिया और कहा की विवाह तिथि स्वीकार है, थाली में जितने मूंग हैं उतने बाराती आएंगे। पत्र पढ़कर मूंग गिने तो संख्या 2000 थी। कन्या पक्ष वालों ने इसे मजाक समझाा, सोचा कि, सेठजी की मृत्यु से सेठानी का दिमाग खराब हो गया है। उन्होंने हल्के भाव से संदेश भेजा कि स्वीकार है।

भाई टोडरमल ने सम्राट से कहकर हाथी घोड़े प्राप्त किये, सभी प्रमुख जागीरदारों, वजीरों, राजाओं को उसने बारात में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया। बड़ी धूमधाम से बारात का लवाजमा नारनौल पहुंचा, भाई ने भात भरा। भात क्या था, लगता था स्वंय भगवान ने ही भात भरा है। नारनौल से बारात रवाना हुई, ऐसी बारात न देखी गई न सुनी गई। कन्या पक्ष वालों ने जब बारात के बारे में सुना तो कन्या पक्ष का पिता कुछ प्रतिष्ठित व्याक्तियों को साथ लेकर गया। टोडरमल के पैरों में पगड़ी रखकर कहने लगा कि हमने अपनी तरफ से भयंकर भूल की है, जो

बहाना बनाकर संबंध तोड़ना चाहते थे। आज हमारी इज्जत आपके हाथ में है। सैंकड़ों वर्षों से हमारे परिवार को नगर सेठ की पदवी है, आप की दया से आस-पास के गांवों में इज्जत भी है। हमारी जग हंसाई से हमें बचा लें। कन्यादान मेरा भाई करेगा तथा मैं यह गांव छोड़कर हमेशा के लिये चला जाना चाहता हूं।

राजा टोडरमल ने उन्हें उठाकर गले लगाते हुए कहा - ''कुछ हुआ उसे भूल जाइये, अब तो आप हमारे समधी हैं। आपकी मान बड़ाई ही हमारी शोभा है। आप चिंता न करें, किसी को भी पता नहीं चलेगा। सारी व्यवस्था हम लोगों की तरफ से है।'' इस प्रकार सारे विवाह कार्य आनंद पूर्वक संपन्न हुए। **वधु को विदा करवाकर जब वे नारनौल पहुंचे तो वर पक्ष की महिलाओं ने जो गीत गाया था वह** -

''अे तो जात्याजी, जीत्या म्हारा टोडरमल वीर,
केशरियो बनडी जीत्यो म्यारे बीरेजी के पाण।।'''

बहू की अगवानी के समय आज भी राजस्थान में इस प्रकार टोडरमल के गीत गाये जाते हैं।

सेठ टोडरमल (अग्रवाल) सरहिंद

सन् 1705 में ये सरहिंद के धनी अग्रवाल व्यापारी थे। 12 दिसम्बर 1705 को सेनापति वजीरखान ने गुरू गोविंद सिंह जी के दो पुत्रों को दीवार में चिनवा दिया। सेठ टोडरमल ने अंजाम जानते हुए भी दोनों पुत्रों के अंतिम संस्कार के लिये वजीरखान के कहे अनुसार जमीन खरीदी, जितनी जमीन पर अंतिम संस्कार होना था, उतनी जगह पर सोने की मोहरें बिछाई गई। यह विश्व की सबसे मंहगी खरीदी गई जमीन है। सेठ टोडरमल ने इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया, वे पटियाला से कुछ दूरी पर स्थित ''काकड़ा'' गांव के निवासी थे। जहां गुरू गोविंद सिंह जी के पुत्रों का अंतिम संस्कार हुआ था वहां गुरूद्वारा ज्योतिस्वरूप, फतेहगढ़ साहिब है। सेठ टोडरमल की स्मृति में गुरूद्वारा कमेटी ने ''दीवान टोडरमल जैन मीटिंग हॉल'' बनवाया हुआ है। गुरूद्वारे तक जाने वाले मार्ग का नाम ''दीवान टोडरमल मार्ग'' है। इसके अलावा उनके सम्मान में सरहिंद के प्रवेश पर ''दीवान टोडरमल स्मारक गेट'' पंजाब सरकार द्वारा बनवाया गया है। टोडरमल के निवास को ''जहाज हवेली'' कहते हैं।

(पुस्तक अग्रवाल समाज की विरासत से साभार)

महात्मा गांधी (मोढ़ से गांधी तक)

मूलरूप से गांधी कुल मोढ़ वणिक जाति का है। उत्तर गुजरात में मेहसाणा से 12 किमी दूर मोढेरा गांव है। इस गांव से ही अलग मोढ़ गौत्र (अल्ल) बना होगा। हेमचंद्र सूरी (विख्यात जैन आचार्य) मोढ़ वणिक पुत्र थे। 350 वर्ष पूर्व मोढ़ वैश्य घोघा छोड़कर पोरबंदर और जूनागढ़ के आस पास बस गए। इन्हीं में गांधी परिवार भी था। गांधी परिवार के वयोवृद्ध व्यक्ति जूनागढ़ के कुतियाणा (पोरबंदर के पास है) में ठेकेदार बनाए गए व वहीं पर बस गए। गुजराती में गांधी का अर्थ होता है ''परचून का दुकानदार'', आज भी गुजरात में मिर्च मसाले और देशी जड़ी बूटियों की दुकान को गांधी की दुकान कहा जाता है। गांधी परिवार के आदि पुरूष लालजी थे।

राज्य की खटपट से रूठकर आपने परचून की दुकान चलाई। तब से लालजी गांधी उपनाम से पहचाने लगे जो आज तक चला आ रहा है। (सुमित्रा गांधी – महात्मा गांधी की पौत्री द्वारा लिखित पुस्तक – महात्मा गांधी मेरे पितामह, से साभार लिया यह लेख युवा अग्रवाल, दि. 16.9. 2010 में विस्तार से छपा है।)

भामाशाह

पिताजी –भारमल कावड़या जी, जो राणा सांगा के समय रणथम्भौर के किलेदार थे। इस प्रकार भामाशाह कावड़या वैश्य (ओसवाल–जैन) हैं न कि अग्रवाल। भामाशाह के पिताजी को महाराणा उदयसिंह अलवर से ससम्मान बुलाकर मेवाड़ ले गए। ये अलवर के रावण देवरा क्षेत्र जिसे अब प्रताप गंज कहते हैं, रहने वाले थे यहां आज भी भामाशाह के महलों के खंडहर हैं। इनका मेवाड़ में बसने का समय 1553 ईस्वी है। उदयपुर में भामाशाह के वंशजों को पंच–पंचायत और अन्यव विशेष उत्सवों पर सर्वप्रथम गौरव दिया जाता है। भामाशाह को अनुपम दानी माना गया है। आज जो भी दानवीर है उसे भामाशाह कहा जाता है। ''**भामाशाह एक उपाधि**'' है, दानी व्यक्ति के लिये।

हेमचंद्र विक्रमादित्य

एक और उदाहरण कि – हेमचंद्र विक्रमादित्य को अग्रवाल मानते हैं तो कुछ वैश्य मानते हैं जबकि हेमू को मुसलमान लेखकों ने हेमू बक्काल (बनिया) कहा, क्योंकि वो एक व्यापारी की तरह चतुर और चालाक था। यह भी हो सकता है कि उस समय भार्गव लोग व्यापार करने लगे थे इसलिये मुसलमानों ने हेमू को बनिया समझकर बक्काल कहा। दौसर वैश्य हेमचंद्र विक्रमादित्य को अपना पूर्वज मानते हैं। इतिहासकार डा. शशि भूषण सिंघल तथा सत्यपाल गुप्त ने लिखा है कि ''हेमचंद्र रेवाड़ी के रहने वाले थे, उनके पिता का नाम पूरणदास (लाला पूरणमल) था। पूरणदास जाति से **दूसर (भार्गव)** थे तथा राधावल्लभ संप्रदाय में श्रद्धा रखते थे, पूरणदास पहले पौरोहित्य का कार्य करते थे, किंतु बाद में मुगलों द्वारा परेशान करने के कारण कुतुबपुर, रेवाड़ी में आकर नमक का व्यवसाय करने लगे। प्रसिद्ध इतिहासकार श्री भगवतशरण उपाध्याय ने हिंदू सम्राट हेमू को भृगुवंशीय लिखा है, वे आगे लिखते हैं कि भार्गव लोग हेमू को अपना पूर्वज मानते हैं और अपने को ब्राह्मण कहते हैं। नि:संदेह इनका गौत्र भृगु का है।

– ये अग्रवाल नहीं हैं –

1. मैथिलशरण गुप्त और सियारामशरण गुप्त – गहोई वैश्य।
2. जयशंकर प्रसाद गुप्त – कान्यकुब्ज हलवाई या मोदनवाल हलवाई या यससेनी वैश्य। आपने 1900 में हलवाई युवक दल संगठित किया था।
3. श्री चंद्रभान गुप्त – भू.पू. मुख्य मंत्री, उ.प्र., – माहौर वैश्य।
4. श्याम लाल गुप्त ''पार्षद'' – दौसर वैश्य, आपने विश्व विजयी तिरंगा प्यारा नामक राष्ट्रगीत लिखा।
5. महात्मा गांधी – गुजरात के म्योढ़ / मोढ़ वैश्य।
6. भामाशाह – कावड़या वैश्य – ओसवाल जैन।
7. आरती गुप्ता (शाह) – इन पर भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया है।

अध्याय आठ

अग्रवाल

अग्रवाल कहलाता हूं मैं, स्वर्ण लिखा इतिहास है ।
मेरी जाति के पुरखों ने, जग में किया प्रकाश है ।।

1. महाराजा अग्रसेन के वंशज अग्रवाल कहलाते हैं।
2. वैश्य अग्रवाल समाज को अंतरराष्ट्रीय कौम कहा जाता है।
3. गौत्र की शानदार परंपरा के कारण आज भी अग्रवाल समाज की गणना विश्व की श्रेष्ठ जातियों में होती है।
4. अग्रवाल समाज की सामाजिक सेवाओं का प्रसार और विस्तार, संपूर्ण भारत में सभी जगह देखा जा सकता है। सरकार के बाद भारत में सबसे अधिक विद्यालय अग्रवाल समाज द्वारा स्थापित हैं।
5. इस समाज की सबसे बड़ी विशेषता उसकी व्यवसाय एवं उद्योग क्षमता है, दूसरी – अद्‌भुत पुरूषार्थ, साहस, हिम्मत व धैर्य, तीसरी – सरलता, सादगी व मितव्यता है।
6. अग्रवाल समाज में लोकोपकार एवं दानशीलता की भावना बचपन में ही संस्कारों के साथ ही मिलने लगती है।
7. हमेशा अपनी साख पर ध्यान रखने वाले अग्रवाल समाज के बंधुओं की यह भी विशेषता रही है कि वह जहां भी जाता है वहीं का हो जाता है।

अग्रवाल समाज का स्वर्णिम इतिहास 5100 वर्ष से भी अधिक पुराना है। **स्वतंत्र जाति के रूप में इसका उल्लेख** वर्तमान में प्राप्त प्रमाणों, शिलालेखों, प्राचीन ग्रंथों के आधार पर **1100 ईस्वी** के आस-पास ही मिलता है। राष्ट्रीय उत्थान में अग्रवालों का योगदान इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ है। आजादी के दीवानों के रूप में स्वत्रंता संग्राम के इतिहास में अगवालों का योगदान तो भरा पड़ा है। यह समाज वीरता एवं त्याग के क्षेत्र में भी अग्रणी रहा है। इतिहास साक्षी है, कि जब तक वैश्य अग्रवालों के हाथ में कृषि, गौरक्षा और वाणिज्य का कार्य रहा, भारत सोने की चिड़िया कहलाया। संपूर्ण भारत में परिचय सम्मेलन व सामूहिक विवाह का आरंभ अग्रवाल समाज ने ही किया। अपनी योग्यता व बुद्धि से अनेक अग्र विभूतियों ने राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आपनी पहचान का झंडा बुलंद कर समाज का नाम रोशन किया है। अनेक अग्रवाल विभूतियों ने अपनी दानशीलता, उदारता एवं परोपकारी वृत्ति का अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। एक समय था जब इस समाज के दानी लोग कुओं, तालाबों, बावड़ियों, मंदिरों, प्याऊ आदि के निर्माण में विशेष रूचि लेते थे किंतु अब शिक्षा के प्रचार, अनुसंधानों, विकास की योजनाओं, चिकित्सा, निर्धन एवं जरूरतमंदों की सहायता पर विशेष बल दिया जाता है। अग्रवाल

समाज के अनेक ट्रस्ट प्रति वर्ष लाखों रूपये लोक हितकारी कार्यों में करते हैं।

डा. स्वराजमणि अग्रवाल -- 27 अगस्त 1930 को बंगाल के एक प्रमुख अधिकारी ए.एच.गजनवी ने वाइसराय के प्रतिनिधि कनिंघम को एक पत्र लिखा था, जिसमें कहा गया था कि अगर म.गांधी के आंदोलन से मारवाड़ी व्यापारियों को अलग कर दिया जाए तथा बंगाल का आंदोलन केवल बंगाल वासियों पर ही छोड़ दिया जाये तो 90 प्रतिशत आंदोलन अपने-आप समाप्त हो जाएगा। म. गांधी ने स्वतंत्रता आंदोलन में अग्रवाल समाज की भूमिका को सराहा है।

श्री ओमप्रकाश अग्रवाल -- अग्रवाल किसी एक धर्म से बंधे हुए नहीं हैं। जैन व वैष्णव धर्म को मानने वाले अनेक हैं तो बौद्ध घर्म के महान् विद्वान श्री सत्यनारायण गोयनका तथा प्रोफेसर लोकेश चंद्र जी हैं। कानपुर से दिल्ली तक और कुछ पंजाब में भी अग्रहरि गुरूद्वारे देखे जा सकते हैं। अग्रवाल किसी एक प्रदेश, भाषा या धर्म से भी बंधे हुए नहीं हैं, वे जहां पर भी जाकर बसे वहां की भाषा और संस्कृति को पूरी तरह आत्मसात कर लिया। यहां एक ही उदाहरण काफी है - असम का अग्रवाला परिवार 180 वर्ष पूर्व राजस्थान के चुरू जिले से निकल कर असम में बस गया। इस परिवार ने अनेक असमिया साहित्यकार दिये। इसी परिवार के ज्योति प्रसाद अग्रवाला को असम में **रूपकंवर** के नाम से जाना जाता है जो एक प्यार भरा संबोधन है। ज्योति प्रसाद द्वारा रचा गया संगीत आज भी असम रेडियो व टी.वी. पर अपना स्थान बनाये हुए है जो बंगाल में रविन्द्र संगीत का है। ज्योति बाबू की स्मृति में भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया, डिब्रूगढ़ हवाई अडडा उन्हीं को समर्पित है। जब 1934 में देश की पहली बोलती फिल्म का निर्माण हुआ तभी ज्योति प्रसाद अग्रवाला ने असमिया भाषा की पहली बोलती फिल्म बनाकर चमत्कार कर दिया। इसीलिए ज्योति बाबू की पुण्य तिथि को असम में शिल्पी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

ध्यातव्य - अग्रवाल जाति जहां भी रही उसने उस स्थान का गौरव बढ़ाने में सदा अपना सहयोग और योगदान दिया। मरू प्रदेश यानि राजस्थान में बसने वाले लोगों ने अपना जीवन, शुद्ध व्यापारिक बना लिया लेकिन इनके खून में जो बुद्धि और कला का मिश्रण था उसने उन्हें प्रत्येक स्थान पर गौरवशाली जाति के रूप में विद्यमान बनाए रखा। इनमें प्रसिद्ध पुरूष मंडल जी (12 वीं शताब्दी में) का नाम प्रसिद्ध है, जिन्होंने सन् 1110 के लगभग मंगल गांव बसाया जो भिवानी से 13 कोस दूर है। इन्हीं के परिवार के पाहुराम जी तथा भोलाराम जी ने 15 ईस्वी में मंडाहल छोड़कर ''केड'' नाम के गांव की स्थापना की जिससे ''केडिया'' वंश चला। इन्हीं दिनों झुंझनु में तुलसीराम जी व जालीराम जी जैसे अत्यंत प्रतापी व्यक्ति हुए, जिनके नाम से तुलस्यान, जालान व जालानी वंश चला, जिनका प्रताप आज भी पूरे भारत में विख्यात है। इसी प्रकार पौद्दार प्रर्वतक सेठ रामचंद्र जी, गोइनका वंश के गोविंदराम जी, खेतान के सेठ खेतसीदास जी, हिम्मतसिंहका वंश के सेठ हिम्मत सिंह जी, नैपानी वंश के मानसिंह जी, योगमल जी, सेठ खेमचंद जी आदि। मुगल सम्राट अकबर के दरबार में मधुशाही नामक एक अग्रवाल जाति के महापुरूष हुए जिनके नाम से ''मधुशाही'' पैसा चलाया गया था। अग्रवाल जाति में अनेक स्वतंत्रता सेनानी, महापुरूष, दानवीर, खिलाड़ी, विद्वान, साहित्यकार, कवि, राजनितिज्ञ, आदि हुए

हैं। जिनकी गाथा में अनेक ग्रंथों की रचना की जा सकती है।

विशेष – 11वीं शताब्दी के अंत में अग्रोहा निवासियों ने अग्रोहा को छोड़कर राजपूताना और देश के अन्य हिस्सों में बसना आरंभ कर दिया। 14वीं व 15वीं शताब्दी में तो अग्रवालों ने शेखावटी, झूंझनू, फतेहपुर, मंडावा, सीकर, नवलगढ़, बागड़ आदि इलाकों में प्रमुख स्थान बना लिया। उस समय राजपूत राजाओं को नये-नये गढ़ बसाने के लिये वैश्यों की आवश्यकता थी। रामगढ़ का नाम तो ''रामगढ़ सेठान'' ही पड़ गया। मुगलकाल में अग्रवालों की महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति हुई, वे मोदीखाने व खजाने की देखभाल भी किया करते थे। जब 1564 में अकबर ने राजा मानसिंह के नेतृत्व में अपनी सेना बंगाल के नवाब की सहायता के लिये भेजी तो उसके मोदीखाने में वैश्य अग्रवाल भी थे।

''**अग्रवाल'' शब्द** – ''स्वतंत्र जाति के रूप में इसका उल्लेख'' वर्तमान में प्राप्त प्रमाणों, शिलालेखों, प्राचीन ग्रंथों के आधार पर **1100 ईस्वी** के आस-पास ही मिलता है। विद्वानों ने ''अग्रवाल'' शब्द कैसे प्रचलित हुआ और कब से प्रयोग होना आरंभ हुआ, यह जानने का प्रयत्न किया। 13वीं सदी में मलिक मुहम्मद जायसी की प्रसिद्ध रचना ''पद्मावत'' में अल्लाद्दीन से युद्ध के दौरान जिन जातियों का नाम आया है, उनमें अग्रवाल जाति का भी नाम है। जैन साहित्य के विद्वान अगरचंद नाहटा, श्री परमानंद शास्त्री आदि ने काफी अध्ययन किया और अब तक प्राप्त प्रमाणों, शिलालेखों, प्राचीन ग्रंथों आदि के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि इस शब्द का प्रचलन किसी न किसी रूप में ईस्वी सन् 1100 के आस-पास हो गया था। प्राकृत्त भाषा के ग्रंथों से पता चलता है कि इस शब्द का प्रचलन पूर्व में ''अग्रवाल'' या ''अयरवाल'' के रूप में था। सन् 1132 में तोमर वंशीय राजा अनंगपाल तृतीय के शासनकाल में 'कविवर श्रीधर अग्रवाल' द्वारा रचित 'पासणाह चरिउ' में अयरवाल जाति का उल्लेख है। **लंदन के पुस्तकालय में विद्यमान** 'तजकिरातुल उमरा' नामक नामक हस्तलिखित प्रति से सूचित होता है, कि इसे दिल्ली के समीप 'कासना' नामक स्थान के निवासी केवल राम ने लिखा था, जिसमें लेखक ने अपने को अग्रवाल कहा है। वैसे काफी साक्ष्य ऐसे भी मिले हैं, जिनमें अग्रवालों के लिये ''**अयरवाल या अग्रवाला**'' शब्द प्राकृत ग्रंथों में था।

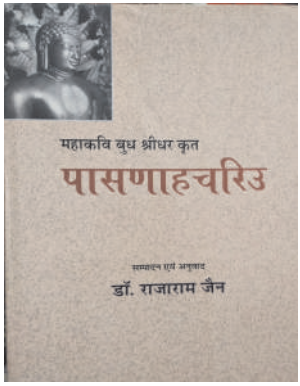

अग्रोत्कान्वय – कुछ ग्रंथों में ''अग्रोत्कान्वय'' शब्द का उल्लेख मिलता है। सत्यकेतु जी के अनुसार – अग्रोदक या अग्रोतक नगरी के कारण ही अग्रवालों को पहले ''अग्रोत्कान्वय'' भी कहा जाता था। ''अन्वय'' का अर्थ ''वंश'' या ''शाखा'' होता है। अग्रोदक नगरी से वहां के निवासियों की जो शाखाएं अन्यत्र जाकर बसीं, वे ही ''अग्रोत्कान्वय'' कहलाईं। यही कारण है कि अनेक ऐसे पुराने लेखों व शिलालेखों में अग्रवालों को ''अग्रोत्कान्वय'' के रूप में भी उल्लेख किया है। 1575 ईस्वी में पं. राजमल ने 'जम्बू स्वामीचरितम्' एक संस्कृत ग्रंथ लिखा

था, जिसमें उसने अपने संरक्षक को अग्रोत्कान्वय गर्ग गोत्र का कहा है।

15वीं और 16वीं शताब्दी में लिपिबद्ध, हस्तलिखित पुस्तकों की पुष्पिकाओं में भी ''अग्रोत्कान्वय'' के उन व्यक्तियों का उल्लेख है, जिसके द्वारा ये पुस्तकें लिखवाई गईं, ऐसी ही एक पुस्तक 'आदिपुराण' है जिसे सन् 1480 में लिखवाया गया था जिसके अंत में 'अग्रोत्कान्वय गोइल गोत्र' मिलिक यशोधरा तयो पुत्रा मलिक भट्टिया लेख है, जिससे प्रमाणित होता है कि इस पुस्तक को गोयल गोत्र के एक अग्रोत्कान्वय (अग्रवाल) द्वारा लिखवाया गया है। इसी प्रकार 1536 ई. में पं. रइधु कृत पुस्तक 'सिद्धान्तार्थ' की पुष्पिका में अग्रोत्कान्वय गर्ग गोत्र का उल्लेख विद्यमान है। ये दोनों ग्रंथ जयपुर के बड़े मंदिर के पुस्तकालय में सुरक्षित हैं। पं. रइधु की अन्य पुस्तकों में भी अग्रोत्कान्वय के व्यक्तियों का उल्लेख है। इस प्रकार अन्य हस्तलिखित ग्रंथों में भी अग्रवालों के लिये अग्रोत्कान्वय का प्रयोग किया गया है। प्रयाग के समीप प्राचीन कोशाम्बी नगर के निकट प्रभास पर्वत की धर्मशालाओं में एक प्रशस्ति लगी हुई है, जो सन् 1824 की है। इसमें निर्माता को 'अग्रोत्कान्वये गोयल गोत्र प्रयाग नगर वास्तव्य' कहा गया है। इस प्रकार 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक अग्रवालों को अग्रोत्कान्वय कहा गया है।

सारबन का शिलालेख - 16 श्लोकों वाला यह लेख सारबन गांव-महरौली-दिल्ली के एक कुएं पर लगा हुआ था, इस शिलालेख के सातवें श्लोक में अग्रोतक(अग्रोहा) वंशीय वणिक लोगों की चर्चा हुई है। इनका मूल निवास अग्रोहा था। इसी अग्रवाल वंश के खेतल और पेतल नामक दो भाईयों ने सारबन गांव में इस कुएं का निर्माण फाल्गुन शुक्ल पंचमी संवत् 1384 (सन् 1327) में करवाया था। यह शिलालेख मुस्लिम शासक सुल्तान बिन तुगलक के समय का है।

1. अग्रवाल समाज के झंडे का केसरिया रंग है एवं उसके अंदर 18 किरणों वाला गोला बना हुआ है जो गोत्रों का प्रतीक है। बीच में एक ईंट व एक रूपये का निशान है।

2. अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल की प्रमाणिक जानकारी का इंटरनेट प्रसारण 2 अगस्त 1998 को प्रारंभ किया गया।

3. अग्रवाल उपकारक - 19 वीं सदी में अजमेर से निकला यह पत्र अग्रवाल समाज का **प्रथम पत्र** था।

-:: संगठन ::-

यूं तो भारत के सभी शहरों और कस्बों में महाराजा अग्रसेन के वंशजों द्वारा अनेक संस्थाओं, पंचायतों, समितियों आदि की स्थापना की गई है और अभी भी की जा रही है। लेकिन बात उस समय की है, जब वर्षों पहले अपनी **जाति** की **संस्था** का संचालन करना और **जाति** के आधार पर कार्य करने में सकुचाहट व हिचक होती थी, लेकिन समाज के दूरदर्शी, कर्मठ, लगनशील, चिंतनशील और जुझारू समाज सेवी अग्रवाल बंधुओं ने आगे आकर इन संस्थाओं की स्थापना की और समाज को एक दिशा दी, उनके साहस को **नमन**। संभव है कि आज भी ये संस्थाएं कार्य कर रही हों।

-- यह भी सच है कि, आज अग्रवाल समाज की संस्थाएं हजारों में हैं। अनेक संस्थाएं तो वर्षों पहले से कार्य कर रही हैं। इन संस्थाओं के माध्यम से अनेक ऐसे समाज हित के कार्य किये गये व किये जा रहे हैं कि **गर्व** तो होता ही है। मेरे संकलन में उपलब्ध संस्थाओं में से अग्रवाल समाज की **कुछ महत्वपूर्ण** व **कुछ काफी वर्ष पुरानी संस्थाओं** का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है। नि:संदेह इन संस्थाओं ने अग्रवाल समाज के लिये महत्वपूर्ण कार्य किये हैं।

संस्था – ''अग्रसेन स्मृति भवन,कलकत्ता'' की स्थापना सन् 1845 की गई। ''अग्रवाल वैश्य संगठन'' की स्थापना सन् 1879 में खुर्जा में स्थापित हुई। 1909 तक यह संगठन अग्रवालों के सामाजिक उत्थान हेतु कार्यरत रहा। फिर शिथिलता आ गई, 1926 के बाद पुन: इस संगठन ने कार्य करना आरंभ किया। सन् 1892 में ''**अ.भा.वैश्य महासभा, मेरठ**'' की स्थापना हुई। **1901 की जनगणना में महासभा के विरोध के कारण अंग्रेजों ने ''बनिया'' शब्द हटाकर ''वैश्य'' शब्द का उपयोग किया।** इस सभा ने भी समाजोत्थान में अनेक कार्य किये।

1. **अग्रसेन स्मृति भवन, कलकत्ता** – वि.सवंत् 1902 अर्थात् सन् 1845 में इस संस्था का गठन किया गया। संस्था ने अनेक उल्लेखनीय कार्य किये हैं। संस्था द्वारा श्री रामरिछपाल झुंझनुवाला स्मृति पुस्तकालय एवं वाचनालय का संचालन सफलता पूर्वक किया जा रहा है।
2. **सभाए आजम, खुर्जा** – सन् 1890 में इस वैश्य संगठन का गठन किया गया। इस संस्था ने ''**वैश्योन्नति चंद्रिका**'' मासिक पत्र ''**उर्दू**'' में प्रकाशित किया। 1891 में यह हिंदी तथा उर्दू में छपना आरंभ हुआ। सन् 1909 के बाद इस सभा में शिथिलता आ गई। इस संस्था ने अनेक कार्य किये। इस संस्था को सन् 1926 में ''अखिल भारतीय वैश्य महासभा'' के नाम से पुनर्जीवित किया गया। इस संस्था द्वारा प्रारंभ में 'अग्रवाल' बाद में 'अग्रवाल संदेश' नाम से पत्रिका का प्रकाशन किया जो आज अलीगढ़ से प्रकाशित हो रही है। महासभा के द्वारा 11-12 अप्रैल 1987 को अपने शताब्दी समारोह का विशाल सम्मेलन दिल्ली मे किया।
3. **अखिल भारत वर्षीय वैश्य महासभा, मेरठ** – इस सभा का गठन सन् 1892 में अनेक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया गया। इस सभा का गठन ऐसे समय हुआ जब अज्ञान तथा अविद्या के कारण जाति में अनेक बुराइयां फैली हुई थीं। अन्य लोग वैश्यों को बनिया, बक्काल कहकर पुकारते थे, उनको हेय दृष्टि से देखते थे। छोटी आयु में विवाह होते थे। प्रारंभ में कुरीतियों को दूर करने, शिक्षा प्राप्त करवाने आदि कार्यों में ध्यान दिया गया। समाज सुधार के भी अनेक कार्य किये गए। सन् 1901 में जनगणना के समय वैश्यों के लिये बनिया, बक्काल शब्दों को प्रयोग करने पर इस सभा ने सरकार का भारी विरोध किया, अंत में सरकार ने ''**वैश्य**'' शब्द स्वीकार किया। ''**वैश्य हितेशी**'' पत्र को आरंभ किया गया। 1898 में मेरठ में एक **अनाथालय** की स्थापना की। स्व. ऑनरेबिल रायबहादुर साहब रामानुज दयाल जी ने इसके लिए एक लाख रूपये की आठ एकड़ जमीन दान दी। **वैश्य बोर्डिंग हाउस** की स्थापना की जो आगरा विश्वविद्यालय से संबंधित है। 1900 में ललित संस्कृत आदर्श महाविद्यालय की स्थापना की गई। सन् 1898 में ''**वैश्य इंटर**

कॉलेज, मेरठ'' की स्थापना की गई जो नगर की सबसे पुरानी संस्थाओं में से एक है। सर्वप्रथम इसकी स्थापना ''**वैश्य नाइट स्कूल**'' के रूप में की गई, 1916 में यह हाई स्कूल बना, 1950 में यह इंटर कॉलेज में बदल गया। सभा के द्वारा सन् 1993 में शतवार्षिकी के रूप में एक भव्य कार्यक्रम को आयाजन मेरठ में किया गया।

4. **श्री काशी अग्रवाल समाज** – इसकी स्थापना 21 सितम्बर 1895 को हुई। स्व. शाह गोविंद दास जी इस संस्था के आजीवन अध्यक्ष रहे। आज शिक्षा के क्षेत्र में इस संस्था का काशी में नाम है। अनेक शिक्षण संस्थाओं का संचालन सफलता पूर्वक किया जा रहा है। इस संस्था ने समाज हित के अनेक कार्य किये हैं। आज भी इस संस्था का संचालन नियमित रूप से किया जा रहा है।

   बाबू सीताराम शाह ये–काशी अग्रवाल समाज के संस्थापकों में थे, सन् 1901 में आप जम्मू और कश्मीर के महाराजा श्री प्रताप सिंह बहादुर के सहायक प्राईवेट सेकेट्री नियुक्त हुए तथा बाद में प्राईवेट सेकेट्री तथा मंत्री हो गये। मुगल कलम के ये बड़े भारी विशेषज्ञ माने जाते थे। पुरोन चित्रों को इन्हें पहचानने की दृष्टि बहुत ही पैनी थी। उच्चकोटि के प्राचीन अनेक चित्रों का इनका अपना संग्रहालय आज भी है।

5. **अखिल भारतीय मारवाड़ी अग्रवाल सभा** – 1918 में देशभक्त जमनालाल बजाज जी ने वर्धा में इसकी स्थापना की, 1920 में इसका अधिवेशन मुंबई में हुआ जहां म. गांधी भी पधारे। इस अधिवेशन में गांधी जी को पचास हजार रूपयों की थैली भेंट की गई तथा ''मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष'' बंबइ की स्थापना की गई। 1921 में दूसरा अधिवेशन कलकत्ता में हुआ, इस अवसर पर ''**मारवाड़ी अग्रवाल**'' मासिक पत्रिका का प्रथम अंक परमेश्वरी सहाय जी बी.ए.एल.एल.बी के संपादन में आगरा से निकाला गया। 1923 तक इस सभा की पूरे देश में 155 शाखाएं गठित हो गईं। सन् 1930 में उज्जैन में हुए अधिवेशन के दौरान इसका नाम '**अखिल भारतीय अग्रवाल सभा**' कर दिया गया, और पत्रिका का नाम भी ''**अग्रवाल**'' कर दिया गया। इसका प्रकाशन 160, हरीसन रोड, कलकत्ता से मोती लाल जी लाठ के संपादन में होने लगा। संस्था का द्वार सभी अग्रवालों के लिये खोल दिया गया। दिनांक 23.5.1948 को दिल्ली में एक सभा हुई, जिसमें इस संस्था को नये सिरे से संगठित कराया गया और इसका रजिस्ट्रेशन भी कराया गया। इसका श्रेय मास्टर लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल तथा तनसुख राय जी जैन को है। 1975 में कार्यकारिणी के सदस्य रहे श्री रामेश्वर दास जी गुप्त ने इससे अलग होकर अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन नाम से अलग संस्था का निर्माण कर लिया।

6. **अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष, बम्बई** – सन् 1920 में अ.भा. मारवाड़ी अग्रवाल महासभा के बंबई अधिवेशन पर एक प्रस्ताव द्वारा नौ लाख रूपये से इस संस्था की स्थापना सन् 1923 में की गई तथा इसका विधिवत रजिस्ट्रेशन भी करवाया गया। सन् 1925 में यह जातीय कोष अनाथ, विधवाओं और छात्रों को 25000 रूपये की सहायता देता था। सर्वप्रथम अग्रवाल जाति का इतिहास लिखने के लिये इस कोष की ओर से 175

रूपये की मासिक आर्थिक सहायता दी जाती रही, जिसके फलस्वरूप 1938 में डा. सत्यकेतु विद्यालंकार जी कृत ''**अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास**'' समाज के सम्मुख आया, जिसे इसी संस्था द्वारा प्रकाशित करवाया गया। सन् 1965 में माटुंगा, बंबई में इस जातीय कोष द्वारा एक ''**अग्रवाल नगर**'' बनाया गया, जहां सामान्य किराये पर अग्रवालों को निवास की सुविधाएं प्रदान की गईं। देश में शिक्षा के महत्व को देखते हुए इस संस्था द्वारा छात्रों को देश तथा विदेश में शिक्षा दिलाने के लिये लाखों रूपये खर्च किये हैं। अनेक सम्मान समारोह भी आयोजित किये गए हैं।

7. **अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासभा** – सन् 1926 में खुर्जा के प्रसिद्ध दानवीर, रायबहादुर सेठ श्री नत्थीलाल जी के प्रयासों से इस संस्था का गठन किया गया। राय साहब लाला फतेह चंद्र जी सन् 1943 से 1966 तक इस संस्था के अध्यक्ष रहे। इस संस्था ने सैंकड़ो असहाय विधवाओं तथा निर्धन छात्रों की मदद की। ''अग्रवाल संदेश'' मासिक पत्रिका का भी प्रकाशन किया जाता रहा।

8. **अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन** – श्री रामेश्वर दास गुप्त ने सन् 1974 में अग्रवाल समाज के प्रमुख समाज सेवियों से परामर्श करके दिल्ली में अग्रवाल पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों का एक सम्मेलन बुलाने विचार किया। पत्रकारों को निमंत्रण पत्र भिजवाए गये, पत्रकारों ने सुझाव दिया कि पत्रकार सम्मेलन की जगह अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन बुलाया जाए। अत: जनवरी 1975 को दिल्ली की समस्त अग्रवाल सभाओं एवं सामाजिक कार्यकत्ताओं की एक बैठक धर्म भवन में बुलाई गई। इस बैठक में सर्वसम्मति से तय हुआ कि मार्च या अप्रैल 1975 में दिल्ली की समस्त अग्रवाल सभाओं के तत्वावधान में ''अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन'' के नाम से एक सम्मेलन का आयोजन किया जाए। 5-6 अप्रैल 1975 को दिल्ली की अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों के साथ 1000 से अधिक अग्रवालों ने भाग लिया। इस सम्मेलन की सबसे बड़ी उपलब्धि थी ''अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन'' के गठन का निर्णय। 6-7 सितम्बर 1975 को नागपुर अधिवेशन में इसका विधान पारित हुआ। सम्मेलन के प्रथम अध्यक्ष श्री श्रीकृष्ण जी मोदी, प्रथम महामंत्री श्री रामेश्वर दास जी गुप्त तथा प्रथम कोषाध्यक्ष मद्रास के श्री ब्रज लाल जी चौधरी, सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए। अग्रवालों का एक ध्वज, महाराजा अग्रसेन का एक चित्र तथा अग्रवालों का एक प्रतीक तैयार करने का निर्णय हुआ। सम्मेलन ने अग्रोहा को तीर्थ के रूप में विकसित करने का ठोस कार्य अपने हाथ में लिया। **स्व. श्री बनारसीदास जी इस संस्था के 18 वर्ष तक अध्यक्ष रहे। इस दौरान सम्मेलन ने खूब प्रगति की तथा अनेक उपलब्धियों को अपने नाम किया।**

सम्मेलन के आग्रह पर – ''अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास'' के लेखक श्री सत्यकेतु विद्यालंकार ने अपने लिखे इस इतिहास को संशोधित कर पुन: सन् 1976 में लिखा। डा. स्वराजमणि अग्रवाल ने अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल शोध ग्रंथ की रचना की। इसका प्रकाशन

भी सम्मेलन ने किया। सम्मेलन ने महाराजा अग्रसेन का प्रमाणिक चित्र तैयार किया, अग्रवालों का एक प्रमाणिक ध्वज तैयार किया, अग्रवाल शब्द की स्पेलिंग को मान्यता प्रदान की, 1976 में सम्मेलन के द्वारा महाराजा अग्रसेन जी की जयंती मनाई गई जिसे उसने 5100 वीं जयंती का नाम दिया, इसी गणना के आधार पर अब जयंती वर्ष का निर्धारण किया जा रहा है। सम्मेलन ने महाराजा अग्रसेन के चित्र, धातु प्लेट, बैज तथा बटननुमा अग्रवाल समाज के प्रतीक, एक ईंट-एक रूपया का मोनोग्राम भी बनवाए व वितरण भी किये। सम्मेलन के प्रयासों से ही परिचय सम्मेलन व सामूहिक विवाह समारोह के आयोजन संभव हुए। सम्मेलन समय-समय पर देश के अग्रबंधु समाज सेवियों, साहित्कारों, पत्रकारों, राजनेताओं, वैज्ञानिकों आदि को सम्मानित करता रहा है। सम्मेलन ने अग्रोहा में 10 एकड़ भूमि में ''**अग्रविभूति स्मारक**'' की स्थापना की है जो आज एक दर्शनीय स्थल है।

9. **अग्रोहा विकास ट्रस्ट** - श्री रामेश्वरदास जी गुप्त के प्रयासों से ''अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन'' का आयोजन हुआ और उसमें अग्रोहा निर्माण का संकल्प लिया गया। अग्रोहा निर्माण के लिये धन एकत्र करने में इसकी आवश्यकता थी। इस बात को ध्यान में रखते हुए सम्मेलन द्वारा ''अग्रोहा विकास ट्रस्ट'' की स्थापना की गई। अग्रोहा को ''**तीर्थ**'' के रूप में विकसित करने के लिये अग्रसेन इंजीनियरिंग कॉलेज सोसायटी के पदाधिकारियों ने अग्रोहा में अपनी 23 एकड़ भूमि अग्रोहा विकास ट्रस्ट को नि:शुल्क प्रदान की। अग्रोहा विकास ट्रस्ट के माध्यम से अग्रोहा को ''**अग्रोहा धाम**'' बनाने के लिये अनेक कार्य किए गए, जिनका उल्लेख पूर्व में किया गया है। मासिक पत्रिका ''अग्रोहा धाम'' का प्रकाशन कई वर्षों तक किया गया, इस पत्रिका के लगभग 30000 से भी अधिक आजीवन सदस्य थे और लोकप्रियता में तो यह नं. एक पत्रिका थी। यह कहने में अतिश्योक्ति नहीं होगी कि, इस पत्रिका ने अग्रबंधुओं में साहित्यिक रूचि को पैदा किया और अग्रवाल समाज के बारे में अधिक से अधिक जानने की भूख को शांत किया। ट्रस्ट के माध्यम से सन् 1994 में निकाली गई ''महाराजा अग्रसेन ज्योति रथ यात्रा'' ने तो अग्रवाल समाज को संगठित करने, एकता स्थापित करने तथा अग्रोहा की यात्रा करने की अलख जगा दी। समय- समय पर इस संस्था ने अग्रवाल समाज के ऐतिहासिक साहित्य का प्रकाशन किया गया, महाराजा अग्रसेन जी के लोकप्रिय चित्र, चाबी के छल्ले, कैसिट, चांदी के सिक्के, बेजेज आदि को भी समाज को दिया। अनेक इतिहासकार व साहित्यकार इस संस्था से जुड़े, अनेक राजनीतिक हस्तियां, न्यायाधीश, ख्याति प्राप्त अग्रविभूतियां आदि इस अग्रोहा धाम में आकर धन्य हुईं। अग्रोहा को ''पंचमधाम'' बनाने में इसके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

10. **अखिल भारतीय अग्रवाल महासंघ, दिल्ली** - अखिल भारतीय सभाओं का एक संघ, के लक्ष्य को लेकर जनवरी 1975 में मास्टर लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल की अध्यक्षता में एक सभा आ आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्ष्ता प्रसिद्ध समाज सेवी लाला बशेशर नाथ गोटेवाला ने की। अनेक महान् हस्तियां इसके संस्थापक सदस्य थे जिसमें प्राफेसर श्री रामसिंह जी भी थे। इस महासभा को ऐतिहासिक विशाल अधिवेशन 9-10 जुलाई 1977

को गुजरात समाज, दिल्ली के सभागार में हुआ। उल्लेखनीय है कि – इससे पूर्व ऐसे भव्य एवं सुविधा जनक स्थान पर अग्रवाल समाज का कोई अधिवेशन नहीं हुआ। इस अधिवेशन में दिल्ली के अतिरिक्त सभी राज्यों के 342 प्रतिनिधियों ने भाग लिया और माननीय शांतिभूषण, न्याय व विधि मंत्री, भारत सरकार सहित अनेक अग्रवाल हस्तियों ने भाग लिया। सेठ गूजरमल मोदी (मरणोपरांत), प्रो. रामसिंह जी, मास्टर लक्ष्मी नारायण जी, वैद्य निरंजन लाल गौतम जी तथा मास्टर श्री चंदगीराम जी को समाज सेवाओं के उपलक्ष्य में ताम्र पत्र देकर सम्मानित किया। दिसम्बर 1981 में इस संघ का जो अधिवेशन दिल्ली में हुआ, वह दिल्ली के इतिहास में अपूर्व थ। इस संगठन ने सभी वैश्यों को संगठिन करने का प्रयास किया।

11. **अग्रवाल सभा, जोधपुर** – इसकी स्थापना सन् 1932 में की गई। अग्रवाल स्नेही पत्रिका के संस्थापक, परम देशभक्त, हिंदू भावना से ओत-प्रोत स्व. श्री लाला खेराती लाल जी अग्रवाल ने इस सभा को अपने कठोर परिश्रम से सींचा था। इनके सुपुत्र स्व. रोशन लाल जी अग्रवाल इस संस्था के अध्यक्ष रहे तथा ''अग्रवाल स्नेही'' मासिक पत्रिका को काफी वर्ष तक प्रकाशित किया। कुछ वर्ष पहले यह संस्था खत्म हो गई थी।
12. **अग्रवाल नवयुवक मंडल, जबलपुर** – सन् 1927 में विजयदशमी के दिन इस संस्था की स्थापना की गई। संगठन के तत्काल बाद इस संस्था के युवा सेनानियों ने आजादी की लड़ाई में सक्रिय योगदान दिया। मंडल भवन में पोस्टर तैयार होते तथा रातों रात शहर में चिपका दिये जाते थे। हिंदुस्तानी सिपाहियों को 1857 की याद दिलाने वाले उत्तेजक संदेश से युक्त बुलेटिन बनते और मिलिटरी बैरकों में बांटे जाते। इसी प्रयास में कुछ युवाओं ने सश्रम छः माह का सश्रम कारावास भोगा। गांधी इरविन समझौते के खिलाफ तथा बाद में 'भारत छोड़ो' आंदोलन के समय भी मंडल के उत्साही नवयुवक सक्रिय रहे, फलस्वरूप कुछ युवाओं को जेल में यातनाएं सहनी पड़ी। जब देश की परिस्थितियां सामान्य हुईं, तब मंडल के नवयुवकों का ध्यान समाज में व्याप्त कुरीतियों की ओर गया। सन् 1946 में यह एकमात्र ऐसी संस्था थी जिसमें ''अग्रवाल मात्र में रोटी बेटी का संबंध'' विषयक क्रांतिकारी प्रस्ताव स्वीकार किया गया। इस पर अमल भी किया। समाज सुधार के महत्वपूर्ण निर्णय लेकर उन्हें पुस्तक रूप में प्रकाशित भी किया। मंडल ने अपना पुस्तकालय स्थापित किया व सजातीय विद्यार्थियों के लिये छात्रवृत्तियों की व्यवस्था की। प्रतिभाशाली छात्रों को पुरस्कृत करने का कार्य अनेक वर्ष तक किया तथा और भी अनेक समाज हित के कार्य किये।
13. **मध्य भारत अग्रवाल सभा, इंदौर** – इसकी स्थापना 01 जनवरी 1920 में हुई। इस संस्था ने अनेक समाजहित कार्य किये। धर्मशाला, मंदिर, विद्यालय, बैंक आदि अनेक संस्थाओं का संचालन इसके द्वारा किया गया है। अ.भा.अग्रवाल सम्मेलन तथा अन्य संस्थाओं के सम्मेलनों को आयोजन भी इस संस्था के सहयोग किये गये हैं।
14. **अग्रवाल सभा, मंडला** – इसकी स्थापना सन् 1932 में की गई। इस संस्था ने भी अनेक जनहित कार्य किये हैं। सरकार से मान्यता प्राप्त पुस्तकालय का संचालन इस संस्था द्वारा

किया जा रहा है, जिसमें हजारों पुस्तकें हैं।

15. **बड़ी पंचायत वैश्य बीसे अग्रवाल** – इसका गठन सन् 1898 के आसपास **सीताराम बाजार, दिल्ली** में हुआ। इस संस्था के संस्थापक धर्म सुधारक रायबहादुर सेठ श्री कृष्णदास गुड़वाले (पुत्र श्री नारायणदास गुड़वाले) थे। इस संस्था के प्रधान क्रमशः – कार्यपालक अभियंता रायबहादुर कल्हैयाल जी, दिल्ली क्लाथ मिल के एम.डी. सेठ मदन मोहन अग्रवाल, लाला बुलाकीदास गोटेवाले रहे। इस संस्था का अपना एक बड़ा भवन है तथा समाज कल्याण एवं सहायता को अपना उद्देश्य बनाया है। इस संस्था द्वारा ''निगम बोध घाट शमशान'' में अनेक प्रकार से **सेवा** दी जा रही है तथा इसका कायाकल्प व सौंदर्यकरण भी किया गया। इस घाट में महाराजा अग्रसेन जी की **मूर्ति** भी स्थापित कराई गई है।
16. **पंचायत मौहल्ला, चूड़ीवालान (रजि.), दिल्ली** – यह संस्था लगभग सन् 1857 से पहले की है। अतः यह संस्था दिल्ली के अग्रवालों की प्राचीनतम सार्वजनिक संस्था है।
17. **अग्रवाल सभा, पंजाबी बाग-दिल्ली** – पाकिस्तान बन जाने के बाद सन् 1947 में पश्चिमी पाकिस्तान से आकर देहली में बसने वाले अग्रवालों के मन में अपनी अग्रवाल सभा बनाने की लालसा बनी हुई थी, काफी सोच-विचार के बाद 01 जनवरी 1955 में श्री रोशनलाल जी अग्रवाल के सतत प्रयासों से इस संस्था की स्थापना हुई। 11 अक्टूबर 1959 को विधिवत रजिस्ट्री कराई गई। 1965 में ''अग्रवाल हितैषी'' मासिक पत्र निकालना आरंभ किया गया, जिसका संपादन श्री रोशनलाल जी अग्रवाल ने बड़े ही सूझ-बूझ ढंग से किया। 28 मार्च 1957 में अग्रवाल महिला सभा तथा अग्रवाल बाल सभा की स्थापना की गई। 1968 में अग्रवाल बगीची ट्रस्ट की स्थापना हुई, सभा ने 3709 बर्ग गज भूमि प्राप्त की तथा इस पर पद्मश्री देवी सहाय जी जिंदल, पाइप वाले, पंजाबी बाग ने विपुल राशि खर्च कर भवन निर्माण करवा दिया। इस सभा ने अनेक समाज हितार्थ कार्य किये हैं।
18. **अग्रवाल धर्मशाला ट्रस्ट** – इसकी स्थापना सन् 1957 में लाला रामेश्वर दास गुप्त जी द्वारा की गई।
19. **त्रिनगर वैश्य सभा (रजि.)**, दिल्ली – इसकी स्थापना सन् 1958 में हुई थी।
20. **वैश्य अग्रवाल सभा, लोधी रोड, नई दिल्ली** – इस संस्था की स्थापना सन् 1936 में की गई, इसका कार्य बहुत बड़ा है। इस संस्था द्वारा भी अनेक समाज हित के कार्य किये गये।
21. **वैश्य सभा, (रजि.) हरिद्वार** – इस सभा की स्थापना सन् 1954 में हुई, यह अपने क्षेत्र के सभी अग्रवाल परिवारों से संबंध रखती है। इस सभा ने अपने उद्देश्य बनाकर समाज हितार्थ अनेक कार्य किये हैं। सभा द्वारा ''हकीम गुरूदित्ता मल गोयल स्मृति धर्मार्थ चिकित्सा केंद्र'' भी खोला है।
22. **वैश्य कुमार सभा (रजि.), कनखल** – इस सभा की स्थापना सन् 1932 में हुई। इस सभा की सदस्य संख्या काफी है। इस सभा के अनेक उद्देश्य हैं, जिनकी पूर्ति के लिये अनेक समाजहित कार्य पूर्ण किये गए।

23. अग्रवाल सभा, कासगंज (एटा) – इसकी स्थापना सन् 1940 में हुई, उद्देश्य बनाकर इस संस्था ने अनेक जनहित कार्य संपन्न किये हैं।

24. श्री अग्रवाल सभा, काशीपुर (नैनीताल) – इस संस्था की स्थापना सन् 1927 में हुई थी तथा रजिस्ट्रेशन सन् 1962 में हुआ। यह सभा तीन भवन, मंदिर तथा धर्मशाला का संचालन करती हैं। इस सभा द्वारा भी अनेक समाज हितार्थ कार्य संपन्न किये गए हैं।

25. अग्रवाल शिक्षा मंडल, मथुरा – 31 जुलाई 1922 में कुछ नवयुवकों ने शिक्षा के प्रचार हेतु इस संस्था का गठन किया। शिक्षा के क्षेत्र इस संस्था की ओर से श्री चंपालाल अग्रवाल इंटर कॉलेज, श्री बाबू शिवनाथ अग्रवाल डिग्री कॉलेज, श्री चंपालाल अग्रवाल बाल मंदिर, श्रीमती प्रेम देवी अग्रवाल बालिका उ.मा.विद्यालय की स्थापना की गई। इन शिक्षण संस्थाओं में हजारों बालक-बालिकाएं शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

26. श्री अग्रवाल सभा फर्रूखाबाद (आगरा) – इस सभा की स्थापना सन् 1936 में हुई तथा रजिस्ट्रेशन 1945 में हुआ। इस संस्था ने भी अनेक समाज हित कार्यों को संपन्न किया।

27. अग्रवाल सभा, इटावा – सन् 1918 में सौभाग्य से राजा सर ज्वाला प्रसाद जी, रायबहादुर केदारनाथ जी तथा डा. सर सीताराम जी वैश्य कॉन्फ्रेंस के संबंध में इटावा पधारे थे। इन महानुभावों ने वैश्य जाति की अनेक कुरीतियों व निर्बलताओं की ओर स्थानीय अग्रवाल बंधुओं का ध्यान दिलाकर, इनको किस प्रकार दूर किया जा सकता है, यह भी बताया। उत्साहित होकर कुछ होनहार अग्रवाल नवयुवकों ने सन् 1923 में इस सभा का गठन किया और वैश्य कॉन्फ्रेंस के अनेक प्रस्तावों को व्यवहारिक रूप देने का प्रयत्न किया और जिले भर की बिरादरी के लिये एक प्रभावशाली संस्था बना दिया। सभा ने अनेक उल्लेखनीय समाज हित कार्य किये। 28 अक्टूबर 1928 को पंजाब केसरी लाला लाजपतराय का इटावा आने पर इस सभा ने अभिनंदन किया। 18 नवम्बर 1938 में संयुक्त प्रदेश (अब उत्तर प्रदेश) लेजिस लेटिव काउन्सिल के प्रेसीडेंट डा. सर सीताराम जी का इटावा आगमन पर सभा ने अभिनंदन किया।

28. अग्रवाल सभा, लखनऊ – सन् 1939 में महाराजा अग्रसेन जी की जयंती के दिन इस सभा की स्थापना की गई। सभा ने अनेक सामाजिक कार्यों को संपन्न किया है। सभा ने सन् 1959 में स्व. डा. वासुदेव शरण अग्रवाल, डी.लिट. द्वारा लिखित महाराजा अग्रसेन जी की जीवनी ''श्री अग्रसेन परिचय'' तथा सन् 1974 में स्व. डा. वासुदेवशरण अग्रवाल जी की जीवनी का प्रकाशन किया।

29. काशी अग्रवाल समाज, वाराणसी – इस संस्था की स्थापना 21 सितम्बर 1895 में की गई। शिक्षा के क्षेत्र में 14 जून 1869 को ''अग्रवाल महाजनी'' पाठशाला की स्थापना की गई। असहासय महिलाओं हेतु ''हितेशी विभाग'' की स्थापना की गई। सस्ंथा ने सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में ध्यान दिया, जातीय समस्याओं को भी सुलझाया, अनेक रचनात्मक कार्य भी किये, राष्ट्रभाषा हिंदी की उन्नति के लिये भी कार्य किया, स्वतंत्रता संग्राम में अनेक अग्रवाल विभूतियों ने भाग लिया। काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना

में संस्था के सभापति बाबू गोविन्द दास जी शाह श्री मदन मोहन मालवीय जी के प्रमुख मार्गदर्शक बने। 1919 में चोखम्भा स्थित भारतेंदु भवन से सटा सातो चौक का कुछ हिस्सा खरीदा गया, 1921 में सातो चौक का दूसरा हिस्सा भी खरीद लिया गया, वहां भव्य भवन बनवाया गया। सन् 1918 में ''कन्या विद्यालय'' की स्थापना की गई। पुरानी धर्मशाला ''छोटे लाल धर्मशाला'' का संचालन 1931 में इस संस्था ने अपने हाथों में लिया, 1973 में इस धर्मशाला को ''अग्रवाल भवन'' के रूप में भव्यता प्रदान की। 22 मार्च 1950 को ''समाज भवन टाउन हॉल'' का शिलान्यास किया गया। 5 जनवरी 1973 को ''कन्या महाविद्यालय'' की स्थापना की गई। यह संस्था आज भी सक्रिय है और अनेक कार्य संपन्न किये जा रहे हैं।

30. **अग्रवाल सुहृदय समाज, लखनऊ** – इसकी स्थापना सन् 1947 में की गई। इसने भी अनेक समाज हित कार्यों को संपन्न किया।

31. **अग्रवाल पंचायत, बंगलागढ़, दरभंगा** – इस संस्था का इतिहास जितना पुराना है, उतना प्रेरणा दायक भी है। इसकी स्थापना 13 अक्टूबर 1910 में की गई।

32. **अग्रवाल सेवा समाज, कलकत्ता** – इस संस्था की स्थापना सन् 1936 में की गई। इसके संस्थापकों में प्रमुख हैं – बाबू जवाहर लाल जी, स्व. राजा भूपेन्द्र नारायण सिंह जी बहादुर एवं प्रसिद्ध पत्र विश्व मित्र के संचालक श्री मूलचंद जी अग्रवाल। 1940–41 में ''अग्रवाल पंचायत समाचार पत्र'' प्रकाशित किया जो 1942 तक चला। संस्था के माध्यम से अनेक कार्य पूर्ण किये गये।

33. **श्री सनातन धर्म अग्रवाल सभा, कलकत्ता** – इसकी स्थापना सन् 1902 में की गई। अग्रसेन समिति भवन निर्माण और अग्रसेन जयंती प्रचार में संस्था ने अभूतपूर्व योगदान दिया। वर्तमान में संस्था की ओर से एक पुस्तकालय भी चलाया जा रहा है।

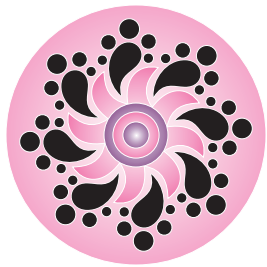

अगवालों में शाखायें

प्राचीन काल में सभी जातियों के अपने-अपने संगठन और पंचायतें थीं जो अपने समाज के रीति-रिवाजों तथा सामाजिक नियमों का निर्धारण करती थीं। उनका पूरे समाज में कठोर नियंत्रण होता था। जो लोग जातीय सभाओं के नियमों का उल्लंघन करने अथवा उनसे भिन्न चलते उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता। इस प्रकार रूढ़िवादी और सुधारवादी लोगों में निरंतर संघर्ष की प्रक्रिया भी चलती थी। समाज से निकाले गये लोग अपना नया वर्ग बना लेते थे। इससे भी नये-नये उपवर्ग तथा संगठन बनते चले गये। इसी प्रकार अपनी जाति में विवाह का प्रचलन था। जो लोग अन्य जाति की महिला से विवाह संबंध कर लेते अथवा वैवाहिक नियमों का उल्लंघन करते, उनका भी एक अलग वर्ग-उपवर्ग बन जाता था। इस प्रकार आचार एवं वैचारिक मतभेद से भी नये वर्गों-उपवर्गों का निर्माण हुआ। उदाहरण-राजवंशी अग्रवाल ।

जब किसी समाज में ऊंच-नीच की भावना सामाजिक व्ययवहार की एक संचालक शक्ति बन जाती है तो वह समाज को छोटे-छोटे भागों में विभक्त करती चली जाती है। यही कारण है कि आज भारत में अनगिनत जातियां पाई जाती हैं। उपजातियां में अल्ले, बंक आदि कुछ तो कौटुम्बिक नामों से, कुछ व्यापारिक नामों से, कुछ शहरों के नामों से, कुछ पेशों के नामो से, कुछ पदों के अनुसार, कुछ वंशकर्त्ता के आधार पर बनती चली गईं। इसी प्रकार किसी विशेष उद्योग में निपुणता प्राप्त कर उस व्यापार या उद्योग को सुव्यवस्थित ढंग से चलाने की सारी व्यवस्था संगठित कर ली जाती थी तो, उस परिवार की आने वाली पीढ़ी भी उसी विशेष उद्यम में लग जाती। इस प्रकार विभिन्न उद्यम पुश्तैनी बन गये और जाति का आधार कर्म बन गया, जो कालांतर मे विभिन्न उप जातियों में पुन: विभाजित हो गया।

जिन करणों से जातियां, उपजातियों में विभक्त हुईं, उन्हीं कारणों से अग्रवाल जाति भी विभिन्न उपजातियों में स्थान भेद, आचार भेद, धर्म भेद, व्यवसाय भेद आदि के कारण विभक्त हो गई। देश भेद, एक व्यापक भेद है। जिसके अंतर्गत अनेक उपभेद आ जाते हैं। देश भेद के अनुसार अग्रवालों में निम्नलिखित भेद पाये जाते हैं- मारवाड़ी, गुजराती, देशवासी, मथुरिया, माथुर वैश्य, वरणवाल, महेमिया, मागधी, मालवीय, पर्वतीय, अवधी, आदि। आचार भेद में - दस्सा, बीसा, पंजा, दिवारी या गिन्दोड़िया वैश्य, कदीमी, राजवंशी, बहत्तरिया, अग्रहरि, गहोई, केसरवानी, रोहतगी या रूस्तगी आदि। धर्म भेद में अग्रवालों के दो ही भेद ही प्रकाश में आये हैं वैष्णव तथा जैन, लेकिन कुछ सिख अग्रवाल भी हैं। हालांकि सभी वर्गों में 18 गोत्र नहीं पाये जाते इनमें अग्रवालों के समकक्ष गोत्र-नाम, परंपरा आदि में समानता है और ये अपने को अग्रवाल कहते हैं।

अग्रवाल समाज के विभिन्न घटक एवं विभेद - आरंभ में अग्रोहा के विकास के कारण सब अपने को अग्रवाल, अग्रोत्कान्वय आदि शब्दों से संबोधित करते थे। उनमें किसी प्रकार समाजिक विभेद या उपजातियां नहीं थी। किंतु धीरे-धीरे आचार, धर्म, सामाजिक रीति-रिवाजों आदि के भेद से उनमें कई उपवर्ग बन गये। विशेषकर अग्रोहा पतन के बाद जो

अग्रवाल जहां जाकर बसे वे वहीं के होकर रहे। मुस्लिम शासन काल में किन्हीं कारणों से ये जब अपना नवीन स्थान छोड़कर जहां-जहां जाकर पुन: बसे, वे अपने आप को नवीन नाम से पुकारने लगे। जैसे - महेम से चले अग्रवाल महेमिये अग्रवाल, लोहागढ़ से चले लोहिये, मथुरा से चलकर अगरपुर (वर्तमानि में अलैदादपुर) में बसने वाले मथुरिया अग्रवाल कहलाये। इसी प्रकार बागड़ी, जांगले, गुजराती, सहरालिये, अवधी, मागधी, मालवी आदि के नामों से अग्रवालों के कई भेद हैं।

प्रसिद्ध इतिहासकार **नरेन्द्रनाथ बसु** - राजा अग्रसेन से ही संभवत: अग्रवालों की पश्चिम शाखा की उत्पत्ति हुई होगी। अग्रसेन के पूर्व परिचय से मालूम होता है कि उनके पूर्वज वृंदावनवासी थे और वृंद का पुत्र गुर्जर ही गुजरात जाकर राजा हुआ था। मथुरा से जाकर गुजरात में जिन लोगों ने शासन फैलाया था वे शुल्लिक और अग्रवाल वैश्य गणों के पूर्वज थे इसमें संदेह नहीं ।

-- यहां मैं एक उदाहरण जोधपुर-राजस्थान के प्रसिद्ध राजनेता जो दो बार सांसद भी रहे हैं और केंद्र सरकार में मंत्री भी रहे, **श्री जसंवत सिंह विश्नोई** - उन्होंने अनेक बार अपने भाषणों में मंच से कहा है कि - मैं जब उत्तर प्रदेश गया तब वहां के कुछ विश्नोई जाति के लोगों ने अपने को अग्रवाल जाति का बताया है। मुजफ्फर नगर के विद्वान श्री प्रवीण गुप्ता ने भी इस बात की पुष्टि की कि उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों में तथा हरियाणा के भी कुछ स्थानों पर विश्नोई लोग अपने को अग्रवाल कहते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि अगवाल जाति के लोग अनेक भागों में बंटे हुए हैं। वैसे अनेक वैश्य जातियां अपने आप को अग्रवाल कहने में गौरव अनुभव करती हैं, यह भी एक कारण रहा है कि अनेक वैश्य जातियां अपने आप को अग्रवाल कहती हैं और अग्र समाज का घटक होने से गौरव का अनुभव भी करती हैं।

भारतेंदु हरिशचंद्र के अनुसार अगवालों में प्रमुख रूप से चार शाखायें हैं - 1. मारवाड़ी 2. देशवाली 3. पूरबिये और 4. पछहिये अग्रवाल।

मारवाड़ी अग्रवाल - अग्रोहा विध्वंश के बाद काफी अग्रवालों का पलायन मारवाड़ व शेखावाटी में हुआ जिसके कारण वे मारवााड़ी अग्रवाल कहलाये।

देशवाली अग्रवाल - वे अग्रवाल जो अग्रोहा छोड़कर उत्तर प्रदेश, हरियाणा के विभिन्न शहरों, बिहार व अन्य प्रांतों में बस गए, वे देशववाली अग्रवाल कहलाये। इनका मुख्य अंतर बोली या भाषा का है। दूर बस जाने के कारण, स्थान तथा कालभेद से इनके बोल-चाल, रहन-सहन, पहनावे आदि में मारवाड़ी अग्रवालों से भिन्नता आ गई है। इन अग्रवालों में महमिये, जांगले, हरियानिये, लोहिये आदि हैं, महम, भटिण्डा, लोहागढ़ आदि स्थानों में बस जाने के कारण, इन सभी का मारवाड़ी व अन्य अग्रवालों से वैवाहिक रिश्ता है।

पूरबिये और पछइये - देशवाली अग्रवालों में पूरबिये और पछइये का भेद मिलता है। पूर्वी उत्तर प्रदेश, पंजाब और बिहार में जो अग्रवाल सदियों से निवास करते हैं, वे पूरबिये

अग्रवाल तथा जो अग्रवाल 150–200 वर्षों में यहां बसे वे पछइये कहे जाने लगे वैसे पूरब में रहने वाले पूरबी व पश्चिम में रहने वाले पछइये।

इसके अलावा – गुजराती अग्रवाल – जो परिवार अग्रोहा छोड़कर गुजरात की ओर गये, मालवा में आगर नामक स्थान बसाकर रहने लगे। आगे चलकर ये लोग आगर को अपनी जन्म भूमि मानने लगे तथा गुजराती अग्रवाल के नाम से प्रसिद्ध हुए।

1. जैन अग्रवाल – अग्रवालों में सनातन धर्मी वैष्णव के बाद काफी मात्रा में जैन अग्रवाल हैं। इनमें दिगम्बर जैनों की संख्या ज्यादा है तथा श्वेताम्बर संप्रदाय के लोगों की संख्या कम है। कहा जाता है कि महाराजा अग्रसेन की आठवीं पीढ़ी में दिवाकर (महालक्ष्मी व्रत कथा में दिवाकर के पिता का नाम श्रीनाथ दिया गया है।) नाम के राजा हुए जिनके समय जैन मुनि लोहाचार्य अग्रोहा आये तथा उनसे प्रभावित होकर राजा दिवाकर ने जैन धर्म की दीक्षा ली। मुनि लोहाचार्य ने लकड़ी की मूर्ति स्थापित करके ''**नवीन काष्ठसंघ**'' की स्थापना की। 17 वीं सदी के एक जैन ग्रंथ में लोहाचार्य नामक ऐसे जैन गुरू का उल्लेख है, जिन्होंने अग्रोहा नगरी में काष्ठसंघ की स्थापना की।

जैन अग्रवालों व सनातनी अग्रवालों में धर्म के अलावा अन्य कोई विभेद नहीं है। जैन अग्रवालों को सरावगी भी कहते हैं। श्वेताम्बर समुदाय में मूर्तिपूजक, स्थानकवासी और तेरापंथी अग्रवाल भी पाये जाते हैं। 12 वीं शताब्दी के जैन गंथों की प्रशस्तियों, लेखों आदि में जैन अग्रवालों के पर्याप्त विवरण मिलते हैं। अग्रवाल जैन परंपरा का उल्लेख 12वीं सदी से मिलने लगता है। श्री परमानंद शास्त्री ने केवल जैन समाज में 84 भेद बताए हैं। जिनमें एक अग्रवाल भेद भी माना जाता है।

अग्रोहा से निकलकर हिसार व इसके आस-पास बसने वाले जैन अग्रवाल हिसार, पानीपत, दिल्ली आदि अनेक स्थानों में बस गये। लगभग 900 साल से भी पहले दिल्ली महरौली स्थित योगिनीपुर में तोमर राजपूत अनंगपाल तृतीय का शासन था जहां मंत्री ''नट्टल साहू'' अग्रवाल जैन थे। इन्हीं के समय अग्रवाल जैन कवि विबुध श्रीधर हुए, इनके साहित्य में दिल्ली में अग्रवालों का सबसे पुराना उल्लेख है।

कोई जैन तीर्थ ऐसा नहीं है जहां जैन अग्रवालों द्वारा निर्मित मंदिर नहीं हैं। कोलकाता के प्रसिद्ध बेलगछिया जैन मंदिर के निर्माता अग्रवाल श्रेष्ठी थे। लाल किले के सामने भव्य ''लाल जैन मंदिर'' तथा धर्मपुरा के कलापूर्ण मंदिरों का निर्माण अग्रवाल दिगम्बर जैन पंचायत ने करवाया है जो अनेक वर्ष पुराने हैं। अनेक जैन बंधु साधु व साध्वियां अग्रवाल परिवार से हैं। साहू श्रेयांस प्रसाद जैन एवं शांतिप्रसाद जैन ने साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवा की। उनके द्वारा प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला साहित्य का सर्वोच्च ''**ज्ञानपीठ पुरस्कार**'' अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है। देश के बड़े मीडिया समूह की मालिक श्रीमती इंदु जैन, अग्रवाल जैन परिवार से हैं। सन् 1857 के महान् स्वतंत्रता सेनानी **लाला हुकमचंद जी जैन-गोयल** – अंग्रजों ने आपको ''फांसी'' पर चढ़ा दिया। **स्व.धनराज जी जैन-अग्रवाल** – 1996 में श्री अटल

बिहारी बाजपेयी के प्रधानमंत्री बनने की घोषणा करने वाले धनराज जी ज्योतिषाचार्य के प्रकांड पंडित थे। जैन समाज में आपकी बहुत ख्याति थी। लगभग सभी जैन मंदिरों से आप जुड़े हुए थे। लगभग 150 साल से पहले श्रीअकलंक नाटक, रिवाड़ी के **सिद्धसेन जैन गोयलीय**, ने लिखा था।

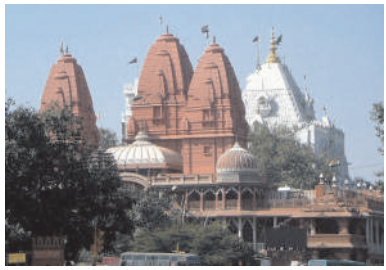

दिगम्बर जैन लाल मंदिर – दिल्ली में लाल किले के सामने स्थित, सबसे पुराने इस जैन मंदिर को ''लाल मंदिर'' के रूप में जाना जाता है। इसका निर्माण 1526 में हुआ। लाल पत्थरों से बने इस मंदिर में कई संशोधन हुए और परिवर्तन भी आया है। यहां कई मंदिर हैं, लेकिन सबसे प्रमुख मंदिर भगवान महावीर का है।

सोने के छत्र वाला मंदिर – पुरानी दिल्ली स्थित धर्मपुरा में एक 200 साल पुराना मंदिर है, जिसे अग्रवाल जैनियों ने बनाया है, इसे ''नया मंदिर'' भी कहते हैं। उस समय यह आठ लाख रूपये में बना था। इसमें गर्भगृह की छत सोने की है। हरसुख राय के पुत्र थे सुगनराय, ये बादशाह के खजांची थे, सात लाख रूपये इन्होंने दिये व एक लाख का चंदा समाज से किया। राजा हरसुसख राय और सुगनचंद्र ने देशभर मे 52 जैन मंदिरों का निर्माण करवाया जिनमें सात मंदिर दिल्ली में थे। **प्राचीन श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन पंचायत** – यह बहुत वड़ी पंचायत है जिसमें दिल्ली, पानीपत, हिसार की पंचायतें हैं, यह 250 साल पुरानी है। यह पंचायत 22 मंदिरों का प्रबंधन करती है, जिसमें दिल्ली के भी कई मंदिर हैं। **दिगम्बर जैन महासमिति** – यह दिगम्बर जैन परिवारों की अखिल भारतीय संस्था है। इसकी स्थापना अग्रवाल साहू शांति प्रसाद जैन, साहू श्रेयांस प्रसाद जैन, महावीर प्रसाद जैन एडवोकेट द्वारा अक्टूबर 1976 में की गई।

अग्रवाल जैनों के बारे में
श्री काशी अग्रवाल समाज शतवार्षिकी 1995 में
पं. कैलाश चंद्र शास्त्री के लेख के अनुसार

जैन कवि राजमल्ल द्वारा लिखित ''जैन कथा ग्रंथ'' – जम्बूस्वामी चरित, अकबर के शासनकाल में विक्रम संवत् 1632 में रचकर पूर्ण किया था। इनके कथामुख वर्णन के प्रसंग से कवि ने अकबर बादशाह का भी वर्णन किया है। **इस ग्रंथ में वर्णन है कि – अकबर के मंत्री महाराज टोडरमल तो अग्रवाल प्रमाणित नहीं हो सके।** इस ग्रंथ में एक ''**साहू टोडर**'' का वर्णन वंशानुक्रम पूर्वक दिया हुआ है। यह साहू टोडर अग्रवाल थे जो अकबर के समकालीन थे। कवि ने इन्हें भी ''नाना टकसारदक्षक'' बतलाया है। अर्थात् वह टकसाल संबधी कार्यों में प्रवीण थे। यह अलीगढ़ के आस-पास के (कोलभटानिया) निवासी थे और इनका गोत्र ''**गर्ग**'' था।

कवि ने अकबर की राजधानी आगरे की भी बड़ी प्रशंसा की है। उस समय आगरा विविध देशों से समागत पण्य वस्तुओं का कोषागार बना हुआ था। इसी से कवि ने उसकी उपमा रत्नाकर समुद्र से दी है। उसी नगरी में अरजानी पुत्र ठाकुर कृष्णा मंगल चौधरी रहते थे। वह बड़े

प्रतापी थे। साहि जलाल दीन (बादशाह अकबर) के निकटवासी और सर्वाधिकारक्षम थे। उन्होंने विपुल संपत्ति अर्जित की थी और यमुना के जल से विधिपूर्वक स्नान करके तुलादान किया था। – उनके एक सहयोगी साहू गढ़मल थे। वह वैष्णव धर्म कर्म में रत रहते थे और बड़े परोपकारी थे। – इन्हीं दोनों के स्नेह पात्र **नाना टकसारदक्ष ''साहू टोडरमल''** थे। वह बड़े उदार और कुलदीपक थे तथा **जैन धर्मावलंबी** थे। एक बार मथुरा नगरी की यात्रा के लिये गए। नगरी के बाहर अनेक जैन स्तूप बने थे जो जीर्ण हो गये थे। धर्मात्मा ''टोडरमल'' ने उन 513 स्तूपों का जीर्णोद्धार कराकर संवत् 1630 में ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी के शुभ मुर्हुत में उत्सव निष्पत्र किया। – **शायद इन्हीं साहू टोडर के कारण प्रसिद्ध महाराजा टोडरमल को अग्रवाल मान लेने का भ्रम फैला हो।**

जैन मुनि लोहाचार्य का समय विक्रम की प्रथम-द्वितीय शताब्दी है। अनुश्रुति के अनुसार – लोहाचार्य विहार करते हुए अग्रोहा पहुंचे। वहां एक ऊंचा टीला था उसी पर बैठकर ध्यान करने लगे। घीरे-धीरे बहुत सा जन समूह वहीं एकत्र हो गया। आचार्य जी ने उन्हें धर्म का उपनदेश दिया। अग्रवालों का **राजा दिवाकर** भी उनके उपदेश से प्रभावित होकर **जैन** हो गया। उनका अनुसरण करके धीरे-धीरे अग्रवालों के सवा लाख घर जैन धर्मावलंबी हो गए। आचार्य ने सर्वप्रथम उन्हें तीन बातों की प्रतिज्ञा दिलाई – छान कर पानी पीना, रात में भोजन नहीं करना तथा प्रतिदिन जिन मूर्ति के दर्शन करना। तदनुसार तत्काल लकड़ी की मूर्ति बनवाकर स्थापित की गई और अग्रवालों की संज्ञा **''काष्ठसंघी''** पड़ी। इस काष्ठ संघ को **लोहाचार्यान्मायी** भी कहा जाता है।

अग्रवाल जाति और काष्ठसंघ – जैनाचार्य देवसेन ने अपने दर्शनसार (वि.सं.990) में लिखा है कि – आचार्य विनयसेन के शिष्य कुमारसेन ने संवत् 763 में नंदियड (वर्तमान नांदेड़ – महाराष्ट्र) में इस संघ की स्थापना की थी। इस संघ का सर्वप्रथम शिलालेखी उल्लेख संवत् 1152 में हुआ मिलता है। इसके चार भेद मुख्य हैं – माथुर गच्छ, बागड गच्छ, लाड़ गच्छ तथा नंदितट गच्छ। यह भी कहा जाता है कि दिल्ली नगर के निकट कोई काष्ठ नामक ग्राम था उसी पर से काष्ठ संघ नाम पड़ा है। जो हो, किंतु **शिलालेख से प्रमाणित होता है कि काष्ठ संघ के माथुर गच्छ के अधिकांश अनुयायी अग्रवाल जाति के थे।**

अत: काष्ठ संघ की उत्पत्ति दिल्ली के आस-पास के स्थान में होना उचित प्रतीत होता है, क्योंकि अग्रवालों का अधिकतर निवास दिल्ली के आस-पास प्रदेश में आज भी पाया जाता है। दिल्ली में ही अनेक जैन मंदिर अग्रवालों द्वारा निर्मित हैं। जैनों में मूर्तियों के पादतली में उनके प्रतिष्ठाता का वंश परिचय अंकित करने की परम्परा है। इसी तरह जब छापे का चलन नहीं था तो श्रावक शास्त्र लिखकर गुरूओं को भेंट करते थे। उसके अंत में लिखाने वाले की प्रशस्ति भी देने की परम्परा थी। आज इतिहास के निर्माण में ये लेख बहुत सहायक हो सकते हैं। इन लेखों से जातियों के संबंध में भी बहुत प्रकाश पड़ता है। अग्रवालों के द्वारा अनेक मूर्तियों के पादतल में तथा लिखित शास्त्रों के अंत में उनकी प्रशस्तियां पाई जाती हैं। इन प्रशस्तियों में अग्रोतवंश (वि. सं.1467), अग्रोतकान्वय (वि.सं.1468), अग्रवार (वि.सं.1520), अग्रोतका ज्ञातों (वि.सं.

1544), अगर वालंक वंस-अगर वालांक वंश उल्लेख मिलते हैं। किंतु अधिक प्रचलित **अग्रोत्कान्वय** ही मिलता है। ये सभी लेख आरा, प्रयाग, हिसार (गोपाचल), ग्वालियर, कुरूजांगल देश (हस्तिनापुर), अर्गलपुर (आगरा) या फतहपुर के हैं, जहां आज भी अग्रवालों का निवास बहुतायत से पाया जाता है। **सभी लेखों में अग्रवालों को काष्ठसंघी लिखा है। किसी-किसी लेख में काष्ठा संघ के लोहाचार्यास्नाय का भी उल्लेख है। इनसे उक्त अनुश्रुति की पुष्टि होती है।**

2. राजवंशी अग्रवाल - प्राप्त साहित्य व जनश्रुति के अनुसार - राजा रतन चंद द्वारा मुगलों से संबंध रखने के कारण रूढ़िवादी अग्रवाल समाज ने उन्हें जाति से बहिष्कृत कर दिया था, परंतु उससे वे विचलित नहीं हुए वरन् अपने प्रभाव से उन्होंने अपना एक उपजातीय संगठन बना लिया, जिसा नाम ''राजवंशी अग्रवाल '' हुआ। इस प्रकार जानसठ (मुजफ्फर नगर) के राजा रतनचंद इस वर्ग के जन्मदाता कहे जाते हैं। समाज में व्याप्त रूढ़ियों के विरोध में इस वर्ग का जन्म हुआ। डा. परमेश्वरी लाल गुप्त के अनुसार - राजवंशी वणिक से राजवंशी अग्रवालों की उत्पत्ति हुई। श्री निहालचंद, पूर्व अध्यक्ष, अग्रवाल राजवंश सभा अपने परिवार की पिछले 400 वर्षों की वंशावली का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि राजवंशी राजा रतनचंद के समय से पहले से चले आ रहे हैं। वैसे अनेक विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। राजवंशी अपने को राजा की बिरादरी का या राजशाही अग्रवाल भी कहते हैं। इनके गौत्र भी अग्रवाल समाज के समान हैं। अग्रवालों के इस समाज से विवाह संबंध होते हैं। इनका अपना एक अखिल भारतीय संगठन है और ''समाज ज्योति'' नाम से एक पत्रिका भी निकलती है।

प्रसिद्ध राजवंशी अग्रवाल - महान् साहित्यकार **पदम्भूषण श्री विष्णु प्रभाकर**, राजवंशी अग्रवालों के बारे में एक लेख में लिखते हैं - मैं सुप्रसिद्ध अग्रवाल जाति की शाखा ''राजवंश'' से संबंध रखता हूं। जिसका अपना इतिहास सर्वसम्मत नहीं है। फिर भी जो सुलभ है उसी के आधार पर अपनी जड़ों की तलाश हम निश्चय ही करेंगे। उसका भी अपना एक आनंद है। वैसे राजवंश अग्रवाल जाति का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। मेरा मानना है कि अग्रवाल जाति बहुत प्राचीन है। लेकिन इतिहास में सिकंदर और अग्रगण की जो चर्चा आती है, वह इस दृष्टि से सही नहीं ठहरती। उसको सही प्रमाणित करना हमारा उद्देश्य भी नहीं। राजा ज्वाला प्रसाद व चार राज्यों के राज्यपाल रहे इनके सुपुत्र श्री धर्मवीर, प्रसिद्ध कानूनविद शांतिभूषण जी एवं इनके पुत्र प्रशांत भूषण जी (गर्ग गोत्र), राजवंशी अग्रवाल हैं।

3. सिख अग्रवाल - समाना से लगभग 25 किलोमीटर दूर एक गांव है ''**कडियाल**''। इस गांव की ऐतिहासिक महत्वता अग्रवाल जाति के लिये कफी आश्चर्यजनक है। हर वर्ष भादों को, अमावस्या वाले दिन यहां **वैश्य अग्रवाल कडियाल बिरादरी** की ओर से गुरू ग्रंथ साहब का अखंड पाठ कराया जाता है। इस अवसर पर हवन यज्ञ के साथ ही लंगर लगता है और अरदास कराई जाती है।

घटना इस प्रकार बताई जाती है कि - 17वी सदी में जब कि हिंदू मुगल बादशाह औरंगजेब के इस्लामी राज से त्रस्त थे, उस समय एक दिन सिख गुरू तेगबहादुर इस गांव में

पधारे। यहां इन्होंने लोगों को उपदेश दिया। जिसका गांव के लोगों पर काफी प्रभाव पड़ा। गुरूजी जब गांव से जाने लगे तो गांव के एक अग्रवाल जाति के व्यक्ति ने उनसे निवेदन किया कि वे उसे अपना शिष्य बना लें तथा अपने साथ ले चलें। गुरूजी द्वारा स्वीकार किये जाने पर वह उनके साथ हो लिया। औरंगजेब ने जब दिल्ली में गुरू तेग बहादुर जी को कश्मीरी पंडितों की रक्षा तथा सिख धर्म के प्रचार करने के कारण चांदनी चौक में शहीद कर दिया तो गांव कडियाल का वह व्यक्ति भी उनके साथ शहीद हो गया। गांव कडियाल में जब यह सूचना पहुंची तो उसकी धर्म पत्नी भी वहीं सती हो गई। बाद में गावं वालों ने वहां मढ़ी बना ली। सती हुई महिला के बच्चे बढ़े हुए तथा उनका परिवार बढ़ता चला गया। अब इनके वंशज पंजाब, हरियाणा व दिल्ली के अलग-अलग भागों में बसे हैं। इनकी काफी संख्या है, इनको **''कडियाल बिरादरी''** के नाम से जाना जाता है। इस बिरादरी के लोग सिख धर्मावलंबी हैं। ये सभी गर्ग गौत्रीय हैं तथा यह भी एक संयोग है कि इन सभी के पुरोहित भी एक ही पंडित की पीढ़ी के हैं।

अंबाला का अग्रवाल सिख परिवार – अंबाला स्थित गांव घेल में अग्रवाल समुदाय के गर्ग व गोयल गोत्र के सिख परिवार रहते हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, बड़ी घेल में निवास करने वाले अग्रवाल परिवार महाराजा रणजीसिंह के समय सिख बने। गर्ग गोत्र के परिवार में अमर सिंह गर्ग हैं, जो गांव में रहते हैं। गांव के सरदार गुरचरण सिंह गोयल बताते हैं कि, जागीरदारी मिलने पर सिख धर्म के प्रति उनकी आस्था बढ़ी। उसके बाद परिवार के लड़के केश रखने लगे। धीर-धीरे सभी लड़के केशधारी बने। उनकी पीढ़ी तक यह परम्परा कायम रही। जब इस गोत्र में पहले कोई रिश्ता लेकर आता, तो सिख देखकर हैरान जरूर होता है। बाद में जब उन्हें रीति-रिवाज के बारे में पता चलता है, तो उन्हें विवाह करने में संकोच नहीं होता। इनका परिवार खेती का काम करता है।

ये लोग सिख व हिंदू धर्म दोनों के रीति रिवाज मानते हैं। उनके संबंध आज भी अग्रवाल परिवारों में होते हैं। सरदार चरण सिंह गोयल के बेटे प्रीतपाल सिंह गोयल ने आज भी परम्परा को निभाया हुआ है। उनकी पत्नी मंजू कौर ने भी अमृत छका हुआ है। जिस तरह सिख परिवार रविवार को ही शादी करते हैं, उसी तरह इन परिवारों के लोग अपने बच्चों की शादी रविवार को करते हैं। शादी के तीन दिन पहले गुरू ग्रंथ साहिब का पाठ शुरू होता है। अखंड पाठ साहिब का भोग लेने के बाद ही शादी होती है। शादी के दिन फेरे लिये जाते हैं, डोली जब घर आती है, तो उसे बाद गुरूद्वारा साहिब में जाकर आनंद कारज कराया जाता है। महिलाएं हिंदू रीति रिवाज के साथ व्रत रखती है। इन परिवारों में जैसे प्रकाशोत्सव मनाया जाता है, उसी तरह हिंदू रीति-रिवाज भी मनाते हैं।

हरियाणा के कुरूक्षेत्र शहर में एक बंसल सिख परिवार रहता है। अपने संबंध अग्रवालों से हटकर दूसरे सिखों में होने के कारण वे अपनी पहचान बताने से बचते हैं। इसके अलावा अंबाला में महाराजा रणजीत सिंह के समय बने केशधारी अग्रवाल सिख हैं। पंजाब की पुरानी रियासत पटियाला के एक गांव में निवास करने वाले अग्रवाल सिख हैं। वे सभी केशधारी हैं और नियमित रूप से गुरूद्वारे में भी जाते हैं।

(पुस्तक – हरियाणा का गौरव-अग्रवाल समाज, ले. मोहित अग्रवाल)

घेल गांव के बनियां

पंजाब केसरी द्वारा प्रसारित विडियो रिपोर्ट के अनुसार – हरियाणा के जिला अंबाला के गांव **बड़ी घे**ल में बनियां बिरादरी के 10 परिवार रहते हैं, जिनकी अलग ही कहानी है, जो पगड़ी पहनते हैं, सिंह लगाते हैं, गुरूद्वारा जाते हैं, सिख धर्म के रीति रिवाज मान रहे हैं। ये परम्परा सदियों पुरानी है। 18वीं सदी के आरंभ से ही घेल गांव के ये बनिया परिवार महाराजा रणजीत सिंह के बहुत करीबी माने जाते थे। रणजीत सिंह जी ने इनको काफी जागीर प्रदान की थी और अपने दरबार में कई अहम जिम्मेदारियां भी दीं। कुछ लोग गांव छोड़कर शहर चले गये, लेकिन अपनी परम्परा उन्होंने आज तक नहीं छोड़ी। यहां के वैश्य परिवार सिख धर्म के अनुसार ही हर समागम करते हैं और बाकी धर्मों की भी बराबर इज्जत करते हैं।

गांव के **सुरेन्द्र सिंह गोयल** के अनुसार – हमारे पूर्वज, परदादा, दादा, पिताजी आदि बुजर्ग सिख धर्म मानते आये हैं तथा कुछ अमृत्तधारी हैं। हम लंगर लगाते हैं, गुरू महाराज के प्रति प्रेम रखते हैं। जो केश नहीं रखते वे भी आस्था गुरू महाराज के प्रति रखते हैं। इसी गांव के **चरण सिंह गोयल** ने बताया कि उनका मुख्य पेशा खेती है। उनके दो बच्चे तथा उनके बच्चे सरदार हैं तथा अमृत भी चखा है। यहां हम 3-4 पुश्तों से रहते आये हैं। हमें रणजीत सिंह जी ने सरदार बनाया था।

4. सरालिया अग्रवाल – अंबाला जिले में अग्रवालों का एक उपवर्ग निवास करता है, जिसे ''सरालिया'' कहा जाता है। आजादी से पहले के अंबाला जिले में ये लोग रहते थे। उरूचरितम में लिखी लाईन 109 के अनुसार राजा शूरसेन की दो पत्नियां थीं, जिनसे नौ पुत्र हुए। आगे लिखा है कि राजा शूरसेन ने मथुरा के राजा उरू को शासन में मदद की थी, जिससे प्रभावित होकर व उनके सम्मान में मथुरा का दूसरा नाम ''शौरसेन'' रखा था। सरालिया वैश्य अपनी उत्पत्ति राजा शूरसेन से मानते हैं।

ईसा पूर्व 500 वर्ष के लगभग, महर्षि पाणिनी कृत अष्टाधायी नामक व्याकरण के सूत्र 4/3/93 में ''तक्षशिलादिगण'' में ''सरालक'' नगर का उल्लेख किया है। डा. सत्यकेतु विद्यालंकार ने इसे त्रुटिवश लुधियाना के पास सहराला मान लिया, जबकि यह सूत्र सरालक है, न कि सहरालक। प्राचीन समय के ''सरालक'' नगर अंबाला के पास राजपुरा के पास ''सराला'' गांव है। सराला गांव शूरसेन के वंशजों द्वारा बसाया गया है।

कुछ लोग मानते हैं कि राजा शूरसेन से ''सैनी'' बिरादरी बनी। ये बात कहां तक ठीक है, ये तो वही जानते हैं क्योंकि डा. सत्यकेतु विद्यालंकार ने प्राचीन गणराज्यों व जनपदों से विकसित जातियों का उल्लेख किया है, जिसमें उन्होंने स्पष्ट रूप से श्रेणिगण से सैनियों का विकास लिखा है। यह पक्का है कि सराला गांव से ही ''सरालिये अग्रवाल'' निकले हैं। लेफ्टिनेंट कर्नल संतोष कुमार बंसल (रिटायर्ड) ने जून 1978 के अपने लेख में यही बात कही है। सरालिये अग्रवालों में प्रचलित गोत्र भी अग्रवालों के समकक्ष हैं जैसे – गर्ग, गोयल, मित्तल, जिंदल, बंसल, बिंदल, कंसल, सिंगला, तायल, मंगल आदि । इनमें सबसे ज्यादा गर्ग गोत्र की

संख्या है, उसके बाद तायल की। बाद में यह सरालिये परिवार पुराना अंबाला जिले के रोपड़, कुराली, यमुना नगर, जगाधरी, बराड़ा, वकुला, कालका, आदि शहरों मे तथा नारायणगढ़, शाहपुर, लालड़, डप्पन, डेरा बस्सी, मुबारिकपुर, रामगढ़, मुल्लापुर, मानकर शरीफ, खिजाबाद, पुरखाली, टीचड, कोट, बरवाला, बिलासपुर, शहजादपुर, सचरौली, रतेवाली, कक्कड़ माजरा आदि करीब 100 गांवों में जा बसे। अखिल भारतीय सरालिया वैश्य महासभा (पंजी.) ने सन् 1910-15 के करीब अंबाला व आस-पास के अन्य शहरों, गांवों के सरालिया वैश्य भाईयों के सहयोग से ''सरालिया'' वैश्य सभा का गठन किया ।

सरालिये अग्रवालो में उल्लेखनीय व्यक्ति -- प्रसिद्ध विद्वान श्री रघुवीर शरण जी एवं इनके पुत्र प्रो. डा. लोकेश चंद्रा (मंगल गोत्र), मेजर जनरल अशोक गुप्ता, देवेन्द्र कुमार गुप्ता, ज्ञानचंद गुप्ता (गर्ग), विधायक पंचकूला, ज्ञान चंद गर्ग (टूटू) - पूर्व विधायक सोनल, श्याम लाल बंसल, डा. भारत भूषण, ले.कर्नल संतोष कुमार बंसल,

(पुस्तक - हरियाणा का गौरव-अग्रवालसमाज, ले. मोहित अग्रवाल)

सरालिये - वैद्य कृपाराम जी अग्रवाल, लेखक - अग्रसैन और अग्रवाल, मूल्य एक रूपया, वर्ष 1957, गांव- समचाना जिला रोहतक में इनका जन्म 07 जुलाई 1896 को हुआ तथा रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया से 1952 में रिटायर्ड हुए। पुस्तक के पेज नं. 2 पर कृपाराम जी ने अपने आप को सरालिया लिखा है। इन्होंने लिखा है कि सरालिया अर्थात् हमारे पूर्वज ''**समाल**'' के राजा थे। वहां से इधर-उधर बसे। इनका गौत्र गोयल है। **डा. स्वराजमणि** - सहरालिये वैश्यों की उत्पत्ति सरालक (तक्षशिलादिगण 413193) वर्तमान सहराला, जिला लुधियाना से मानी जाती है। सहरालिए वैश्य यहीं से अपना निकास मानते हैं।

5. अग्रहरि - यह भी अग्रवालों का एक वर्ग है। कुछ का मत है कि अग्रोहा पर आक्रमण होने से ये अग्रोहा छोड़कर यत्र-तत्र चले गये और इनका संबोधन अग्रोहा हरे, अग्रोहा हारे, अग्रहारे होता-होता अग्रहरि पड़ गया। ये अपना निकास अग्रोहा व आगरा से मानते हैं। कुछ अग्रहरि अपने को अग्रसेन के भाई शूरसेन की संतान मानते हैं। कुछ का मत है कि महाराजा अग्रसेन के पुत्र हरि की संतान होने से अग्रहरि कहलाये। गौत्रों की समानता के कारण यह वर्ग अग्रवालों की एक शाखाा है। इनमें कश्यप गौत्र की प्रधानता पाई जाती है। 1908 से कार्यरत इनकी अपनी अखिल भारतीय शिरोमणि सभा है। इस वर्ग के लोग बिहार, वाराणसी, मध्यप्रदेश, भागलपुर, रायबरेली, लखनऊ, आरा, चंपारन, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया, सुल्तानपुर, इलाहबाद, आजमगढ़, कानपुर, फतेहपुर, नेपाल आदि स्थानों पर मुख्य रूप से पाये जाते हैं। पंजाब में **अग्रहरि सिख** समुदाय भी काफी संख्या में है तथा अग्रहरि सिखों के अनेक गुरूद्वारे भी हैं।

6. गिंदोड़िया अग्रवाल - माना जाता है कि परिवार में शादी या मृत्युभोज के समा गिंदोड़ा बांटने की प्रथा के कारण इनका नाम गिंदोड़िया अग्रवाल पड़ा। गिंदोड़ा चीनी से बना गोलाकार रोटी से कई गुणा बड़ा खाद्य पदार्थ होता है। आज भी इनके परिवारों मे यह प्रथा है। गिंदोड़िया अपने को दिलवारिये के नाम से भी पुकारते हैं। यह शब्द दिल्लीवाल का रूपांतर है।

श्री ज्वालाप्रसाद 'अनिल' के अनुसार विभिन्न स्थानों पर इन्हें हालके, गाटे, गुड़ाकू आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

7. कदीमी अग्रवाल – कदीमी का अर्थ है, पुराने स्थान पर रहने वाले। इनका कहना है कि इनके पूर्वज युद्ध में लड़ने गये और राज्य व्यवस्था का भार दूसरों पर छोड़ गये। जब युद्ध से लौटे तो अन्य अग्रवाल वहां से जा चुके थे किंतु उनके पूर्वज वहीं पर बसे रहे। इसलिये कदीमी अग्रवाल कहलाये। मुख्य रूप से ये अलीगढ़, खुर्जा, बुलंद शहर एवं उत्तरप्रदेश के अन्य शहरों में पाये जाते हैं।

8. महमिये अग्रवाल – अग्रोहा उजड़ने के बाद जो लोग महम से उत्तर प्रदेश या अन्य स्थानों पर जा बसे, वे महमिये कहलाये।

9. जांगले – भटिंडा या समीपस्थ क्षेत्रों के अग्रवाल जंगलिये या जांगले कहे जाते हैं।

10. मागधी – मगध प्रदेश (बिहार) के डाल्टनगंज, पलामू, गया आदि जिलो में बसे अग्रवाल अपने को मागधी अगवाल कहते हैं। इनका अपना अखिल भारतीय संगठन है।

11. पंजाबी – जींद, नाभा, पटियाला, जालंधर आदि पंजाब में बसे पंजाबी अग्रवाल कहलाते हैं।

12. बागड़ी – बागड़ प्रदेश में रहने वाले बागड़ी अग्रवाल कहलाते हैं।

13. गुजराती अग्रवाल – जो अग्रोहा को छोड़कर गुजरात की ओर चले गये, वे मालवा में आगर नामक स्थान को बसा कर रहने लगे। बाद में आगर को ही अपनी जन्म भूमि मानने लगे और गुजराती अग्रवाल के नाम से प्रसिद्ध हुए। मुंबई और गुजरात मे इनका बाहुल्य है। ये अपने को आगरवाला कहते हैं। आगर से निकास मानने वाले सौराष्ट्र निवासी भी अपने को गुजराती अग्रवाल कहते हैं।

14. मालवीय अग्रवाल – मध्य प्रदेश के विदिशा और उसके आस-पास रहने वाले अग्रवालों को मालवीय अग्रवाल कहा जाता है। इनका अखिल भारतीय संगठन है।

15. पर्वतीय अग्रवाल – हिमाचल प्रदेश और अन्य पर्वतीय स्थानों पर बसे अग्रवाल। डा. परमेश्वरी लाल ने अग्रवालों की एक शाखा पर्वतीय अग्रवाल का भी जिक्र किया है, जिनका बड़ा भाग कुमांयू की पर्वतीय घाटियों में रह रहा है। इनमें गोत्र भेद नहीं पाया जाता है। इसका कारण यही है कि वहां गर्ग गोत्रीय ही पाए जाते हैं।

16. वरणवाल – वरण (वर्तमान बुलंदशहर) के रहने वाले अग्रवाल वरणवाल कहलाते हैं। इनमें 36 गौत्र हैं जिनमें से कुछ अग्रवालों से मिलते हैं। कुछ लोग इन्हें वैश्य समाज का एक अलग वर्ग मानते हैं। श्री कृष्णचंद प्रसाद वरणवाल के अनुसार ये महाराज आदि की संतान हैं, जिन्होंने अपने नाम से बुलंद शहर के पास ही वरन देश बसाया था। ये मुरादाबाद, दिल्ली, सीतापुर, आजमगढ़, गोारखपुर, बरेली, मुंगेर, गया तथा बिहार के विभिन्न शहरों में पाये जाते हैं। 1905 से ही इनका अखिल भारतीय वरनवाल वैश्य महासभा के नाम से पुराना संगठन है। कुछ लोग इनका संबंध अग्रवालों से जोड़ते हैं।

17. छत्तीसगढ़ी अग्रवाल – छत्तीसगढ़ में रहने वाले अग्रवाल। इनमें केवल 6 गौत्र पाये जाते हैं। डा. चंद्रकुमार अग्रवाल द्वारा लिखित '' छत्तीसगढ़ अग्रवाल समाज का इतिहास '' नाम से इनका इतिहास भी है। इस वर्ग के लोगों की संख्या बहुत कम है।

18. कुलारि – विदेशी आक्रमण के समय जो आग्रेय निवासी राजघराने से बदला लेने की भावना से शत्रु से मिल गये तथा इनके भीतरघात के कारण अग्रोहा की पराजय के फलस्वरूप बहुत से अग्रवाल मारे गये। बहुत सी स्त्रियां सती हो गईं।। इन सतियों ने चिता में प्रवेश करने से पूर्व इन लोगों को कुलारि (कुल का अरि अर्थात् शत्रु) कहा। यही शब्द आगे चलकर कलार शब्द में बदल गया और यह वर्ग अपने व्यवहार तथा व्यापार के कारण अग्रवालों से अलग हो गया।

19. माहुर, माहौर तथा माथुर – अग्रवाल वैश्यों में राजनीतिक दृष्टि से भी मुस्लिम काल में भेदभाव आरंभ हो गया। जो अग्रवाल मुगलों का साथ देते थे उन्हें मुगल दरबार में सम्मान और सम्पत्ति मिलती थी किंतु जो देश भक्त अग्रवाल मुगलों से टक्कर लेते रहे, उन्हें देश निकाला दिया गया, उन्हें अनेक कष्ट दिये गये। ऐसे देशभक्त अग्रवालों में से एक वर्ग बिहार के माहुरी वैश्य हैं। ये लोग मुसलमानों द्वारा सताए जाने पर मथुरा से चलकर ही राजस्थान और फिर बिहार में जा बसे। मुसलमानों ने इनको माहुर (विष की गांठ) नाम दिया। इस समाज की एक शाखा माहौर नाम से ग्वालियर, आगरा, छत्तीसगढ़, एटा तथा फर्रूखाबाद आदि स्थानों पर बिखर गई। यह वर्ग अपने आप को माहौर तथा माथुर कहने लगे। इन्हीं का दूसरा वर्ग अलवर के आस-पास बस गया और महावर नाम से प्रसिद्ध हो गया। माहौर वैश्य अपना निकास मथुरा बताते हैं तथा मथुरावासनी देवी की पूजा करते हैं। माहौर भूषण श्री रामेश्वर गुप्ता जी इस जाति के प्रसिद्ध इतिहासकार हुए हैं जिन्होंने प्रसिद्ध ग्रंथ वैश्य समुदाय की रचना की।

20. मथुरिया अग्रवाल – सन् 1320 ई. में अलाउद्दीन खिलजी के साथ हुई मुठभेड़ में मथुरा में बसे अग्रवालों का एक दल परास्त होकर अलीगढ़ जिले में फैल गया और काली नदी के तट पर ''अगरपुर'' नगर बसाया। मथुरा छोड़कर अगरपुर (वर्तमान अलैदादपुर) में जा बसने पर यह वर्ग मथुरिया अग्रवाल नाम से प्रसिद्ध हुआ। सन् 1600 ई. के आस-पास काली नदी की बाढ़ में अगरपुर समूल नष्ट हो गया और यह वर्ग दतावली, बाला, जलाली, छर्रा, बिजौली आदि कस्बों में चला गया।

21. महेमिया (मलेच्छभक्ष) अग्रवाल – अग्रोहा छोड़कर बहुत से अग्रवाल महेम में जाकर बस गये थे, किंतु मुसलमानों ने यहां भी अग्रवाल व्यापारियों पर अत्याचार आरंभ कर दिये। अत: ये लोग यहां से अमृतसर के पास बटाला में चले गये। मार्ग में इनके काफिले को मुसलमानों ने घेर लिया परंतु इन्होंने बहादुरी से मलेच्छों के आक्रमण को परास्त कर दिया। इसके बाद इन्होंने सुविचारित नीति के आधार पर मलेच्छों के रूप में अपनी यात्रा जारी रखी। जब यह दल बटाला पहुंचा तो वहां के लोगों ने इन्हें मलेच्छभक्ष कहना आरंभ कर दिया और धीरे-धीरे इन्होंने भी इस नाम को अपना लिया।

22. गहोई वैश्य अग्रवाल – यह वर्ग बुन्देलखंड में विशेष रूप से पाया जाता है। उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले में इनकी बड़ी संख्या है। प्राचीन काल में अनेक गहोई जैन मत के पोशक रहे हैं। इनके 12 गोत्र हैं।

23. बहत्तरिया वैश्य अग्रवाल – यह वर्ग भी अपने आप को अग्रवालों का अंग मानता है। कहा जाता है कि विदेशी आग्रमण के समय अग्रोहा के 72 परिवारों शत्रुओं का साथ देकर अग्रोहा के साथ विश्वासघात किया था। इस विश्वासघात के अपराध के कारण अग्रवालों ने इन्हें समाज से अलग कर दिया। उन बहिष्कृत 72 परिवारों के वंशज हैं, ये बहत्तरिया वैश्य अग्रवाल।

24. महाजन – जो वैश्य लेन-देन या साहूकारी का काम करते हैं उन्हें मारवाड़, हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथा देश के अन्य भागों में भी महाजन के नाम से पुकारा जाता है। महाजन शब्द अग्रवालों का गौरव है किंतु पंजाब में अपने गौरव के कारण महाजन नामक पृथक जाति ही बन गई। इनके अधिकांश गौत्र अग्रवालों से मिलते हैं। कुछ पंजाबी महाजन अपने आप को अग्रवाल मानते हैं तो कुछ नहीं मानते।

25. केसरवानी – कश्मीर से लाकर केसर बेचने का व्यापार करने के कारण इस वर्ग का नाम केसरवानी पड़ा। बिहार में इनक काफी संख्या है। इनके गौत्र भी अग्रवालों से मिलते हैं।

26. निचौंधिया या मोदी वैश्य अग्रवाल – बिहार राज्य के छोटा नागपुर की पहाड़ी उपत्यकाओं में बसे, हजारी बाग जिले के बन प्रदेश में रहने वाले अग्रवालों का एक वर्ग अपने आप को निचौंधिया वैश्य अग्रवाल या मोदी अग्रवाल नाम से पुकारता है। अब से लगभग 100 साल पूर्व ये लोग नारनौल के निचौंध ग्राम से चलकर यहां आकर बस गये और राज्य के व्यापार को संभालने के कारण मोदी पद्वी से विभूषित किये गये। ''मोदी अग्रवाल समाज'' नाम से इनका एक संगठन भी है।

27. रोहतगी अथवा रूस्तगी – रोहतक के निवासी रोहतगी कहलाए। इनके सभी रीति रिवाज अग्रवालों जैसे हैं। अग्रवालों में इनका रोटी बेटी का व्यवहार है।

अग्रवाल इतिहास के गौरवपूर्ण निर्माता

करते हैं जो अनुपम कार्य, बन जाता इतिहास है।
मस्तक धूल लगाने उनकी, झुक जाता आकाश है।।

1. डा. भगवान दास – देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान ''**भारत रत्न**'' से सम्मानित।

आविष्कारक एवं वैज्ञानिक

1. ऋषि लाल अग्रवाल – (हिंदी आशुलिपि– ऋषि प्रणाली के जनक) – एक अच्छी हिंदी संकेत लिपि (हिंदी–शार्टहैंड) का आविष्कारकआपको माना जाता है।

2. बाबू मुकुंददास गुप्त 'प्रभाकर' – हिंदी में रेलवे टाईम टेबल के जनक, स्वतंत्रता सेनानी व साहित्कार।

3. श्री हरिजी गोयल – आप देवनागरी लिपि के ''**लीथो टाइप**'' के आविष्कर्त्ता हैं। इस आविष्कार से हिंदी भाषा एवं देवनागरी लिपि की उन्नति तथा प्रचार में अच्छी सहायता मिली है। सन् 1936 में आप अमेरिका आदि देशों में भ्रमण कर आये हैं।

4. पद्श्री प्रोफेसर डा. गोविंद स्वरूप (मित्तल) – भारत में ''रेडियो खगोलशास्त्र'' के जनक

5. डा. रामनारायण अग्रवाल – अग्नि मिसाइल प्रणाली के जनक।

6. पद्मविभूषण डा. पुरूषोत्तषम लाल जिंदल – (भारत में एंजियो प्लास्टी के जनक) पद्मभूषण व पद्मविभूषण जैसे नागरिक सम्मानों से सम्मानित किया गया। 2005 में आपको मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया का सर्वोच्च एवार्ड डा बी.सी.राय एवार्ड प्रदान किया गया।

7. पद्मश्री डा. प्रेमशंकर गोयल – भारत में सेटेलाइट क्रांति के अग्रणी व्यक्ति। आपने आर्यभट्ट उपग्रह की परंपरा में भास्कर प्रथम, द्वितीय, रोहिणी श्रृंखला–3, इंसेट द्वितीय आदि उपग्रहों के सफल प्रक्षेपण में अहम भूमिका निभाई।

8. पद्मश्री हर्ष वर्धन नैवटिया – भारत में उत्कृष्ट एवं आधुनिक सामाजिक आवासीय गृह निर्माण योजनाओं के जनक।

9. पद्मश्री प्रो. अनंत अग्रवाल – एक भारतीय अमेरिकी कंम्प्यूटर वैज्ञानिक। अनंत ''**एडएक्स ऑन लाईन शिक्षा प्लैटफॉर्म**'' के जनक हैं। ''**आकाश टेबलेट**'' का निर्माण कर विश्व में आनॅलाईन शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए। आप मेसाचुसेट्स प्रौद्योगिकी संस्थान के वैज्ञानिक हैं तथा फोर्ब्स ने आपकी गणना विश्व के 15 अग्रणी वैज्ञानिकों में की थी। 2017 में भारत सरकार ने पद्श्री से सम्मानित किया। एडक्स एक विशाल खुली ऑनलाईन कोर्स

प्रदाता है।

10. पद्मश्री प्रो. मणीन्द्र अग्रवाल – संगणक वैज्ञानिक – **भारत के विख्यात गणितज्ञ** – शांतिस्वररूप भटनागर विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी पुरस्कार, जी. डी. बिड़ला पुरस्कार, पद्मश्री। इन्होंने अपने दो साथियों के साथ ऐकेएस पराएमिलिटी टेस्ट का आविष्कार किया जिसके कारण आपको ''गोडेल पुरस्कार'' दिया गया। गणित में उनके द्वारा दिये गए असीम योगदान के फलस्वरूप ''इंफोसिस गणित पुरस्कार प्रदान किया गया।

11. बद्रीनारायण बारवाले – ''द वर्ल्ड फूड प्राईज कौंसिल, अमेरिका'' ने वर्ष 1998 का यह पुरस्कार श्री बद्रीनारायण बारवाले को प्रदान करते हुए उन्हें ''**हिंदुस्तान के बीज उद्योग का जनक**'' बताया। चयन समिति में भू.पू.राष्ट्रपति जिम्मी कॉर्टर सहित 14 सदस्य और थे। बारवाले 1959 से नए–नए बीज कृषकों तक पहुंचाने का कार्य कर रहे थे। इससे पहले आपको 1993 में ''प्रियदर्शनी एकादमी अवार्ड'' व ''जॉयंट्स अंतरराष्ट्रीय'' पुरस्कार से भी सम्मनित किया जा चुका है।

देश में ''सर्वप्रथम''
उपलब्धि प्राप्त – ''अग्रवाल बंधु''

1. **राजा ज्वाला प्रसाद** – गर्ग गोत्र – जन्म सन् 1872, काशी विश्वविद्यालय की वृहत योजना व विशाल भवन आपकी उत्कृष्ट शिल्पकला का अनुपम उदाहरण है। आप उत्तर प्रदेश में प्रथम भारतीय इंजीनियर नियुक्त हुए। काशी विश्वविद्यालय के उपकुलपति बने। काशी पुरातन घाटी की योजना आपने बनाई। 1902 में वैश्य अग्रवाल राजवंश सभा के प्रधान बने।
2. **राजा सर मोती चंद्र** – इनको भारत की म्युनिसिपैलिटी का सर्वप्रथम भारतीय अध्यक्ष होने का गौरव प्राप्त है।
3. **रायबहादुर रामानुज दयाल, मेरठ** – आप भारत के पहले और अकेले हिंदू थे जो सन् 1911 के देहली दरबार में गर्वमेंट के मेहमान की हैसियत से निमंत्रित किए गए।
4. **रायबहादुर लाला कन्हैया लाल,** दिल्ली (सिंघल) – आप पहले भारतीय थे जो संयुक्त पंजाब में ''सुपरिटैंडेंट इंजीनियर'' बने।
5. **मुगल सम्राट अकबर** के दरबार में मधुशाही नाम के एक अग्रवाल जाति के महापुरूष हुए जिनके नाम से ने ''**मधुशाही**'' पैसा चलाया गया था।
6. **आनरेबल सर शादीलाल** – भारत के इतिहास में प्रथम भारतीय के रूप में किसी उच्च न्यायालय में नियुक्त होने वाले प्रथम मुख्य न्यायाधिपति।
7. **लाला श्रीनिवासदास** – हिंदी का प्रथम उपन्यास ''परीक्षागुरू'' के लेखक।
8. **गोपालचंद्र** – हिंदी का प्रथम मौलिक नाटक ''नहुष'' के लेखक।

9. **डा. वासुदेव शरण अग्रवाल** – आप ''ब्रज साहित्य मंडल'' के प्रथम अध्यक्ष थे।
10. **विश्वबंधु गुप्ता** – आपके प्रयासों से ही भारत में ''बैलूनिंग क्लब ऑफ इंडिया की स्थापना'' हुई। इस क्लब का उद्घाटन ''नील आर्मस्ट्रांग'' द्वारा किया गया। आप पहले भारतीय थे जिन्हें ''गुब्बारा उड़ाने का लाईसेंस'' मिला।
11. **एयर वाइर्स मार्शल सुरेन्द्र गोयल** – भारत के सबसे पहले और सबसे छोटे हवाई अफसर थे, जिन्हें अंग्रेज सरकार ने **एम.बी.ई.** की उपाधि से सम्मानित किया।
12. **न्यायमूर्ति श्री प्रेमशंकर गुप्ता** – हिंदी में निर्णय देने वाले पहले न्यायाधीश।
13. **पद्मभूषण हरिशंकर सिंघानिया** – अंतरराष्ट्रीय चेम्बर ऑफ कामर्स के प्रथम भारतीय अध्यक्ष।
14. **सर गंगाराम** – अंग्रेजी राज्य के प्रथम भारतीय सुपरीटेंडेंट। पंजाब में लिफ्ट सिंचाई योजना एवं हरित क्रांति के जनक तथा हरित क्रांति लाने वाले प्रथम इंजीनियर। पूर्व आई.सी.एस., भारत सरकार के कैबिनेट सेक्रेट्री रहे व कई राज्यों के राज्यपाल तथा पंडित नेहरू के निजी सचिव रहे। तीन विश्वविद्यालयों के कुलपति रहने का सौभाग्य है।
15. **डी. एन. जटिया** – आप पहले भारतीय थे जिन्हें इंग्लैंड के जार्ज पंचम ने आर.डी.पी. अर्थात ''**रोल ऑफ डिस्टीन्गविश्ड फिलटेलिक**'' से गौरवान्वित किया।
16 **रामकुमार जयपुरिया** (बिंदल) – जन्म सन् 1876, आप सन् 1899 में दिल्ली आये तथा कपड़े का ''**कटपीस**'' का व्यापार आरंभ किया। आप भारत में ''**कटपीस**'' का **व्यापार** आरंभ करने वाले ''**पहले**'' व्यक्ति थे।
17. **श्री प्रकाश** – पाकिस्तान में भारत के प्रथम उच्चायुक्त तथा चार राज्यों के राज्यपाल रहे।
18. **मुरलीधर अग्रवाल-अंबाला** – 1885 में कांग्रेस की स्थापना के बाद अंग्रेजों द्वारा सबसे पहले राजबंदी।
19. **डा. परमेश्वरी लाल गुप्त** – पहले भारतीय हैं जिन्हें पुरातत्व खोज के लिए विश्व का श्रेष्ठ सम्मान मिला।
20. **सुभाष चंद्रा** – आपने ही सर्वप्रथम 1992 में सेटेलाईट आधारित जी.टी.वी. चैनल की निजी क्षेत्र में स्थापना की।
21. **विजयपत सिंघानिया** – माइक्रोसॉफ्ट विमान द्वारा इंग्लैंड से भारत की यात्रा करने वाले प्रथम व्यक्ति।
22. **राधा देवी (लाला लाजपतराय की धर्मपत्नी)** – 6-7 दिसम्बर 1922 में आपने ''प्रथम महिला कांग्रेस'' की ''**अध्यक्षता**'' की जिसमें श्रीमती कस्तूरबा भी उपस्थित थीं।
23. **लेखवती जैन** – भारत की पहली ''महिला विधायक'' सन् 1930-36 में अंबाला से बनीं तथा हरियाणा विधान सभा की पहली महिला डिप्टी स्पीकर।
24. **पार्वती डीडवानियां (गोयल)** – महान् स्वतंत्रता सेनानी, दिल्ली में पर्दे की कुप्रथा को

समाप्त करने वाली पहली मारवाड़ी महिला। आप अग्रवाल महासभा की कार्यकारिणी सदस्य भी रहीं।

25. **पदमश्री प्रेमलता अग्रवाल** – विश्व की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई कर सर्वाधिक उम्र की पर्वतारोही महिला का कीर्तिमान स्थापित करने वाली भारत की पहली महिला।
26. **डा. मुनीश्वर गुप्त** – भारत में डॉक्टर आफ मेडिसिन (एम.डी.) का शोध प्रबन्ध ''पहली बार हिन्दी में'' प्रस्तुत करने वाले – (सन् 1987)।
27. **प्रो. सतीशचंद्र अग्रवाल** – विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रथम अध्यक्ष।
28. **डा. हर्षवर्धन** – विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक जैसे सर्वोच्च पद पर पहुंचने वाले ''प्रथम भारतीय'' तथा सन् 2020 में विश्व स्वास्थ्य संगठन का सर्वसम्मति से एक्जीक्यूटिव बोर्ड का ''चेयरमैन'' मनोनीत किया गया।
29. **जगमोहन डालमिया** – क्रिकेट के प्रथम एशियाई ख्याति प्राप्त व्यक्ति जिन्हें अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद का अध्यक्ष बनने का गौरव मिला।
30. **पद्मभूषण केशव प्रसाद गोयनका** – इंपीरियल बैंक के प्रथम भारतीय अध्यक्ष। (वर्तमान में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया)
31. **पद्मविभूषण हरिशंकर सिंधानिया** – अंतरराष्ट्रीय चेंबर ऑफ कॉमर्स के प्रथम भारतीय अध्यक्ष।
32. **विजयपत सिंघानिया** – माइक्रोसॉफ्ट विमान द्वारा इंग्लैंड से भारत की यात्रा करने वाले प्रथम व्यक्ति ।
33. **विमल जालान** – अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष के भारत के प्रथम अधिशाषी निदेशक तथा भारतीय रिजर्व बैंक के गर्वनर रहे।
34. **सात्विक अग्रवाल** – भारत का पहला खगोल विज्ञानी जिसे अमेरिका के मंगल ग्रह अभियान से संबंधित प्रयोगों के लिए चुना गया।
35. **वेदप्रताप वैदिक** – अंतरराष्ट्रीय संबध पर अपना शोधप्रबंध लिखने वाले **प्रथम** व्यक्ति थे।
36. **विनीता सिंघानिया** – सीमेंट मेन्युफेक्चर्स एसोसिएशन की **प्रथम महिला अध्यक्ष** ।
37. **पद्मश्री डा. स्वाति पीरामल** – भारतीय चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के अध्ययक्ष पद पर **प्रथम महिला**।
38. **पद्भभूषण हरिशंकर सिंघानि**या – अंतरराष्ट्रीय चेंबर ऑफ कॉमर्स के प्रथम भारतीय **अध्यक्ष**।
39. **प्रेम देव गोयल** – बैंकाक (थाईलैंड) में भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव, मणिपुर में मुख्य सचिव, भारत सरकार में उप सचिव रहे।
40. **नवीन जिंदल** – भारत में जन-जन तक तिरंगा फहराने का अधिकार दिलाने वाले प्रथम

व्यक्ति।

41. **मोदी टेलस्ट्रा** – भारत में सर्वप्रथम मोबाइल सेवाओं का प्रारंभ।

42. **पद्श्री जयप्रकाश अग्रवाल** – 5000 घंटे तक चलने वाली GLSR FDL बल्वों का निर्माण करने वाली विश्व की पहली कंपनी के संस्थापक।

43. **डा. वर्षा अग्रवाल** – देश की पहली महिला ''संतूर वादिका''। अगरतल्ला में आयोजित ऑल इंडिया रेडियो के ''अखिल भारतीय रेडियो संगीत सम्मेलन'' में संतूर वादन करने वाली देश की पहली महिला। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी संतूर वादन करने वाली वे देश की ''**पहली सम्मानित एकमात्र महिला**'' हैं। जनवरी 2018 में उन्हें भारत सरकार द्वारा संतूर वादन के क्षेत्र में ''**फर्स्ट लेडी**'' के रूप में चुना गया, यह पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति माननीय रामनाथ कोविंद जी ने प्रदान किया। डा. वर्षा अग्रवाल को राज्यसभा टी.वी. ने देश की प्रमुख शक्सियत के रूप में चयन कर सीधा प्रसारण भी किया था।

44. **न्यायाधीश श्रीमती गीता मित्तल** – जम्मू-कश्मीर की ''पहली महिला मुख्य न्यायाधीश।'' कानून व न्याय के क्षेत्र में ''नारी शक्ति पुरस्कार'' प्राप्त करने वाली **पहली** महिला।

45. **श्रीमती रेणु अग्रवाल** – शिक्षा एम.ए.बी.एड, पति श्री टी.पी.सिंह(मित्तल), निवासी सोनीपत। आपने अपने प्राणों की आहुति देकर दो बच्चों के प्राणों की रक्षा की। मरणोपरांत आपको ''**शौर्य चक्र**'' प्रदान किया गया। रेणु जी ने यह सम्मान प्राप्त करने वाली भारत की **प्रथम महिला** होने का गौरव प्राप्त किया। 1992 में आपके पति श्री टी.पी.सिंह (नौसैनिक) ने राष्ट्रपति भवन में यह पुरस्कार ग्रहण किया।

46. **बबू बैद्यनाथ दास, बी.ए.,एल.एल.बी.** – सन् 1927 से 1931 तक आप बीकानेर स्टेट में चीफ जस्टिस के पद पर रहे।

47. **जस्टिस सुधीर अग्रवाल** – आप सबसे ज्यादा मुकदमों का फैसला देने वाले भारत के ही नहीं बल्कि पूरे एशिया के पहले न्यायाधीश बने हैं। 21 अक्टूबर 2019 तक आप एक लाख तीस हजार चार सौ अठारह मुकदमों को फैसला दे चुके हैं। इससे पहले पिछले साल एक लाख बारह हजार मुकदमों पर फैसला सुनाने वाले वे देश के पहले जज बने थे। आपने 05 अक्टूबर 2005 को इलाहबाद हाई कोर्ट में स्थाई जज के पद की शपथ ली।

48. **महावीर प्रसाद जैन** – जन्म 01 जून 1899, आपने 21 जुलाई 1922 को वकालत आरंभ की। सन् 2000 तक यानि 78 वर्षों तक लगातार कुल 42,000 छोट-बड़े मुकदमों की पैरवी करने वाले आप भारत के पहले वकील हैं, जो अपना नाम इस कीर्तिमान बनाने वाले के रूप में लिखवा पाये, सन् 2002 में। आप दिगम्बर जैन महासमिति, हरियाणा प्रदेश के अध्यक्ष रहे। 102 वर्ष की आयु में आपका निधन हुआ।

49. **जस्टिस अनुराग सिंघल** – अमेरिका के फ्लोरिडा में ''जज'' बनने वाले पहले भारतीय।

50. **सुधीर अग्रवाल** – उत्तर प्रदेश राज्य में पहला बीज गोदाम बनाने वाले किसान।

51. **लाला देसराज चौधरी** – दिल्ली में कांग्रेस के टिकट पर आजादी से पूर्व आप नगर पालिका के सबसे पहले सदस्य निर्वाचित हुए।

52. **बी.के. अग्रवाल** – एकेडमी ऑफ विजुअल मीडिया ने फोटोग्राफिक दुनियां में रिमार्केबिल योगदान के लिए आपको ''लाईफ टाइम एचिवमेंट एवार्ड 2006 में दिया। आंध्रप्रदेश से ये एवार्ड प्राप्त करने वाले आप **पहले** फोटोग्राफर थे।

53. **कुलदीप गोयल** – छपाई तकनीक में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर वर्ल्ड लेबल एसोसिएशन का 2004 का विश्व पुरस्कार प्राप्त कर इस क्षेत्र में प्रथम भारतीय होने का गर्व हांसिल किया।

54. **रायसाहब कर्मचंद जैन (मित्तल)** – जन्म, 5 जनवरी 1898, आप सरकारी वकील बनकर संयुक्त पंजाब में सियालकोट, लायलपुर, गुजरांवाला तथा गुरदासपुर में कार्यरत रहे। वार और सप्लाई डिपार्टमेंट के लाहौर के बाहर के **पहले कानूनी सलाहकार** और स्पेशल पुलिस एस्टेब्लिशमेंट (1946 में गृहमंत्रालय में स्थानानतरित), अब सी.बी.आई. के ''**प्रथम**'' **कानूनी सलाहकार** रहे।

55. **डा. दीवन चंद अग्रवाल** – आपके द्वारा, भारत का पहला ''रेडियोलॉजी क्लीनिक'' लाहौर में सन् 1924 में स्थापित किया गया था, जो अभी भी दिल्ली में उनके पौत्रों द्वारा संचालित किया जा रहा है।

56. **सर मनोहर लाल बंसल** – आजादी के पहले संयुक्त पंजाब के पहले ''डिप्टी स्पीकर'' थे (सन् 1921)।

57. **श्रीकृष्ण दास गुड़वाले** – ब्रिटिश काल में सन् 1908 से 1963 तक दिल्ली में चलने वाली 15 किलोमीटर लंबी ''**ट्राम ट्रेन**'' कंपनी के निदेशक थे।

58. **जुगलकिशोर एडवोकेट (गोयल)** – आजादी के बाद में संयुक्त पंजाब में पहले अग्रवाल राज्यसभा सदस्य, आप हिसार के थे।

59. **जैन कवि विबुध श्रीधर** – आप अग्रवाल समाज के ''पहले ज्ञात कवि व लेखक'' हैं। आपके द्वारा लिखित अपभ्रंश भाषा की रचनाएं सन् 1132 की हैं।

60. **लाला देवकीनंदन** – जन्म सन् 1837, पिता लाला चंदाराम जी। आपने ही सर्वप्रथम ''**सरकारी ठेकेदारी**'' का काम आरंभ किया। आपके यहां बंदूकें आदि शस्त्रों की रिपेयरिंग का काम होता था। आपने रेलवे लाईनें बनाने का ठेका भी लिया था। आपके पुत्र ''**काशीनाथ जी**'' के ठेके में दिल्ली का प्रसिद्ध ''**यमुना ब्रिज**'' बना। दिल्ली दरबार के समय ''रेलवे लाईन'' बनाने का ठेका भी आपने लिया था। आपका निधन सन् 1904 में हुआ।

61. **मदन मोहन तायल** – सन् 1946 में संपूर्ण हिसार जिले में ट्रैक्टर से खेती करने वाले आप ''**पहले**'' व्यक्ति थे। आपने ही सबसे पहले विदेश से कच्ची रूई की धुलाई एवं प्रोसेसिंग के ''सीजनिंग प्लांट'' मंगवाया। सन् 1943 में रोहतक व हिसार जिले में ''**बिजली उत्पादन व वितरण**'' का काम निजी स्तर पर करना आरंभ किया, यह उस क्षेत्र की ''**पहली बिजली कंपनी**'' थी। पंजाब में बिजली के राष्ट्रीयकारण के बाद उत्तर प्रदेश में सन् 1975 में बिजली वितरण करते रहे।
62. **प्रमोद अग्रवाल** – को वर्ल्ड ज्वैलरी कन्फैडरेशन(सिब्जो) का उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया। इस पर मनोनीत होने वाले वह पहले भारतीय हैं। अग्रवाल जैम एंड ज्वैलरी एक्सपोर्ट प्रमोशन कांउसलिंग के अध्यक्ष हैं।
63. **अमित अग्रवाल** – देश के पहले प्रोफेशनल ब्लॉगर।

नूतन का अभिनंदन कर लें, वर्तमान को वंदन कर लें,
भेदभाव के खारे जग को, प्रेमभाव से मीठा कर लें ।

व्यापार व उद्योग जगत में ''सर्व-प्रथम'' व विशेष उपलब्धि प्राप्त करने वाले अग्रबंधु

1. **हरविलास अग्रवाल** – चाय बागान क्षेत्र में ''प्रथम'' भारतीय। वे प्रथम भारतीय थे, जिन्होंने सन् 1868 में तमूलवाड़ी में 280 एकड़ का चाय बागान खरीदा।
2. **राम कुमार जयपुरिया (बिंदल)** – भारत में कटपीस व्यापार को प्रारंभ करने वाले ''पहले'' व्यक्ति (सन् 1899)।
3. **सेठ चतुर्भुज पौद्दार (बंसल)** – ''पहले'' मारवाड़ी व्यापारी जिन्होंने संपूर्ण देश में बीमा व्यवसाय को फैलाया।
4. **हरदत्तराय चमड़िया, कलकत्ता** – ने ही चांदी का ''पहला'' सट्टा बाजार प्रारंभ किया था।
5. **जमनालाल बजाज** – एशिया में सबसे बड़ी ''चीनी मिल'' के संस्थापक।
6. **पद्मावत सिंघानिया** – ''नाइट हुड'' की उपाधि प्राप्त, आप प्रथम लोकसभा के सदस्य रहे तथा यू.पी.कॉटन टेक्सटाइल मिल ओनर्स ऐसोसिएशन के ''पहले'' ''फाउंडर चेयरमैन'' रहे।
7. **लक्ष्मीचंद गुप्ता** – हरियाणा व्यापार मंडल के संस्थापक प्रधान।

सेना में ''सर्वप्रथम'' उपलब्धि प्राप्त – ''अग्रवाल बंधु''

1. **एयर वाईस मार्शल सुरेन्द्र गोयल** – भारत के सबसे पहले और सबसे छोटे हवाई अफसर थे, जिन्हें अंग्रेज सरकार ने एम.बी.ई. की उपाधि से सम्मानित किया।
2. **मेजर जनरल द्वारका प्रसाद गोयल** – सन् 1933, ''मेजर जनरल'' के पद पर पहुंचने वाले भारतीय सेना के प्रथम अधिकारी।
3. **मेजर जनरल पी.सी.गुप्ता** – मिलिट्री क्रास, संघ लोक सेवा आयोग के प्रथम सैनिक सदस्य।
4. **मैजर जनरल रविन्द्र गुप्ता** – अति विशिष्ट सेना मैडल एवं बार – (1965 तथा 1971)–आर्मी सर्विस कोर के प्रथम बार विजेता।
5. **रियर एडमिरल संतोष कुमार गुप्ता** – नौ सेना की वायु शाखा के प्रथम व एक मात्र महावीर चक्र सम्मान प्राप्त।
6. **कर्नल रामकृष्ण बंसल** – आर्मी पोस्टल सर्विसेज का प्रथम ''शौर्य चक्र''।
7. **ब्रिगेडियर मनोहर लाल गर्ग** – अति विशिष्ट सेवा मेडल एवं ''प्रथम कीर्ति चक्र'' प्राप्त

सैन्य अधिकारी।

8. **मेजर संजय अग्रवाल** – सेना मेडल एवं बार – कुमाऊं रेजीमेंट के इस सम्मान को प्राप्त करने वाले प्रथम अधिकारी हैं।
9. **एयन मार्शल कृष्ण चंद्र गुप्ता** – परम विशिष्ट सेवा मेडल एवं विशिष्ट सेवा मेडल – एयर मार्शल के पद पर पहुंचने वाले वायुसेना की प्रशासन शाखा के प्रथम अधिकारी हैं।
10. **एयर मार्शल नरेश कुमार** – अति विशिष्ट सेवा मेडल एवं वायु सेना मेडल – भारतीय वायु सेना के प्रथम हैलीकॉप्टर पायलट जो एयर मार्शल के पद पर पहुंचे।
11. **कैप्टन ए. के. जिंदल** – युद्ध सेवा मेडल, सेना चिकित्सा कौर के प्रथम अधिकारी हैं, जिन्होंने यह सम्मान प्राप्त किया।
12. **स्व. श्रीमती रेणु अग्रवाल** – शौर्य चक्र – आप भारत की प्रथम महिला हैं, जिन्हें यह पुरस्कार मरणोपरांत दिया गया।
13. **मिंटी अग्रवाल** – भारतीय वायुसेना की स्क्वाडन लीडर में मिंटी अग्रवाल को ''युद्ध सेवा मेडल'' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान पाने वाली भारतीय इतिहास में वे **पहली महिला** हैं। 2019 में इस युद्ध सेवा मेडल को उनकी उत्कृष्ट सेवा के लिये राष्ट्रपति जी ने प्रदान किया। अक्टूबर 2020 को 88 वें वायुसेना दिवस के अवसर पर ''**वीरता पदक**'' से सम्मानित किया। मिंटी उस टीम का हिस्सा थीं जिसने 2019 मं वायुसेना द्वारा किए गए हमले में विंग कमांडर अभिनंदन वर्द्धमान का नेतृत्व किया था।

संस्थापक एवं निर्माणकर्त्ता

1. **पद्मभूषण डॉ. कंवरसेन** – भाखड़ा बांध के प्रमुख निर्माता।
2. **चंद्र कुमार अग्रवाल** – असमिया के प्रसिद्ध लेखक, कवि और पत्रकार तथा ''असमिया भाषा उन्नति साधिनी सभा'' के ''संस्थापक'', जिसकी स्थापना उन्होंने 25 अगस्त 1888 को की।
3. **पद्श्री प्रोफेसर डा. हर्ष कुमार गुप्ता** – अंटार्कटिक में ''**प्रथम भारतीय स्थाई स्टेशन**'' के संस्थापक।
4. **श्री बालेश्वर अग्रवाल** – हिंदुस्तान समाचार समिति के संस्थापक। यह देश की पहली भाषायी संवाद समिति थी।
5. **गीतामूर्ति सेठ जयदयाल गोयन्दका** – गीताप्रेस गोरखपुर के संस्थापक – 1923 में गीता प्रेस गोरखपुर की स्थापना की। आपकी प्रेरणा से ही कल्याण का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। आपने अनेक धार्मिक ग्रंथ लिखे तथा ऋषिकेश में गीता भवन की स्थापना की।

6. **सेठ रायबहादुर गुजरमल मोदी** – मोदी नगर (उत्तर प्रदेश) के संस्थापक।
7. **बिट्ठलदास मोदी** – भारत में प्राकृतिक चिकित्सा के अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विशेषज्ञ, 1940 में विशाल आरोग्य मंदिर तथा 1962 में प्राकृतिक चिकित्सा विद्यालय की स्थापना गोरखपुर में की।
8. **ऑनरेबुल लाला सुखवीर सिंह** – हरिद्वार में विश्व प्रसिद्ध ''ऋषिकुल आयुर्वेदिक औषधालय'' के संस्थापक, आल इंडिया हिंदू महासभा के संस्थापक व लंबे समय तक वैश्य महासभा के मंत्री रहे।
9. **राष्ट्ररत्न शिवप्रसाद गुप्त** – स्वतंत्रता सेनानी व दानवीर, काशी में विश्व के सबसे प्रथम भारतमाता मंदिर तथा काशी विद्यापीठ के संस्थापक, दैनिक पत्र आज तथा ज्ञान मंडल के संस्थापक। भारत माता मंदिर का उद्घाटन म. गांधी ने किया था।

10. **श्री मूंगालाल गोयनका** – विश्व प्रसिद्ध मुंबई की संस्था ''भारतीय विद्या भवन'' की स्थापना की ।
11. **लाला हरदेव सहाय** – भारत गौ सेवक समाज के संस्थापक।
12. **कला मर्मज्ञ राधाकृष्ण जालान** – पटना स्थित जालान संग्रहालय के संस्थापक।
13. **कला मर्मज्ञ रायकृष्णदास** – आपने काशी हिंदू विश्वविद्यालय में ''कला भवन'' की स्थापना की।
14. **दानवीर सेठ लच्छीराम तोलाराम चूड़ीवाला** – देवभाषा संस्कृत की शिक्षा व प्रसार हेतु संस्कृत पाठशालाओं व ऋषिकुल विद्यापीठ की स्थापना करने वाले।
15. **सत्यनारायण गोयनका** – विश्व में विपश्यना ध्यान पद्धति के सबसे बड़े आचार्य व पेगौड़ा के निर्माता।
16. **बाबू गोविंददास शाह** – हिंदू कॉलेज व काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना।
17. **सीताराम जिंदल** – दानवीरों में अग्रणी व भारत में एक-एक करोड़ रूपयों के सात बड़े सीताराम जिंदल पुरस्कारों के संस्थापक।
18. **रायबहादुर श्री सूर्यमल शिवप्रसाद झुंझुनुवाला** – ऋषिकेश (हरिद्धार) में गंगानदी पर प्रसिद्ध ''लक्ष्मण झूले'' के निर्माता।
19. **सेठ सूरजमल जालान** (बंसल-रतनगढ़ निवासी) – काशी में मर्णिकाघाट पर धर्मशाला व हर की पैड़ी पर श्राद्ध घाट व पुल का निर्माण करवाया।

20. **जगदीश अग्रवाल** – न्यूयार्क में ''प्रथम हिंदू मंदिर'' का निर्माण आपने करवाया।
21. **अमित सिंघल** – गूगल सर्च इंजन के संस्थापक।

22. **पद्मश्री लाला चरतराम** – दिल्ली क्लाथ मिल के संस्थापक।
23. **लाला केदारनाथ जी** – दिल्ली के रामजस कॉलेज के संस्थापक
24. **डा.परमेश्वरी लाल गुप्त** – पुरातत्व एवं मुद्रा के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त नामों में आपका नाम विशेष उल्लेखनीय है जिन्हें ''**रॉयल न्यूमेस्टिक सोसायटी**'' ने सम्मानित किया है। यह गौरव प्राप्त करने वाले वे प्रथम विद्वान हैं। नासिक में आपने भव्य ''**भारतीय मुद्रा अध्ययन संस्थान**'' की स्थापना की। यह पूरे एशिया में अपने तरह का पहला अकेला प्रतिष्ठान है।
25. **लाला संगत लाल जी** – महिला विद्यपीठ प्रयाग के संस्थापक
26. **पद्श्री प्रभुदयाल डावड़ीवाला (अग्रवाल)** – भारत में ट्रांसपोर्ट व्यवसाय में अग्रणी, टी. सी.आई. के संस्थापक।
27. **ललित मोदी** – भारत में क्रिकेट लीग के प्रथम संस्थापक।
28. **अनुपम मित्तल** –विश्व की सबसे बड़ी साइट ' 'शादी डॉट काम'' के संस्थापक।
29. **लाला बूजनमल गुप्ता** (गर्ग) – आपने दिल्ली में 158 साल पहले गुड़ का थोक व्यापार आरंभ किया तथा दिल्ली में त्रिपोलिया गेट के पास ''**गुड़मंडी की स्थापना**'' की स्थापना की जो आज भी है।
30. **भानीराम गुप्ता** (गर्ग) – सन् 1958 में दिल्ली में ''फैडरेशन ऑफ ऑल इंडिया फूडग्रेन डीलर्स एसोसिएशन'' संस्थापक।
31. **बाबू लक्ष्मीदास बी.ए.** – आपने बनारस इंडस्ट्रीज एंड ट्रेड ऐसोसिएशन की स्थापना की।
32. **पद्मभूषण बद्रीनाराणयण बारवाले** – बीज के क्षेत्र में क्रंति लाने वाले महिको के संस्थापक।
33. **रितेश अग्रवाल** – ओयो रूम्स के संस्थापक।

अग्रवाल समाज का कहना है, बेटी हमें बचाना है।

अन्य क्षेत्रों में प्रसिद्धि एवं विशिष्ट उपलब्धियां प्राप्त

1. **ज्योति प्रसाद अग्रवाला** – पूर्वोत्तर भारत में ''**रूपकंवर**'' के नाम से ख्याति प्राप्त। आप **असमिया फिल्म के जनक** हैं तथा ज्योति संगीत की शुरूआत आपने की। 1934 में चित्रलेखा मूवीटोन की स्थापना की तथा **पहली असमिया फिल्म जयमति** का निर्माण किया। जयमति भारत की पांचवी व असम की पहली बोलती फिल्म थी। संपूर्ण असम में आपकी पुण्य तिथि पर ''**शिल्प दिवस**'' के रूप में आपको याद किया जाता है।

2. **डी. एन. जटिया** – देश में 1975 में ''**फिलाटेलिक कांग्रेस ऑफ इंडिया**'' की स्थापना की। डाक टिकटों के बारे में विशेषता ग्रहण की इसके आधार पर वे 1981 से 1987 तक ''**इंटर एशिया फिलाटेलिक फेडरेशन**'' के अध्यक्ष रहे। 1990 से 1998 तक ''**इंटरनेशनल फिलाटेनिक फेडरेशन**'' के अध्यक्ष बने। आप पहले भारतीय थे जिन्हें इंग्लैंड के जार्ज पंचम ने आर डी पी अर्थात ''**रोल ऑफ डिस्टीन्गविश्ड फिलटेलिक**'' से गौरवान्वित किया।

3. **पद्म भूषण डा. कंवरसेन गुप्ता (सिंघल)** – आधुनिक भारत के भागीरथ के रूप में आपको ख्याति प्राप्त है। आपको थाइलैंड का सर्वोच्च सम्मान ''आर्डर ऑफ व्हाईट ऐलीफैंट'', ईराक सरकार से सिल्वर मेडल आदि अनेक सम्मान मिले। आपके नाम से टोहाना में ''कंवरसेन गुप्ता हर्बल पार्क'' है। डा. कंवर सेन संयुक्त राष्ट्रसंघ में सलाहकार रहे, राजस्थान की सबसे बड़ी इंदिरा गांधी नहर (मरू गंगा) परियोजना के कर्णधार, पंजाब में भाखड़ा बांध के निर्माता व आपके प्रयासों से भाखड़ा हैडवर्क्स पाकिस्तान में जाते-जाते बचा और बीकानेर रियासत भारत में रह सकी। इसके अलावा हीरा कुंड, दामोदर घाटी, कोसी, नर्मदा आदि परियोजनाओं के सूत्रधार भी आप ही रहे ।
4. **प्रभुदयाल हिम्मतसिंघका** – प्रसिद्ध सालीसिटर व विधिवेता, संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य, कुशल सांसद तथा बंगाल से तीन बार लोकसभा व राज्यसभा के सांसद रहे ।
5. **आत्माराम अग्रवाल** – म. गांधी मर्डर केस के न्यायाधीश, जिन्होंने इस केस की लाल किले से सुनवाई की।
6. **अतुल बंसल** – दुनिया का श्रेष्ठ इंटीरियर डिजाइनर इनको माना गया है।
7. **डा. कैलाश मानव** – विकलांगों के निशुल्क ऑप्रेशन की व्यवस्था करने वाले तथा भारत में प्रसिद्ध नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के संस्थापक
8. **डा. सत्यकेतु विद्यालंकार (बंसल)** – आप 1936 में उच्चतर शिक्षा के लिए यूरोप गए।

वहीं पर अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास की रचना की और इसी ग्रंथ पर अग्रवाल समाज पर शोध पूर्ण सामग्री लिखने पर उन्हें **पेरिस यूनिवर्सिटी से डी.लिट्** की उपाधि मिली।

9. **राजकृष्ण गोयल** – आप 18 अगस्त 1947 को प्रधानमंत्री कार्यालय में नियुक्त हुए तथा अक्टूबर 1948 से 1964 तक भारत के पहले प्रधान मंत्री नेहरू जी के **निजी सचिव** रहे। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि आप – भारत के **चार प्रधान मंत्रियों के निजी सचिव रहे** – पं. नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री– 1964 से 1966, श्रीमती इंदिरा गांधी 1966 से 1977, तथा मोरारजी देसाई 1977 से 1978 तक ।
10. **पद्मभूषण धर्मवीर (गर्ग-गौत्र) आईसीएस** – आप 1950-51 में नेहरू जी के प्रधान निजी सचिव रहे। आप विभिन्न राज्यों के राज्यपाल भी रहे।
11. **राहुल बजाज** – भारत में ऑटों क्षेत्र के अग्रणी व्यक्ति।
12. **मेहर मित्तल** – पंजाबी फिल्मों के सर्वश्रेष्ठ कामेडियन।
13. **अशोक सिंघल** – विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष।
14. **अनंत अग्रवाल** – विश्व में आनलाईन शिक्षा के सबसे बड़े प्रसिद्ध शिक्षाविद।
15. **अजय अग्रवाल** – बोफोर्स के विरूद्ध याचिका दायर कर भारत की राजनीति में क्रांति लाने वाले।
16. **के. के. जाजोदिया** – भारत में **टी. किंग** के नाम से प्रसिद्ध। 171 साल पुरानी असम टी कंपनी व डंकन मैकेनिकल समूह के चेयरमैन ।
17. **प्रदीप कुमार गुप्ता** – राजीव गांधी के अंगरक्षक के रूप में इन्होंने अपने जीवन का उत्सर्ग कर दिया।
18. **गणेश प्रकाश अग्रवाल** – विश्व के 80 देशों की संस्था इंजीनियरिंग एन्वायरमेंट के अध्यक्ष।
19. **रविन्द्र गुप्ता** – आपने सर्वप्रथम नेताजी सुभाषचंद्र बोस का 6 फीट का रेखाचित्र 1997 में अपने **खून** से बनाया तत्पश्चात 100 अन्य शहीदों एवं राष्ट्र भक्तों के बड़े-बड़े चित्र, अपने **''रक्त''** से बनाने वाले देश के पहले राष्ट्रभक्त तथा ''स्वतंत्रता सेनानी सचित्र कोश'' के भी **प्रथम निर्माता।** इन चित्रों का अद्वितय संग्रहालय वात्सल्य ग्राम, वृंदावन में देखा जा सकता है। जिन महानुभावों ने भी इसे देखा वो अभिभूत हो गया। आपने स्वतंत्रता सेनानियों पर अनेक पुस्तकें लिखीं।
20. **अरूण गोविल** – मशहूर धारावाहिक रामायण में भगवान राम की ऐतिहासिक भूमिका। **महाराजा अग्रसेन फिल्म** में अग्रसेन जी की भूमिका निभाई।
21. **सामंत गोयल** – 26 जून 2019 को भारत सरकार के रॉ प्रमुख (रिसर्च एंड एनालिसिस

विंग) नियुक्त हुए।

22. **संजीव सिंगला** – 21 जुलाई 2014 को प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के निजी सचिव नियुक्त हुए। आप इजरायल में भारत के राजदूत भी रहे।

23. **अग्रवाल उड़ाके** – हवाई जहाज के संचालन एवं उड़ान की पटुता में रामकुमार जी भुवालका, धर्मचंद्र जी सरावगी तथा बृजलाल जी लोहिया के नाम उल्लेखनीय हैं। श्री बाबू धमचंद्र जी सरावगी – अग्रवाल समाज में भारत से विलायत के लिये हवाई जहाज द्वारा यात्रा करने वालों में आप प्रथम व्यक्ति हैं। आप हवाई जहाज चला सकते हैं तथा इसके लिये आपने सरकार से लाइसेंस भी लिया है। इस समय आप कलकत्ता मर्चेंट कमेटी के सैकेटरी, मारवाड़ी ट्रड ऐसोसिएशन सदस्य, दिगम्बर जैन युवक समिति के प्रेसिडेंट, मारवाड़ी रिलिफ सोसायटी की रसायन शाला के सैकेटरी और बंगाल फ्लाइट क्लब के सदस्य हैं। इस समय आप कलकत्ता में रहते हैं।

(नं.23 – पुस्तक अग्रवाल जाति का प्रमाणिक इतिहास – गुलाब चंद ऐरन –सन् 1938)

24. **लाला दीनदयाल** – इंदौर के पहले फोटोग्राफर। आपका जन्म सन् 1844 में जैन परिवार में हुआ था। उन्होंने गर्वनर जनरल लार्ड नार्थ ब्रुक के इंदौर आने पर अपने मित्रों के साथ उनका ग्रुप फोटो लिया था तथा सन् 1875–76 में प्रिंस ऑफ वेल्स के आने पर उनकी पार्टी सहित ग्रुप फोटो लिया था। सर हैनरी डेली के बुंदेलखंड के दौरे पर लालाजी भी उनके साथ गये। सन् 1882–83 में इन्होंने सर लेपेट ग्रिफिथ के साथ भी बुंदेलखड का दौरा किया व अद्भुत फोटोग्राफी की, सर लेपेट ने यहां पर की गई सारी फोटोग्राफी को लंदन में प्रकाशित किया। उन्हें वायसराय का फोटोग्राफर नियुक्त किया गया। होल्कर महाराजा द्वारा लालाजी की फोटोग्राफी को इतना पसंद किया गया, कि महाराजा ने खुश होकर उन्हें जागीर प्रदान की।

25. **बी. के. अग्रवाल** – मशहूर फोटोग्राफर – नई दिल्ली की एकेडमी ऑफ विजुअल मीडिया ने फोटोग्राफिक दुनियां में रिमार्केबिल योगदान के लिए आपको ' 'लाईफ टाइम एचिवमेंट एवार्ड 2006 में दिया। आंध्रप्रदेश से ये एवार्ड प्राप्त करने वाले आप पहले फोटोग्राफर थे। आपकी 800 से भी अधिक फोटोज विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में प्रदर्शित हो चुकी हैं और इन पर उन्हें 125 से अधिक एवार्ड मिल चुके हैं।

26. **श्री श्याम कृष्ण गुप्ता** (गर्ग), सिविल इंजीनियर – आपने अंडमान निकोबार द्वीप समूह में सड़कों तथा पुलों का निर्माण करवाया। पोर्टब्लेयर स्थित कालापानी की जेल के दो खंड तुड़वाकर आधुनिक नए अस्पताल का निर्माण करवाया जिसका उद्घाटन 1961 में लाल बहादुर शास्त्री जी ने किया तथा दूसरे खंड का उद्घाटन 1963 में डा. जाकिर हुसैन द्वारा किया गया। 1968 से 1971 तक काठमांडू (नेपाल) में त्रिभुवन विश्वविद्यालय में लाइब्रेरी भवन, छात्रावास तथा क्रीड़ा स्थल का निर्माण करवाया जिसका उद्घाटन नेपाल नरेश महेन्द्र

शाहदेव द्वारा किया गया ।1975 से 1979 तक तंजानिया देश में दार सेलाम, अरूशा तथा इरिंगा में ग्रेन साइलोज का निर्माण करवाया । 1984 से 1987 तक आई.एस.बी.टी., दिल्ली के यमुना पुल के निर्माण में योगदान दिया।

27. **श्री राजेन्द्र प्रसाद गोयल** (शिक्षा विशेषज्ञ) – आपने गणित व अन्य विषयों पर सौ से अधिक पुस्तकें लिखीं। जिसमें से कई पुस्तकें विभिन्न शिक्षा बोर्डों द्वारा स्वीकृत की हुई हैं।
28. **गौतम पोद्दार** – गौसेवा को समर्पित, आपने गोरखपुर के पास विशाल गौशाला की स्थापना की। भारत सरकार ने आपको सन् 1986 में ''गोपाल रत्न'' की उपाधि से सम्मानित किया।
29. **रायबहादुर सेठ चंपालाल रामस्वरूप रानीवाला** – आप अवध के खजांची भी रहे व एक ''**मिंट**'' चलाते थे जहां **सिक्के ढाले** जाते थे। आज भी इस मिंट के दो सोने व 27 चांदी के सिक्के लखनऊ संग्रहालय में मौजूद हैं।
30. **रायबहादुर नौरंगराय खेतान** – सन् 1905 में रायसाहब, 1913 में रायबहादुर और इसके अलावा जयपुर दरबार ने ''सेठ'' की पदवी से आपको विभूषित किया। जयपुर दरबार से आपको ऐसा सम्मान प्राप्त हुआ जो आज तक किसी भी वैश्य को प्राप्त नहीं हुआ। महाराजा आपको तुम की जगह ''राज'' कहकर लिखने और बोलने लगे जो केवल दरबार के भाई बेटों के लिए ही था। आप जयपुर स्टेट के प्रथम जेल सुपरिटेंडेंट नियुक्त किए गए।
31. **रायबहादुर साहु जगन्नाथ** – आपने बद्रीकाश्रम मार्ग में दो धर्मशालाएं, गोला–गोकर्णनाथ तीर्थ में विशाल व सुंदर धर्मशाला बनवाई। आपकी भारत के साधु समाज में बड़ी ख्याति थी।
32. **रायबहादुर विश्वेश्वर लाल हलवासिया, गर्ग गौत्र** – हाबड़ा में जानकी दास अस्पताल, गंगाजी पर श्राद्धघाट बनवाया, वि.सं.1982 में आपने मृत्यु से पूर्व 60 लाख रूपयों की संपत्ति से एक परमार्थ ट्रस्ट बनवाया, अग्रवाल समाज में इनता बडा ट्रस्ट अनेक वर्षों तक किसी ने नहीं बनवाया।
33. **नेहा गोयल** – हॉकी खेल में अपनी टीम की तरफ से एशियाड में रजत पदक के लिये एक मात्र गोल आपने ही किया।
34. **शाही घंटवाला हलवाई, दिल्ली** – 23 अगस्त 1857 के उर्दू अखबार में भी इसका उल्लेख है। इस प्रतिष्ठान को भारत के पहले राष्ट्रपति स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद जी ने ''**भारत के श्रेष्ठ हलवाई'' का पुरस्कार** प्रदान किया। सन् 1954 में कोरिया में रहे भारतीय सेनिकों को श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने दीपावली की मिठाई यहीं से भेजी थी। पूर्व नेपाल नरेश विरेन्द्र जी तथा यूएनओ के उच्चाधिकारी से भी इस प्रतिष्ठान को प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुआ था। हिंदी फिल्म निर्माता श्री बी. आर. चौपड़ा की सन् 1954 में आई **फिल्म ''चांदनी चौक''** में भी इस दुकान का नाट्य रूपांतरण दिया गया तथा, इसके बोर्ड पर हिंदी व अंग्रेजी में लिखा था 'बादशाह के हुकुम से शाही घंटे वाला हलवाई।' 225 वर्ष से भी अधिक पुराने इस प्रतिष्ठान को सातवीं पीढ़ी के गर्ग गोत्री, श्री दीपक जैन चला रहे हैं। (पुस्तक–अग्रवाल समाज की विरासत)

35. उमराव सिंह जैन (मित्तल) – पंजाब विश्वविद्यालय के पहले पोस्ट ग्रेजुएट और लंबे समय तक संयुक्त पंजाब के इंस्पैक्टर जनरल के पद पद कार्यरत रहे।

36. एच. एल. गर्ग – 81 साल की उम्र में 21 किलोमीटर की मैराथन को केवल तीन घंटे में पूरा कर सभी को अपनी फिटनेस से चकित कर दिया। आपको फरीदाबाद पुलिस की ओर से विशेष सम्मान दिया गया। आपने पहली बार किसी मैराथन में हिस्सा लिया था। इस उम्र में आप रोजाना 06 घंटे दौड़ते हैं तथा खूब कार्य करते हैं। यह दौड़ फरवरी 2017 में फरीदाबाद में आयोजित की गई थी।

37. बद्रीनाराणयण बारवाले – बीज के क्षेत्र में क्रंति लाने वाले महाराष्ट्र हाईब्रिड सीड्स कंपनी (महिको) के संस्थापक। 86 साल की उम्र में आपका देहांत हो गया। आपका जन्म 30 अगस्त 1930 को महाराष्ट्र के हिंगोली में हुआ था। बाद में में वे जालना में बस गये थे। पढ़ाई के दौरान आप हैदराबाद मुक्ति संग्राम में शामिल हुए थे। उन्होंने 1950 में भिंडी की ज्यादा पैदावार देने वाली किस्म विकसित की थी। 1964 में उन्होंने महिको की स्थापना की थी। 1970 तक उन्होंने 30 विभिन्न फसलों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और अधिक पैदावार के लिए बीज में संशोधन कर नई-नई किस्में ईजाद कीं। 2001 में उन्हें ''पद्मभूषण'' से सम्मानित किया गया।

38. देश बंधु गुप्ता – देश में सबसे पहले ''जेनेरिक दवा'' लाने वाली शख्सियत। आप भारत की दूसरी और दुनियां की चौथी सबसे बड़ी कंपनी जैनेरिक फार्मास्युटिकल कंपनी ''ल्यूपिन'' के संस्थापक और चेयरमैन थे। आपका जन्म अलवर जिले के राजगढ़ कस्बे में 08 फरवरी 1938 में हुआ था। आप भारत में सबसे पहले जेनेरिक और गरीबों के लिए सस्ती दवाओं को लेकर आये थे। अभी ल्यूपिन का कारोबार दुनियां के 100 से ज्यादा देशों में है। आपने 1968 में महज पांच हजार रूपये से कारोबार आरंभ किया। आपने ऐसोसिएट प्रोफैसर के रूप में विड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ पिलानी में अपना कैरियर आरंभ किया। इस समय ल्यूपिन दुनियां में टी.बी. की दवाओं की सबसे बड़ी कंपनी भी है। इनके रिश्तेदास श्री ओमप्रकाश गुप्ता भरतपुर रियासत के महाराजा बृजेन्द्रसिंह के एडीसी थे।

39. संजना गोयल – फैशन डिजाइनर – आप मस्क्युलर डिस्ट्रॅफी नामक बीमारी से ग्रस्त हैं, समय के साथ यह बीमारी बदतर होती जाती है। अपनी दिक्कतों को दरकिनार रखते हुए संजना ने अपने भाईयों (जो खुद भी इस बीमारी से ग्रस्त हैं) और दोस्तों के साथ मिलकर 1992 में इस बीमरी के शिकार मरीजों के लिए एक केंद्र बनाने की पहल करते हुए सोलन में मरीजों के लिये इंडियन एसोसिएशन ऑफ सस्क्यूलर डिसट्रॉफी के एशिया के सबसे बड़े अस्पताल '**मानव मंदिर**' की स्थापना की। 2004 में उन्हें राष्ट्रपति महोदय ने दिव्यांगों के कल्याण के लिये **राष्ट्रीय एवार्ड** से सम्मानित किया था। व्हील चेयर पर वे अपने संघर्ष के बारे में कहती हैं, कि जब तक हम मुखर नहीं होंगे तब तक चीजें आगे नहीं बढ़ेंगी।
इंडिया टुडे – फरवरी 2017

राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त अग्रबंधु (यह सूची संक्षिप्त है)

1. **पद्मविभूषण डा. बी. के. गोयल** – चिकित्सा जगत में तीन नागरिक उच्च अलंकारों पद्मश्री, पद्मभूषण तथा पद्मविभूषण से सम्मानित होने वाले डा. बाल कृष्ण गोयल राष्ट्रपति व राज्यपालों जैसे उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों के मानद चिकित्सक रहे। चिकित्सा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिये उन्हें ''**राजीव गांधी रत्न पुरस्कार**'' दिया गया। आप मुंबई के ''**शेरिफ**'' भी रह चुके हैं। देश-विदेश में हृदय रोग विशेषज्ञ के रूप में प्रसिद्ध डा. गोयल का जन्म, सांभरलेक-राजस्थान में 19 नवम्बर 1934 को हुआ था। आप जे. जे. ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल एंड ग्रांट मेडिकल कॉलेज, मुंबई के विभागाध्यक्ष भी रहे। 2007 में उनका नाम देश के उपराष्ट्रपति के लिये भी प्रस्तावित किया गया था।

   प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डा. त्रेहन डा. बी. के. गोयल को ''फादर फिगर फॉर कार्डियोलॉजिस्ट'' बताते हैं। डा. त्रेहन के अनुसार कार्डियोलॉजी में उनका समर्पण अनूठा रहा है, **कार्डियोलॉजी के आधुनिक स्वरूप को उन्होंने ही देश में प्रचलित किया था।** जिन लोगों का जमाना फैन है, वे डाक्टर गोयल के फैन रहे हैं, उनमें दिलीप कुमार, सुनील दत्त का ईलाज भी डा. गोयल ने ही किया था। उनके भाई श्रीकृष्ण गोयल उत्तरप्रदेश में चार बार विधायक रहे।

2. **पद्मभूषण रामनारायण अग्रवाल** – विज्ञान मणि पुरस्कार, मैन ऑफ द ईयर, अंतरिक्ष विज्ञान एवार्ड, चंद्रशेखर सरस्वती राष्ट्र गौरव सम्मान आदि।

3. **पद्मभूषण डा. जयकृष्ण** – शांति स्वरूप भटनागर, नेचुरल डिजाइन, मुदगल पुरस्कार, पद्मभूषण आदि।

4. **पद्मभूषण हरिशंकर सिंघानिया** – 2005 में स्वीडन के राजा ने आपको देश के सर्वोच्च सम्मान ''रायल ऑर्डर'' तथा ''लाइफ टाईम एचीवमेंट अवार्ड'' से सम्मानित किया।

5. **पद्श्री डा. के. के. अग्रवाल** – कार्डियोलॉजिस्ट और हार्ट केयर फाउंडेशन के अध्यक्ष तथा इंडियन मेडिकल असोसिएशन के जनरल सैकेट्री, आई.एम.एम. के वाईस प्रेसिडेंट। डा. के.के. अग्रवाल को हार्ट ट्रीटमेंट के क्षेत्र में हार्ट अटैक के लिये क्लॉट डिजॉल्विंग थेरेपी और इकोकॉर्डियोग्राफी के लिये कलर डॉप्लर के नए प्रयोग करने का योगदान जाता है। पुरस्कार – पद्श्री, डा. बी.सी. राय नेशनल एवार्ड, डीएसटी नेशनल साइंस कम्यूनिकेशन अवार्ड, विश्व हिंदी सम्मान, गोल्ड मेडलिस्ट और **लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड होल्डर** सीआरपी 10 में।

6. **डा. यतीश अग्रवाल** – चिकित्सा जगत में विशेष स्थान है। विज्ञान भूषण सम्मान, आत्माराम एवार्ड, डा. मेघानाथ साह एवार्ड, शिक्षा एवार्ड, राष्ट्रीय विज्ञान एवार्ड, हिंदी अकादमी साहित्य सम्मान, इंदिरा गांधी नोबल एवार्ड, राजीव गांधी नोबल अवार्ड व इंडियन कौंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च एवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है। आप 1980 से हिंदी

और अंग्रेजी की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में मेडिकल और पब्लिक हैल्थ संबंधी विषयों पर लिखते आए हैं। हिंदी-अंग्रेजी में उनकी 47 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। डा. यतीश अग्रवाल फॉउंडेशन फॉर डिटेक्शन ऑफ अर्ली गैस्ट्रिक कार्सिनोमा, टोकियो के इंटरनैशनल फैलो तथा डब्ल्यूएचओ और कई नैशनल व इंटरनैशलन संस्थानों के सलाहकार रह चुके हैं।

7. **पद्मश्री डा. प्रेम प्रकाश गोयल** – विक्रम साराभाई रिसर्च एवार्ड, एयरोनोटिकल सोसायटी ऑफ इंडिया एवार्ड, कल्पना चावला स्मारक पुरस्कार, विज्ञान गौरव, वीएएचआई रिसर्च एवार्ड, रामानुज एवार्ड, आउटस्टेडिंग अचिवमेंट एवार्ड ऑफ इसरो, महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय एवार्ड, ओमप्रकाश भसीन एवार्ड।
8. **पद्श्री अशोक झुझनुवाला** – भारत के प्रत्येक गांव को टेलीफोन व इंटरनेट से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका। पुरस्कार – डा.विक्रम साराभाई रिसर्च, शांतिस्वरूप भटनागर, राजस्थान श्री, प्रो.एस.एन.मिश्रा मेमोरियल, सिलिकोन इंडियन लीडरशिप, पद्मश्री आदि।
9. **पद्मश्री प्रो. डा. पवनराज गोयल** – राष्ट्रपति जी के मानद चिकित्सक रहे, चिकित्सा में उतकृट योगदान के लिये आपको हिंद गौरव, हिंद रत्न, उद्योग रत्न, समाजश्री, राष्ट्र गौरव पद्मश्री से सम्मानित।
10. **डा. आर. के. अग्रवाल** – चिकित्सा क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु डा.वी.सी.राय पुरस्कार, अंतर्राष्ट्रीय रोटरी एवार्ड, महाराणा मेवाड़ सम्मान, भारतीय विकलांग एवार्ड, सेठ द्वारिका प्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार।
11. **डा. एम. विजय गुप्ता** – भारत व कई अन्य देशों में मतस्य पालन के क्षेत्र में, प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक, सीओल दक्षिण कोरिया में ''सुनहाक शांति पुरस्कार'' से सम्मानित।
12. **अरविंद केजड़ीवाल** – रमन मैगसेसे पुरस्कार – 2006, (एशिया का नोबेल पुरस्कार)
13. **अंशु गुप्ता** – रमन मैगसेसे पुरस्कार – 2015
14. **अरविंद कुमार गोयल** – अनमोल रत्न एवार्ड, राजीव गांधी एकता एवार्ड, आइफा अवार्ड
15. **संजीव गोयनका** – बंग विभूषण (बंगाल का सर्वोच्च नागरिक सम्मान)
16. **ए. के. सिंघल** – द इंडिया सी. एफ. ओ. एवार्ड
17. **डा. बी. एम. सिंघल** – 27 वां रामेश्वर दास बिड़ला नेशनल एवार्ड
18. **डा. राहुल जिंदल** – आउटस्टैंडिंग अमेरिकन बाय चॉइस अवार्ड (अमेरिकी स्वास्थ्य क्षेत्र में असाधारण योगदान के लिए) वे वर्जिनिया के मिलिट्री मेडिकल सेंटर में ट्राँसप्लांट सर्जन हैं।
19. **डा. अजय के. अग्रवाल** – ब्लेकमहन – मूडी आउटस्टैंडिंग प्रोफेसर एवार्ड
20. **रमेश अग्रवाल** – गोल्ड मैंन एनवायरमेंट प्राइज (पर्यावरण के लिए विश्व का सर्वोच्च पुरस्कार) इस पुरस्कार को ग्रीन नोबेल कहा जाता है। पुरस्कार में 1.75 लाख डालर प्रदान किए गए। यह पुरस्कार सैन फ्रांसिस्को स्थित गोल्डमैन एनवायरर्नमेंट फाउंडेशन की ओर से

दिया जाता है।

21. **अनिल बंसल** – चौधरी चरण सिंह कृषि पुरस्कार
22. **बुलाकीदास अग्रवाल** – महाराणा मेवाड़ सम्मान (मानव सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए)
23. **विपुल गोयल** – पर्यावरण रक्षा सम्मान (2 लाख 50 हजार पौधे लगाने के लिए लंदन में सम्मानित किया गया।)
24. **डा. रामकिशोर अग्रवाल** – शिक्षा रत्न एवार्ड, डा. राधाकृष्णन सम्मान, गौरव श्री सम्मान, मेधा श्री सम्मान, भामाशाह सम्मान आदि अनेक सम्मान।
25. **रश्मि मित्तल** – मदर टेरेसा सद्भाभावना एवार्ड (शिक्षा के क्षेत्र में)
26. **प्रोफेसर वीरबाला अग्रवाल** – भारत निर्माण पुरस्कार (जनसंचार के क्षेत्र में)
27. **पद्श्री प्रो. डा. पवनराज गोयल** – हिंदी गौरव, हिंदी रत्न, उद्योग रत्न, समाज श्री, राष्ट्र गौरव आदि।
28. **प्रोफेसर संजय मित्तल** (एरोस्पेस इंजी.) – घनश्यामदास बिड़ला पुरस्कार–2015 (विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिए)
29. **चित्रा गर्ग** – राजभाषा गौरव पुरस्कार, बाल साहित्य सम्मान व भारतेंदु हरिशचंद्र पुरस्कार
30. **उर्मिला रूंगटा** – सिलवर एलीफंट पुरस्कार (स्काउटिंग में उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए)
31. **कृष्णा अग्रवाल** – नेहरू साक्षरता पुरस्कार
32. **एलिस गर्ग** – महाराणा फाउंडेशन पुरस्कार (राष्ट्रीय स्तर पर नारी शिक्षा व शिशु संरक्षण में उल्लेनखनीय कार्य)
33. **केदारनाथ अग्रवाल** – सोवियत लैंड पुरस्कार, साहित्य अकादमी सम्मान, हिंदी संस्थान पुरस्कार, तुलसी पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार आदि।
34. **डा शशि भूषण सिंघल** – विद्याभूषण सम्मान
35. **प्रो. रामकुमार बंसल** – आत्माराम पुरस्कार
36. **डा. हर्षवर्धन** – ह्यूमन केअर अवार्ड ऑफ मिलियंस से सम्मानित ।
37. **डा. सुभाष गर्ग** – भारत एक्सीलैंसी एवार्ड
38. **डा. विनय अग्रवाल** – डा. वी. सी. राय पुरस्कार
39. **डा. ए. के. गुप्ता** – होम्योपैथी में अंतरराष्ट्रीय हैनीमेन एवार्ड
40. **डा. एम. एल. अग्रवाल** – आर.सी.हेर एवार्ड ऑफ एक्सीलैंसी (अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्व मानसिक संगठन द्वारा)
41. **डा. हरीश अग्रवाल** (विज्ञान लेखक) – डा. आत्माराम पुरस्कार व विज्ञान भास्कर पुरस्कार
42. **डा. संतोष मित्तल व डा मीनू अग्रवाल** – मेदिनी पुरस्कार

43. **घमंडी लाल अग्रवाल** – पं. भूप नारायण बाल साहित्य पुरस्कार (आपके बाल साहित्य पर कुरूक्षेत्र विश्व विद्यालय द्वारा शोध भी किया जा चुका है।)
44. **श्रेया अग्रवाल** – विश्व निशानेबाजी चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व कर, आपने ''एक स्वर्ण'' और ''दो कांस्य पदक'' जीत कर देश का नाम रोशन किया। आपको मध्यप्रदेश के प्रतिष्ठित पुरस्कार ''एकलव्य पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया।
45. **वी.एस.अग्रवाल, कलकत्ता** – सन् 1994 का 'जमना लाल बजाज पुरस्कार', ग्रामीण क्षेत्रों के विकास एवं प्रौद्यौगिकी के क्रियान्वयन के लिये दिया गया जिसमें दो लाख रूपये, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। आपने 1978 से निरंतर कृषि क्षेत्र में प्रयोग किये, जिससे प.बंगाल में कृषि उत्पादन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया।
46. **श्री एस. के. गर्ग** – भवन निर्माण के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिये ''प्रथम'' ''राजीव गांधी श्रेष्ठता पुरस्कर'' 1991 से पुरस्कृत किया गया।
47. **श्रीमती पार्वती अग्रवाल** – को उनकी कृति ''उजाले दूर नहीं'' के लिये कमला गोईन्का फाउंडेशन द्वारा आयोजित वर्ष 2017 का ''बाबूलाल गोईन्का हिंदी साहित्य पुरस्कार'' – दिया गया।
48. **रमेश गुप्त 'नीरद'** – चैन्नई के गणमान्य व हिंदी सेवी साहित्यकार व पत्रकार – वर्ष 2017 का ''बाबूलाल गोईन्का हिंदी साहित्य सम्मान'' प्रदान किया गया।
49. **स्व. रमेश कुमार मंडावाला, अदम्य साहस के धनी** – 18 वर्ष की उम्र में उन्होंने अपनी जान पर खेल कर एक महिला की जान बचाई। भारत के राष्ट्रपति जी द्वारा आपको **मरणोपरांत ''जीवन रक्षक पदक''** से सम्मानित किया।
50. **नित्यानंद चिड़ीपाल** – 1995 में आपको ''सार्वजनिक बालसेवा राष्ट्रीय पुरस्कार'' राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा जी ने दिया। इसमें आपको दो लाख रूपये व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।
51. **कृष्ण कुमार अग्रवाल** – राष्ट्रीय एकता व अखंडता के प्रति असाधारण योगदान के लिये योजना आयोग द्वारा ''इंदिरा गांधी प्रियदर्शनी एवार्ड–1994'' से सम्मानित किया गया।
52. **जयकिशन अगवाल** – प्रज्ञाचक्षु श्री जयकिशन अग्रवाल को सन् 2003 में श्रेष्ठ सामाजिक साहसिक कार्य के लिये दिल्ली राज्य के 11वें **''रेड एंड व्हाइट बहादुरी पुरस्कार''** से सम्मानित किया गया। इससे पूर्व भी आपको दिल्ली प्रशासन द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।
53. **डा. सुनील कुमार अग्रवाल** – अमेरिका में प्रतिवर्ष युवा वैज्ञानिकों को ''प्रेसीडेंट फेकल्टी फेलो एवार्ड'' राष्ट्रीय एवार्ड से सम्मानित किया जाता है। राष्ट्रपति स्वंय यह पदक प्रदान करते हैं। डा. सुनील कुमार अग्रवाल को यह पदक उनको श्रेष्ठ अध्यापन और मैकेनिकल इंजीनियरिंग में अनुसंधान के लिये 1994 में मिला था।

54. **श्रीनारायण अग्रवाल** – महात्मा गांधी की 125वीं जयंती पर तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिंहराव जी ने ''गांधी सद्भावना पुरस्कार'' संगीत के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिये प्रदान किया। आपने जाने-माने गायक डा. बालकृष्ण मूर्ति के भजनों को नये राग में गाया है। आपको स्काउटिंग के क्षेत्र में राष्ट्रपति पदक भी प्रदान किया गया है। आप आगरा विश्वविद्यालय से हिंदी में स्वर्ण विजेता भी रहे हैं।

55. **धर्मपाल गर्ग** – तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे.अब्दुल कलाम जी द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर आपको ''गृहरक्षा एवं नागरिक सुरक्षा पदक'' से सम्मानित किया।

56. **डॉ. मोहित गर्ग**, आईपीएस, बीजापुर – 2018 में छत्तीसगढ़ विधान सभा चुनाव में अनुकरणीय तरीके से पूरी मशीनरी और मतदाताओं को सिक्यूरिटी प्रदान करने के लिये राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद जी ने ''नेशनल एवार्ड'' से सम्मानित किया।

57. **डा. गोपाल अग्रवाल,** नागपुर (मशहूर भजन गायक एवं भक्ति संगीत के आचार्य) – ''विदर्भ रत्न'' से सम्मानित। उनके द्वारा संपादित धार्मिक ग्रंथ श्री शाकम्भरी मंगल पाठ की पुस्तक व ऑडियो सी.डी. व उनकी आवाज में गाये भक्ति गीतों के तीन ऑडियो एलबम और संस्कार एवं सत्संग टीवी चैनल पर गाये भक्ति गीतों की वीडियो सी.डी. मंत्री जी को भेंट की गई।

58. **अमित अग्रवाल** – आगरा कॉलेज के एनसीसी अधिकारी लेफ्टीनेंट अमित अग्रवाल को उनकी उपलब्धियों के लिये प्रदेश के ''सर्वश्रेष्ठ एनसीसी अधिकारी'' के रूप में राज्यपाल राम नाईक जी द्वारा सम्मानित किया गया।

59. **श्रीनारायण अग्रवाल** – म.गांधी की 125वीं जयंती पर पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिंहराव जी द्वारा ''सद्भावना पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया। आपको यह पुरस्कार संगीत के क्षेत्र में प्रदान किया गया। आपने क्लासिकल संगीत के जाने-माने गायक पद्मविभूषण डा. बालमूर्ति कृष्ण के भजनों को नये राग में गाया। स्काउटिंग में उल्लेखनीय कार्य के फलस्वरूप आपको प्रथम प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू जी द्वारा ''राष्ट्रपति पदक'' प्रदान किया गया। आपने ही अग्रोहा के गीतों की, महाराजा अग्रसेन तथा कुल देवी महालक्ष्मी से संबंधित प्रथम कैसिट का ''निर्माण'' किया।

60. **मयंक अग्रवाल, क्रिकेटर** – द. अफ्रीका के खिलाफ दोहरा शतक लगाने के कारण आपको वर्ष 2020 में ''**सर्वश्रेष्ठ पदार्पण अवार्ड**'' से सम्मानित किया गया।

61. **प्रो. (डा.) कृष्ण अवतार गोयल, जोधपुर** – आपको इंटरलेशनल अकादमी फॉर एक्सीलेंट रिसर्चर के अंतर्गत ''एक्सीलेंट रिसर्चर अवार्ड-2020'' प्रदान किया गया।

62. **सूर्यभान गुप्त, गीतकार और शायर** – आपको वर्ष 2018 में राष्ट्रीय स्तर का **पहला जावेद अख्तर साहित्य सम्मान** भोपाल में आयोजित समारोह में प्रदान किया गया। यह सम्मान पाने वाले गुप्त हिंदी गजल परम्परा के शुरूआती दौर के प्रमुख शायर हैं। सम्मान के अंतर्गत एक लाख की नगद राशि व प्रशस्ति पत्र दिया गया।

हिंदी साहित्य में विशेष उपलब्धि प्राप्त (संक्षिप्त में)

हिंदी, संस्कृत, ब्रज, खड़ी बोली, असमिया, उड़िया, राजस्थानी, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं में साहित्य और इतिहास का सृजन अनेक अग्रबंधुओं ने किया है। यह सूची हजारों में है। इस क्षेत्र में अनेक उपलब्धियां अग्रबंधुओं ने प्राप्त की हैं, अनेक कीर्तिमान स्थापित किये हैं, जिन पर गर्व किया जा सकता है। अगली पुस्तक का लेखन इन्हीं ख्याति प्राप्त साहित्यकारों, इतिहासकारों, लेखक, कवियों आदि पर किया जाएगा।

1. **बाबू गोपाल चंद्र उपनाम गिरधरदास** – हिंदी भाषा के **''प्रथम मौलिक नाटककार''**, **''नहुष''** नामक नाटक के रचनाकार, यह हिंदी भाषा का पहला नाटक था। गोपालचंद्र बड़े ही विद्वान थे। इन्होंने लगभग 40 ग्रंथों की रचना की। इनके सरस्वती पुस्तक संग्रहालय में बड़े-बड़े अमूल्य ग्रंथों का संग्रह था। उस समय बनारस के कमिश्नर गविन्स ने लिखा था कि ''बाबू गोपालचंद्र फरिश्ता हैं, जो पंख काटकर स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरा दिए गये हैं।'' इन्हीं के यशस्वी पुत्र थे भारतेंदु बाबू हरिशचंद्र।
2. **लाला श्रीनिवास दास** – हिंदी के **''पहले उपन्यासकार''**। आपका **''परीक्षागुरू''** हिंदी का पहला उपन्यास था। यह सन् 1882 में लिखा गया।
3. **भारतेंदु हरीशचंद्र** – **आधुनिक खड़ी बोली व हिंदी गद्य व साहित्य के जन्मदाता** तथा अग्रसेन साहित्य के पहले लेखक। आपने 105 ग्रंथों का निर्माण किया व अग्रवालों की उत्पत्ति नामक पहली पुस्तक सन् 1871 में लिखी। मात्र 34 वर्ष की आयु में आपका देहांत हो गया।
4. **डा. रघुवीर** – उच्चकोटि के विद्वान, भाषाविद् तथा **''हिंदी कोश''** के रचनाकार, भारतीय संविधान सभा के सदस्य, श्रेष्ठ सांसद, राष्ट्रभाषा हिंदी के अनन्य समर्थक। आप जनसंघ के अध्यक्ष भी रहे ।
5. **जगन्ननाथ दास** ''रत्नाकर'' – हिंदी साहित्य के नक्षत्र। हिंदी फारसी के उत्कृष्ट विद्वान। महाकवि सूरदास की ब्रजकाव्य धारा को आगे बढ़ाने में विशेष योगदान।
6. **पद्मभूषण डा. वासुदेवशरण अग्रवाल** – साहित्य के प्रकांड पंडित आपने मात्र 14 वर्ष की आयु में पाणिनी अष्टाधायी पर अनुसंधान किया। 1941 में अपना शोध ग्रंथ 'इंडिया एज नोन टू पाणिनी' पूरा किया। आपने 90 ये अधिक पुस्तकें, 3500 से अधिक लेख लिखे। रामायण व महाभारत के प्रमाणिक विद्वान थे।
7. **पद्मभूषण रायकृष्णदास** – आधुनिक हिंदी गद्य गीत के प्रवर्तक, कवि एवं साहित्य जगत की महान् विभूति। मात्र 8 वर्ष की आयु में गद्य गीत का लेखन आरंभ किया। 15 वर्ष की आयु में पूर्ण रूप से साहित्य लेखन आंरभ कर दिया। अनेक कविता संग्रह, कहानी संग्रह, भारत की मूर्ति कला, और चित्रकला पर पुस्तकें भी लिखीं।
8. **बालमुकुन्द गुप्त** – साहित्यिक जीवन उर्दू भाषा से आंरभ किया। बाद में हिंदी, उर्दू तथा

ब्रज भाषा साहित्य लेखन में निष्णात साहित्यकार रहे।

9. **पद्मभूषण विष्णु प्रभाकर** – आपकी गणना हिदी के प्रसिद्ध साहित्कारों, उपन्यासकारों एवं नाटककारों में होती है। आपने 10 उपन्यास,17 नाटक, 17 एकांकी संग्रह, 4 जीवनी ग्रंथ, 18 स्मरण संकलन, चार यात्रा वृतांत तथा अनेक पुस्तकों की रचना की। आवारा मसीहा आपकी लोकप्रिय कृति थी। ज्ञानपीठ, मूर्तिदेवी, साहित्य अकादमी, राष्ट्रीय एकता, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, श्लाका सम्मान, पद्मभूषण आदि सम्मानों से सम्मानित।
10. **पद्मभूषण दिनेशनंदिनी डालमिया** – महत्वपूर्ण काव्य कृतियां, गद्य तथा अनेक उपन्यास लेखिका। साहित्य क्षेत्र में विशेष योगदान के लिये पद्मभूषण से सम्मानित।
11. **बाबू गुलाबराय** – हिंदी के प्रसिद्ध समालोचक, निबंधकार, लेखक। लगातार 50 वर्षों तक साहित्य सृजन। आपके सम्मान में भारत सरकार ने 5 रूपये का **डाक टिकट** जारी किया है।
12. **इंद्रचंद्र शास्त्री (सिंघल)** – सन् 1967-69 में आपने धर्म और आधुनिक मनुष्य पर शोध किया। उन्होंने लगभग 70 पुस्तकें और 600 से अधिक शोध पत्र लिखे। हिंदी अकादमी द्वारा ''साहित्य सेवा सम्मान'', दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा ''साहित्य रत्न अलंकरण'', 15 अगस्त 1986 को राष्ट्रपति जी द्वारा ''सम्मान प्रशस्ति पत्र'' दिया गया। आपके सम्मान में उनके निवास स्थान शक्तिनगर के नागिया पार्क से विश्वविद्यालय तक की सड़क का नाम ''इंद्रचंद्र शास्त्री मार्ग'' रखा गया। 03 नवम्बर 1986 को आपका निधन हुआ। आपके सम्मान में 27 मई 2004 को 5/- का ''**डाक टिकट**'' जारी किया गया।

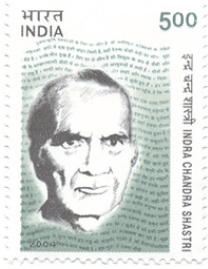

13. **हंसराज रहबर** (गोयल)- मार्क्सवादी लेखकों में अग्रणी स्थान। 'बेनकाब ग्रंथमाला' हिंदी जगत में ख्याति प्राप्त।
14. **डा. भेरूलाल गर्ग** – बाल साहित्य के प्रसिद्ध लेखक। कहानीकार। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित।
15. **गोविंद अग्रवाल** – जाने माने इतिहासकार, आपके 350 शोध पत्र प्रकाशित हुए व राजस्थानी **कथा कोश** (दो खंड), राजस्थानी लोक कथांवा, राजस्थानी लोकगीत, राजस्थानी कहावत कोश सहित 22 पुस्तकों का लेखन किया।
16. **केदारनाथ अग्रवाल** – आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख कवि व साहित्यकार, साहित्य में प्रगतिवादी आंदोलन के प्रर्वतक, आपकी रचनाओं का अनेक विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। सोवियत लैंड पुरस्कार, साहित्य अकादमी सम्मान, हिंदी संस्थान पुरस्कार, तुलसी पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार आदि से सम्मानित।
17. **वेद अग्रवाल** – 250 से अधिक उपन्यास, विभिन्न विषयों पर 28 पुस्तकें, लघु कथाएं, कहानियां, फिल्म पटकथाओं का लेखन। हिंदी वांग्मय पर शोध।

18. **मृदुला गर्ग** – भारत की ख्याति प्राप्त उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार आदि। ''**व्यास सम्मान**'' से सम्मानित मृदुला गर्ग को उनके हिंदी उपन्यास ''**मिल जुल मन**'' के लिए ''**साहित्य अकादमी पुरस्कार**'' प्रदान किया गया। इस पुरस्कार में एक लाख रूपये नकद, शॉल व स्मृति चिह्न प्रदान किया जाता है। अब तक इन्होंने अनेक उपन्यास लिखे हैं।
19. **शिवचंद्र भरतिया** – राजस्थानी भाषा के मूर्धन्य साहित्यकार, कवि, निबंध लेखक एवं पत्रकार। आपने हिंदी में 17, मराठी में 13, मारवाड़ी में 9, संस्कृत में 3 ग्रंथों की रचना की।
20. **भारत भूषण अग्रवाल** – नई कविता के जनक, ''साहित्य अकादमी पुरस्कार'' से सम्मानित।
21. **डा. लाड़लीनाथ रेणु** – वैदिक साहित्य के विद्वान। आपकी अनेक रचनाओं का विदेशी भाषा में अनुवाद हुआ है।
22. **डा. गिरिजाशंकर अग्रवाल** – गीत, गजल, एकांकी, निबंध, हास्य-व्यंग्य आदि के लेखक, तीन हिंदी शोध ग्रंथ प्रकाशित।
23. **जयप्रकाश भारती** – बाल साहित्य के ख्याति प्राप्त लेखक, प्रसिद्ध पत्रिका ''नंदन'' के संपादक रहे।
24. **बेरिस्टर चंपतराय जैन** – जैन साहित्य के प्रसिद्ध लेखक, 140 से अधिक ग्रंथों की रचना आपने की है।
25. **शिवकुमार गोयल** – हिंदी के साहित्यकार व लेखक।
26. **डा. शशिभूषण सिंघल** – हिंदी के प्रसिद्ध कवि, साहित्यकार एवं लेखक। विद्याभूषण सम्मान से सम्मानित।
27. **डा.ब्रजभूषण गुप्ता** – हिंदी के जाने-माने साहित्यकार – मशहूर नाटक ''उजड़ा हुआ महाविद्यालय'' के लिये आपको ''-फणीशवरनाथ रेणु पुरस्कार'' दिया गया। इससे पूर्व आपको तीन राष्ट्रीय पुरस्कार, अकादमी पुरस्कार तथा अनेक राज्य स्तरीय एवं संस्थागत पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। दूरदर्शन के अनेक धारावाहिकों का लेखन आपने किया है। 16 अक्टूबर 1994 को जी.टी.वी.पर प्रदर्शित ''महाराजा अग्रसेन समतावाद के सूत्रधार'' का लेखन आपने ही किया था। आप अग्रोहा विकास ट्रस्ट के ''दर्पण पुरस्कार'' से भी सम्मानित हो चुके हैं।
28. **डा. मोहन लाल गुप्ता**, जोधपुर – राजस्थान के जाने-माने इतिहासकार, साहित्यकार, कहानीकार, नाटककार। इतिहास की अनेक पुस्तकें आपने लिखीं हैं। महाराणा कुंभा सम्मान, गौरव अलंकरण, घनश्याम सर्राफ पुरस्कार, आदि अनेक सम्मानों से सम्मानित। 77 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित, आकाशवाणी से वार्ताएं प्रसारित, यू ट्यूब पर हिंदू धर्म की कथाओं का प्रसारण, इससे डेढ़ लाख से अधिक लोग जुड़े हुए हैं।
29. **श्रीमती सिम्मी जैन** – आपने एनसाइक्लोपिडिया ऑफ इंडियन वूमेन दी एजेज, चार भागों में लिखा। इस विश्व कोश में प्राचीन भारत, मध्यकाल, स्वतंत्रता संग्राम व आधुनिक युग की

महिलाओं का वर्णन है।

30. **शीला झुंझनुवाला** – पत्रकार व हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध लेखिका। पद्श्री सम्मान प्राप्त।

31. **सुधा गोयल** – प्रसिद्ध कथाकार, व उपन्यासकार। सहस्त्राब्दी विश्व हिंदी सम्मेलन द्वारा सम्मानित। छः सौ से अधिक रचनाएं, उपन्यास, कहानी संग्रह, काव्य संग्रह आदि प्रकाशित।

32. **अलका सरावगी** – आपके अनेक उपन्यासों का भारत की तथा विश्व की कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। साहित्य अकादमी व श्रीकांत पुरस्कार से सम्मानित।

33. **बिंदू अग्रवाल** – याद और बातें चर्चित पुस्तक की लेखिका, कहानीकार।

34. **स्नेह अग्रवाल** – बाल साहित्य की प्रसिद्ध लेखिका, भारतीय बाल कल्याण संस्थान से पुरस्कृत।

हिंदी अकादमी पुरस्कार प्राप्त अग्रबंधु (हिंदी में लेखन के लिए)

क्र.सं.	वर्ष	नाम	कृति
1.	1956	वासुदेव शरण अग्रवाल	पद्मावत संजीवनी – व्याख्या
2.	1978	भारत भूषण अग्रवाल	उतना वह सूरज है – काव्य
3.	1986	केदारनाथ अग्रवाल	अपूर्वा – काव्य
4.	1993	विष्णु प्रभाकर	अर्द्धनारीश्वर – उपन्यास
5.	2001	अल्का सरावगी	कलि कथा वाया बाईपास – उपन्यास
6.	2005	निर्मला जैन	रंगमंच – अनुवाद के लिए
7.	2009	ओम नारायण गुप्ता	अनुवाद के लिए
8.	2013	मृदुला गर्ग	मिलजुल – उपन्यास
9.	2015	शेरजंग गर्ग	बाल साहित्य में योगदान के लिए

सम्मानित उपाधियों से सम्मानित अग्रविभूतियां

सर (नाइट हुड)

1. **राइट ऑनरेबल सर शादीलाल, पी.सी.** मंगल गौत्र – 1920 में आपको पंजाब उच्च न्यायालय **लाहौर** का **मुख्य न्यायाधीश** नियुक्त किया गया । उल्लेखनीय है कि अंग्रेज राज में किसी भी भारतीय को पहली बार प्रधान न्यायाधीश का पद दिया गया। 1934 में आपको इंग्लैंड की प्रीवी कौंसिल की न्यायायिक समिति का सदस्य नियुक्त किया गया। आप पहले अग्रवाल थे जिनको सरकार की ओर से इतना बड़ा सम्मानित पद दिया गया। हरिद्धार में आपके पुत्रों ने अपनी माता के नाम पर **नारायणी धर्मशाला** का निमार्ण करवाया है।

2. **पंडित सर सीताराम,** गर्ग गौत्र – विख्यात राजनीतिज्ञ एवं विधिवेता और युक्त प्रांतीय लेजिस्लेटिव कौंसिल के भू. पू. अध्यक्ष, आपके पूर्वज मुगल शासन में कानूनगो थे, सम्राट का ''**शाही फरमान**'' भी आपके वंशजों के पास है। सार्वजनिक सेवाओं पर मुग्ध होकर ब्रिटिश सरकार ने आपको ''आनरेरी मजिस्ट्रेट'' का पद तथा राय साहब की उपाधि प्रदान की। सन् 1923 में आप रायबहादुर बनाए गए व 1930 में आपको नाइट हुड अर्थात् **सर** की उपाधि प्रदान की गई। 1921 से 1937 तक उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य तथा 1937 से 1949 तक अध्यक्ष रहे आपने अनेक सामाजिक संस्थाओं की स्थापना की व शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया, आप हिंदू विश्वविद्यालय बनारस के सदस्य भी रहे। आपके ही प्रयास से आगरा विश्वविद्यालय का प्रस्ताव पास हुआ। संस्कृत में आपकी अपरिमित योग्यता होने के कारण इलाहबाद यूनिवर्सिटी ने पंडित की उपाधि प्रदान की।

3. **सर गंगाराम** – पिता लाला दौलतराम जी अग्रवाल 1873 में आप इंजीनियर बने व लाहौर में नियुक्त हुए। ब्रिटिश सरकार ने आपको सी.आई.ई. की उपाधि प्रदान की व इसके पश्चात् एम.बी.ओ. की भी उपाधि प्रदान की। आपने अनेक बड़े शहरों की जल योजनाओं को मूर्त रूप दिया, अमृतसर–पठानकोट की रेल लाईन निर्माण की संपूर्ण योजना के सूत्रधार, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के निर्माण में आपका योगदान रहा इसके लिए पं. मदनमोहन मालवीय जी ने लिखा कि ' 'विश्वविद्यालय की इमारत का कोना कोना लाला गंगाराम का ऋणी रहेगा।''

4. **सर राजा मोती चंद, गोयल गौत्र** – आप वाराणसी के प्रथम मेयर थे। आप अजमलगढ़ के राज परिवार से संबंधित थे।

5. **सर हरिराम गोयनका** – आपको रायबहादुर, के.टी.सी.आई. तथा सर नाईट की पदवी से सम्मानित किया गया। जयपुर दरबार व सीकर रावराजा जी की ओर से भी आपको ताजीम का सम्माान प्राप्त था। मारवाड़ी समाज के उत्थान में आपका विशेष योगदान रहा।

6. सर पदमावत सिंघानिया, सिंघल गौत्र – महान् देशभक्त, शिक्षा प्रेमी एवं दानवीर। संविधान सभा के सदस्य। 1943 में आपको सर की उपाधि दी गई। आपने बड़े–बड़े शिक्षण संस्थानों, अस्पतालों मंदिरों तथा जे के इंस्टीनट्यूट ऑफ रेडियोलोजी, कैंसर रिसर्च व कमलापति सिंघानिया आदि अस्पालात की स्थापना की।

7. सर बद्रीदास गोयनका – आपको केटीसीआईई, रायबहादुर, सर नाइट आदि पदवियां मिलीं। आप अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ थे।

केसरे हिंद

1. सेठ लक्ष्मीनारायण बागला – बिंदल गौत्र – आपने रंगून, कोलकाता, चुरू आदि स्थानों में सार्वजनिक संस्थाओं का निर्माण किया। ब्रिटिश सरकार ने आपके इन महत्वपूर्ण कार्य के लिए केसरे हिंद की उपाधि प्रदान की।

2. डा. मोहनलाल – नैत्र चिकित्सा का कार्य आपने सेवा भाव से किया 1942 में इनकी महान सेवा को देखते हुए तत्कालीन गर्वनर ने इनको केसरे हिंद की पदवी से सम्मानित किया। भारत सरकार ने आपको 1956 में पद्श्री की पदवी से सम्मानित किया।

3. श्रीमती रानी रामकली (चंदौसी–यूपी) – आपने अनेक स्कूंल व कॉलेज खुलवाए। सन् 1913 में केसरेहिंद तथा सन् 1923 में सरकार ने आपको रानी की पदवी प्रदान की।

4. सेठ बैजनाथ गोयनका – सरकार ने सन् 1901 में केसरे हिंद व 1911 में देहली दरबार ने रायबहादुर की पदवी प्रदान की।

5. रायबहादुर लाला सखीचंद जैन, गर्ग गौत्र – केसरे हिंद गोल्ड मैडल से सम्मानित, भारत धर्म महामंडल की ओर से आपको बिहार भूषण और दयानिधि का पद दिया गया।

6. लेफ्टीनेंट कर्नल कांता प्रसाद – केसरे हिंद गोल्ड मेडल। – ब्रिटिश काल में।

विभिन्न – सम्मानित उपाधि

1.	लाला लाजपत राय	–	शेरे पंजाब
2.	डा.राम मनोहर लोहिया	–	अजात शत्रु
3.	बाबू शिवप्रसाद गुप्त	–	राष्ट्ररत्न
4.	पद्मश्री हनुमान बक्स कनोई	–	आधुनिक आसाम की ''कामधेनु''
5.	विश्वम्भर सहाय विनोद जी	–	पत्रकारों के ''पितामह''
6.	गणपनत राय धानुका	–	आधुनिक आसाम के ''पितामह''
7.	काका हाथरसी	–	हास्य रसावतार व हास्य कवि सम्राट
8.	श्री रामरिख मनहर	–	ठहाके बांटने वाले हास्य सम्राट
9.	मोती लाल केजड़ीवाल	–	संथाल–बिहार परगना के ''गांधी''
10.	प्रो. रामसिंह	–	दिल्ली केसरी
11.	संत पूनम देवी जी (अग्रवाल)	–	विदर्भ की ''मीरा''
12.	श्री हरिकिशन अग्रवाल	–	विदर्भ के नायक
13.	बाबू बालमुकुन्द गुप्त	–	हिंदी जागरण के ''अग्रदूत''
14.	डा.परमेश्वरी लाल गुप्त	–	आजमगढ़ के ''नेहरू''
15.	विनोद अग्रवाल	–	भजन सम्राट

उद्योग जगत में ''किंग'' के नाम से ख्याति प्राप्त अग्रबंधु

1. हनुमानबक्स कनोई – टी किंग, पूर्व राष्ट्रपति स्व. फखरूधीन अली अहमद जी तो हनुमानबक्स जी को आधुनिक आसाम की कामधेनु मानते थे।
2. बंशीधर जालान – जूट किंग
3. मोतीराम झुंनझुनवाला – सिल्वर किंग
4. रामनारायण रूईया व गोविंद राम सेकसरिया 1853 तक ''कॉटन किंग'' के नाम से प्रसिद्ध हो चुके थे।
5. सत्यनारायण रूईया – कॉटन किंग
6. बलदेव दास दूदेवाला – शेयर किंग
7. आर.पी. गोयनका – आद्यौगिक जगत में ''टेक-ओवर किंग'' के नाम से जाने जाते हैं।

:: खेल जगत ::

अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित, अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी

1.	सुरेश गोयल	– बेडमिंटन	1967
2.	सुभाष बी. अग्रवाल	– बिलियर्ड व स्कूनर	1983
3.	ओम बी अग्रवाल	– बिलियर्ड व स्कूनर	1984
4.	आशा अग्रवाल	– एथलिट (मैराथन)	1985
5.	संध्या अग्रवाल	– क्रिकेट	1986
6.	पुष्पेन्द्र कुमार गर्ग	– नौकायन	1990
7.	अशोक गर्ग	– कुश्ती	1999
8.	अभिजीत गुप्ता	– शतरंज	2013
9.	अंकुर मित्तल	– शूटिंग –	2018

(**नोट** – अभिनन श्याम गुप्ता– इलाहबाद, इन्हें, बेडमिंटन में अर्जुन पुरस्कार मिला, ये अग्रवाल नहीं हैं, माथुर वैश्य हैं।)

द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित (सर्वोत्कृष्ट खेल कोच के रूप में)

(खेल जगत का प्रतिष्ठित भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला पुरस्कार)

1.	सुभाष बी. अग्रवाल	–	स्कूनर व बिलियर्ड	2010
2.	अजय कुमार बंसल	–	हॉकी	2010
3.	संदीप गुप्ता (सिंघल)	–	टेबिल टेनिस	2019

राजीव गांधी खेल रत्न अवार्ड

1. लेफ्टीनेंट कमांडर पुष्पेन्द्र कुमार गर्ग – नौकायन 1994–95

अग्रबंधु मुख्य मंत्री

1. वृष भान(गर्ग) – पेप्सू राज्य के प्रथम उप मुख्यमंत्री व मुख्य मंत्री
   (PEPSU – पटियाला एंड ईस्ट पंजाब स्टेट यूनियन, यह राज्य 1948 से 1956 तक अस्तित्व में रहा तथा आठ प्रमुख शहरों को मिलाकर बनाया गया। 1956 में पेप्सू राज्य का विलय पंजाब में हो गया।)
2. बाबू बनारसी दास गुप्ता – उत्तर प्रदेश
3. श्री बनारसी दास गुप्त – हरियाणा – दो बार
4. श्री राम प्रकाश गुप्त – उत्तर प्रदेश
5. श्री रामकिशन गुप्ता – पंजाब
6. श्री अरविंद केजड़ीवाल – दिल्ली – तीन बार

अग्रबंधु राज्य पाल

1. पद्मविभूषण श्री धर्मवीर – पंजाब –हरियाणा, पश्चिमी बंगाल तथा मैसूर (कर्नाटक), एवं भारत सरकार के पूर्व केबिनेट सचिव रहे।
2. पद्मविभूषण श्री श्रीप्रकाश – असम, मद्रास तथा मुंबई व महाराष्ट्र
   (मुंबई के राज्यपाल रहते हुए आपने बड़ी कुशलता से महाराष्ट्र और गुजरात दो राज्यों की स्थापना करवाकर आंदोलन को राहत प्रदान की। नेहरू जी आपकी योग्यता के कायल थे और चाहते थे कि बंबई के राज्यपाल के पद से अवकाश के बाद वे भारत के उपराष्ट्रपति या विदेश में राजदूत का पद संभालें किंतु आपने स्वेच्छा से मना कर दिया। आप लाल बहादुर शास्त्री जी व कमलापति त्रिपाठी जी के राजनीतिज्ञ गुरू भी रहे।) अगस्त 1991 में अग्रवाल समाज के गौरव श्रीप्रकाश जी पर दूरदर्शन द्वारा हिंदी में वृत्त चित्र प्रसारित किया गया।
3. श्री मन्नानरायण – गुजरात
4. श्री प्रभुदास बी पटवारी – तमिलनाडू
5. श्री राम प्रकाश गुप्त – मध्यप्रदेश
6. श्री सुदर्शन अग्रवाल – उत्तराचंल (उत्तराखंड) व सिक्किम

(आप 1972 में राष्ट्रपति चुनाव के प्रभारी बनाए गए, 1981 से 1993 से सेकेट्री जनरल, राज्यसभा के रहे। तथा राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के तीन साल तक सदस्य रहे।)

7. श्री रघुकुल तिलक – राजस्थान
   (आप 1958 से 1960 तक राजस्थान लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष भी रहे।)
8. श्री नवरंग लाल टिबड़ेवाल – राजस्थान (कार्यवाहक राज्यपाल,राजस्थान के पूर्व मुख्य न्यायाधीश)
9. प्रोफेसर गणेशीलाल सिंघल – ओडिशा

संविधान सभा के सदस्य अग्रबंधु

1. श्री श्रीप्रकाश – केंद्रीय विधान सभा के सदस्य। केंद्रीय मंत्रीमंडल में वाणिज्य मंत्री, असम, महाराष्ट्र आदि के राज्यपाल तथा पाकिस्तान में भारत के प्रथम उच्चायुक्त।
2. डा. रघुवीर – उच्च कोटि के विद्वान, भाषाविद एवं कोषकार। भारतीय जनसंघ के पूर्व अध्यक्ष। राज्य सभा सांसद।
3. श्री प्रभुदयाल हिम्मसत सिंहका – सालीसीटर एवं विधिवेता, बंगाल विधान सभा में तीन बार तक विधायक, लोकसभा एवं राज्यसभा सांसद रहे। स्वाधीनता आंदोलन से लेकर गांधी, नेहरू, लालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इंदिरा गांधी, मोरारजी देसाई, राजीव गांधी तक के शासन के साक्षी। कोलकाता के जनजीवन के आठ दशकों तक प्रभावित करने वाले मुख्य व्यक्तित्व। 102 वर्ष की आयु में निधन।
4. नेमिशरण जैन – स्वातंत्रता सेनानी, 1913, 1930 व 1942 में जेलयात्रा, सांसद एवं उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य।
5. श्री पदमावत सिंघानिया – भारतीय ओद्यौगिक जगत के स्तंभ, आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका। सेठ दामोदर स्वरूप
6. डा. रामचंद्र गुप्ता 7. श्री घनश्याम सिंह गुप्ता 8. देशबंधु गुप्ता

व्यापार व उद्योग जगत

संपूर्ण मारवाड़ी समाज में उद्योग के क्षेत्र में ''**आगे**'' आने वालों में ''**अग्रवाल**'' प्रमुख रहे हैं। आजादी के पहले सन् 1700 से 1920 तक 520 मारवाड़ी फर्मों का अध्ययन करने से पता चला है कि इनमें **333 फर्में तो अग्रवाल जाति की ही थीं,** जिनके मालिकों का मूल निवास स्थान ''शेखावाटी'' था। हैदराबाद के नवाब के खजाने को मारवाड़ी संभालते थे, बल्कि पित्ती व गनेड़ीवाल तो ''कर निर्धारण'' का कार्य भी करते थे, जिसमें राजा गोविंद दास पित्ती का महत्वपूर्ण योगदान रहा। अग्रवंशी मिर्जामल पौद्दार जी ने तो पंजाब के राजा रणजीतसिंह जी

को कई बार ऋण दिया था। जबलपुर के राजा गोकुलदास पित्ती 800 गांवों की ''जमींदारी'' के मालिक थे। जम्बू प्रसाद अग्रवाल ने सहारनपुर जिले में 21000 एकड़ जमीन खरीदी थी। अधिकतर मारवाड़ी फर्में बैंकिंग, हुंडी और सर्राफा का व्यवसाय करती थीं। कर्नल टॉड ने 1832 में लिखा था, कि - भारत में 10 में से 9 व्यापारी तथा बैंकर मारवाड़ी समाज के थे। किसी भी जाने माने मारवाड़ी की हुंडी भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी सिकरती थी।

उन दिनों राजपूताना में डाक और तार की सुविधा नहीं थी, इसके बावजूद भी अफीम के भाव कलकत्ता से शेखावटी और अन्य क्षेत्रों में ''**चिलका की डाक**'' से आसानी से पहुंच जाते थे। इन स्थानों पर विशेष रूप से नियुक्त लोग सूर्य की किरणों को दर्पण द्वारा चमकाकर निश्चित संकेतों से सौदों की सूचना लेते-देते थे। रात को इन संकेतों का आदान-प्रदान बारूद के भभकों से या 'बाता' जलाकर किया जाता था।

पुस्तक - मारवाड़ी समाज - डा.डी.के.टकनेत

भारत में बैंकिंग व्ययवसाय की स्थापना में अग्रबंधुओं का योगदान

सदियों से ''वैश्य'' समुदाय अपनी व्यापारिक गूढ़ता, सूझबूझ व संपन्नता के लिये जाना जाता रहा है। पुराने समय में बनिये को ही **बैंक** माना जाता था। ऐसे अनेक वैश्य थे जिनके अलग-अलग स्थानों पर बैंक स्थापित थे, इनमें मारवाड़ी बनियों का बोलवाला था जिनमें भी अग्रवाल बनिये प्रमुख थे। अनेक अग्रवाल बैंकर का कार्य किया करते थे, जिनमें हुंडियां व टकसाल का कार्य प्रमुख था।

1. प्रथम भारतीय **मारवाड़ी बैंक** - इसके स्थापना औंकारमल सर्राफ व बलदेवराज दूदेवाला ने की।
2. **बैंक ऑफ इंडिया** - संस्थापक रामनारायण रूईया
3. ''**यूनिवर्सल बैंक ऑफ इंडिया**'' **तथा** '' **भारत बैंक लिमिटेड**'' - रामकृष्ण डालमिया जी ने पहले ''यूनिवर्सल बैंक ऑफ इंडिया'' की स्थापना की तथा बाद में ''भारत बैंक लिमिटेड'' की स्थापना की जिसकी ''शाखाए'' सारे देश में फैली हुई थीं। कालांतर में पंजाब नेशानल बैंक भी रामकृष्ण डालमिया के नियंत्रण में आ गया। राय बहादुर श्रीकृष्णदास 'धर्मसुधारक' (जन्म, सन् 1865) इसके **संस्थापक चेयरमैन** थे, आप '**पीपलस बैंक ऑफ इंडिया लिमिटेड**' के डायरेक्टर भी रहे थे, इन्होंने दिल्ली में 'हिंदू कॉलेज' की स्थापना भी की।
4. **हिंदुस्तान कामर्शियल बैंक लिमिटेड** - संस्थापक पद्मावत सिंघानिया व मंगतूराम जैपुरिया।
5. **पंजाब नेशलन बैंक** - लाला लाजपत राय जी ने इसकी स्थापना सन् 1895 में लाहौर में की।

6. **वैश्य कॉ-आपरेटिव बैंक लि., दिल्ली** – संस्थापक मास्टर लक्ष्मीयनारायण अग्रवाल।
7. **बनारस स्टेट बैंक** – ठाकुरदास जी साह ने इसकी स्थापना की (काशी नरेश की गारंटी होने के कारण यह बैंक अच्छा चला।)
8. **बाबू लक्ष्मीदास बी.ए.** – आप भी ''बनारस स्टेट बैंक'' के संस्थापकों में से एक थे तथा बैंक के डायरेक्टर भी रहे।
9. **दी बैंक ऑफ राजस्थान** – सह संस्थापक रवि जैपुरिया (अब आईसीआईसीआई)
10. **यूनियन बैंक की स्थापना** – मुंबई में अग्रवाल समाज के व्यापारियों द्वारा की गई।
11. **जोधपुर कॉमर्शियल बैंक** – राधाकृष्ण खेतान इस बैंक के डायरेक्टर नियुक्त हुए।
12. **ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स** – इसकी स्थापना संघी परिवार के रायबहादुर सोहन लाल (बंसल) द्वारा सन् 1943 में की गई थी। सर शादी लाल (मंगल) लाहौर हाईकोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस इसके प्रथम पांच निदेशकों में से एक थे।
13. **न्यू बैंक ऑफ इंडिया** – इसकी स्थापना सन् 1936 में की गई। डा. गणेशी लाल अग्रवाल एवं मुल्कराज अग्रवाल इसके प्रारंभिक छ: में से दो निदेशक थे। इसका पंजीकृत कार्यालय लाहौर में था।
14. **पद्मभूषण केशव प्रसाद गोयनका** – इंपीरियल बैंक के **प्रथम भारतीय अध्यक्ष** (वर्तमान में स्टेाट बैक ऑफ इंडिया)
15. **सर बद्रीदास जी गोयनका, के.टी.सी.आई.ई.** – रिजर्व बैंक के **डायरेक्टर**, प्रसिद्ध व्यवसायी और कलकत्ता विश्वविद्यालय के आनरेरी फैलो तथा अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ थे। भारत सरकार ने आपकी सेवाओं से प्रसन्न होकर रायबहादुर, सी. आई. ई., सर नाईट आदि उच्च पदवियां प्रदान कीं।
16. **लाला श्रीराम** – आपको रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के जनरल बोर्ड का **डायरेक्टर** नियुक्त किया गया।
17. **लाला जगमंदिर दास** – आापने अपने भारतीय ढ़ंग के बैंकिंग व्यापार को अंग्रेजी ढंग में परिवर्तित किया तथा सन् 1856 में मैसर्स भगवान दास बैंकर्स के नाम से देहारादून में **बैंक की शाखा खोली।** बहुत अधिक सफलता प्राप्त होने पर आपने अनेक स्थानों पर इसकी शाखाएं खोलीं, सन् 1930 में आपके बैंक की पूंजी 25 लाख थी।
18. **बाबू देवीप्रसाद खेतान** – 1925 में आपने **इंडियन चेम्बर ऑफ कामर्स की स्थापना** की। 1928 व 1930 में आप इसके अध्यक्ष रहे।
19. **रामेश्वर प्रसाद नेवटिया** – सैंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के **निदेशक** रहे।
20. **विमल जालान** – रिजर्व बैंक के गर्वनर एव राज्य सभा सांसद रहे।
21. **दिल्ली हिंदुस्तानी मर्केण्टाईल ऐसोसिएशन** – इसकी स्थापना में सन् 1893 में सेठ ''**रामलाल खेमका**'' ने सेठ सनेहीराम, सेठ रामप्रसाद, लाला बैनी प्रसाद, सेठ बक्शीराम

आदि के साथ मिलकर की। इसका मुख्य कार्यालय दिल्ली में था।

22. **सेठ चमुर्भुज** – पहले मारवाड़ी व्यापारी थे जिन्होंने ''**बीमा व्यवसाय**'' को संपूर्ण देश में फैलाया।

23. **भारत फायर एंड जनरल इंश्योरेंस लिमिटेड** – सेठ रामकृष्ण डालमिया ने की थी। इसका मुख्यालय दरियागंज, दिल्ली में था। इसकी शाखाएं लाहौर, लखनऊ, मुंबई, अहमदाबाद, मद्रास, कलकत्ता, कराची में थीं।

24. **द भारत इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड** – इस बीमा कंपनी की स्थापना अगस्त 1896 इं. में लाहौर में हुई थी, लाला हरिकिशन लाल इसके संस्थापक चेयरमैन थे। उस समय भी यह कंपनी नौ तरह की बीमा पॉलिसी करती थी। 1943 में इसके चेयरमैन सेठ रामकृष्ण डालमिया, साहु जैन (मित्तल) परिवार के दो भाई श्रेयांस प्रसाद वाईस चेयरमैन व साहू शांति प्रसाद डायरेक्टर इंचार्ज थे।

25. **लक्ष्मी बीमा कंपनी** – सन् 1920 में इसकी स्थापना लाला लाजपत राय ने लाहौर में की ।

अग्रबंधुओं के नाम से भारत में ''नगरों'' की स्थापना

डालमिया नगर, ओद्यौगिक – यह बिहार राज्य का सबसे पुराना तथा सबसे बड़ा औद्योगिक नगर है जो रोहतास जिले में सोन नदी के किनारे पर बसा हुआ है। यह भारत के सबसे बड़े और सबसे पुराने औद्योगिक कस्बों में से एक है। डालमिया नगर, सेठ रामकृष्ण डालमिया (गर्ग गोत्र) ने 1940 में बसाया। इनको सहयोग मिला अपने बेटे जयदयाल डालमिया तथा दामाद शांति प्रसाद जैन से। सीमेंट उद्योग के लिये ख्याति प्राप्त इस नगर में अनेक औद्योगिक इकाईयां हैं।

मोदी नगर, ओद्यौगिक – उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के इस नगर की स्थापना 1933 में रायबहादुर गुजरमल मोदी ने चीनी मिल लगाकर आरंभ की। सयम के साथ यहां भी अनेक उद्योगों की स्थापना की गई।

आगरा – अनेक विद्वानों ने लिखा है कि – महाराजा अग्रसेन ने अग्रोहा और आगरा बसाया। अग्रोहा में वे स्वंय 18 गणप्रतिनिधियों के साथ राज्य करते थे, तथा आगरा राज्य अपने भाई शूरसेन को सौंप दिया।

सहारनपुर – इस नगर को ''**साह रनवीर सिंह**'' ने बसाया था। आप अग्रवाल जैन थे, अकबर के समय शाही खजांची थे तथा शाही टकसाल के एक अधिकारी थे। उनके पिता रामसिंह जी राजमान्य व्यक्ति थे। साह रनवीर सिंह के पुत्र सेठ गुलाबराय थे तथा पौत्र सेठ हरचंद्र थे। इन दोनों ने दिल्ली के कूचा सुखानंद में एक **जैन मंदिर** बनवाया था।

रामगढ़ सेठान-शेखावाटी-राजस्थान – सेठों के नाम से पहचाने जाने वाले इस नगर को बंसल गोत्री सेठ चतुर्भुज पौद्दार जी ने सन् 1791 में बसाया था। यहां की आलीशान हवेलियां,

कलात्मक छतरियां तथा मंदिर यहां के अग्रवाल सेठों अमीरी व रूतबे की कहानियां अपने आप कहती हैं। अंग्रेज अधिकारी कैप्टन वेब ने अपनी पुस्तक में रामगढ़ के सेठों को सोने का अंडा देने वाली मुर्गी बताया था। राजदरबार में यहां के सेठों को पूरा सम्मान दिया जाता था। इस नगर की छतरियां भारत की सबसे बड़ी ओपन एयर आर्ट गेलेरी हैं। इस नगर के रूईया अग्रवाल सेठों ने यहां कॉलेज, स्कूल और अस्पताल बनवाये। एस्सार ग्रुप का रूईया परिवार इसी रामगढ़ सेठान का रहने वाला है।

शाह मनोहर दास (मुदगल) - आपने कोलकाता में ''मनोहर दास कटला'' तथा विशाल उद्यान की स्थापना की।

- इसी प्रकार -

1. **सेठ सीताराम (ऐरन)** - दिल्ली के चांदनी चौक क्षेत्र स्थित ''**सीताराम बाजार**'' के निर्माता, आप मूलत: चरखी दादरी-हरियाणा के निवासी थे। सेठ सीताराम मुहम्मदशाह रंगीला के समय खजांची थे। जब नादिरशाह के हमले में बादशाह का खजाना पूरी तरह खाली हो गया, तब इन्होंने शाह रंगीला को पांच लाख रूपये की मदद की। बादशाह ने इनके निवास स्थान के क्षेत्र को सीताराम बाजार तथा इनके दो भाईयों के नाम पर ''कूचा घासीराम'' व ''कूचा पातीराम'' नाम रखा। सीताराम जी का गोत्र ऐरन था, इन्होंने चरखी दादरी में एक लाख रूपये से एक बहुत गहरा तालाब बनवाया। मुगल काल में भारत की राजधानी दिल्ली में पांच ऐसे स्थान हैं, जो अग्रवाल विभूतियों के नाम से हैं, जैसे - **सीताराम बाजार, पटनीमल खिड़की, कूचा (गली) ख्याली राम, कूचा पाती राम, कूचा घासी राम।**
2. **राजा ख्याली राम बहादुर** - दिल्ली में मुगल बादशाह के गुप्तचर विभाग के प्रमुख थे। आप बिहार में राजा कलयाण सिंह के नायाब दीवान रहे। दिल्ली में आपके नाम का ''**कूचा ख्यालीराम**'' (सीताराम बाजार के पास) है। आपके पुत्र बालगोविंद हुए तथा इनके पुत्र **राजा पटनीमल बहादुर** (जन्म सन् 1770) हुए जिनके नाम से दिल्ली में ''**पटनीमल खिड़की**'' गली लेहस्वान, बाजार सीताराम में आज भी है। आपने अनेक जनहित कार्य किये। राजा पटनीमल ने सन् 1831 में बिहार में कर्मनाशा नदी के ऊपर नौबतपुर जिले में विशाल आकार के ''**पुल**'' का निर्माण करवाया, कांगड़ा में तालाब व बावड़ी, मथुरा में ''शिवताल'', हरिद्वार में कुशावर्त घाट व धर्मशाला, कुरूक्षेत्र में दो घाट व लक्ष्मी कुंड वृंदावन में धर्मशाला का निर्माण करवाया। आपके स्मारक के रूप में दिल्ली में पहाड़ी धीरज स्थित ''**गली पटनीमल**'', ''**पटनीमल की हवेली**'' जहां सूरज कन्या शिक्षालय चलता है।
3. **रायबहादुर लाला रामस्वरूप** - आपने सन् 1941 में दिल्ली की पुरानी सब्जीमंडी के चौराहे पर एक ''**घंटाघर**'' निर्माण करवाया जिसका नाम ''लाला रामस्वरूप टॉवर'' है। आपका जन्म दिल्ली में सन् 1899 में सब्जी मंडी गांव की गली महाजनान में हुआ जो

आजकल ''**गली रामस्वरूप**'' के नाम से मशहूर है।

4. **बंगाली मार्केट, दिल्ली** – लाला बंगाली मल लोहिया (1887–1937) के नाम पर है।
5. **लाजपत राय (गर्ग)** – के सम्मान में धर्मपुरा लाहौर में गली नं. 23 का नाम ''**लाजपत स्ट्रीट**'' है तथा मैन बाजार को जाते हुए रोड का नाम ''**लाजपत रोड**'' है, ओल्ड बस स्टैंड के पास ''**लाला लाजपत राय हॉल**'' है जहां आपकी आदम कद मूर्ति लगाई गई थी, जिसे बाद में शिमला लाकर स्थापित किया गया।
6. **बाजार नोहरियान** – लाला हुकमचंद बुधिया (बंसल), आपके पुरखे नोहर–बीकानेर से आकर जालंधर में बस गये थे, इसलिये आपका परिवार नोहरिया परिवार के नाम से प्रसिद्ध था। आपके परिवार का बहुत बड़ा कपड़े का व्यापार था। जालंधर में आपके नाम पर ''बाजार नोहरियान'' है। लाला जी ने जालंधर में अनेक जनहित कार्य किये थे।
7. **गंगापुर गांव** – जब अंग्रेजों द्वारा लायलपुर (अब पाकिस्तान में) बसाया जा रहा था तब अंग्रेजों ने ''**सर गंगाराम**'' को अपनी इच्छानुसार एक गांव डिजाईन करके बसाने के लिये 50,000 एकड़ जमीन दी थी। इस गाव का नाम उनके नाम पर ''**गंगापुर**'' है, जिसकी स्थापना सन् 1898 में हो गई थी।
8. **मुकुन्द नगर, गाजियाबाद** – सेठ मुकुन्द लाल जयप्रकाश ने पाकिस्तान से आए हिंदुओं के लिये इस नगर की स्थाना की।
9. लाला सरलीमल सिंघल के नाम से देहरादून में आज भी ''सरलीमल बाजार'' है।

स्वतंत्रता सेनानी – कुछ प्रमुख अग्रविभूतियां

1. **लाला झमकूमल** – 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सैनानी, वैश्य समाज की पहली अग्रविभूति जिन्हें अंग्रेजों ने **फांसी** दी।
2. **लाला मटोलचंद अग्रवाल** – बहादुर शाह जफर के अनन्य मित्र तथा अंग्रजों से युद्ध में बहादुरशाह जफर को अपने जीवन में की गई कमाई देशहित में देने वाले में दानवीर भामाशाह। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों द्वारा इनको **फांसी** दी गई।
3. **लाला हुकमचंद जैन** (गोयल) – 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सैनानी, अग्रविभूति जिन्हें अंग्रेजों ने **फांसी** दी।
4. **रामजीदास गुड़वाले (गोयल)** – 1857 की क्रांति विफल होने पर अंग्रेजों ने पहले उन पर शिकारी कुत्ते छोड़े तथा बाद में **फांसी** पर लटका दिया। सेठ रामजीदास भारत के **पहले** व्यापारी थे, जिन्होंने मुगलिया खानदान को करोड़ो रूपये उधार दिये, जो कभी वापस नहीं आये। उन दिनों **बादशाही सिक्कों** पर एक ओर रामजीदास तथा दूसरी ओर बादशाह की तस्वीर रहती थी। लालकिले के **दरबारे आम में** रामजीदास के लिये एक छोटा सा

सिंहासन बादशाह के पास में होता था। अंग्रेजों द्वारा करोलबाग में सड़क का नाम ''**गुड़वाला रोड**'' तथा दूसरी सड़का का नाम उनके पौत्र के नाम पर ''**रामकृष्ण राय रोड**'' रखा गया।

5. **हंसराज अग्रवाल** – सन् 1857 की प्रथम क्रांति में ''**फांसी**'' पर चढ़ने वाले अमर शहीद।
6. **शेरे पंजाब लाला लाजपत राय** (गर्ग)– स्वतंत्रता संग्राम के महान सैनानी। साईमन कमीशन का विरोध करने वाले।
7. **लाला हुक्मीचंद अग्रवाल** – आपने बहादुर शाह जफर के दरबार में उच्च पद प्राप्त किया तथा अंग्रजों से हुए युद्ध में भाग लिया।
8. **विष्णुशरण दुबलिश** (महान् क्रांतिकारी) – चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, असफाखउल्ला खां, राजेन्द्र सिंह लाहेड़ी, मनमथनाथ गुप्त आदि के सहयोगी तथा काकोरी कांड में अंग्रेजों का खजाना लूटने वाले।
9. **मोती लाल बगड़िया** – नेताजी सुभाष चंद्र बोस के सहयोगी, आपका घर आजाद हिंद फौज का कार्यालय बन गया था। आपको अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया।
10. **मुरलीधर अग्रवाल** (अंबाला) – 1885 में कांग्रेस की स्थापना के बाद अंग्रेजों द्वारा सबसे पहले राजबंदी।
11. **जमनालाल बजाज** – ''**राष्ट्रीय आंदोलन का भामाशाह**'', गांधी जी के पांचवे पुत्र, महान् दानवीर, स्वतंत्रता सैनानी व आजीवन कांग्रेस के कोषाध्यक्ष। स्वाधीनता आंदोलन के प्रथम भामाशाह । एशिया में सबसे बड़ी चीनी मिल के संस्थापक।
12. **रूड़मल गोयनका** – नेताजी सुभाषचंद बोस की सहायता करने वाले।
13. **राधामोहन गोकुलजी** – क्रांतिकारी राष्ट्र भक्त, अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चिंतक तथा लेखक, आपकी लिखी पुस्तकों से संसार के अनेक देशों के विचारकों ने समता, समाजवाद, स्वाधीनता तथा स्व्देश प्रेम की प्रेरणा ली। शहीदे आजम भगतसिंह ने लाहौर में जिस पिस्तौल से सांडर्स की हत्या का प्रयास किया वह पिस्तौल राधामोहन जी द्वारा उपलब्धि करवाई गई।
14. **राम मनोहर लोहिया** – क्रांति कारी, भारत में समाजवादी आंदोलन के जनक, विरोधी दल के सशक्त नेता, गैर कांग्रेसी विचारधारा के जनक तथा चित्रकूट में रामायण मेले का प्रारंभ करने वाले। आजादी के आंदोलन में 40 बार जेल की यातनाएं सहन की।

अग्रबंधुओं द्वारा स्थापित ''कला संग्रहालय''

1. भारत कला भवन

पद्म विभूषणराय कृष्णदास–भारतीय कला के अनुपम साधक, आपने हिंदू विश्वविद्यालय में 'भारत कला भवन' की स्थापना करके तथा देश की सांस्कृतिक कृतियों की रक्षा कर इतिहास को अनूठी देन दी है।यह कला भवन देश के अनुपम संग्रहालयों में से एक है तथा संगीत, साहित्य, चित्रकला, स्थापत्य तथा अन्य कलाओं का उत्कृष्ट रूप प्रस्तुत करता है। आपने मूर्तिकला पर भारत की चित्रकला तथा भारतीय चित्र चर्चा नामक पुस्तक लिखी, जो इस विषय की सर्वोत्तम रचना है।

राय साहब ने कला को मानों जीवन बना रखा था। वे बचपन से ही कलाकृतियों को एकत्र करते थे। कला भवन में बुद्ध की एक मूर्ति का सर उनके सहयोगी डा. परमेश्वरी लाल गुप्त खोज लाये, तो राय साहब ने उस मूर्ति का नाम ही 'परमेश्वरी बुद्ध' रख दिया। कलाभवन के दरवाजों पर उन्होंने सभी सहयोगियों का नाम यहां तक की बनाने वाले राजगीरों का नाम भी लिखवाया, सिवाय अपने नाम के। स्व. बाबू हर्ष चंद जी जैन 'वकील' ने भारत कला भवन के लिये अपने निजी संग्रह से अनेक बहुमूल्य कला वस्तुएं प्रदान की थीं, जो आज भी कला भवन में उपलब्ध हैं।

अमूल्य धरोहर - भारत कला भवन

इतिहास - इसकी स्थापना जनवरी सन् 1920 में काशी में भारत कला परिषद के साथ हुई थी, इसके प्रथम सभापति गुरू रविन्द्रनाथ टैगोर थे। यह संग्रह मूलत: राय कृष्णदास जी द्वारा पोषित रहा, जो सन् 1980 तक इसके आजीवन मानद निदेशक रहे। भारत कला भवन सन् 1950 में अपने भारतीय कला एवं पुरातत्व के विशाल संग्रह के साथ काशी हिंदू विश्वविद्यालय का अंग बना। **संग्रह** - भवन में लगभग एक लाख कृतियां संग्रहीत हैं। इनमें पत्थर, धातु, काष्ठ तथा मिट्टी के सील, चित्र (ताड़पत्र, कागज, कपड़ा तथा चमड़ा) मुद्राएं, दाने, हाथीदांत की कलाकृतियां हैं। इनके अतिरिक्त अनेक दस्तावेज, किताबें, साहित्यकारों के लेखन, पत्र आदि बहुत सा सामान है। **वीथिकाएं**- इसके अंतर्गत भूतल पर - वस्त्राभरण, चित्र व सील हैं। प्रथम तल पर - पुरातत्व सामग्रियां, साहित्य विभाग, लघु कथाएं, काशी वीथिका व व्यक्तिगत संग्रह हैं। **चित्र कलाएं**- चित्र कलाओं का संग्रह 11वीं सदी से लेकर 20वीं सदी तक का है। यह संग्रह सर्व भारतीय स्वरूप का है। इसमें पूर्वी भारत से प्राप्त बोध हस्तलेख(चित्रित), पश्चिमी भारत से प्राप्त चित्रित जैन हस्तलेख, चंदा और पंचाशिखा, मृगावत, शाहनामा (पूर्वी एवं प्रारंभिक मुगलकाल के), अकबर, जहांगीर, शाहजहां तथा मुगल बादशाहों के लघु चित्र, राजस्थान के मेवाड़, मालवा, बूंदी, कोटा, किशनगढ़, बीकानेर, जयपुर, नाथद्वारा की चित्र कलाएं, पहाड़ी चित्रकलाएं, बसोहली, गुलेर, कांगड़ा, विलासपुर एवं गढ़वाल के, दक्षिणी भारत, पटना, बनारस, राजस्थानी तथा पहाड़ी स्थलों की शैलियों के चित्र हैं। संग्रहालय में 20वीं सदी के प्रतिनिधि चित्र जैसे - रवीन्द्र नाथ ठाकुर, प्रो. नंदलाल बसु, यामिनी राय आदि विशिष्ट कलाकारों के हैं। **मूर्तिकला** - शिल्प का संग्रह ईसा के पूर्व तीसरी सदी से मौर्य काल से लेकर 14वीं सदी के काल तक का है जिनमें भरहुत काल की प्रसाधिका, काशी के पांचवीं सदी के कार्तिकेय, शिव विवाह (10वीं सदी), नटराज तंजौार से प्राप्त आदि। **मूर्तिकला शिल्प में**- हड़प्पा युग से लेकर

19वीं सदी तक की सामग्रियां हैं। इनमें प्रमुख उत्तर प्रदेश से ही कौशाम्बी तथा राजघाट काशी से प्राप्त गंगा के मैदान से प्राप्त संग्रह है। **वस्त्रालंकार**– इसके अंतर्गत सूती, सिल्क तथा ऊन से बने वस्त्र हैं। बनारसी साड़ी तथा कश्मीरी शॉलों का अनूठा संग्रह है। शाहीतूश का संग्रह प्रमुख है। **अलंकरण कलाएं** – इसके अंतर्गत जवाहरात, आभूषणों, शीशे के अंलकरण मुख्य हैं। अस्त्र-शस्त्रों के संग्रह (प्राचीन एवं नवीन) भी उल्लेखनीय हैं। जहांगीर का प्याला, उसकी अंगूठियां, हुक्का एवं अनेक सामग्रियां विशेष उल्लेखनीय हैं। **साहित्य विभाग**– इसमें अनेक प्राचीन एवं नवीन साहित्कारों की कृतियां संग्रहित हैं। प्रमुख भारतेंदु जी का पुस्तकालय, प्रसाद, प्रेमचंद, निराला, पंत, महादेवी आदि महान् विभूतियो की कृतियां हैं। इस विभाग में पत्र-पत्रिकाएं, सामग्रियां तथा रचनाएं संग्रहित हैं। उनकी पुस्तकों के प्रथम प्रकाशन भी हैं भारतेंदु जी के पुस्तकालय में 6000 हस्त लेखों का अलभ्य संग्रह है। **प्रशिक्षण**– यह संग्रहालय विश्वविद्यालय के स्नात्कोत्तर पाठ्क्रम की संग्रहालय विज्ञान की शिक्षा एवं उपाधि देता है।

स्त्रोत– श्री काशी अग्रवाल समाज, शतवार्षिकी 1995/378

2. दीवान बहादुर राधाकृष्ण जालान का अद्भुत ''जालान संग्रहालय'' –

कला के क्षेत्र में दीवान बहादुर राधाकृष्ण जालान व उनके संग्रहालय का नाम प्रमुखता से जाना जाता है। पटना-बिहार में इस संग्रहालय की स्थापना की गई है। सन् 1541 में पटना में शेरशाह सूरी ने एक किला बनवाया था। मुगलों का शासन, अंग्रेजों का शासन, इस दौरान ईस्ट इंडिया कंपनी ने यह किला खरीद लिया। बाद में वे मुंहमांगी कीमत पर इसे बेचने को तैयार हरे गये। उनकी मुंहमांगी कीमत पर यह किला दीवान बहादुर राधाकृष्ण जालान ने खरीद लिया। यह घटना सन 1919 की है। लाखों रूपये खर्च कर उन्होंने इतिहास की अमूल्य धरोहरों का संग्रह किया और धीरे-धीरे यह किला ''जालान संग्रहालय'' में बदलने लगा। विशाल, सुंदर और सुदृढ़ कमरों में प्राचीन इतिहास को संजोये रखने के कारण, संग्रहालय का हर कोना जीवित संस्मरण बन गया है।

इसमें 7वीं से लेकर 17वीं सदी तक के चीनी मिट्टी के बर्तन, प्याले, सुराहियां तथा तिब्बती, हिंदी, मैथिली, संस्कृत के हजारों हस्थलिखित ग्रंथों का विशाल संग्रह है। सुनहरे खूबसूरत अक्षरों में लिखी कुरान एवं गुलिस्तां की प्रति उपलब्ध है। कुरान जिस पर औरंगजेब व उसकी बेटी जेबुन्निसा के हस्तारक्षर हैं। कई सौ वर्ष पुराने राजस्थानी संगीतज्ञों के वाद्ययंत्रों के भंडार के साथ-साथ मुगलकालीन कुछ ऐसे बर्तन भी हैं, जिनमें विष मिला भोजन देने पर बर्तन का रंग बदल जायेगा तथा फौरन टूट जाएगा। विशेष पत्थर 'संग-ए-सब' से बनी अनगढ़ मूर्तियां, हाथी दांत की बनी टीपू सुल्तान की पालकी तथा नेपोलियन तृतीय का शानदार पलंग यहां की शान हैं। अष्टधातु तिब्बती हाथी घंटा जिसके बजने से अनोखी ध्वनि निकलती है यहां उपलब्ध है। 18 जून 1954 को राधाकृष्ण जालान जी का निधन हो गया। उनके एकमात्र पुत्र श्री हीरालाल जालान जी का भी स्वर्गवास हो गया, इनकी पत्नी इस संग्रहालय की संरक्षिका रही हैं।
अग्रोहाधाम - सितम्बर-अक्टूबर 1991

3. साहू पुरातत्व संग्रहालय -- साहू जैन परिवार द्वारा देवगढ़, उत्तर प्रदेश में साहू पुरातत्व संग्रहालय एवं साहू भारतीय कला जैन अनुसंधान केंद्र की स्थापना की गई, जहां जैन मूर्तियों एवं ग्रंथों का अद्भुत संग्रह है साथ ही विद्ववानों के लिए शौध व उच्चअध्ययन की व्यवस्था

है।

4. **मूर्ति संग्रहालय** – सेठ सूरजमल जालान की प्रेरणा तथा सहयोग से सीकर में स्थापित संग्रहालय जिसमें हर्ष पर्वत के देवी – देवताओं की प्राचीन मूर्तियों का संग्रह है।
5. **मेहनसर संग्रहालय** – तोताराम शिवदत्तराय मसकरा मेहनसर, अलसीसर की हवेली में परमपरागत दुर्लभ चित्रों का संग्रहालय है। इस संग्रहालय में स्वर्णनाक्षरों में लिखित रामायण तथा भगवान श्रीष्ण की लीलाओं से संबंधित चित्रों का भी शानदार संकलन है।
6. **जगदीश व कमला मित्तल म्यूजियम** – हैदराबाद में स्थित इस म्यूजियम में अमूल्य भारतीय कला का अनमोल संग्रह है। मिनियेचर पेंटिंग्स ड्राईंग्स, टैक्सटाइल्स, मेटलवेयर, टेराकोटा, लकड़ी पर खुदाई, कांच हाथीदांत और मुगल पीरियड की धातुओं के बर्तन भी हैं। इसमें प्रथम शताब्दीं ईसा पूर्व से 1990 ईस्वी तक की रैंज है। इस म्यूजियम में माननीय राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री व अंतरराष्ट्रीय कला संग्राहक व स्कालर्स, बेरार की महारानी, जेलीन केनेडी आ चुके हैं। इसके लिए मित्तल को **पद्श्री** अवार्ड भी मिल चुका है। मित्तल ने पेंटिंग व कला की औपचारिक पढ़ाई शांतिनिकेतन में की।
7. **अभिषेक पोद्दार** – आप भारत में प्रसिद्ध कला संग्राहक हैं। बैंगलुरू में विशाल कला संग्राहलय की स्थापना तथा प्राचीन व नवीन मूर्तियां, पेंटिंग्स,रेखाचित्र, प्रसिद्ध कलाकारों की मंहगी कलाकृतियां आदि का संग्रह।
8. **बाबू सीताराम साह** – (श्री काशी अग्रवाल समाज के संस्थापक) – जन्म सन् 1877, 1901 में जम्मू और कश्मीर के महाराज श्री प्रताप सिंह बहादुर के प्राईवेट सैकेट्री रहे। प्राचीन चित्रों से इनका विशेष अनुराग था। मुगल चित्रकारी के ये बड़े भारी विशेषज्ञ थे, अनेक उच्चकोटि के प्राचीन चित्रों का इनका अपना संग्रहालय है।
9. **राजकुमार अग्रवाल** – (चांदी की अद्भुत कलापूर्ण वस्तुओं का ऐतिहासिक संग्रह) – आपके संग्रहालय में चांदी के 500 बहुमूल्य प्राचीन, ऐतिहासिक और अद्वितीय आभूषणों, बर्तनों और उपयोगी वस्तुओं का खजाना है। यह वस्तुएं मध्य कालीन और आधुनिक इतिहास के जमींदारों, नवाबों और संपन्न लोगों के शानदार रहन सहन का लेखाजोखा प्रस्तुत करती हैं। इसके अतिरिक्त आपके पास कोणार्क के भव्य रथ मंदिर, दक्षिण भारतीय चांदी की टोपी, मथुरा व वृंदावन की पिचकारी, भगवान पशुपति के शिवलिंग का कवर, इंदौर के होलकर राजघराने का छत्र, पुराने जमाने की इत्रदानियां, फोटोफ्रेम, सिक्के आदि भी शामिल हैं। आप लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड और विश्व रिकार्ड धारी हैं।
10. **भक्त रामशरण दास जी का पिलखुवा में स्थापित संग्रहालय** – गाजियाबाद के छोटे से कस्बे पिलखुवा में स्थित भक्त जी का अद्भुत संग्रहालय सनातन धर्म के सिद्धान्तों का अकाट्य समर्थन करता हुआ परिलक्षित होता है। राष्ट्रीय एकता एवं अनवरत कार्य क्षमता की सार्थकता का भी यह संग्रहालय जीता जागता प्रमाण है। यह वर्तमान में दर्शनीय स्थल बन चुका है। इस संग्रहालय में भक्त जी द्वारा संग्रहित वर्ष 1936 का गंगाजल है। देश के प्रत्येक राज्य की पवित्र मिट्टी संजोकर रखी गई है, जिसमें देशभक्तों, शहीदों, महापुरूषों की जन्म स्थली की रज, भगवान श्री कृष्ण से संबंधित सभी स्थानों की रज, चारों धामों की

❖❖❖

पवित्र रज, हल्दीघाटी आदि कई ऐतिहासिक स्थलों की रज भी है। यदि किसी लेखक को किसी क्रांतिकारी और संत का चित्र चाहिए तो वह चित्र इसी संग्रहालय से उपलब्ध हो सकता है। विश्व के प्राचीन धर्म ग्रंथ भी यहां देखे जा सकते हैं। वर्षों पुराने समाचार-पत्रों व पत्रिकाओं की प्रतियां भी देखी जा सकती हैं। पूर्व प्रधान मंत्री स्व. श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने इस विख्यात संग्रहालय की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा विख्यात धर्म गुरूओं, साधु-संतों, तथा महात्माओं ने भी इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। भक्त जी का जन्म 5 मार्च 1915 को पिलखुवा के लाला नारायणदास जी अग्रवाल (बझैड़े वाले) के यहां हुआ।

11. डा. रामनाथ ए. पौद्दार हवेली संग्रहालय, नवलगढ़ – आनंदी लाल पौद्दार द्वारा सन् 1902 में निर्मित हवेली में उत्कृष्ट भित्ति चित्र हैं, जिनकी संख्या 750 से अधिक है, सभी एक सदी से भी पुराने हैं। यह ''हवेली संग्रहालय'' शेखावटी में मुख्य पर्यटन स्थल है। चमचमाते भित्ति चित्र पत्थरों से बने चित्रों की छाप देते हैं।

शेखावटी क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये तथा राजस्थानी विरासत को प्रदर्शित करने के लिये और एक सांस्कृतिक केंद्र का निर्माण करने के उद्देश्य से ''श्री आनंदी लाल बी. पौद्दार'' के पोते ''श्री कांतिकुमार आर. पौद्दार'' द्वारा हवेली को ''**हेरिटेज हवेली संग्रहालय**'' में बदल दिया गया। यह संग्रहालय वास्तव में हवेली की सभी विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करता है। इस संग्रहालय में भित्ति चित्र, मेहराब और मेहराबदार नक्काशी लकड़ी के गेट, भारत में सबसे अच्छी तरह से संरक्षित आईटम हैं। भित्ति चित्रों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। वे न केवल भारतीय देवताओं को भारतीय पौराणिक कथाओं के दृश्यों से चित्रण करते हैं बल्कि उस प्रचलित ग्रामीण भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन को भी चित्रित करते हैं। कुछ तो आधुनिक प्रवृत्ति को भी दर्शाते हैं। पौद्दार हवेली में भित्ति चित्रों को पुनर्स्थापित करने का निर्णय लिया गया और 1992 में इस क्षेत्र के विशेषज्ञों की देखरेख में किया गया था।

हवेली संग्रहालय में दर्शनीय गैलरी इस प्रकार हैं – संगीत वाद्ययंत्र गैलरी, राजस्थानी लिविंग स्टाइल गैलरी, रत्न और आभूषण गैलरी, मेलों और त्यौहारों की गैलरी, ब्राइडल परिधान गैलरी, राजस्थानी हस्तशिल्प गैलरी, लघु चित्र गैलरी, महलों की गैलरी, मार्वल आर्ट गैलरी, पगड़ी गैलरी, ओरिएंटल आर्ट गैलरी, गांधी गैलरी, स्टोन आर्ट गैलरी, पौद्दार परिवार फोटो गैलरी, सांस्कृतिक सभागार गैलरी, संग्रहालय व पुस्तकालय तथा नक्काशीदार लकड़ी का गेट। सोर्स – podarhavelimuseum.org

एलिस गर्ग शंख म्यूजियम, जयपुर

(विश्व के बेशकीमती शंखों का संग्रह)

'एलिस गर्ग नेशनल म्यूजियम ऑफ सीशैल्स', ने जयपुर के टूरिज्म में एक नया आयाम जोड़ दिया है। एलिस के पांचवें जन्मदिन पर उसके माता–– पिता ने उसे एक छोटा सा शंख उपहार में दिया था। इससे उत्साहित होकर ऐलिस ने दूर दूर से शंख एकत्रित करना आरंभ किया। फिर बच्चों व बड़ों को शंखों की विचित्र दुनियां से रूबरू कराने के लिये एलिस और उसके पति ने जयपुर का **प्रथम शंख संग्रहालय** स्थापित किया। इस संग्रहालय में विश्व के विभिन्न समुद्रों के शंख हैं। यहां आगन्तुकों को अन्य समुद्रों के साथ – साथ जीलैन्डिक, कैरिबियन, मेडिटेरेनियन, पनामिक व जेपोनिक समुद्रों के शंख भी मिलते हैं। यहां गैस्ट्रोपोडा से बिवाल्विया तक के दुलर्भ शंख हैं। यहां के बेशकीमती शंखों में 'ऑस्ट्रेलियन ट्रम्पेट', द ग्लोरी ऑफ इंडिया', और द ग्रेट इंडियन चंक, सम्मिलित हैं। विश्व में उपलब्ध **सात तरह** के शंखों में से **पांच तरह** के यहां पर उपलब्ध हैं। एक में सॉलिड कवर नहीं होता और दूसरे बहुत छोटे और बहुत गहराई पर होते हैं। ये किसी संग्रहालय में नहीं हैं।

अग्रवाल टुडे, अप्रेल – 2021

अग्रबंधुओं द्वारा स्थापित ''पुस्तकालय''

बंधुओं, आज के दौर में बहुत से लोगों को ये लगता है कि ''पुस्तकालयों'' की कोई जरूरत नहीं रह गई है, क्योंकि इंटरनेट आपको हर जानकारी मुहैया करा देता है। खासतौर पर ''गूगल बाबा'' तो हर समस्या का समाधान नजर आते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। पुस्तकों व पुस्तकालयों की उपयोगिता पहले भी थी, आज भी और कल भी रहेगी। आइए परिचय करते हैं, अग्रवाल समाज द्वारा स्थापित कुछ ऐतिहासिक पुस्तकालयों से।

1. **मारवाड़ी सार्वजनिक पुस्तकालय** – यह भारत की राजधानी, दिल्ली के सबसे पुराने और समृद्धशाली पुस्तकालयों में से एक है। 27 नवंबर 1917 को महात्मा गांधी पहली बार यहां पधारे थे। दिल्ली के मारवाड़ी समाज का ये अहम केंद्र माना जाता है।

दिल्ली में चांदनी चौक, फव्वारे के पाास स्थित इस पुस्तकालय की स्थापना स्वतंत्रता सेनानी और समाज सेवी ''**सेठ केदारनाथ गोयनका**'' ने सन् 1915 में विजय दशमी के दिन लकड़ी की बैंच पर करीब 100 किताबें और समाजचार पत्र रखकर की थी। उद्देश्य यह भी था कि पराधीनता के उस वातावरण में स्वाधीनता आंदोलन की गतिविधियां भी यहां से चलाई जा सके। सेठ गोयनका जी, गांधी जी से बहुत प्रभावित थे, उन्होंने देश सेवा के कारण अपना कपड़ों

का व्यवसाय बंद कर दिया था। इस पुस्तकालय का स्वतंत्रता आंदोलन में उल्लेखनीय योगदान रहा है। स्थापना के बाद से ही राष्ट्र के शीर्ष राजनेता, बुद्धि, शिक्षाविद और समाज सेवियों का यह विजिट का केंद्र हो गया। यहां कांग्रेस की गुप्त सभाएं होती थीं। म.गांधी, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, मदन मोहन मालवीय, मैथिलीशरण गुप्त और हरिवंशराय बच्चन जैसी हस्तियां यहां आया करती थीं, जिनका हस्तलेख विजिटर्स बुक में सुरक्षित हैं।

इस पुस्तकालय में हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी और अन्य विषयों सहित लगभग 32 हजार पुस्तकें, 700 संदर्भ ग्रंथ और 21 दुलर्भ पांडुलिपियों के अलावा लगभग 2000 पत्र-पत्रिकाओं का संग्रह तथा 18वीं व 19वीं सदी की कई अंग्रेजी की पुस्तकें भी हैं। यहां पर ई-बुक्स का भी अच्छा संग्रह है। विभिन्न विषयों में शोध करने वाले छात्रों के लिये यह पुस्तकालय बहुत महत्वपूर्ण है। दिल्ली विकास प्राधिकरण ने 1994 में इसे ''**पुरातन भवन एवार्ड**'' भी दिया था। 1931 में सेठ जी ने इसका प्रबंध मारवाड़ी समाज के युवा कार्यकताओं को सौंप दिया। 1953 से इसका संचालन मारवाड़ी चौरिटेबिल ट्रस्ट कर रहा है।

उल्लेखनीय है कि - गांधी जी के आह्वान पर 1942 में राजधानी दिल्ली में ''भारत छोड़ो आंदोलन'' की शुरूआत चांदनी चौक में महिलाओं के जुलूस के साथ इसी मारवाड़ी पुस्तकालय से हुई थी। जिसका नेतृत्व महान् स्वतंत्रता सेनानी अग्रवंशी ''**पार्वती देवी डीडवानियां**'' ने की। पार्वती देवी मारवाड़ी थीं।

परिचय - दिल्ली का मारवाड़ी समाज - अगर दिल्ली के समूचे मारवाड़ी समाज की बात करें तो, इसमें दो तरह के मारवाड़ी शामिल हैं। पहले जिनके पुरखे 100-125 साल पहले यहां आकर बस गये थे। दूसरे वे जो 30-40 सालों के दौरान असम, उड़ीसा, बिहार आदि में अस्थिरता या फिर अपने केरियर को चमकाने के कारण यहां आकर बस गये। ये मारवाड़ी कहीं से भी आकर बसे लेकिन इनका मूल निवास ''शेखावटी'' ही है। राजस्थान के झुंझनू और सीकर जिले शेखावटी के नाम से जाने जाते हैं। मारवाड़ी सबसे पहले चांदनी चौक क्षेत्र में आकर बसे। अधिकतर कपड़े के कारोबार से जुड़ गये। इन्होंने समाज के बारे में भी सोचा और सन् 1915 में मारवाड़ी पुस्तकालय चालू हो गया। इसमें ''सेठ केदारनाथ गोयनका'' का जबरदस्त योगदान रहा। दिल्ली में अनेक मारवाड़ी संस्थाएं कार्यरत हैं। ऐसा माना जाता है कि दिल्ली में 5 लाख से अधिक मारवाड़ी हैं। यह मारवाड़ी समाज लगभग 125 साल से सेवा के कार्यों में संलग्न है। पुस्तकालय मारवाड़ी चेरिटेबल ट्रस्ट चलाता है। मारवाड़ी समाज ''मारवाड़ी हॉस्पीटल'' और स्कूलों में भी अपना योगदान दे रहे हैं। इस समाज के सहयोग से दो स्कूल भी चल रहे हैं, जिन्हें चालू हुए 92 वर्ष से अधिक हुए हैं। नं. 1 का सोर्स - एनबीटी

2. श्री बड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय - देश के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में ख्याति प्राप्त इस पुस्तकालय की स्थापना राष्ट्रीय आंदोलन की प्रेरणा से ''**स्वतंत्रता सेनानी स्व. राधाकृष्ण नेवटिया**'' ने कोलकाता में सन् 1918 में की। सन् 1912 में अपने शिक्षक से पुस्तकालय की प्रेरणास्पद कहानी सुनने के बाद, पुस्तकालय के संस्थापक स्व. राधाकृ'ण जी नेवटिया के बाल मन में पुस्तकालय की स्थापना का भाव अंकुरित हुआ। सन् 1916 में नेवटिया

जी ने अपने 6 साथियों श्री नानूराम सर्राफ, महादेव लाल झुनझुनवाला, मदनलाल टिबड़ेवाल, मदनलाल जाजोदिया, सागरमल जाजोदिया एवं सोहनलाल जाजोदिया के साथ मिलकर श्री मदनलाल जाजोदिया के घर पर एकत्रित होकर ''बालसभा पुस्तकालय'' का श्रीगणेश किया। 1818 में मित्रों के परामर्श से उन्होंने इसका नाम ''श्री बड़ा बाजार कुमारसभा पुस्तकालय' रख दिया, जो विधिवत इसी नाम से जाना जाता है। एक अच्छे वाचनालय एवं समृद्ध पुस्तकालय के अलावा, विभिन्न अवसरों पर गोष्ठियां, व्याख्यानों, साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं विविध विषयों पर 30 से अधिक प्रकाशनों, अखिल भारतीय स्तर के दो सम्मानों ने इसको विशिष्टता प्रदान की। इसकी प्रसिद्धि सुनकर ही सन् 1920 में हिंदी साहित्य सम्मेलन ने इसे अपनी परिक्षाओं के केंद्र के नाते स्वीकृति प्रदान की।

इस पुस्तकालय का वैज्ञानिक वर्गीकरण कराया गया, जिसकी प्रशंसा करते हुए नागरी-प्रचारिणी सभा की पत्रिका ने उस समय लिखा- अभी तक हिंदी जगत में इस प्रकार का वर्गीकरण नहीं हुआ है, और स्वंय यह इस सभा का पुस्तकालय भी इस प्रकार के वर्गीकरण से वंचित है। इस पुस्तकालय ने प्रकाशन का कार्य भी आरंभ किया। 1921 में स्व. बाबूलाल जी राजगढ़िया ने प्रकाशन हेतु पांच हजार रूपये का गुप्त दान दिया जिसके फल्स्वरूप 1922 में गांधी के लेखों के दो खंड हिंदी में छापे गये। इस पुस्तकालय को भारत के ख्यातिलब्ध साहित्यकारों का सान्निध्य भी मिला। वर्तमान में यह पुस्तकालय, 1 सी, मदन मोहन बर्मन स्ट्रीट, फूलकटरा के सामने स्थित है। यहां 25000 से भी अधिक पुस्तकों का भंडार है।

3. **विश्व स्तरीय लाइब्रेरी** - इंदौर मित्तल कार्प लिमिटेड व डेली कॉलेज द्वारा 50,000 पुस्तकों की एक विश्व स्तरीय लाइब्रेरी रमेश मित्तल ऐजूकेशन सेंटर द्वारा शीघ्र ही खोली जा रही है। यहां पूरे विश्व की पुस्तकें पढ़ने को मिलेंगी। इस लाइब्रेरी में विश्व इतिहास, कला व संस्कृति की दुर्लभ पुस्तकें भी उपलब्ध करवाई जा रही हैं। मित्तल ने स्वंय 200 पुस्तकें दान की हैं।

4. **अग्र गौरव - संस्कृत के महान् विद्वान - राधेश्याम शास्त्री का ''निजी पुस्तकालय''** - भिवानी-हरियाणा निवासी, संस्कृत के प्रकांड विद्वान श्री राधेश्याम शास्त्री अनेक वर्षों से देववाणी संस्कृत विशेषत: ''वैदिक वांग्डमय'' के संरक्षण में लगे हुए हैं। उनके मकान की ऊपरी मंजिल पर उनका दुर्लभ कृतियों से सुसज्जित अपने में अनूठा ''वृहद निजी संग्रहालय'' है, जिसमें संस्कृत तथा हिंदी भाषा के अतिरिक्त अंग्रेजी व अन्य भाषाओं की भी अनेक महत्वपूर्ण व दुर्लभ पुस्तकों का उल्लेखनीय संग्रह है। पुस्तकालय में चार हजार से अधिक पुस्तकें संग्रहित हैं। जो सुरूचिपर्ण एवं व्यवस्थित ढंग से रखी हुई हैं। इनमें विशेष उल्लेखनीय है - जापान में मुद्रित 'संस्कृत-जर्मन भाषा शब्दकोश'' के सात खंड। जर्मन विद्वान मैक्समूलर की ''सेकंड बुक ऑफ दी ईस्ट'' के पचास खंड। इसके अलावा कुछ ताड़-पत्र। आपका जन्म सन् 1943 श्री बेजनाथ गुप्ता के घर हुआ।

नं. 4 का सोर्स - अग्रोहाधाम मासिक पत्रिका - अगस्त 1999

पुरस्कार

भारत में अग्रवाल समाज की विभूतियों के नाम पर भारत सरकार, राज्य सरकार, विभिन्न संस्थांओं के बंधुओं व समाज द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कार राष्ट्र और समाज सेवा के क्षेत्र में सम्मान जनक स्थान रखते हैं। इनमें अनेक पुरस्कार अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हैं तो अनेक राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त। जैसे- **ज्ञानपीठ पुरस्कार** भारतीय भाषाओं का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार है। यहां संक्षिप्त में कुछ पुरस्कारों की जानकारी दी जा रही है।

1. **भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार** - भारतीय भाषाओं में लिखी गई सर्वश्रेष्ठ साहित्य कृति को प्रति वर्ष प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार की स्थापना सुप्रसिद्ध उद्योगपति साहू शांति प्रसाद जैन एवं श्रीमती रमा जैन द्वारा की गई। राष्ट्र के श्रेष्ठ पुरस्कारों में इसकी गणना होती है। 5 लाख रू. की राशि, प्रशस्ति पत्र व कांस्य प्रतिमा प्रदान की जाती है।
2. **जमनालाल बजाज पुरस्कार** - सुप्रसिद्ध गांधीवादी नेता जमनालाल बजाज की पत्नी श्रीमती जानकी देवी की स्मृति में इसकी स्थापना 1978 में जमनालाल बजाज फाउण्डेशन द्वारा की गई। 5-5 लाख के चार पुरस्कार खादी, ग्रामाद्योग, रचनात्मक कार्यों ग्रामीण विकास हेतु विज्ञान व टेक्नोलॉजी के व्यवहारिक प्रयोग तथा महिला एवं बाल विकास में असाधारण योगदान के लिए प्रदान किए जाते हैं।
3. **महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय सम्माान**- दो लाख रूपये का यह पुरस्कार मध्य प्रदेश सरकार द्वारा महाराजा अग्रसेन की स्मृति में सामाजिक सदभाव, समरसता व राष्ट्र सेवा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि के लिए हर वर्ष दिया जाता है।
4. **मंगलाप्रसाद पुरस्कार** - वि सं. 1977 में गोकुलचंद जी ने अपने भाई बाबू मंगला प्रसाद की समृति में हिंदी के मौलिक साहित्य को प्रोत्साहन देने के लिए सर्वोत्कृष्ट पुस्तक के रचनाकार को देने हेतु 1200 रु का एक पुरस्कार स्थापित किया और इसके लिए 40000 रु का प्रोमेसरी नोट हिंदी साहित्य सम्मेलन को प्रदान किया। इसके अलावा आपने काशी हिंदू विश्वाविद्यालय को एक लाख रूपये भी दिए। यह पुरस्कार अनेक विद्वान विभूतियों को दिया जा चुका है जैसे मैथिलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, कमलापति त्रिपाठी, रामचंद्र शुक्ल, आदि। यह पुरस्कार प्रयाग हिंदी साहित्य सम्मेलन के माध्यम से साहित्य के क्षेत्र विशेष योगदान के लिये दिया जा रहा है।
5. **रामनाथ गोयनका श्रेष्ठ पत्रकारिता पुरस्कार** - ये इंडियन एक्सप्रेस पत्र समूह द्वारा पत्रकारिता जगत के श्रेष्ठ पुरस्कार हैं। पुरस्कारों की संख्या लगभग 30 है। इनकी स्थापना 2006-07 में समूह के संस्थापक, संपादक, जुझारू पत्रकार श्री रामनाथ गोयनका की समृति में की गई। किसी पत्र समूह द्वारा दिए जाने वाले ये सर्वोच्च पुरस्कार हैं।
6. भारत में प्रदान किए जाने वाले सर्वोच्च पुरस्कारों में से एक की स्थापना **जिंदल एल्युमिलियम लि.** के संस्थापक प्रसिद्ध उद्योगपति व समाजसेवी **''सीताराम जिंदल''**

द्वारा संस्थापित ''**सीताराम जिंदल फाउण्डेशन**'' द्वारा की गई। 1-1 करोड़ रूपयों की राशि के ये ''**सात पुरस्कार**'' निस्वार्थ भाव से कार्य करने वाले उन महान् हस्तियों एवं संगठनों को प्रदान किए जाते हैं, जिनका निम्न क्षेत्रों में विशेष उल्लेखनीय योगदान होता है। **जैसे** - ग्रामीण विकास एवं निर्धनता उन्मूलन, स्वास्थ्य एवं औषधि रहित उपचार, विज्ञान, टेक्नोलोजी एवं पर्यावरण विकास, शांति, सामाजिक सौहार्द भाव की स्थापना तथा विकास, शिक्षा एवं नैतिक उत्थान, राष्ट्रीय एकता, सुरक्षा तथा राष्ट्र निर्माण में योगदान। धार्मिक सहिष्णुता में अभिवृद्धि, सार्वजनिक जीवन में स्वच्छता, भ्रष्टाचार एवं आतंकवाद के विरूद्ध संघर्ष (कुल सात पुरस्कार)।

7. **जी सिने एवार्ड** - इसकी स्थापना 1988 में सुप्रसिद्ध जी नेटवर्क द्वारा भारतीय फिल्म उद्योग में श्रेष्ठता एवं उत्कृष्टता के लिए की गई। ये पुरस्कार अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में प्रतिष्ठित हैं।
8. **लक्ष्मीपत सिंघानिया आई.आई.एम., लखनऊ राष्ट्रीय नेतृत्व पुरस्कार** - विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त इन पुरस्कारों की स्थापना जे.के. समूह द्वारा लक्ष्मीपत सिंघानिया प्रौद्योगिकी संस्थान लखनऊ द्वारा विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में, कारोबार के क्षेत्र में तथा सामुदायिक सेवा एवं सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में श्रेष्ठतम योगदान को बढ़ावा देने हेतु की गई है।
9. **एम.एस.एम.ई. अवार्ड** - भास्कर समूह द्वारा ये पुरस्कर उद्योग व्यवसाय में उद्यमिता, साहसिकता, गुणवत्ता, प्रेरकता, प्रतिस्पर्दधा, आधुनिक तकनीक के प्रयोग आदि को प्रोत्सा्हित करने हेतु प्रदान किए जाते हैं।
10. **मूर्तिदेवी पुरस्कार** - साहू जैन समूह द्वारा प्रतिवर्ष प्रदान किए जाने वाला 51000 रु का पुरस्कार भारतीय दर्शन, संस्कृति व साहित्य में विशेष योगदान के लिए प्रदान किया जाता है। यह भारतीय ज्ञानपीठ से संबंधित है।
11. **काका हाथरसी पुरस्कार** - भारत के प्रसिद्ध हास्य रस के कवि प्रभुदयाल गर्ग ऊर्फ काका हाथरसी द्वारा स्थापित 51000 रु की राशि का यह पुरस्कार काका हाथरसी ट्रस्ट द्वारा हास्य व्यंग्य के क्षेत्र में विशेष प्रतिभा प्रदर्शित करने वाले कवि को हर वर्ष प्रदान किया जाता है। काका हाथरसी ट्रस्ट द्वारा संगीत सम्मान पुरस्कार भी प्रदान किया जाता है।
12. **रामकृष्ण डालमिया श्री विष्णु अलंकार** - श्री वाणी न्यास द्वारा स्थापित दो लाख रूपये का यह पुरस्कार काव्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए हर वर्ष दिया जाता है।
13. **डालमिया श्रीवाणी पुरस्कार** - हर वर्ष किसी संस्कृत विद्वान को दिए जाने वाले इस पुरस्कार में दो लाख रूपये, प्रशस्ति पत्र, श्रीवाणी की प्रतिमा और अंगवस्त्र भेंट किए जाते हैं।
14. **निष्काम समाज सेवी सम्मान** - रामेश्वरदास गुप्त एवं श्रीमती कस्तूरी गुप्ता धर्माथ ट्रस्ट द्वारा हर वर्ष दिए जाने वाले पुरस्कार ऐसे निष्काम समाजसेवी को प्रदान किए जाते हैं

जिनका जीवन के किसी क्षेत्र में समर्पित भाव से प्रशंसनीय योगदान रहा हो।

15. **दयावती मोदी विश्व संस्कृति सम्मान** – कला, संस्कृति एवं लेखन क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतू गूजरमल मोदी समूह द्वारा प्रदान किया जाने वाला 2,51000 रु का यह श्रेष्ठ पुरस्कार है।
16. **साधना सम्मान पुरस्कार** – हिंदी साहित्यानुरागी श्री मोहनलाल केडिया की स्मृति में इनके परिवार द्वारा 1,11000 रु का दिया जाने वाला यह पुरस्कार हिंदी साहित्य में वृद्धि हेतु प्रतिवर्ष किसी साहित्यकार को दिया जाता है।
17. **भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार** – नई कविता के जनक सुप्रसिद्ध कवि भारत भूषण अग्रवाल की स्मृति में हर वर्ष 35 वर्ष से कम अवस्था के हिंदी कविता के युवा कवि को श्रेष्ठ कविता लेखन के लिए दिया जाता है।
18. **घनश्यामदास सर्राफ पुरस्कार** – समाजसेवी घनश्यामदास सर्राफ की स्मृति में स्थापित यह साहित्य पुरस्कार हिंदी, मराठी, राजस्थानी, गुजराती आदि विभिन्न भाषाओं के साहित्कारों को श्रेष्ठम लेखन के लिए दिया जाता है।
19. **बालकृष्ण गोयनका अनुवादित साहित्य पुरस्कार** – कमला गोयनका फाउण्डेशन द्वारा 31000 रु का यह पुरस्कार तमिल से हिंदी, हिंदी से तमिल में अनुवादित श्रेष्ठ कृति को प्रदान किया जाता है। इसके अलावा दक्षिणी भारत के सर्वश्रेष्ठ हिंदी प्रचारक को भी बालकृष्ण गोयनका हिंदी प्रचार सम्मान प्रदान किया जाता है।
20. **रामकुमार भुवालका पुरस्कार**– भारतीय भाषा परिषद द्वारा रामकुमार भुवालका की स्मृति में दो पुरस्कार हिंदी भाषा तथा साहित्य के क्षेत्र में महत्वापूर्ण योगदान के लिए दिए जाते हैं।
21. **श्री बनारसीदास गुप्त राष्ट्रीय गौरव सम्मान** – एक लाख रूपये का यह पुरस्कार उस समाजसेवी को दिया जाता है जिसका बनारसीदास जी द्वारा स्थापित सिद्धान्तों व आदर्शों के प्रचार–प्रसार में विशेष योगदान रहा हो अथवा महिला शिक्षा व उसके उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका रही हो।
22. **श्रीमती गोदावरी देवी सरावगी सम्मान** – समाजसेवी हनुमान सरावगी द्वारा अपनी माताजी की स्मृति में यह पुरस्कार उस महिला साहित्य सेवी को प्रदान किया जाता है जिसका राजस्थानी भाषा के साहित्य वृद्धि में विशेष योगदान रहा हो।
23. **राजीव गोयल पुरस्कार** – अमेरिका निवासी श्री रामस्वनरूप गोयल द्वारा कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय को प्रदान की गई राशि से एक–एक लाख के तीन पुरस्कार रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान व लाईफ सांइस में विशेष उपलिब्धि के लिए युवा वैज्ञानिकों को हर वर्ष दिए जाते हैं।
24. **सेठ गूजरमल मोदी पुरस्कार** – एक लाख रूपये का यह पुरस्कार विशेष रूप से अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि के लिए प्रदान किया जाता है। डा. सतीश धवन जैसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक को यह सम्मान दिया जा चुका है।

25. **दयावत मोदी कवि शेखर सम्मान** – 2,51000 रु. का यह पुरस्कार मोदी समूह द्वारा हिंदी काव्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए दिया जाता है।
26. **स्थापत्य कला पुरस्कार** – जे. के. सीमेंट द्वारा स्थापत्य कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किए जाते हैं। एक-एक लाख के दो पुरस्कार सर्वोच्च आर्किटेट ऑफ द ईयर अवार्ड, कला की दृष्टि से श्रेष्ठम भवन अथवा पुल का डिजायन बनाने वाले, चार पुरस्कार कम लागत में गृह निर्माण, ग्रामीण वास्तुकला, पुल, ओवरब्रिज, यातायात टर्मिनल क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किए जाते हैं।
27. **फिल्म फेयर एवार्ड**– इन पुरस्कारों की स्थापना सुप्रसिद्ध टाइम्स ऑफ इंडिया समूह द्वारा अपनी फिल्म पत्रिका फिल्म फेयर के नाम पर 1954 में हिंदी एवं भाषाई फिल्मों में कला एवं तकनीक को प्रोत्साहन देने के लिए की गई विभिन्न श्रेणियों में तीन दर्जन से अधिक पुरस्कार इसमें दिए जाते हैं।
28. **डा. राममनोहर लोहिया पुरस्कार** – हिंदी के विकास में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जाता है।
29. **भाई जी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार राष्ट्र सेवा सम्मान** – हर वर्ष इनकी समृति में एक लाख रूपये का यह सम्मान राष्ट्र के नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान कि लिए दिया जाता है।
30. **आत्माराम पुरस्कार** – भारत सरकार का यह एक प्रतिष्ठित पुरस्कार है, जो प्रसिद्ध वैज्ञानिक आत्माराम की स्मृति में दिया जाता है। यह पुरस्कार केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य तथा उपकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिये दिया जाता है। एक लाख रूपये का।
31. **कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी पुरस्कार** – दैनिक नवज्योति के पूर्व संपादक, स्वतंत्रता सैनानी व अग्रगौरव कप्तान दुर्गा प्रसाद चौधरी की स्मृति में पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान कि लिए अखिल भारतीय एवं राज्य स्तर पर ये पुरस्कार दिए जाते हैं।
32. **बाबू बाल मुकुंद गुप्त पुरस्कार** – हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा पत्रकारिता एवं साहित्य में उल्लेखनीय सेवाओं हेतु 15-15 हजार के दो पुरस्कार अग्र गौरव गुप्त जी की स्मृति में दिए जाते हैं।
33. **रतन ज्योत अग्रवाल समृति पुरस्कार** – समाज सेविका स्व. रतन ज्योत अग्रवाल की यादगार में रतन ज्योत समृति ट्रस्ट हर वर्ष पत्रकारिता, साहित्य व संस्कृति और समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए दो नकद पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र प्रदान करता है।
34. **गोयल पुरस्कार** – दो लाख रूपये नकद व स्वर्णपदक प्रदान किये जाना वाला यह पुरस्कार भारतीय मूल के अमेरिकी उद्योगपति श्रीराम एस. गोयल द्वारा स्थापित किया गया। गोयल फाउंडेशन पुरस्कार रसायनशास्त्र, भौतिक शास्त्र, प्राणी विज्ञान एवं व्यवहारिक विज्ञान में विशेष योगदान के लिये प्रतिवर्ष दिया जाता है।
35. **द्वारका प्रसाद अग्रवाल एवार्ड** – हिंदी साहित्य को देश-विदेश में प्रतिष्ठा दिलाने के

लिये।

इन पुरस्कारों के अलावा – रामप्रसाद पोद्दार स्मृति पुरस्कार, भगवानदास गोयनका पुरस्कार, मंगलाप्रसाद सेक्सरिया, राधामोहन गोकुल जी, हजारीमल डालमिया, श्री राममूर्ति प्रतिभा अलंकार, जयदयाल डालमिया, सेठ गोविन्दराम सेक्सरिया, तारादेवी राष्ट्रोत्थान, शिवचन्द्र भरतिया, रत्नाकर, केशवदेव गोयनका, महेन्द्र जाजोदिया, वासुदेव डालमिया, जानकीदेवी बजाज, राजेश स्मृति, मामराज अग्रवाल, लाला लाजपतराय, रघुनाथराय सर्राफ, दीपचंद जैन साहित्य पुरस्कार, नरसिंगदास गुप्ता पुरस्कार, वासुदेव डालमिया पुरस्कार, रूपरामका लोकगीत पुरस्कार, आदि पुरस्काकर विभिन्न संस्थाओं व ट्रस्टों द्वारा दिये जाते हैं। इसके अलावा और भी पुरस्कार हो सकते हैं।

अग्रवाल समाज के प्रतिष्ठानों द्वारा समय-समय पर **विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं** का आयोजन कर खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया जाता है। जैसे –

1. अखिल भारतीय गुजरमल मोदी स्वर्णकप हॉकी प्रतियोगिता 2. सर शादीलाल मेमोरियल हॉकी प्रतियोगिता 3. श्रीराम हॉकी प्रतियोगिता 4. रमा जैन ब्रिज प्रतियोगिता 5 .बी डी गोयनका ट्राफी ।

:: वीर अग्रबंधुओं की ''शौर्य गाथा'' ::

''जो लोग अपने पूर्वजों के श्रेष्ठ कार्यों पर गर्व नहीं करते, वे कभी कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकेंगे, जिसको उसके वंशज आगे गर्व करके स्मरण करें।'' – मेकाले

अग्रवाल वैश्य समाज न केवल वाणिज्य, उद्योग तथा अन्य क्षेत्रों मे अग्रणी रहा है, बल्कि इस समाज के अनेक अग्रबंधु वीरता एवं सैन्य क्षेत्र में भी अग्रणी रहे हैं। वे सेना के तीनों क्षेत्र हों या पुलिस सेवा, सभी में अपनी बहादहुरी व वीरता की मिसाल पेश की है। अग्रवाल समाज की वीरता पर ''**कैप्टन कमल किशोर बंसल**'' जी ने ''**वीरता की विरासत**'' नाम से एक पुस्तक रूपी ग्रंथ की रचना की जिसका प्रकाशन अग्रोहा विकास ट्रस्ट ने किया। इस पुस्तक को लिखने में कैप्टन कमल किशोर बंसल जी ने जबरदस्त मेहनत की। अग्रबंधुओं की ''वीरता'' पर यह पहली पुस्तक भी थी। प्रमाण के आधार पर लिखी, यह पुस्तक जबरदस्त लोकप्रिय हुई। एक ऐसी पुस्तक, जिसे पढ़ने के बाद आप एक **नया स्वाभिमान** अनुभव करेंगे।

सेनाओं के तीनों अंगों में व पुलिस सेवा में उच्च पदों पर रहे, अनेक अग्रबंधुओं ने अपनी वीरता व सराहनीय सेवाओं के फलस्वरूप भारतीय सेना को दिये जाने वाले जाने वीरता मेडल जैसे – महावीर चक्र, वीर चक्र, कीर्ति चक्र, शौर्य चक्र, अति विशिष्ट सेवा मेडल, युद्ध सेवा

मेडल, सेना मेडल, नौसेना मेडल, वायुसेना मेडल, डिस्पैचेज में उल्लेखनीय कार्य, विशिष्ट सेवा मेडल आदि ये पुरस्कार प्राप्त किये हैं। ब्रिट्रिश काल में भी अनेक वीर अग्रबंधुओं ने तीनों सेनाओं में भर्ती होकर अपनी वीरता का परिचय दिया है। अनेक ने तो प्रथम महायुद्ध व द्वितीय महायुद्ध के समय अपनी वीरता की कहानी स्वंय लिखी। ब्रिट्रिश काल में भी अनेक अग्रबंधु विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित हुए हैं। यहां बहुत ही संक्षिप्त में परिचय दिया जा रहा है ताकि हम वीर अग्रबंधुओं की वीरता पर गर्व कर सकें।

1. **एयर वाइर्स मार्शल सुरेन्द्र गोयल** – भारत के सबसे पहले और सबसे छोटे हवाई अफसर थे, जिन्हें अंग्रेज सरकार ने **एम.बी.ई.** की उपाधि से सम्म्मानित किया। भारत की वायुसैन्य शक्ति को बढ़ाने में आपका विशेष योगदान रहा। आपने भारतीय युवकों को सेना की ओर आकर्षित करने के लिए ''**ट्रेनिंग,मुख्यालय**'' की स्थापना की, जो अपने ढंग का पहला प्रशिक्षण केंद्र है।
2. **महावीर चक्र, मेजर विवेक गुप्ता** – लेफ्टीनेंट कर्नल बी.आर.एस.गुप्ता के इकलौते सुपुत्र और राजपुताना राइफल्स के इस बहादुर ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर, 12 जून 1999 को द्रास सेक्टर में एक महत्वपूर्ण पोस्ट पर कब्जा किये जाने के दौरान वह वीरगति को प्राप्त हुए थे। कारगिल युद्ध में उनकी अद्‌भुत वीरता को देखते हुए, सरकार ने उन्हें मरणोपरांत '**महावीर चक्र**' से सम्मानित किया।
3. **लेफ्टिनेंट जनरल विरेन्द्र प्रताप गुप्ता** – (अतिविशिष्ट सेवा मेडल) – रि. महानिदेशक सेना आयुधकार, जनवरी 1950 में भारतीय सैनिक अकादमी देहरादून में प्रवेश, भारतीय सेना की तोपखाना रैजिर्मेट में दिसम्बर 1957 में कमीशन। 1971 भारत–पाक युद्ध में आर्टिलेरी रैजिमेंट की कमान व उत्तरी क्षेत्र में एक ब्रिगेड की कमान, मास्टर जनरल आर्टीलरी पश्चिमी क्षेत्र, जनरल कमाडिंग अफसर बंगाल क्षेत्र व भारतीय सैनिक अकादमी देहरादून के कमांडैंट रहे। निदेशक अनुशासन व सर्तकता मुख्यालय, नई दिल्ली, ब्रिगेडियर इंचार्ज, प्रशासन पूर्वी कमान, कर्नल कमांडेंट आर्टिलरी रैजीमेंट 1987 से फरवरी 1989 तक। 1971 में बंगला देश व सीमा सुरक्षा बल की भी कमान संभाली थी। आप **गोलाबारूद की नई तकनीकी के विशेषज्ञ** हैं। आपने प्रक्षेपास्त्रों का फ्रांस में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। आप कांगों में भारतीय शांति सेना के सदस्य थे। 1971 के भारत पाक युद्ध में आप एकमात्र प्रक्षेपास्त्र डिपो के मुख्य आयुध अधिकारी थे। आपके कठिन परिश्रम द्वारा ही पुराने लड़ाकू वाहनों का रखरखाव किया जा सका। 1983 में आप ब्रिगेडियर थे। राष्ट्रपति द्वारा उत्कृट सेवाओं के लिये आपको **अति विशिष्ट सेवा मेडल** से अलंकृत किया गया। 1989 में राष्ट्रपति द्वारा मानद ए.डी.सी.(जिला कलेक्टर) नियुक्त किये गए। आपके मामा स्व. फ्लाईट लेफ्टिनेंट मदन मोहन द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीय वायुसेना में पायलट थे एवं विश्व युद्ध में भाग लिया। आपके छोटे भाई स्व. फ्लाइंग आफिसर ओम प्रकाश गुप्ता का अक्टूबर 1956 में एक लड़ाकू विमान की उड़ान दुर्घटना में निधन हुइ था। आपके एक भाई लेफ्टिनेंट कर्नल आनंद प्रकाश गुप्ता तोपखाना रैजिमेंट में थे।

4. **अमर शहीद परमानंद गुप्ता (मंगल गोत्र)** – आपकी पोस्टिंग 8वीं बटालियन, बिग्रेड ऑफ द गार्डस में हुई थी। 27 नवम्बर 1971 को तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान वर्तमान में बंगलादेश के मोरापारा नामक स्थान पर हुए युद्ध में हुई शहीद हुए। आपके पैतृक गांव की गली रायपुरियान का नाम बदल कर ''शहीद परमानंद गली'', रेलवे बाजार किया गया। आपका जन्म 01 मई 1945 को हुआ था।
5. **लेफ्टिनेंट योगेश अग्रवाल** – जम्मू-कश्मीर के कूपवाड़ा जिले में आंतकवादियों का सामन करते हुए अपने प्राणों की आहूति दी।
6. **मेजर मोहित बंसल** – 2011 में कश्मीर घाटी के कूपवाड़ा स्थित नियंत्रण रेखा पर तीन आतंककारियों द्वारा हमला किये जाने पर केवल एक सिपाही के साथ 52 घंटों तक मुकाबला किया एवं आतंकवादी संगठन के एरिया कमांडर सहित तीनों आंतकियों को मार गिराया। 2012 में माननीय राष्ट्रपति जी ने आपको ''**सेना पदक**'' से सम्मानित किया।
7. 1991 में सेना की आयुधकोर के महानिदेशक **ले. जनरल राजेन्द्रपाल अग्रवाल** को ''**परम विशिष्ट सेना पदक**'' से सम्मानित किया गया। आपको यह श्रीलंका में भारतीय शांति सेना को सहायता सामग्री पहुंचाने के लिये दिया गया।
8. **ब्रिगेडियर मनोहर लाल गर्ग** – ''**कीर्ति चक्र**'' से सम्मानित – 2-3 दिसम्बर 1984 को भोपाल शहर में जहरीली गैस फैलने पर पास ही स्थित फैक्ट्री के 1100 कर्मचारियों को अपनी जान की परवाह किये बिना अदम्य साहस का परिचय देते हुए उनको बचा लिया।
9. **वी.के.गुप्त** – आप उत्तर प्रदेश पुलिस के ऐसे अधिकारी रहे हैं जिन्होंने अनेक कुख्यात अपराधियों को मार गिराया था। आपने अपहरण कर्त्ताओं से बच्चे को मुक्त करवाने में अदम्य साहस का परिचय दिया। आपकी शानदार उपलब्धियों पर राष्ट्रपति महोदय ने ''**वीर चक्र**'' से सम्मानित किया।
10. **प्रदीप कुमार गुप्ता** – प्र.मं. राजीव गांधी के अंगरक्षक के रूप में आपन प्राण गंवाए। मरणोपरांत आपको **पुलिस पदक** से सम्मानित किया गया।
11. **शौर्य चक्र, कुमारी सविता गोयल** – आपने सशस्त्र डाकुओं से मुठभेड़ में अपने प्राणों की बाजी लगाकर अदम्य साहस का परिचय दिया। आपको ''**शौर्य चक्र**'' से सम्मानित किया।
12. **विंग कमांडर सचिन गुप्ता** – 18 जून 2013 को उन्हें हेलीकॉप्टर लेकर केदारनाथ में फंसे लोगों को निकालने के लिए भेजा गया। इन्होंने अपने अदम्य साहस से 237 लोगों को बचाया, 200 उड़ानें भरीं, 70 घंटे हवाई यात्रा की तथा 900 ग्राम राशन गिराया। गणतंत्र दिवस – 2014 को इन्हें वायु सेना मेडल प्रदान किया गया।
13. **मेजर जनरल अविनाश चंद्र मंगला** – विशिष्ट सेवा मेडल, आप सेना के ''**न्याय महाधिवक्ता**'' के पद पर आसीन रहे। यह सेना की न्याय शाखा का उच्चतम पद है।
14. **स्कावड्रन लीडर ओम प्रकाश सांघी, जोधपुर** – द्वितीय महायुद्ध से पूर्व शाही भारतीय सेना की उड़ान शाखा में कमीशन प्राप्त। द्वितीय महायुद्ध में सक्रिय रहे।

15. **लेफ्टीनेंट कर्नल पुरूषोत्तम तुलस्यान** – पिलानी के बंसल परिवार में 26 जनवरी 1948 को जन्म हुआ। सन् 1970 में भारतीय सेना में ब्रिगेड ऑफ गार्ड्स की दसवीं बटालियन में कमीशन। 1971 में युद्ध में शंकरगढ़ क्षेत्र में अद्‌भुत वीरता का प्रदर्शन। भात सरकार द्वारा ''**वीर चक्र**'' से सम्मानित।
16. **वी.के.गुप्ता** – पुलिस अधिकारी रहे वी.के.गुप्ता को उनके साहसिक कार्य के लिये 1997 में राष्ट्रपति महोदय की स्वीकृति के बाद ''**वीर चक्र**'' प्रदान किया गया।
17. **डा. प्रेमसागर गर्ग** – सिविल सर्जन, सन् 1971 के युद्ध में आपने सर्जन के रूप में सराहनीय कार्य किया जिसके फलस्वरूप राष्ट्रपति श्री वी.वी.गिरी जी ने ''**शौर्य चक्र**'' प्रदान किया।

महावीर चक्र प्राप्त ''अग्रवीर''

1. **कैप्टीन महावीर प्रसाद** – (मरणोपरांत 1962, भारत–चीन युंद्ध)
2. **रियर एडमिरल संतोष कुमार गुप्ता** – (एवं नौसेना मेडल, 1971 भारत– पाक युंद्ध), आप भारतीय नौसेना की वायु शाखा के उच्चतम पद, ''सहायक नौसेना अध्यक्ष'' (वायु) के पद से सेवानिवृत्त हुए।
3. **मेजर विवेक गुप्ता** – (मरणोपरांत 1999, कारगिल युंद्ध)

वीर चक्र प्राप्त ''अग्रवीर''

स्कवाड्रन लीडर सतीश नंदन बंसल, लेफ्टि. कर्नल छज्जु राम (एवं अति वि.सेवा मेडल, जब ब्रिगेडियर के पद पर थे), स्कवाड्रन लीडर महेन्द्र कुमार जैन(मरणोपरांत), विंग कमांडर केशव चंद्र अग्रवाल, फ्ला. लेफ्टिनेंट महावीर प्रसाद प्रेमी (एवं वायुसेना मेडल), फ्ला. लेफ्टिनेंट चंद्र मोहन सिंगला, लेफ्टिनेंट कर्नल पुरूषोत्तम तुलस्यान, कैप्टन आर.एस. गुप्ता, कैप्टन रविन्द्र नाथ गुप्ता, लेफ्टि. कर्नल सुरेश चंद गुप्ता, फ्ला. लेफ्टिनेंट विनोद पटनी, मास्टर चीफ पेटी ऑफीसर मेघनाथ संगल, फ्ला. लेफ्टिनेंट पी.डी.गुप्ता, लेफ्टिनेंट अशोक कुमार, लेफ्टिनेंट कमांडर दीपक अग्रवाल, फ्ला. लेफ्टिनेंट विश्वनाथ प्रकाश, फ्ला. लेफ्टिनेंट आदित्य विक्रम पेठिया

शौर्य चक्र प्राप्त ''अग्रवीर''

सार्जेंट श्याम बिहारी गुप्ता, फ्लाईंग आफिसर प्रमोद कुमार जैन, स्कवाड्रन लीडर प्रदीप कुमार तायल (एवं वायुसेना मेडल), नरेश कुमार गुप्ता (मरणोपरांत), कर्नल रामकृष्ण बंसल, नवल कांत (मरणोपरांत), मोहित सर्राफ, श्रीमती रेणु अग्रवाल (मरणोपरांत), स्कवाड्रन लीडर देवेन्द्र सिंह जैन, फलाइट लेफ्टिटीनेंट संदीप जैन (मरणोपरांत), मेजर धर्मेन्द्र गुप्ता, कुमारी सविता गोयल, स्कवाड्रन लीडर अनिल कुमार गुप्ता, स्कवाड्रन लीडर विश्वनाथ प्रकाश, मेजर विकास

गुप्ता, मेजर नवीन बिंदल, कैप्टन ललित कंसल, मेजर अंकुर गर्ग, ले.कर्नल अतुल गुप्ता, जूनियर वारंट ऑफिसर घासीराम बगड़िया।

कीर्ति चक्र प्राप्त ''अग्रवीर''

जय लाल गुप्ता, रविन्द्र नाथ गुप्ता, ब्रिगेडियर मनोहर लाल गर्ग (एवं वि.सेवा मेडल), हवलदाार बद्रीलाल लूनावत

परम विशिष्ट सेवा मेडल प्राप्त ''अग्रवीर''

एयर वाईस मार्शल–कृष्ण महेश अग्रवाल, ले.जनरल–हरप्रसाद, ले.जनरल–सोमदेव गुप्ता (एवं डिस्पेच में उल्लेख),, ले.जनरल– देवेन्द्र नाथ गुप्ता (एवं अति वि.सेवा मेडल), एयर मार्शल कृष्ण चंद्र गुप्ता (एवं वि.सेवा मेडल), मेजर जनरल–महेश चंद गुप्ता, मेजर जनरल–हरिनारायण सिंघल (एवं अति वि.सेवा मेडल), जनरल–मिथिलेश चंद गुप्ता, वाईस एडमिरल–सुखमाल जैन (एवं अति वि.सेवा मेडल तथा नौसेना मेडल), एयर वाईस मार्शल–छोटे लाल गुप्ता, वाईस एडमिरल–सुरेन्द्र पाल गोविल(एवं अति वि.सेवा मेडल तथा एस.डी.ओ.), ले. जनरल–अशोक मांगलिक (एवं सेवा मेडल), ले.जनरल–राजेन्द्र पाल अग्रवाल(एवं वि.सेवा मेडल), एयर मार्शल–प्रद्युम्न कुमार जैन(एवं वि.सेवा मेडल), ले.जनरल–विमल सिंघल, एयर मार्शल–एस.एस.गुप्ता (एवं अति वि.सेवा मेडल व वि.सेवा मेडल), एयर मार्शल प्राण नाथ बजाज (एवं वि.सेवा मेडल), ले.जनरल–अशोक अग्रवाल, ले.जनरल सुरेन्द्र कुमार जैन (एवं अति वि.सेवा मेडल व वि.सेवा मेडल), ले.जनरल वीरचंद जैन (वि.सेवा मेडल), लेफ्टीनेंट जनरल सुशील गुप्ता, (एवं अति वि.सेवा मेडल व युद्ध सेवा मेडल), जनरल राकेश कुमार गुप्ता, लेफ्टी. जनरल प्रेम कृष्ण गोयल (एवं अति वि.सेवा मेडल व वि.सेवा मेडल), लेफ्टी. जनरल राकेश मोहन मित्तल (एवं अति वि.सेवा मेडल, वि.सेवा मेडल व सेना मेडल), एयर मार्शल अशोक कुमार गोयल (एवं अति वि.सेवा मेडल, व वायु सेना मेडल), एयन मार्शल सतीश कुमार जैन (एवं अति वि.सेवा मेडल, व वायु सेना मेडल), एयर मार्शल जय कृष्ण गुप्ता (एवं अति वि. सेवा मेडल), एयर मार्शल नरेन्द्र कुमार (एवं सर्वोत्तम जीवन रक्षक पदक), एयर मार्शल दुष्यंत सिंह, ले.जनरल– जे.एम.गर्ग, वाईस एडमिरल ओमप्रकाश बंसल (एवं अति वि.सेवा मेडल व वि.सेवा मेडल), स्व. जनरल आर.पी. अग्रवाल–1991–अविस्मरणीय सेवा व विशेष कार्य के लिए।

एक से अधिक पुरस्कार प्राप्त करने वाले वीर अग्रबंधु

1. **श्री भारतेंदु प्रकाश सिंघल** – से.नि.भारतीय पुलिस सेवा – दो बार वीरता के लिये भारतीय ''पुलिस पदक'', एक बार सराहनीय सेवाओं के लिये ''भारतीय पुलिस सेवा पदक'' तथा एक बार देश के सर्वोच्च पुलिस पुरस्कार ''राष्ट्रपति के पुलिस पदक'' से सम्मानित। चार पुरस्कार प्राप्त कर आप पुलिस के सर्वोच्च अलंकृत अधिकारियों में से एक

हैं।

2. **सरदार बहादुर कैप्टन कल्याण सिंह गुप्ता** – मेंबर ऑफ ब्रिट्रिश अंपायर, ऑर्डर ऑफ ब्रिट्रिश इंडिया 1 व 2 प्राप्त कर तीन पुरस्कार प्राप्त किये।
3. **स्व. मेजर वेद प्रकाश राजवंशी** – मिलिट्री क्रास व डिस्पैचेस में उल्लेख। आपने ये दोनों पुरस्कार एक ही युद्धकाल में प्राप्त किये।
4. **ले.जनरल सोमदेव गुप्ता** – परम विशिष्ट सेवा मेडल एवं डिस्पैचेस में उल्लेख।
5. **ले.जनरल देवेन्द्र नाथ गुप्ता** – परम विशिष्ट सेवा मेडल एवं विशिष्ट सेवा मेडल।
6. **एयर मार्शल कृष्ण चंद्र गुप्ता** – परम विशिष्ट सेवा मेडल एवं विशिष्ट सेवा मेडल।
7. **मेजर जनरल हरनारायण सिंघल** – अति विशिष्ट सेवा मेडल एवं विशिष्ट सेवा मेडल।
8. **वाईस एडमिरल सुरेन्द्र पाल गोविल** – अति विशिष्ट सेवा मेडल एवं विशिष्ट सेवा मेडल।
9. **एयर मार्शल प्रद्युम्न कुमार जैन** – अति विशिष्ट सेवा मेडल एवं विशिष्ट सेवा मेडल।
10. **ले. जनरल अशोक मांगलिक** – विशिष्ट सेवा मेडल एवं सेवा मेडल।
11. **ले. जनरल राजेन्द्र पाल अग्रवाल** – परम विशिष्ट सेवा मेडल एवं विशिष्ट सेवा मेडल।
12. **ब्रिगेडियर मनोहर लाल गर्ग** – ''कीर्ति चक्र'' एवं अति विशिष्ट सेवा मेडल
13. **मेजर जनरल रविन्द्र गुप्ता** – अति विशिष्ट सेवा मेडल एवं बार।
14. **एयर मार्शल नरेश कुमार** – अति विशिष्ट सेवा मेडल एवं वायु सेना मेडल।
15. **कर्नल हरगुलाल** – अति विशिष्ट सेवा मेडल एवं ताम्र पत्र। आप ताम्र पत्र प्राप्त करने वाले बिरले सैनिक अधिकारियों में हैं।
16. **मेजर जनरल सुरेन्द्र नाथ** – अति विशिष्ट सेवा मेडल एवं विशिष्ट सेवा मेडल।
17. **कैप्टन संजय अग्रवाल** – सेना मेडल एवं बार।

एक ही परिवार के दो सदस्य पुरस्कार विजेता

1. **ब्रिगेडियर राजेन्द्र पाल मित्तल**, भारतीय ''पुलिस पदक'' एवं उनके छोटे भाई ब्रिगेडियर मुकुल लाल मित्तल ''सेना मेडल''।
2. **लेफ्टीनेंट कर्नल एस. डी. अग्रवाल**, ''डिस्पैच में उल्लेख'' तथा उनके पुत्र मेजर संजय अग्रवाल ''सेना मेडल'' एवं ''बार''।
3. **लेफ्टीनेंट जनरल हर प्रसाद** ''परम विशिष्ट सेवा मेडल'' एवं उनके भतीजे कैप्टन महावीर प्रसार ''महावीर चक्र''(मरणोपरांत)।
4. **एयर मार्शल प्रद्युम्न कुमार जैन** ''परम विशिष्ट सेवा मेडल'' एवं '' विशिष्ट सेवा

मेडल'' एवं उनके चचेरे भाई स्क्वाड्रन लीडर महेन्द्र कुमार जैन ''वीर चक्र''(मरणोपरांत)।

5. **एयर वाईस मार्शल सुरेन्द्र नाथ गोयल**, एम.ई. एवं उनके भतीजे रियर एडमिरल सुबोध चंद्र गुप्ता, ''विशिष्ट सेवा मेडल''।
6. **एयर कोमोडोर अशोक कुमार गोयल,** ''वायु सेना मेडल'' एवं उनके पुत्र शांतनु गोयल दोनों ने ही वायु सेनाध्यक्ष के प्रशंसा पत्र से सम्मान पाया है।

ब्रिट्रिश काल में सेनाओं में भर्ती होने वाले कुछ अधिकारी जैसे – मेजर जनरल – द्वारका प्रसाद गोयल (प्रथम भारतीय अधिकारी जो मेजर जनरल बने), ले.जनरल–कांता प्रसाद, कैसरे हिंदी मेडल। इनके अलावा – कैप्टन शंकर लाल गुप्ता, कैप्टन–केदार नाथ गोयल, कैप्टन–बलदेव गुप्ता, कैप्टन–कल्याण सिंह गुप्ता ओ.बी.आई., सरदार बहादुर सूबेदार–के.एल. जैन ओ.बी.आई.,सरदार बहादुर सूबेदार त्रिलोक चंद जैन ओ.बी.आई.,।

द्वितीय महायुद्ध से पूर्व व इसके आस–पास भर्ती होने वाले शाही भारतीय तोपखाने रेजीमेंट के बहादुर – ले.जनरल–सोमदेव गुप्त(परम वि.सेवा मेडल), ब्रिगेडियर–चंद्रशेखर, मेजर भगवान स्वरूप गुप्ता, ब्रिगेडियर राजेन्द्र पाल मित्तल(भारतीय पुरस्कार पुलिस मेडल), मेजर बी. एम.गुप्ता इत्यादि। इसके अलावा आर्मड कौर, इन्फैट्री, रॉयल इंडियन इंजीनियर्स, इंडियन आर्डनेंस,रॉयल इंडियन आर्मी सर्विसे कौर, इंडियन मैडिकल सर्विस, शाही भारतीय नौसेना, शाही भारतीय वायुसेना में भी अनेक अग्रबंधु भर्ती हुए व वीरता का परिचय दिया।

पुस्तक – वैश्य अग्रवाल – एक परिचय

:: आध्यात्मिक व धार्मिक जगत की ''संत'' विभूतियां ::

आध्यात्मिक क्षेत्र में अग्रवाल समाज के उच्च कोटि के विद्वान एवं मनीषी संत एवं धर्माचार्य हुए हैं। कुछ ने कम उम्र में संन्यास ले लिया तो इनमें से काफी संत गृहस्थी त्याग कर हुए हैं तथा कुछ ने गृहस्थ जीवन में रहते हुए संत परम्परा में अपना जीवन व्यतीत किया। महाराजा अग्रसेन के वंश में त्याग तपस्या एवं भक्ति का जो यह अनोखा संगम प्रस्तुत हुआ वह सिर्फ अग्रवाल समाज ही नहीं बल्कि सभी भक्त व धर्म प्रेमी सज्जनों के लिए गौरव की बात है।

1. **परमपूज्य विद्यावाचस्पति श्रीधर स्वामी जी महाराज, अप्पा स्वामी, मठ पंच गव्हागणकर** – अग्रवाल समाज की महान् धार्मिक विभूति हैं। आप सबसे पहले रिसोढ़ में प्रगट हुए। आपका जन्म 8 फरवरी 1928 में राजस्थानी अग्रवाल परिवार में हुआ, आपने एम. ए. संस्कृत व अंग्रेजी में किया। बनारस विद्यापीठ से ही आपने विद्यालंकार वाचस्पति की उपाधि प्राप्त की। इस प्रकार की उपाधि प्राप्त करने वाले महाराष्ट्र के आप एकमात्र अग्रवाल हैं। आप अनके भाषाओं के प्रकांड विद्वान हैं। आप गुजराती, मराठी, राजस्थानी, हिंदी आदि भाषाओं में कथा सुनाते हैं। आपने केरल में अंग्रेजी में कथा सुनाकर सबको आश्चरर्य चकित कर दिया। अमेरिका में सनातन धर्म पर प्रवचन देने का श्रेय आपको प्राप्त है।
2. **संत स्वामी अमरानंद जी महाराज** – धार्मिक जगत की विशिष्ट विभूति – आपका जन्म 25 मार्च 1925 को देहली के स्वत्रंता सैनानी श्री ताराचंद जी अग्रवाल के यहां अलीपुर ग्राम में हुआ था। आपने दिल्ली के बकौली आश्रम के संत स्वामी श्री रामभारती जी से दीक्षा ली, आप 1987 में घर बार त्याग कर संन्यासी बने। प्रारंभ से ही आप राष्ट्रभक्त व धर्मपरायण रहे तथा प्रारंभ से ही हरिद्वार में चित्रकूअ आश्रम में थे, बाद में संन्यास ग्रहण कर चरखी दादरी में ''**गीताभवन आश्रम**'' की स्थापना की तथा यहीं पर रहकर अपना पूरा जीवन धर्म, समाज एवं गौसेवा में समर्पित कर दिया। हरिद्वार के चित्रकूट आश्रम के पास 14 जनवरी 2003 को महानिर्वाण प्राप्त कर जल समाधिस्थ हो गए।
3. **स्वामी ओमानंद जी (हरिद्वार)** – आप महामंडलेश्वर मंडल के महामंत्री रहे हैं।
4. **महामंडलेश्वर स्वामी शुकदेवानंद जी सरस्वती महाराज** – पूरे देश में ''**परमार्थ निकेतन**'' नाम से सेवा केंद्रों तथा मंदिरों की श्रृंखला स्थापित करने में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा। अपका जन्म वि.सं. 1959 में बिजनौर जिले के गंगातट पर स्थित परम वैष्णव लाला जगन्नाथ अग्रवाल के यहां हुआ। आपका बचपन का नाम ''प्रयाग नारायण'' था। देवी संपदा महामंडल के संस्थापक स्वामी एकरसानंद जी से आपने संन्यास की दीक्षा ली।
5. **महामंडलेश्व स्वामी भजनानंद जी सरस्वती** – आपका बचपन का नाम ''लड़ेते लाल अग्रवाल'' था। बचपन से ही धार्मिक संस्कार होने के कारण आपने भी एकरसानंद जी महाजराज से दीक्षा ली। आपने धर्म और अध्यात्म के प्रचार प्रसार में विशिष्ट योगदान दिया।

आप परमार्थ निकेतन के अधिष्ठाता के रूप में धर्म तथा हिंदू संस्कृति की सेवा में रत हैं।

6. **महामंडलेश्वर स्वामी असंगानंद जी सरस्वती महाराज** – आप गंगातट पर स्थित ऋषिकेश (स्वर्गाश्रम) में परमार्थ निकेतन के अधिष्ठाताओं में प्रमुख हैं। आपका जन्म बरेली के आंवला नगर में ''लाला राजकुमार अग्रवाल'' के यहां 15 अक्टूबर 1936 को हुआ। आपने 1991 में सन्यास धर्म की दीक्षा ली और लंबे समय तक परमार्थ निकेतन के संस्कृत विद्यालय में प्राचार्य रहे, यहां मंदिर, सत्संग भवन तथा अन्य लोकोपकारी कार्यों के संचालन में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा तथा आपने हरिद्वार, दिल्ली, विदर्भ आदि अनेक स्थानों में परमार्थ निकेतन की श्रृंखला स्थापित कर हिंदू धर्म तथा संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। 12 मई 1991 को हरिद्वार के परमार्थ आश्रम में हजारों की संख्या में उपस्थित संतों के समक्ष ''महामंडलेश्वर'' की उपाधि ग्रहण की। स्वामी शुकदेवानंद जी महाराज ने 1942 में मुमुक्षु आश्रम शाहजहांपुर की स्थापना की जहां पर आपके पिताजी ने आपको मात्र नौ वर्ष की उम्र में महाराज जी के चरणों में छोड़ दिया। 80 वर्ष की उम्र में आपने मोक्ष प्राप्त किया।

7. **महामंडलेश्वर कैलाश मानव** – उदयपुर नगर स्थित राजस्थान में भारत की प्रसिद्ध संस्था ''**नारायण सेवा संस्थान**'' के संस्थापक। आपका पूरा नाम श्री कैलाश चंद्र अग्रवाल है। विकलांगों एवं समाज के अभाव ग्रस्त लोगों की सहायता के साथ धर्म प्रचार में भी रूचि। हरिद्वार कुंभ के अवसर पर सन्यास की दीक्षा एवं ''महामंडलेश्वर'' की उपाधि से विभूषित हुए। देशभर में श्रीमद्भागवत,रामचरित मानस व अन्य कथाओं का आयोजन। विविध धार्मिकम चौनलों पर आपके कार्यक्रमों का प्रसारण निरंतर होता रहता है।

8. **स्वामी प्रबुद्धानंद सरस्वती** – आप एक महान् साधक तथा साहित्यिक सेवी संत हैं। आगरा के अग्रवाल परिवार में जन्में प्रबुद्धानंद जी 28 वर्षों तक स्वामी अखंडानंद सरस्वती के साथ रहे। अब आप शुक्रताल में रह रहे हैं।

9. **श्री श्री 1008 समंदर शाह जी महाराज**– आपने सांई जी की बेरी जो सिवाणा(जालोर) राजस्थान में है मठ की स्थापना की। यह मठ 250 साल से भी अधिक पुराना है। आप यहां के गादिपति थे, आप महान तपस्वी संत थे, आपने जीवित समाधि ली। आपका कोई भी शब्द झूंठा नहीं जाता था। आप बालोतरा निवासी अग्रवाल परिवार से ताल्लुक रखते थे। आप शस्त्रों को चलाने में जबरदस्त सिद्धहस्त थे। कहते हैं कि आपने कुछ युद्धों में भाग लिया। आपके अनेक शस्त्र आज भी मठ में रखे हैं।

10. **रामस्नेही स्वामी मुरलीराम जी महाराज** – आप रामस्नेही सम्प्रदाय के आचार्य थे। आपका जन्म भक्त कवयित्री मीरा की पावित्र भूमि मेड़ता में ''श्री रामनाथ अग्रवाल'' व माता ''श्रीमती गंगा देवी'' के यहां माघकृष्ण 7, विक्रमी 1802 को हुआ। ब्राह्मणों ने आपका नाम ''मुरलीधर'' रखा। आपने 1826 में स्वामी रामचरण दास जी महाराज से दीक्षा ली और रामभक्ति की अलख घर-घर में जगाई। आपने 24000 अनुष्टुप छंदों (श्लोकों) की रचना कर रामस्नेही संप्रदाय के साहित्य की वृद्धि में योगदान दिया। आपकी प्रसिद्धि

''**आण भवानी**'' के रूप में हुई व इसी रूप में आपको पूजा भी जाता है। रायपुर मारवाड़ में आपकी समाधि स्थली पर रामद्वारा स्थापित है। आपके प्रताप से ही बलाड़ ग्राम(भीलवाडा) में सूखा तालाब मीठे पानी से लबालब भर गया, यह जलाशय आज ''**मुरली सागर**'' के नाम से जाना जाता है। पूरे मारवाड़ व अन्य स्थानों में आपने रामस्नेही संप्रदाय की पताका को फहराया। भाद्रपद कृष्ण 2, विक्रमी संवत् 1857 को आपने शरीर का त्याग किया।

11. **महान् संत जैन मुनि सुदर्शनलाल जी महाराज** – आप सुप्रसिद्ध जैन संतों में से एक हैं। आपका जन्म रोहतक के गर्ग गौत्री अग्रवाल सेठ चंदगीराम जैन के यहां 4 अप्रैल 1923 को हुआ। 18 जनवरी 1992 को सुप्रसिद्ध संत मदनलाल जी महाराज संगरूर से आपने दीक्षा ली, आपका संपूर्ण जीवन धर्म प्रचार एवं मानव सेवार्थ समर्पित रहा। आपने अपने उपदेशों से लाखों लागों को मांस, मदिरा व नशा सेवन आदि अनेक दुर्वयसनों से मुक्ति दिलाकर उनके कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। ''एक ईंट व एक मुद्रा'' के अनूठे सिद्धांत के आप प्रशंसक थे।

12. **बाल ब्रह्मचारी श्री रामस्वरूप भगत** – ''लाला श्यामलाल जी गोयल'' व माता ''गोमती देवी'' के घर 13 अक्टूबर 1928 को गांव सातरोड में आपका जन्म हुआ। माताजी धार्मिक विचारों की थीं और हमेशा हनुमान जी की भक्ति में लीन रहती थीं। माता जी के संस्कारों के कारण वे सांसारिक बंधनों से मुक्त रहे। सत्संग व भजन कीर्तन में माताजी के साथ रहने से बचपन में ही अनेक भजन कंठस्थ हो गए। माताजी की आज्ञा से ही इन्होंने ''बाल ब्रह्मचारी'' रहने की प्रतिज्ञा ली और माताजी की प्रबल इच्छा-शक्ति से ही इन्हें भगवान की भक्ति, तपस्या और साधना करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। इस प्रकार माताजी इनकी आध्यात्मिक गुरू बनीं। भगवान हनुमान जी की उपासना में ये इतने लीन हो गए कि साधना हेतु आपने 14 वर्षों तक अन्न नहीं खाया, कठोर तपस्या की। आपने हनुमान भजनावली, समाज सुधार भजनावली, नरसी भात, राजा हरीशचंद्र की असली कथा, मोरध्वज की असली कथा, गोपीचंद भरथरी, देवियों के गुरू अधिकार, श्री परमपिता हनुमान जी का दिव्य जीवन, हनुमान पचासा, आरती-माला, ओम नमो गुरू पिता हनुमंते आदि अनेक पुस्तकें लिख कर छपवाईं। परम पिता हनुमान जी के जीवन चरित्र और भक्ति के संबंध में इन्होंने जो ''ओम नमो गुरू पिता हनुमते'' ग्रंथ लिखा है वह वास्तज में एक शोध ग्रंथ है। कड़ी साधना व तपस्या के कारण इन्हें परमपिता हनुमान जी का इष्ट प्राप्त हुआ और उन्हीं के सिद्धहस्त हुए। आपने एक हनुमान मंदिर बनवाया व वहीं पर प्रेम कुटी बनाकर रहते थे। इन्होंने समाज की भलाई के लिए कई स्थानों पर कमरे, सकूलों में कमरे व एक कुंआ बनवाया, हरिद्वार में गुरू आत्मानंद जी के आश्रम में एक बड़ा हॉल बनवाया। प्रेम कुटी के पास ही एक बहुत बड़ी सार्वजनिक धर्मशाला भी बनवाई।

13. **श्री श्री 1008 श्री सेवाराम जी महाराज** – आपका जन्म बालोतरा, राजस्थान में प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार, (सिंघल गोत्री) के यहां हुआ। आपने गुरू विरमाराम जी महाराज से

वैराग्य की दीक्षा ली। आप चोंच मंदिर के गादीपति हुए। आपका जीवन मानव सेवा व प्रभु राम की भक्ति में बीता। आपने अनेक धर्माथ कार्यों का आयोजन किया, आपका नाम एक सिद्ध व प्रसिद्ध संतों की श्रेणी में आता है।

14. **महान् अग्रविभूति संत श्री श्री 1008 स्वामी श्री हरिदास जी महाराज** – आपका जन्म बालोतरा, राजस्थान में वि.सं. 1969 को श्री बांकीदासजी अग्रवाल, (गर्ग गोत्री) के यहां हुआ। आपने अपने गुरू संत श्री सेवाराम जी महाराज से सं. 1983 को वैरागी दीक्षा ली। वि सं 2010 में आप चोंच मंदिर के गादीपति हुए। आपने 70 वर्ष तप, तपस्या, त्याग एवं सीताराम स्मरण करते हुए परोपकारमय जीवन व्यतीत किया। वि सं 2052 को आप साकेत धाम पधारे। आप एक सिद्ध संत थे। आपने बालोतरा में भव्य कांच का ''श्री सीताराम चोंच मंदिर'' बनवाया।

15. **श्री 1008 जगत गुरूवर काशी पीठाधीशवर स्वामी रामशरणाचार्य जी महाराज** – आपका जन्म बालोतरा, राजस्थान में स्व. रामस्वरूप जी आजाद, सिंघल गोत्री परिवार में हुआ। आपने काशी में ''सीताराम काशी पीठ'' का निर्माण करवाया। आपकी विद्वता से प्रभावित होकर काशी पंडित सभा ने आपको सार्वभौम ''भगवत रत्न'' की उपाधि से सम्मानित किया। आप वैष्णव रामानंद संप्रदाय में श्री हरिदास जी महाराज से संवत् 2032(1975) में दीक्षा लेकर संन्यासी बने। आप रामानंद संप्रदाय श्री सीताराम चोंच मंदिर, बालोतरा के गादिपति भी रहे हैं। आप अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष–अ.भा.संत परिषद, केंद्रीय मार्गदर्शक –विश्व हिंदू परिषद, अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष व संस्थापक–रामशरण मिशन, अध्यक्ष– अखिल हिंदू रक्षा समिति, मानद मार्गदर्शक– अ.भा.गोरक्षा संघ, संस्थापक–संस्कृत वैदिक गुरूकुल व योगालय आदि अनेक संगठनों से जुड़े हैं। अनेक देशों में आपने धर्म प्रचार का कार्य किया है। 1987 में नेपाल में आयोजित विश्व हिंदू परिषद की ओर से आपने धर्माचार्यों का नेतृत्व किया।

16. **बालमुकुंद जी महाराज** – ब्रह्मलीन महाराज जी का जन्म अग्रवाल परिवार में संवत् 1540 को मेरठ में हुआ। कहते हैं कि आप सिद्ध पुरूष थे, आपको मृत्यु से पूर्व मां अन्नपूर्णा जी के दर्शन हुए, आपको हनुमान जी ने भी दर्शन दिए। आपने अपने तप के प्रभाव से अनेक बार अनहोनी को होनी में बदल दिया व अपनी चमत्कारिक शक्तियों का परिचय दिया। आपका स्थान एक सिद्ध स्थान है। हजारों लोग आपकी समाधि के दर्शन करने जाते हैं। आपके संबंध में अनेक चमत्कारिक सत्य कथाएं प्रचलित हैं। एक बार भंडारे के लिए घी कम पड़ गया तब आपने कहा कि जाओं गंगा जी से कर्ज ले आओ, जब गंगाजल को कड़ाहों डाला गया तो वह देशी घी बन गया।

17. **संतदास** – सुप्रसिद्ध संत दादू दयाल के 52 शिष्यों में से एक। चमड़िया अग्रवाल वैश्य। आपने 2000 अनुष्टुप छंदों में वाणी की रचना की।

18. **नैष्टिक ब्रह्मचारी श्री केशवानंद जी महाराज** – (अग्रविभूति महंत जी) – आप अग्रवाल वंश में जन्मी महान् विभूति हैं। जग प्रसिद्ध ऐतिहासिक श्री शुक्रतीर्थ (शुक्रताल) में

संस्थापित हनुमत धाम के आप महंत हैं।

19. **स्वामी जीवयोगी जी महाराज** – आप परमार्थ निकेतन की विशिष्ट विभूतियों में से एक हैं। आपने परमात्मा दर्शन, धर्म, योग आदि के नाम से अनेक धार्मिक पुस्तकों का सृजन किया। आपने सत्संग व प्रवचनादि के माध्यम से धर्म प्रचार में सहयोग दिया। आप उच्च शिक्षित हैं व महाविद्यालय में इंजीनियरिंग व टेक्नोलोजी के विभागाध्यक्ष रहे। मानवमात्र को धर्मसंदेश देने के लिए व सांसारिक सुखों का त्याग कर आपने संन्यास धारण किया। आप भागवान कृष्ण को अपना आराध्य मानते हैं। अग्रवाल होने के नाते महाराजा अग्रसेन के सिद्धांतों से विशेष प्रेम रखते हैं व अग्रोहा को भी आपने अपने आध्यात्मिक प्रेरणा का केंद्र बिंदु बनाया। आप परमार्थ निकेतन में विराजते हैं।

20. **अवतरी बाबा गंगाराम जी** – आपका जन्म झुंझनु के गोयल गोत्री अग्रवंशी परिवार में वि. सं. 1952 श्रावण शुक्ला दशमी को हुआ। युवावस्था में बाराबंकी जिले में कल्याणी नदी के तट पर आप आश्रम बनाकर धर्म साधना करने लगे और 42 वर्ष की आयु में आप ब्रह्मलीन हो गए। कहा जाता है कि आपके श्रीमुख से निकली वाणी निष्फल नहीं होती थी। आपकी प्रेरणा से सीकर–लोहारू मार्ग पर भव्य ''पंचदेव मंदिर'' का निर्माण करवाया गया। मंदिर के गर्भगृह में मंदिर के संस्थापक श्री देवकीनंदन अग्रवाल की मूर्ति लगी है।

21. **संत पूनम देवी जी (अग्रवाल)** – **विदर्भ की मीरा** के नाम से ख्याति प्राप्त व विख्यात संत दरियाव जी महाराज द्वारा स्थापित रामस्नेही सम्प्रदाय के पीठाधीश्वर सुप्रसिद्ध संत हरिनारायण जी की आप शिष्या हैं तथा सन्यास की दीक्षा भी आपने इन्हीं से ली। आप रामकथा के माध्यम से लोगों के हृदय में भक्ति जगाने का प्रयास कर रही हैं। आपने एम. कॉम. की शिक्षा प्राप्त करके संन्यास ले लिया।

22. **गृहस्थ संत बाबू रामस्वरूप गुप्ता** – राधास्वामी संत भिवानी वाले। आपका जन्म रामनवमी को सन् 1896 में हुआ तथा स्वर्गारोहण 12 अगस्त 1966 को हुआ। श्रृद्धालु राधास्वामी सत्संग भक्तजनों ने बाबू साहब की स्मृति में मोक्षधाम, चांदपोल– जयपुर में इनके समाधि स्थल के पास एक सत्संग भवन का निर्माण करवाया है।

23. **1008 श्री रामशरण दास जी महाराज** – आपके बचपन का नाम रामस्वरूप जौहरी था। जोधपुर के जौहरी (अग्रवाल) परिवार के स्व0. सेठ श्री रामधन जी जौहरी के चार पुत्रों में आप ज्येष्ठ थे। आपका विवाह 16 वर्ष की आयु में हुआ आपका जन्म संवत 1990 में हुआ तथा मोक्ष संवत् 2000 में हुआ। आपने संत श्री 108 श्री शांतेश्वर जी महाराज की प्रेरणा से वर्ष 1996 में पत्नी के साथ संतरूप धारण किया। संन्यास के बाद आप दिनरात ईश्वर के भजन–ध्यान में लीन रहे। जोधपुर से ही और महिलाएं संत हुई हैं जिनमें प्रमुख हैं – श्री गंगाराम जी महाराज, श्री भगवानदास जी महाराज।

24. **परम श्रृद्धेय श्री रामकृष्ण जी महाराज**– आप अवधूत वैरागी समाधिस्थ, गीता पाठी, ब्रह्मनिष्ठा, शांति परमहंस महात्मा थे। आपने 20 वर्ष तक मौन रखा और दुखी व पीड़ित निर्धन प्राणियों पर करूणा करके उनके भविष्य के बारे में प्रश्न करने का पूरा अवसर दिया।

आप वचन सिद्ध, ईश्वर तुल्य महात्मा थे। आपका जन्म संवत् 1942 में जोधपुर नगर के प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार श्री हरिदास जालानी के यहां हुआ। आप संवत 1994 में गृहस्थ जीवन त्याग कर महात्मा बने। संवत् 2014 को आप परमधाम पधारे।

25. **केशवानंद (केदार जी) महाराज** – आपका जन्म सन् 1902 में अग्रवाल जाति के कंदोई परिवार में श्री धूताराम व माता श्रीमती कीकीबाई अगवाल के यहां हुआ था। जन्म के समय ज्याातिषियों ने कहा कि बालक के राजयोग बनता है तथा उच्च कोटि का वैराग्य योग है। आपकी पत्नी भंवरी बाई (संत भगवान जी महाराज) जो सिद्ध संत योगीराज परमहंस रामकृष्ण महाराज की एकमात्र पुत्री थीं ने भी अपने पति के शांत होने के बाद संन्यास ले लिया। आपने भक्तों के कष्ट दूर किए तथा भक्ति की सरिता निरंतर बहाई। अनेक भक्तों के कार्य आपने सिद्ध किए। आप 1976 में मोक्षधाम पधारे।

26. **अग्र नागा बाबा श्री सीताराम दास निर्मोही** – आप नागा बाबा आश्रम बाड़मेर के संस्थापक थे। आपका जन्म भरतपुर (राजस्थान) के गर्ग गोत्री अग्रवाल परिवार में हुआ। आपने बचपन में ही घरबार त्याग कर संन्यास धारण कर लिया। सन् 2013 में आप गोलोकवासी हुए।

27. **स्वामी ज्ञानस्वरूप सानंद जी महाराज** (प्रोफेसर जी.डी.अग्रवाल, देश के सबसे सम्मानित पर्यावरणीय इंजीनियर) –

आप मां गंगा के अनन्य भक्त, महान् संत एवं मशहूर पर्यावरणविद् थे। आइ.ं आई. टी. कानपुर से सेवानिवृत्त प्रोफेसर, जी. डी. अग्रवाल सन्यास के उपरांत स्वामी ज्ञानस्वरूप सानंद के नाम से जाने जाते थे, आपने केलीफोर्निया में पर्यावरण इंजीनियरिंग में पी.एच.डी. की। आप महात्माआ गांधी चित्रकूट विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष रहे। ''अविरल गंगा – निर्मल गंगा'' अभियान के प्रणेता प्रो. अग्रवाल को ''गंगा किनारे अवैध खनन'' और ''गंगा का प्रदूषित जल'' उनकी चिंता के प्रमुख कारण थे। 2010 में उनके अनशन के बाद गंगा पर बने रहे प्रोजेक्ट बंद हुए, पर बाद में पिछले दरवाजे से पुनः चालू हो गये। बांधों के कारण हरिद्वार में जब गंगा का पानी कम होने लगा तथा मां गंगा में फैले प्रदूषण के कारण आपने अनशन किया। आपके प्रयासों के फलस्वरूप गंगा को ''**राष्ट्रीय नदी घोषित**'' कर दिया गया। 12 अक्टूबर 2018 को 86 वर्ष की उम्र में, 111 दिन के **अनशन** के दौरान आपका स्वंर्गवास हो गया। अंतिम इच्छा के अनुसार उनका शरीर काशी हिंदू विशविद्यालय को दे दिया गया। पर्यावरण के लिये आप जीवन पर्यन्त आप संघर्षरत रहे। आपका जन्म 20 जुलाई 1932 को मुजफ्फर नगर के कंधाला गांव में हुआ था। आई.आई. टी.कानपुर के ख्याति प्राप्त प्रोफेसर और केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में महत्वपूर्ण योगदान के लिये आपकी सराहना की गई।

28. **ब्रजेश्वरी देवी** – महान् संत जगदगुरू कृपालु जी महाराज की शिष्या एवं देश के सभी भागों में धर्म प्रचार।

29. **धर्ममूर्ति सुश्री बृजगोचरी देवी** – महान् संत जगदगुरू —पालु जी महाराज की शिष्या एवं प्रचारिका। आप अग्रवाल समाज की महान महिला संत हैं। आप लखनऊ विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र से स्नात्कोत्तर हैं।

30. **भक्त ललित किशोरी व ललित माधुरी जी** – सखी संप्रदाय के अनुयायी तथा भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं के अमर गायक – दोनों भाई भक्ति रस के सख्य भाव के परम मर्मज्ञ थे । आपने जीवन के अंतिम समय तक राधा रानी और नंदनंदन श्रीकृष्ण के सौंदर्य, माधुर्य और सरस तथा चिन्मय प्रेम से ओतप्रोत वृंदावन के रमणीय भागवत के लिए कुंज मंडल में निवास कर रसब्रह्म की उपासना की। आपका जन्म लखनऊ के गोविंद लाल जौहरी के यहां हुआ, आपका बचपन का नाम शाह ''कुंदन लाल'' व ''शाह फंदन लाल'' था। आपके पिता को लखनऊ के नवाब ने ''**शाह**'' की ''**उपाधि**'' प्रदान की। आपने अपने ज्योष्ठ पुत्र की याद में ''**राधारमण मंदिर**'' बनवाया। भारतेंदु हरीशचंद्र जी ने लिखा है कि दोनों भाईयों की राम-लखन की जोड़ी थी। दोनों कृष्ण भक्त थे। दोनों भाईयों की जोड़ी भगवान की प्रेम लीलाओं का गुणगान करने लगी। आपने 10,000 से अधिक **पदों** की रचना की। भगवान श्रीकृष्ण ने आपको दर्शन दिए। दोनों ने राधारमणीय गोस्वामी राधागोविंद जी से दीक्षा ली। संवत् 1917 में उन्होंने ''**ललित कुंज नाम से मंदिर**'' बनवाया वृंदावन में करोड़ों रूपयों की लागत से प्रसिद्ध ''**शाहबिहारी जी के मंदिर**'' का निर्माण करवाया।

31. **भक्त रामशरण दास – संत साहित्य के प्रसिद्ध लेखक** – आपका जन्म उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद के ग्राम बझैड़ा में 6 मार्च 1915 को हुआ। आपके पिता श्री नारायण दास अग्रवाल एक समृद्ध जमींदार थे। आपने पिलखुआ के ठाकुर द्वार में स्वामी श्रीकृष्ण बोधाश्रम का 1933 में शिष्यत्व ग्रहण किया। आपने उड़िया बाबा से भी ज्ञान प्राप्त किया। आप श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, जयदयाल गोयंदका व पं. मदनमोहन मालवीय जी के संपर्क में आए। आपने उड़िया बाबा के कहने पर विवाह किया। स्वामी कृष्ण बोधाश्रम जी, पूज्य करपात्री जी महाराज आदि की प्रेरणा से आप जीवनभर सनातन धर्म के प्रचार में लगे रहे। आपके लेख कल्याण में भी पर्याप्त मात्रा में छपे तथा आपके द्वारा प्रस्तुत पुनर्जन्म की सत्य घटनाएं अत्यंत लोकप्रिय हुईं। भक्त रामशरण दास जी ने पिलखुआ में एक संग्रहालय की स्थापना की जो अब एक दर्शनीय स्थल बन चुका है। श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी ने इस ''विश्व प्रसिद्ध संग्रहालय'' की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। आपके सुपुत्र स्वतंत्रता सैनानी श्री शिव कुमार गोयल थे जो खुद प्रसिद्ध साहित्यकार, कहानीकार व लेखक थे।

32. **रतनचंद जी अग्रवाल** (एक महान् संत) – आपका जन्म 8 जुलाई को पंजाब के हिम्मतपुरा ग्राम जिला मोगा में हुआ। आप एच. टी. कॉलेज बरनाला में प्रोफेसर थे, आध्यात्मिक जिज्ञासा जाग्रत होने पर पद से त्याग पत्र देकर सत्य की खोज में निकले। भारत के विभिन्न स्थानों का भ्रमण करते हुए आपने चित्रकूट को अपना तप क्षेत्र बनाया। श्री ओम प्रकाश अग्रवाल के निवेदन पर आपने किशनपुर स्थित स्वानमी चैतन्या तपस्थली लक्ष्मी कुंवर मंदिर में स्थित भूगर्भ कक्ष को अपना तप स्थान बनाया। आपने अपने श्री मुख से जनकल्याण हेतु

विभिन्न विषयों पर प्रवचन दिए हैं।

33. **प्रसिद्ध कथावाचक भाई रवि जी** – राजस्थान की वीर प्रसूता भूमि जोधपुर में आध्यात्मिक साधना करते हुए देश के विभिन्न क्षेत्रों में हर वर्ग के लोगों के लिए भाई रवि जी महाराज श्रीमद्भागवत कथा के माध्यम से आध्यात्म की राह दिखा रहे हैं। भाई रवि जी (सिंघल–गोत्र) का जन्म जोधपुर में सन् 1984 को श्री महेशचंद्र जी अग्रवाल के यहां हुआ। बचपन से आध्यात्म की राह को अपना लक्ष्य बना भारत के महान् संतों का सत्संग प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त किया। जिनमें सेठ जयदयाल गोयन्दका, भाई हनुमानप्रसाद जी पोद्दार, स्वामी रामसुखदास जी, शरणानंद जी, मुरारी बापू प्रमुख हैं। आपने बाड़मेर जिले के पचपदरा गांव में विराजमान निर्जल, निर्मल, निराहारी संत श्री श्री 1008 महासती भगवती मां से दीक्षा ग्रहण की तथा अपनी ग्रेजुएशन पूरी करने के बाद संपूर्ण रूप से इस मार्ग में लग गए। रवि जी का कहना है कि बुराई न करना विश्व की सेवा है, भलाई करना यह परिवार, समाज और देश की सेवा है। अचाह (इच्छा रहित) होना यही अपनी सेवा है और प्रेमी होना प्रभु की सेवा है।

34. **संन्यासी राजेश कुमार गर्ग ऊर्फ ऋषि जी** – आप पंजाब के थे व पेशे से चार्टड एकाउंटेंट थे। आपने 40 वर्ष की उम्र में संन्यास लिया था। चीते के हमले में आपका स्वर्गवास हो गया।

35. हरिययाणा के **श्री चिरंजीपुरी जी** (कुरूक्षेत्र) तथा महामंडलेश्वर **जमुनापुरी जी महाराज** जो हरिद्वार में हैं भी अग्रवाल हैं।

36. **श्री सुखराम जी रामस्नेही संप्रदाय के प्रमुख अग्रवाल संत** – श्री अंकदास जी, श्री आदिदास जी, ज्ञानदास जी, श्री रतनदास जी (कोलकाता), श्री आज्ञादास जी, महिला साध्वी निश्कर्मा जी (सूरत), श्री निर्मोही जी, महिला साध्वी निष्ठा जी, नेहचला जी, (दिल्ली) महिला साध्वी वर्तिका जी (बरेली)

37. **श्री सुखराम जी रामस्नेही संप्रदाय के प्रमुख अग्रवाल संत** – श्री अंकदास जी, श्री आदिदास जी, ज्ञानदास जी, श्री रतनदास जी (कोलकाता), श्री आज्ञादास जी, महिला साध्वी निश्कर्मा जी (सूरत), श्री निर्मोही जी, महिला साध्वी निष्ठा जी, नेहचला जी, (दिल्ली) महिला साध्वी वर्तिका जी (बरेली)

38. **श्री गयाधर प्रसाद (पुत्र श्री कामेश्वर प्रसाद जी)** – आप रामभक्त थे तथा घरबार छोड़कर साधू हो गये । आप **''सियामोहिनी शरण''** जी के नाम अयोध्या के संतों में विख्यात थे। इन्होंने अयोध्या में सरयू तट पर भगवान राम का मंदिर, पक्का घाट और संतो के आवास बनवाकर ट्रस्ट कायम करके संपत्ति दान में दे दी थी। आप कवि भी थे। इन्होंने प्रेमपीयूष धारा नाम की पुस्तक छपवाई थी और अंतिम समय अयोध्या में व्यतीत किया।

इनके भाई **श्री गया प्रसाद** श्री कृष्ण भक्त थे तथा इन्होंने अपना नाम वैष्णवदास रखा था और वैष्णव विनोद तथा भ्रमरशतक नाम की दो पुस्तकें लिखकर छापी थीं। गया प्रसाद बहुत

बड़े दानी थे। उनका बनवाया गया कुंआ और मकान पुरी तीर्थ और रामेश्वर धाम में अभी भी है। कचौड़ी गली में गंगा स्नान करके मणिकर्णिका घाट जाते थे तो जेबों में रूपये और रेजगारी भरी रहती थी। रास्ते भर बिना गिने मांगने वालों को नित्यप्रति बांटते थे। इनके पिता **श्री कामेश्वर प्रसाद जी** ने अपने जीवन में आसभैरों पर श्री निवास मंदिर, तरना में पंचकोशी के रास्ते में पक्का तालाब और संस्कृत की पाठशाला स्थापित की तथा ट्रस्ट बनाकर बहुत बड़ी जायदाद दान में दी थी।

श्री काशी अग्रवाल समाज शतवार्षिकी 1995

आर्यसमाजी अग्रविभूतियां

1. **आचार्य प्रेम भिक्षु जी वानप्रस्थी** – आपकी **गणना वैदिक परमपरा के महान् विद्वानों** में होती है। आपका जन्म संवत् 1925 में मथुरा में लाला पुरूषोत्म दास अग्रवाल के यहां हुआ। आपका बाल्यकाल विलक्षण घटनाओं से भरा हुआ था। आपने संपूर्ण देश को अपनी कर्मस्थली माना। **भिक्षु जी ने वैदिक साधना आश्रम, वैदिक मिशनरी आर्य गुरूकुल महाविद्यालय, विरजानंद ट्रस्ट व डी. ए. वी. इंटर स्कूल की स्थापना की, इसके अलावा आपने 75 आर्यसमाजों की भी स्थापना की।** आपने अपनी महान् लेखनी से विश्व को चमत्कृत कर दिया। आपने छोटे-बड़े कुल **150 ग्रंथों** की रचना की। आपने अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को भी बखूबी पूरा किया। अग्रवाल समाज का भी कार्य किया। आपका पूर्व नाम ''**ईश्वरी प्रसाद प्रेम**'' था।

''**तपोभूमि**'' के नाम से आप द्वारा प्रकाशित मासिक पारिवारिक पत्रिका आज भी आर्य परिवारों में श्रद्धा व सम्मान की दृष्टि से देखी जाती है। आपने अत्यंत सरल व सरस शैली में शुद्ध साहित्य सीरीज के अंतर्गत शुद्ध रामायण, शुद्ध कृष्णायन, शुद्ध हनुमतचरित्र, शुद्ध गीता आदि लोकप्रिय ग्रंथों का श्रृजन किया। आप द्वारा सरल भाषा में लिखे छोटे छोटे ट्रैक्टस अत्यंत लोकप्रिय हुए। आपको आर्य समाज सांताक्रुज मुंबई ने वेदोपदेशक सम्मान से सम्मानित किया। गायत्री परिवार के संस्था''**आचार्य श्रीराम शर्मा**'' के साथ वर्षों तक आपने कार्य किया, आर्य समाज चौक मथुरा के आप प्रधान रहे। हम बदलेंगे-जग बदलेगा, हम सुधेंरगे जग सुधरेगा, वैदिक परिवार बनाएंगे – धरती को स्वर्ग बनाएंगे, नारों के प्रणेता आचार्य जी का यह संक्षिप्त परिचय है।

2. **प्रो. रामसिंह** – आप हिंदुत्व के पर्याय थे। आप **हिंदू महासभा के अध्यक्ष** भी रहे तथा आर्य समाजी वैदिक विद्वान थे। आप वर्षों तक पंजाब में आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्य्क्ष रहे। आपने आर्य समाज का प्रचार-प्रसार किया। आप हिंदू धर्म के उपासक, हिंदू राष्ट्र के प्रबल समर्थक, हिंदू धर्म के अनन्य भक्त एवं गौरक्ष थे। आपका जन्म हरियाणा के रोहतक के पास फरमाना (माजरा) गांव में श्री इच्छाराम जी अग्रवाल, आर्य के यहां हुआ था।

3. **स्वामी वैदिकानंद सरस्वती** (जगदीश प्रसाद वैदिक) – (आर्य जगत के क्रांतिकारी संन्यासी) – आपका जन्म इंदौर के मित्तल परिवार में हुआ, आपका बचपन का नाम जगदीश प्रसाद था। आपने अपना पूरा जीवन आर्य समाज को समर्पित कर दिया था। वे महर्षि दयानंद के परम भक्त थे। आपने अपनी आयु के उत्तर काल में संन्यास ले लिया। मध्य प्रदेश के आर्य समाज के आंदोलन के आप सूत्रधार थे। हिंदू महासभा व आर.एस.एस. जैसी अनेक संस्थाओं से आप जुड़े रहे। आप वैदिक धर्म के विद्वान मूर्धन्यद विद्वान थे।
4. **आर्य संन्यासी योगी सच्चिदानंद सरस्वती** – 20वीं सदी में पातंजल योग के पुन: प्रतिष्ठापक – दिल्ली के नांगलोई में आपका जन्म 10 फरवरी 1906 को हुआ। आपके पिता मास्टर प्यारे लाल जी व माता यमुना देवी थीं। प्रोफेसर राम सिंह जी के संपर्क में आने पर आप स्वामी दयानंद जी के दीवाने हो गए। संस्कृत अध्ययन के लिए आप ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर पहुंच गए। विविध शास्त्रों का अध्ययन कर ''राजेन्द्र नाथ शास्त्री'' नाम धारण कर और भारतीय महर्षियों के पद चिह्नों पर चलने का व्रत लेकर आप घर लौटे। आपके पूज्य पिताजी भी संन्यस्त हो गए। आपने युसुफ सराय में ''**गुरूकुल**'' की स्थापना की। उत्तर प्रदेश में आपने दो गुरूकुल स्थापित किए। आपने अनेक ग्रंथ लिखे तथा मठ की स्थापन भी की।
5. **लाला देशबंधु गुप्त** – आप स्वतंत्रता सेनानी व परम धार्मिम विभूति थे। आर्य समाज के अग्रणी नेता के रूप में आपकी गणना होती थी।
6. **विशंभर सहाय प्रेमी** (मेरठ) – आप आर्य समाज के अनन्य निष्ठावान नेता थे। आर्य समाज शताब्दी समारोह के आप संयोजक थे। आप महान् स्वतंत्रता सेनानी भी थे।
7. **पंडित क्षितीश कुमार वेदालंकार** (अग्रविभूति) – आर्यसमाजी, विद्वान पत्रकार व साहित्य मनीषी क्षितीज जी वेदों की सुंदर कथा कहते हैं। आप अनेक वर्षों तक ''आर्यजगत'' के संपादक रहे।
8. **श्री लालमन आर्य** – आप आर्यसमाज की विभूति तथा विद्वान व्यक्ति थे। आपने गो सेवा तथा आर्यसमाज के प्रचार में अग्रणी भूमिका निभाई। आपके पुत्रों ने अनेक पुस्तकों की रचना की है। पुत्र गजानंद आर्य अत्यंत विद्वान व धर्मप्रेमी विभूति हैं।
9. **पंडित शिवदयाल** – आप पूरे देश में अग्रणी आर्यसमाजी विद्वानों में स्थान रखते थे। आपका जन्म मेरठ के मित्तल गौत्रीय परिवार में हुआ। आर्य समाज के महत्व पर आपने दर्जनों ग्रंथ लिखे।
10. **बद्रीप्रसाद भोरूका** – आर्य समाज के स्तंभ – भोरूका चेरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक। चारों वेदों के भाष्यों की पूर्ति के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा को एक लाख रूपये का दान, आप अनेक वर्षों तक कलकत्ता आर्यसमाज के अध्यक्ष रहे। आपने अनेक कुंओं, सड़कों, धर्मशालाओं, तालाबों, चिकित्सालयों आदि का निर्माण करवाया।

अन्य धर्म प्रचारक, धार्मिक और आध्यात्मिक जगत की विभूतियां

1. **भाई जी हनुमान प्रसाद पोद्दार** – आध्यात्मिक जगत की महान विभूति। आपने गीताप्रेस गोरखपुर के माध्यम से अनेक धार्मिक ग्रंथों की लाखों प्रतियां छपवाकर देश विदेश में इनका प्रचार प्रसार किया। कल्याण के आप आजीवन संपादक रहे। धार्मिक साहित्य को आपने भारत की अनेक भाषाओं में छपवाया। ''भारत रत्न'' जैसे सम्मान के लिए आपने विनम्रता से मना कर दिया। आपने स्वयं **100 पुस्तकें** लिखीं। आपका संपर्क अनेक महान् क्रांतिकारियों से रहा। शस्त्र डकेती कांड में आपको 21 माह की जेल हुई। धार्मिक विषयों पर आपने अनेक लेख लिखे। कल्याण के आप आजीवन संपादक रहे। आपका जन्म राजस्थान के राजगढ़ में भीमराज जी अग्रवाल के यहां हुआ।
2. **गीतामूर्ति सेठ जयदयाल गोयन्दका** – हिंदू सनातन धर्म की महान विभूति – आपने 1923 में ''**गीता प्रेस गोरखपुर की स्थापना**'' की। आपकी प्रेरणा से ही प्रसिद्ध धार्मिक पत्रिका ''कल्याण'' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। आपने अनेक धार्मिक ग्रंथ लिखे। गीता धर्म प्रचार के लिए आपने ऋषिकेश में ''**गीताभवन**'' की स्थापना की।
3. **श्री घनश्याम दास जालान** – सेठ जयदयाल जी गोयंदका के कहने पर आपने गीताप्रेस गोरखपुर का प्रबंधन संभाला तथा यह प्रबंधन इतनी कुशलता से किया कि गीताप्रेस दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करने लगी।
4. **सत्यनारायण गोयनका** – ''**विपश्यना ध्यान पद्धति के विश्व में सबसे बड़े परमाचार्य**'' तथा विश्व के ''**सबसे बड़े पैगोड़ा**'' के **निर्माता**। आपका जन्म 1924 में बर्मा में हुआ था। आपको धम्मचग्र विपश्यना साधना केंद्र सारनाथ के तत्वावधान में आयोजित समारोह में तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थाान द्वारा **मानद उपाधि** से अलंकृत किया गया। आप भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में 25 सौ साल पुरानी इस साधना पद्धति के सूत्रधार थे। आपके प्रयास से विश्व के सौ देशों में इस पद्धति का प्रचार हुआ। आपने अपना संपूर्ण जीवन विपश्यना को समर्पित कर दिया। आप हजारों साधना शिविरों का आयोजन कर लोगों को लाभान्वित कर चुके हैं। आपका स्वर्गवास 30 सितम्बर 2013 को हुआ।
5. **श्री खेमराज कृष्णा दास** – लगभग 155 वर्ष पूर्व बंबई की झोंपड़ी में आपने एक छोटा सा प्रेस लगाया, धीरे-धीरे प्रगति कर ''**वेंकटेश्वर प्रेस**'' लगाया। आपने धार्मिक पुस्तकें प्रकाशित कर विक्रय कीं। यह प्रेस भारतीय साहित्य, धर्म, संस्कृति दर्शन एवं इतिहास की पुस्तकें छापने के लिए देश-विदेश में प्रसिद्ध है। आपका जन्म चुरू में सन् 1851 में हुआ।
6. **केदारनाथ गुप्ता** – श्री राधामाधव संकीर्तन मंडल तथा सनातन धर्म सभा के माध्यम से

प्रभुपाद वेदांत स्वामी के **''हरेकृष्ण आंदोलन'' (इस्कॉन)** को **विश्व में फैलाने का श्रेय आपको है।** 1969 में जब हरे कृष्ण आंदोलन के प्रवर्तक अंतरराष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ के संस्थापक श्री भक्ति वेदांत प्रभुपाद जी महाराज श्रीकृष्ण भक्ति प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से ब्रिटेन पहुंचे तब सबसे पहले उन्हें श्री केदारनाथ गुप्ता तथा उनकी **धर्मपत्नी श्रीमती कमला गुप्ता** का सहयोग प्राप्त हुआ। 17 दिसम्बंर 1969 को स्वामी भक्ति वेदांत जी महाराज ने सबसे पहले अग्रवाल कुलशिरोमणि भक्त केदारनाथ जी को ही दीक्षा देकर अपना शिष्य बनाया। श्रीमती कमला गुप्ताा ने भक्ति वेदांत जी से दीक्षा ली तो उनका नाम **'कीर्ति मां दासी'** रखा गया। वृंदावन में वेदांत स्वाामी के आश्रम तथा **''रासबिहारी मंदिर''** की स्थापना में आपका सहयोग रहा। आपने **गीता का अनेक भाषाओं में अनुवाद** कराया तथा गीता का विश्व व्याापी प्रचार में योगदान दिया। **लंदन व वृंदावन में हरेकृष्ण मंदिर बनवाने में आपका विशेष योगदान रहा।** श्री केदारनाथ गुप्ता मेरठ के सुविख्यात अग्रवाल परिवार जिनको पत्थर वालों के नाम से भी जाना जाता है के यहां आपका जन्म हुआ।

7. **परमधर्म प्रेमी राय राजा पटनीमल** - **''मथुरा में कृष्ण जन्म भूमि के उद्धारक''** - आप राय बालगोविंद जी के पुत्र थे। आपका जन्म 1770 ई. में हुआ, आपने ईस्ट इंडिया कं. की सेवा स्वीकार की। आगे चल कर आपने राजकाज छोड़ दिया और धार्मिक जीवन व्यतीत करने लगे, इन्होंने अपने काल में अनेक धर्मशालाएं, मंदिर व जलाशय बनवाए। आपने मथुरा, हरिद्वार, गया तथा ज्वालाजी आदि अनेक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थानों का जीर्णोद्धार करवाया। 1807 ई. में लाखों रूपये की लागत से आपने **''मथुरा में शिवताल''** का निर्माण करवाया। मथुरा में **''कृष्ण् जन्म भूमि स्थान'' आपने अंग्रेजों से क्रय किया** व उसका उद्धार किया।

8. **डा. वासुदेवशरण अग्रवाल** - आपके लिखे धर्म तथा संस्कृति संबंधी ग्रंथों का अनेक विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। आपको 1957 में सरकार ने पद्मभूषण से सम्मानित करना चाहा किंतु आपने विनम्रता से मना कर दिया।
9. **गोपाल अग्रवाल** - इस्कान के संस्थापक स्वामी प्रभुपाद को अमेरिका में पहली बार अपने घर ठहराने तथा उनके प्रवचनों का आयोजन का श्रेय आपको है।
10. **श्री दाऊलाल गुप्ता** - मथुरा में विश्व संकीर्तन परिवार के नाम से देशभर में संकीर्तन शाखाओं की स्थापना की और संकीर्तन युग पत्रिका के संपादन के साथ-साथ हरिनाम संकीर्तन का प्रचार तथा अनेक **धर्म-ग्रंथों का सृजन** आपने किया। आप श्रीकृष्ण चरितमानस, श्री हनुमान चरितमानस, पांचाली, गीता, रामायण, श्याम संदेशों, भक्तियों आदि श्रेष्ठ ग्रंथों के रचियता थे।
11. **जगदीश अग्रवाल** - न्यूयार्क में **''प्रथम हिंदू मंदिर''** का निर्माण आपने करवाया।

12. **लाला हरदेव सहाय** – भारत गौ सेवक समाज के संस्थापक। पिता लाला मुसद्दीलाल मित्तल। स्वामी करपात्री जी, गुरू गोलवरकर तथा संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जैसी विभूतियां आपका बहुत सम्मान करती थीं।

13. **गौतम पोद्दार** – गौसेवा के प्रति समर्पित, आपने गोरखपुर के पास विशाल **''गौशाला की स्थापना''** की। भारत सरकार ने आपको सन् 1986 में **''गोपाल रत्न''** की उपाधि से सम्मानित किया।

14. **आयुष गोयल** – विदेशों में धर्म एवं गीता प्रचार में आपका महत्वापूर्ण योगदान रहा। आपने एक मंदिर का निर्माण करवाया।

15. **मदनगोपाल सिंघल** – आपका जन्म मेरठ में हुआ। धर्मसंघ व वर्णाश्रम संघ के माध्यम से सनातन धर्म की आपने ठोस सेवा की। सनमार्ग, साप्ताहिक आदेश तथा वैश्य हितकारी पत्रिकाओं का वर्षों तक संपादन किया। आपने अनेक पुस्तकें लिखीं। आप अग्रवाल समाज के उत्थान में भी योगदान करते रहे।

16. **जानकीदास पाटोदिया** – वृंदावन में **''भजनाश्रम की स्थापना''** तथ रामनाम के माध्याम से हजारों अनाश्रित बेसहारा महिलाओं के जीविकोपार्जन की व्ययवस्था।श्र

17. **बजरंगदास गर्ग एवं सुशीला देवी** – श्री जगदीश प्रसाद साहूवाला द्वारा प्रवर्तित हरिबोल प्रभातफेरी के मुख्यो संयोजक तथा प्रचारक। कथा व संकीर्तन तथा अन्य धार्मिक आयोजनों के द्वारा हरियाणा, पंजाब, राजस्थान आदि में धर्म प्रचार में योगदान। वृद्धाश्रम का संचालन भी आप द्वारा किया जा रहा है।

18. **मनसुखराय मोर** – सनातन धर्म के वेद शास्त्रादि ग्रंथों, पुराण स्मृतियों, निरूक्त, निघटु तथा भाष्यों का प्रकाशन कर धार्मिक जनता को नि:शुल्क उपलब्ध करने वाले धार्मिक जगत के विशिष्ट व्यक्तित्व

19. **मदन लाल हिम्मतसिंका** – पांडिचेरी के अरविंद आश्रम तथा ममतामयी मां के चरणों में अपनी संपूर्ण संपत्ति दान कर उत्कृष्ट धर्मभावना का परिचय आपने दिया।

20. **सेठ रामेश्वदास नाथानी दूधवा वाले** – अपने समय के कोलकाता के प्रसिद्ध सेठों में से एक थे। आपका ध्यान भगवत भजन व दान में लगता था। आप धर्म की ध्वजा के लिए हजारों-लाखों एक क्षण में दे देते थे। आपके यहां से कभी कोई याचक खाली हाथ नहीं लौटता था।

21. **सीताराम खेमका** – देश के जाने माने सनातनधर्मी नेता थे। आपने गोरक्षार्थ अनेक अभियान चलाए। स्वामी करपात्री जी व जगद्गरू स्वामी कृष्णबोधारम महाराज की आप पर कृपा थी। आपके पुत्र श्री राधेश्यायम खेमका धर्मशास्त्र के विद्वान हैं तथा कल्याण के सफल संपादक रहे। आपकी सेवाओं से धर्मसंघ, भारत गौसेवा समाज आदि ने प्रगति की है।

22. **रामनिवास ढंढारिया (कोलकाता)** – आप धर्म संस्कृति और साहित्य के गंभीर अध्येता थे। आपने **''श्री माधव राधा संकीर्तन मंडल''** की स्थापना की। आपने कोलकाता से रस

वृंदावन मासिक पत्रिका का कई वर्षों तक प्रकाशन किया।

23. **सुरेन्द्र अग्रवाल** – आप महान् संत हरिबाबा के परम भक्त थे। आपने मासिक ''श्री हरि कथा'' का संपादन किया। यह पत्रिका धार्मिक जगत में बहुत लोकप्रिय हुई। आपने अनेक संतों पर विशेषांक प्रकाशित किए।
24. **प्रेमचंद गुप्ता** – ''**आप अखित भारतीय सनातन धर्म महासभा**'' के संस्थापक हैं तथा दिल्ली में सनातन धर्म का ध्वज फहरा रहे हैं।

विश्व कीर्तिमान में ''अग्रबंधु''

:: गिन्नीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस् ::

1. **लक्ष्मी निवास मित्तल** – श्री लक्ष्मी निवास मित्तल विश्व के ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें गिन्नीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में पांच कीर्तिमान बनाने का गौरव प्राप्तहै।
2. **पद्मविभूषण विजयपत सिंघानिया** – गरम गैस के गुब्बारे में सर्वाधिक ऊंचाई की उड़ान भरने का विश्व रिकॉर्ड।
3. **राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता** – एक विदेशी पर्यटक ने जब भारतीयों को आलसी एवं कमजोर कहकर गाली दी तो राजेन्द्र गुप्ता जी को उसका यह कथन इतना खला कि ''70 हजार किलोमीटर पैदल चलकर'' उन्होंने जापान के मातातोषी का 20हजार किलोमीटर का रिकॉर्ड तोड़ दिया और गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज करवाकर समूचे राष्ट्र का गौरव बढ़ाया। उन्होंने भारत, तिब्बत, चीन, पाकिस्तान, सोवियत संघ, कोरिया आदि की भी यात्रा की। इस यात्रा को पूरा करने में उनको पांच वर्ष लगे। विदेशों में श्री राजेन्द्र गुप्ता का जोरदार स्वागत किया गया। गिनीज बुक वालों ने उनके अदम्य साहस पर 45 लाख रूपये का पुरस्कार प्रदान किया। (अग्रोहाधाम, दिसम्बर–1996)
4. **डा. अमित गर्ग** – (मस्तिष्क गणना में कीर्तिमान) – अमेरिका में इंजीनियर के रूप में कार्यरत भारतीय गणितज्ञ एवं मस्तिष्कीय संगणक। आपने बिना किसी केलकूलेटर या अन्य सहायता के 10 अंको की संख्या को 10 अंकों की संख्या् से 4.5 मिनट के रिकॉर्ड समय में दस बार भाग देने का कीर्तिमान स्थांपित किया।
5. **डा. राकेश कुमार अग्रवाल** – प्रसिद्ध नैत्र रोग विशेषज्ञ डा. राकेश द्वारा 16000 से अधिक मोतिया बिंद ऑपरेशन कर गिनीज बुक के साथ–साथ ''लिम्का बुक'' में भी नाम दर्ज किया गया।
6. **रमेश चंद्र अग्रवाल** – 2008 में इंदौर स्टेडियम में 3000 से अधिक लोगों को आमंत्रित कर एक घंटे में विश्व की सबसे बड़ी चाय पार्टी के सफल आयोजन का रिकॉर्ड बनाया।
7. **काजल अग्रवाल** – विभिन्न भाषाई फिल्मों में अभिनय करके गिनीज बुक में नाम दर्ज

करवाया। आपने टी वी चौनलों में सर्वाधिक अभिनय किया, दो बार फिल्म फेयर अवार्ड व अन्य अनेक एवार्ड प्राप्त किए।

8. **अनन्त अग्रवा**ल – भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के फैलो एवं मेसाच्यूएटस इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिक अनन्त अग्रवाल ने वायरस टेक्नोलोजी एवं माइक्रोफोन संरचना में नवीन खोज कर गिनीज बुक में नाम लिखाया।
9. **सुभाष चंद्र अग्रवाल** – आर.टी.आई. के कारण गिन्नीज बुक में नाम। इनको नेशनल आर. टी.आई. अवार्ड भी मिला है।
10. **श्रीमती मधु अग्रवाल** – वर्ष 2003 में समाचार पत्रों में प्रकाशित लेखों के लिए आपका नाम गिन्नीज बुक में लिखा गया।
11. **डा. अशोक गर्ग** – नेत्र रोग पर अंतरराष्ट्रीय स्तर की सर्वाधिक पुस्तलिखने पर गिन्नीज बुक में नाम दर्ज हुआ। आपको नेत्र चिकित्सा में विशेष योगदान देने के लिए ''राष्ट्रीय चिकित्सा शिरोमणि सम्मान'' से भी सम्मानित किया गया।
12. **दीपक गुप्ता** – (लंबे समय तक गायन) – 101 घंटे लगातार।
13. **चन्द्रा मित्तल** – विश्व की छ: समुद्री धाराओं पर तैरकर कीर्तिमान बनाया।
14. **मोनिका अग्रवाल** – संख्याओं द्वारा विश्व की सबसे लंबी पेंटिंग बना कर गिनीज बुक में नाम दर्ज।
15. **सुनील भारती मित्तल** – सांई बाबा की सबसे बड़ी जीवनी लिखकर विश्व कीर्तिमान।
16. **मीनाक्षी अग्रवाल** – रासायनिक समय सारिणी के तत्वों का न्यूनतम समय मे उच्चारण कर तथा 91.65 सैकिंड के रिकार्ड समय में 118 संकेतों का लेखन कर दो बार विश्व में कीर्तिमान स्थापित किया है।
17. **संजीव अग्रवाल** – आपने साफ्टवेयर में सेल्यूशन डवलपमेंट संबंधी यंत्रों एवं तकनीक का विकास कर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया।
1. **अनिल मित्तल** – विश्व की सबसे बड़ी चावल डिश का निर्माण।
2. **डा. सोनिया बदरेशिया बंसल** – विश्व प्रसिद्ध चर्मरोग विशेषज्ञ डा. बंसल को एक ही दिन में सर्वाधिक कैंसर स्क्रीनिंग का विश्व कीर्तिमान स्थापित करने का गौरव प्राप्त है। आप अमेरिका में एडवांस्डस डर्मेटोलॉजी लेजर एंड प्लास्टिक सर्जरी इंस्टीटयूट की संस्थापक तथा मेडिकल ऑफिसर हैं। आपने लेजर स्किन कैंसर पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं।
3. **मनमोहन अग्रवाल, अनुज कुच्छल, हिमांशु गोयल** – (विश्व के सबसे बड़े भित्ती चित्र का निर्माण) सन् 2010 में 12 घंटों में विश्व के सबसे बड़े 240 फीट लंबे,120 फीट चौड़े, 40 फीट ऊंचे व 115.4 किलोग्राम वजन के ओरगामी जिर्राफ चित्र का निर्माण कर रिकॉर्ड बनाया।
4. **पीयूष गोयल दादरीवाल**– आपको ''मिरर लेखन'' पद्धति में धार्मिक ग्रंथ भगवत गीता को 318900 शब्दों में लिख कर विश्व कीर्तिमान स्थापित करने का गौरव प्राप्त है। इसके

साथ ही उनको अक्षरों को उल्टा लिखने में भी विशेष महारत हांसिल है। 1991 में गिनीज बुक में इनका नाम दर्ज किया गया। हिंदी व अंग्रेजी के अलावा वे पंजाबी, मराठी, बंगाली, गुजराती जर्मन भाषा को उल्टा लिखने में सिद्धहस्त हैं।

22. **अदिति सिंघल** – ये माइंड मेमोरी ट्रेनर हैं। वैदिक गणित में आपको महारत हॉसिल है। आप लेखक व प्रेरणादाय वक्ता भी हैं। लिम्का बुक ऑफ रिकार्डस् में आपके नाम तीन राष्ट्रीय Memory and fastest Calculation के रिकार्ड हैं। सुधीर सिंधल के साथ आपने गणित की सबसे बडी कक्षा लेने का विश्व रिकार्ड बनाया है। इनका नाम इंडियन बुक ऑफ रिकॉर्ड में भी है।
23. **सुधीर सिंघल** – 3245 छात्रों को एक से 99 तक के गणितीय पहाड़े पढ़ाने का व गणित की सबसे बड़ी कक्षा लेने का विश्व रिकार्ड बनाया है। इनका नाम इंडियन बुक ऑफ रिकॉर्ड में भी है।
24. **सुरेश कुमार अग्रवाल** – विश्व की सबसे बड़ी एलीफेंट पेंटिंग में विश्व कीर्तिमान बनाया।
25. **अशोक अग्रवाल**– ''सर्वाधिक घंटों का संग्रह'' – विश्व के 169 देशों के 450 घंटों का संग्रह कर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है।
26. **डा. विवेक सिंगला** – आपने 2500 से अधिक गणेश जी की मूर्तिया का संग्रह कर रिकार्ड बनाया व गिनिज बुक में नाम दर्ज करवाया, हर मूर्ति का दूसरे से कोई मेल नहीं है।
27. **विश्वबंधु गुप्ता** – भारत का नाम गुब्बारेबाजी में अंतरराष्ट्रीय जगत में गौरवान्वित करने वाले आप सर्वोपरि हैं, आपके प्रयासों से ही भारत में ''बैलूनिंग क्लब ऑफ इंडिया'' की स्थापना हुई। इस क्लब का उद्घाटन ''नील आर्मस्ट्रांग'' द्वारा किया गया। श्री विश्वबंधु गुप्ता की इस खेल में रूचि का ही परिणाम है, कि उनके नाम अनेक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय रिकार्ड बने हैं। आप पहले भारतीय थे जिन्हें गुब्बारा उड़ाने का लाईसेंस मिला। आपने 253 किलोमीटर लंबी नौ घंटे की लगातार उड़ान का भारतीय रिकार्ड बनाया। इसके अलावा आपने रिवर्डवार और ओलीवर होम्सल के साथ तिब्बत के ले स्थल की सर्वाधिक ऊंचाई से उड़ान भरने का विश्व रिकार्ड बनाया। आपके नेतृत्व में इस क्लब ने भारत में कई मेलों के साथ-साथ तीन क्रासकंट्री अभियान और पांच अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं
28. **हर्षित बंसल (मेरठ)**– द्वारा बनाई गई अनूठी अंगूठी ''मेरीगोल्ड'' ने गि.बु.ऑफ व.रि. मं स्थान बनाया है। (दिसम्बर, 2020) इस अंगूठी में 12638 प्राकृतिक हीरे जड़े है। सूरत के 28 करीगरों ने इस अंगूठी पर काम किया है। हर्षित दुनिया के पहले ऐसे व्यक्ति बन गए है, जिसने इतने हीरे अंगूठी में सजाए हैं।

गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड

1. **सुश्री सौम्या अग्रवाल** – उज्जैन के स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में सौम्या ने एक मिनट में 160 रोप जंपिंग कर वर्ल्ड रिकार्ड बनाया है। पहले यह रिकार्ड 158 का था। 2016 वर्ल्ड जंपरोप चौंपियनशिप, पुर्तगाल में सौम्या ने एक रजत व एक कांस्य पदक जीत कर भारत का तिरंगा पुर्तगाल में फहराया।
2. **सौरभ तुलस्यान** – वैदिक गणित के माध्यम से सौ संख्याओं का का घनमूल मात्र 83 सैकिंड में निकाल कर बनाया कीर्तिमान बनाया। गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड ने प्रमाण पत्र दिया। सौरभ के अनुसाद एक से दस लाख तक सौ संख्याएं हैं।
3. **अग्रसेन रथ यात्रा** – वर्ष 2017 में, अग्रवाल समाज केंद्रीय समिति इंदौर की ओर से आयोजित शेखावटी के पांच प्रमुख धर्मस्थलों की यात्रा के लिये इंदौर से रवाना हुई विशेष ट्रेन में मध्यप्रदेश सहित 06 राज्यों के 1200 अग्रबंधु ने दैनिक भास्कर के रमेश चंद्र जी अग्रवाल की अगुवाई में यह यात्रा पूर्ण की। सालासर धाम में गोल्डन बुक ऑफ रिकॉर्ड में शामिल होने पर प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया।

लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में अग्रबंधु

1. **जादूगर सम्राट शंकर अग्रवाल** – आपने 1988 में जादू की दुनियां में प्रवेश किया और मात्र 13 वर्ष में ही 11523 स्टेज शो करके लिम्का बुक में नाम दर्ज किया।
2. **सुरभि गर्ग** – भीलवाड़ा की प्रसिद्ध भवाई (चकरी) नृत्य में लगातार बिना रूके 1000 राउंड (चक्र) लगाकर विश्व कीर्तिमान।
3. **बेबी जूही अग्रवाल** – विलक्षण प्रतिभा की धनी बालिका जूही अग्रवाल ने तीन वर्ष की उम्र में कार चलाकर दुनिया को आश्चर्य चकित कर दिया। इस उपलब्धि के लिए इनको चैतन्य व लिम्का बुक एवार्ड 1993 में प्रदान किया गया।
4. **अशोक कुमार मगन लाल गर्ग** – सूक्ष्म कलाकारी के क्षेत्र में अद्‌भुत प्रतिभा का प्रदर्शन किया, ये चावल के दाने पर अटल बिहारी बाजपेयी, महाराजा अग्रसेन, आदि के चित्र बना चुके हैं। इसके अलावा चावल के दाने पर 105 बार राम नाम, राष्ट्रीय गीत, चालीस, हाथियों के चित्र आदि का चित्रांकन कर सूक्ष्म आकृतियों के क्षेत्र में अपनी विशेष पैठ स्थापित कर चुके हैं, 1995-96 व 1996-97 में लिम्का बुक रिकार्ड में अपना नाम दर्ज करवा चुके हैं। इसके अलावा 0-44 X 0.35 X 0.35 एम.एम. माप की आपकी सूक्ष्म नोट बुक है, छोटी बांसुरी, पोस्ट कार्ड के खाली 1/7 भाग पर 10801 बार राम नाम लेखन, लकड़ी की नक्काशी कर 101 शिवलिंग का निर्माण जैसे अद्‌भुत कार्य भी कर चुके हैं।
5. **डा. विवेक सिंगला** – जींद-हरियाणा, निवासी तथा दंत चिकित्सक। आपके पास ''गणेश'' जी की सबसे ज्यादा मूर्तियां होने के कारण। आपके पास 3000 से ज्यादा गणेश

जी की मूर्तियां हैं जो एक दूसरे से मेल नहीं खातीं।

6. **कुंजबिहारी गुप्ता** – आपका आविष्कार ''सन लाइफ कैलेण्डर'', इस कैलेण्डर से करोड़ों वर्ष तक के तिथि–वार का पता लगाया जा सकता है, यह कैलेंडर देश में पहली बार तैयार हुआ जिसमें लीप संबंधी किसी प्रकार की त्रुटि नहीं है।
7. **अभिजीत गुप्ता** – आप विश्व शतरंज चैंपियन रहे। आपने नेशनल जूनियर अंडर 19 शतरंज चैपिंयनशिप में 13 वर्ष 10 दिन की अवस्था में सर्वाधिक युवा शतरंज चैंपियन होने का कीर्तिमान स्थापित किया।
8. **आकाश गुप्ता** – आपने निरंतर 113 घंटे गिटार बजा कर विश्व रिकॉर्ड बनाया। आप ''तीन बार'' यह रिकॉर्ड बना चुके हैं। इसके साथ ही आपने सबसे कम समय में 678 गणितीय समस्याओं का हल कर विश्व गणित मेराथन तथा रायरो स्पेस के क्षेत्र में भी कीर्तिमान बनाया है।
9. **सुभाष चंद्र अग्रवाल एवं मधु अग्रवाल** – आप दोनों ने सार्वजनिक हित के मामलों पर समाचार पत्रों में सर्वाधिक पत्र प्रकाशन का पुरूष एवं महिला वर्ग में अलग–अलग विश्व कीर्तिमान बनाया और दोनों का नाम लिम्का बुक में दर्ज है।
10. **दीपक बंसल** – सी.एस.आई.टी. आदि विभिन्न श्रेणियों की गेट परीक्षाओं में चार बार उच्च स्थान प्राप्त कर तथा इंजीनियरिंग, टेक्नोलॉजी, कंप्यूटरिंग, गणित प्रबंधन आदि विषयों की एम.के., एम.एस., एम.बी.ए. आदि स्नात्कोत्तर परीक्षाएं कम उम्र में प्रतिष्ठित संस्थाओं से उत्तीर्ण कर शैक्षणिक कीर्तिमान बनाने का गौरव प्राप्त किया।
11. **डा. वी. एस. बंसल** – यूरोलोजी रिसर्च इंस्टीटयूट के प्रबंध निदेशक डा. बंसल ने 13 सेंमी. सबसे ''बडी गुर्दे की पथरी'' का सफल ऑपरेशन कर कीर्तिमान स्थापित किया।
12. **डा.पुरूषोत्तम लाल जिंदल** – सर्वाधिक एंजियोप्लास्टी करने व इस क्षेत्र में नई विधियों के लाने हेतु।
13. **डा. के. के. बंसल** – सुपसिद्ध न्यूरो विशेषज्ञ डा. बंसल ने एक ही पारी में रोगी के दिमाग से ''सर्वाधिक ब्रेन टयूमर्स निकालकर कीर्तिमान स्थापित किया।
14. **डा. ए. के. गुप्ता** – होमयोपैथी चिकित्सा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए।
15. **पद्श्री डा. के. के. अग्रवाल** – कार्डियोलॉजिस्ट, लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड होल्डर सीआरपी 10 में।
16. **मेमोरी गुरू सुधांशु मित्तल** – स्मरण शक्ति के क्षेत्र में अदभुत प्रर्दशन कर **''तीन बार''** लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में स्थान बनाने का गौरव आपको प्राप्त है।
17. **श्रीमती छाया गुप्ता** – 135.14 मीटर लंबे व 1.45 मीटर चौड़े ''अभिवादन पत्र'' के निर्माण द्वारा कीर्तिमान स्थाापित।। यह अभिवादन पत्र भारतीय सांस्कृतिक परम्परा से संबंधित है।

18. **राजेन्द्र गुप्ता, (गोयल) अभिनेता** – **दो बार लिम्का बुक** में नामांकित। 1990 में एक ही वर्ष में 40 से भी अधिक सीरियलों में काम करके अपना नाम दर्ज करवाया।
19. **अशोक अग्रवाल** – विश्व की सबसे बड़ी शब्द पहेली को हल विशेष कीर्तिमान बनाया।
20. **महावीर प्रसाद सर्राफ, मुंबई**– (जनसेवा के क्षेत्र में कीर्तिमान) – आपके द्वारा स्थापित ट्रस्ट के माध्यम से किए गए विभिन्न जनसेवा कार्यों के कारण **''तीन बार'' लिम्का बुक** में नाम दर्ज करवाया। आपके द्वारा रेलवे स्टेनशनों पर सर्वाधिक प्याऊ बनवाना, सार्वजनिक स्थानों, बगीचों, खेल के मैदानों, समुद्र तटों, सटेशनों, नगरपालिकाओं, फुटपाथों पर हजारों की संख्या में बैंचों का निर्माण व अन्य सुविधाएं उपलब्ध करवाई गईं।
21. **तुषार अग्रवाल** – 2012 में आयोजित ''द्वितीय एशियन इंडिका कार रैली'' में इंडोनेशिया से सिंगापुर तक नौ देशों की 21 दिवसीय यात्रा में सफलता पूर्वक ड्राईविंग कर कीर्तिमान बनाया। इससे पूर्व भी आप 15 देशों की 51 दिवसीय कार रैली में भी सफल ड्राईविंग कर लिम्का बुक में नाम दर्ज करवा चुके हैं।
22. **आकाश गुप्ता** – (सर्वाधिक पैन संग्रह) – 1992 से पैन संग्रह कर रहे हैं।
23. **वरूण सिंघल व प्रीति सिंघल** – फिल्यूमिनी (माचिस संग्रह) में कीर्तिमान।
23. **अभय गोयल** – लिम्का बुक में 13 वर्ष की सबसे कम उम्र मे प्यानोवादक के रूप में इनका नाम लिखा गया है।
24. **पी. आर. अग्रवाल**– (आंतरिक परिधानों के निर्माण में कीर्तिमान) – होजरी के निर्माण में प्रसिद्ध रूपा एंड कंपनी के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक पी. आर. अग्रवाल एवं रजनीश अग्रवाल ने सर्वाधिक ब्रांडेड उत्पादन कर हौजरी क्षेत्र में विशेष कीर्तिमान स्थापित किया है।
25. **मधुमेह डॉट कॉम** – मधुमेह रोग विशेषज्ञ डा. राकेश अग्रवाल की मधुमेह डॉट कॉम को लिम्का बुक के वर्ष 2005 के संस्करण में शामिल किया गया है।
26. **पदमश्री वीरेन्द्र प्रभाकर** – पत्रकारिता के क्षेत्र में लंबे समय तक कार्यरत फोटोग्राफर के रूप में नाम दर्ज करवाया।
27. **पूर्णिमा गोयल** – अमेरिका की ब्लैंक बैल्ट ग्रो परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त।
28. **ऐश्वर्या अग्रवाल** – मात्र तीन वर्ष की उम्र में स्केटिंग में कीर्तिमान।
29. **नवीन अग्रवाल** – पोस्कार्ड पर उर्दू में ' 'मेरा भारत महान'' के 28503 अक्षर लिखकर कीर्तिमान स्थापित किया है। इससे पहले अंग्रेजी में सुरभि शब्द के 18286 अक्षर 20 घंटे में तथा सुंदरकांड से 1800 अक्षर पोस्टकार्ड के एक ओर लिख चुके हैं।
30. **श्रुति गुप्ता** – दो बार की लिम्का बुक ऑफ रिकार्डधारी। पहली बार हिमाचल प्रदेश दूसरी बार लद्दाख में माइनस तापमान पर डांस की प्रस्तुति कर बनाया रिकॉर्ड। दूसरी बार लद्दाख क्षेत्र के खांरदूगला दर्रे जिसकी 18380 फीट की ऊंचाई और तापमान माइनस 24 डिग्री। श्रुति को प्रधानमंत्री मोदी जी ने भी सम्मानित किया है।

31. **सुधीर सिंघल** – इन्होंने गणित की सबसे बड़ी कक्षा लेने का विश्व रिकार्ड बनाया है।

32. **अदिति सिंघल** – इन्होंने Memory and fastest Calculation में दो राष्ट्रीय रिकार्ड बनाए हैं।

33. **स्वर्ण प्रकाश सिंघल** – ने सूक्ष्म (सघन) लेखन में – **1.** पोस्ट कार्ड के मुख पृष्ठ, पर 102810 बार राम शब्द अंकित किया। **2.** पोस्ट कार्ड पर 12 बार हनुमान चालीसा लिखा। **3.** पोस्ट कार्ड पर सुंदर कांड, हनुमान चालीसा, हनुमान अष्टक व आरती लिखी। **4.** पोस्ट कार्ड पर सुंदर कांड के साथ 6873 बार राम शब्द का अंकन किया। आपने पोस्ट कार्ड पर 16250 अक्षर लिखकर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दावा पेश किया है। श्री सिंघल एक हाथ से विकलांग हैं। 1994 में लिम्का बुक में आपका रिकार्ड दर्ज किया गया। 1996 व 1997 में आपको भरतपुर जिला कलेक्टर ने गणतंत्र दिवस पर सम्मानित किया। इनका नाम इंडियन बुक ऑफ रिकार्ड में भी है।

34. **धर्मेन्द्र अग्रवाल,** बीकानेर – अलग-अलग तरह के फ्लेवर में 121 तरह के गोलगप्पे बनाकर 21 अप्रैल 2009 में रचा लिम्का बुक वर्ल्ड रिकॉर्ड।

35. **राजकुमार अग्रवाल** – चांदी की अद्‌भभुत कलापूर्ण वस्तुओं का ऐतिहासिक संग्रह होने के कारण आपके पास लिम्का बुक और विश्व रिकॉर्ड हैं।

36. **प्रो.(डा.) कृष्ण कुमार गोयल** – 2006 में 21 भाषाओं को लिखने की निब्स (कलम) एकत्रित कर लिम्का बुक में नाम दर्ज करवाया।

37. **गीता गोयल** – फ्लावर आर्टिस्ट, किसी भी फ्लावर (फूल) से पीकॉक बनाने का लिम्का बुक व इंडियन बुक रिकॉर्ड में आपका दर्ज है।

38. **तरूण अग्रवाल** – लिम्का बुक रिकार्डर।

इसके अलावा निम्न अग्रबंधुओं ने भी लगभग 15-20 साल पहले रिकार्ड बनाया था।

1. **कैलाश कुमार अग्रवाल** – ने पोस्ट कार्ड पर 30274 बार रामनाम लिखे हैं। अक्षरों को लैंस की सहायता से ही पढ़ा जा सकता है।
2. **प्रसन्न कुमार जैन (सर्राफ)** – ने पोस्टर कार्ड पर संपूर्ण सुंदरकांड लिखा है।
3. **ललित जैन** – चावल के छोटे से दाने पर अंग्रेजी के 60 शब्द लिखे। आप चावल के दाने पर चित्रकारी भी करते हैं। आपको अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।
4. **अशोक तायल, नरवाना-हरियाणा**- कोई विशेष ट्रेनिंग नहीं, न ही किसी बैंक में नौकरी फिर भी नोटों को गिनने में इनका कोई सानी नहीं। मात्र 35 सैकिण्ड में पूरी गड्डी गिनना तथा इसी दौरान फटे नोट निकालना, नकली नोट निकाल देना, सभी नोटें नंबंर चैकर करना भी शामिल हे। मशीन से भी तेज गति से नोट गिनते है। भारत में ऐसा कारनामा अभी तक किसी ने नहीं कियां बैंक भी अयह कार्य इतनी जल्दी नहीं कर सकता।

इंडिया बुक ऑफ रिकार्डस् (India book of Records)

1. **मोहित अग्रवाल**, गर्ग – जन्म 19 मई 1994, मूल निवासी करोड़ा–जिला कैथल, हरियाणा। मात्र 19 वर्ष की आयु में भारत के सबसे बड़े वंशावली वृक्ष ''**लाला नरूमल गर्ग वंशावली**'' का सृजन किया, जिसके फलस्वरूप आपको 2015 में आपको इंडियन बुक ऑफ रिकॉर्ड द्वारा सम्मानित किया गया। आप अग्रवाल समाज के युवा लेखक एवं शोधकर्त्ता हैं तथा वर्तमान में गोत्रों पर शोध कर रहे हैं। सन् 2019 में आपने ''हरियाणा का गौरव अग्रवाल समाज'' तथा 2020 में ''अग्रवाल समाज की विरासत'' नाम से पुस्तकों का सफल लेखन किया है। ''लाला नरूमल गर्ग वंशावली'', अग्रवाल समाज में बनाया गया ''पहला'' लंबा वंशावली वृक्ष है।
2. **मास्टकर दिशिप गर्ग** – संसार में सबसे कम उम्र के भजन गायक। 11 वर्ष की उम्र में इनका नाम इंडियन बुक ऑफ रिकार्डस् में शामिल किया गया। आपके पिता श्री उमेश गर्ग भी भजन गायक हैं।
3. **पीयूष अग्रवाल** – PREVENWET नामक मशीन का आविष्कार किया। यह मशीन बरसात में कपड़ों को गीला होने से बचाती है।
4. **नृसिंह लाल बंसल** – वास्तु एवं विज्ञान से संबंधित सबसे अधिक पुस्तकें लिखना – 12 दिसम्बर 2014 इन्होंने 143 पुस्तकें तथा 1,054 ई–पुस्तकें लिखीं थीं।
5. **आयुष गुप्ता** – 3 डी पेपर वर्णमाला (उर्दू) – कागज को फोल्ड करके उर्दू (अरबी) में स्वर व व्यंजन बनाए। चार मिनट प्रति अक्षर लगाकर उर्दू वर्णमाला बनाई।
6. **शिवांशु मित्तल** – 2 सितम्बर 2014 को इन्होंलने चार्ट पेपर स्ट्रिप से 25.5 X 10.5 इंच आयाम (dimension) वाली एफिल टावर की प्रतिकृति 1100 चार्ट पेपर स्ट्रिप की सहायता से बनाई।
7. **अभिषेक बंसल** – 26 मई 2014 को इन्होंने 3000 माचिस की तीलियों की सहायता से 10 X 10 X 24.5 इंच आयाम वाली एफिल टावर की प्रतिकृति बनाई।
8. **सतीश सिंघल** – पांच रूपये के सिक्कों को संग्रह – इन्होंने 6 मार्च 2014 तक पांच रूपये के 51 तरह के सिक्को का संग्रह कर रिकार्ड बनाया।
9. **नितिन गुप्ता** – इंडिया बुक के ऑफिस में 28 नवम्बर 2013 को इन्होंने 30 मिनट तक लगातार सीटी बजाई इस दौरान 120 सैंकिड का इन्होंने ब्रैक लिया।
10. **सुशील गोयल** – एक ही सीरीज के नोटों का अनोखा व दुर्लभ संग्रह – इन्होंने 2003 के बाद तक के 001001 से 999999 तक की सीरीज के कुल 999 करेंसी नोटों का संग्रह, 000001 से 1000000 तक के 220 करेंसी नोटों का संग्रह तथा 010101 से 999999 तक की सीरीज के 99 करेंसी नोटों का संग्रह कर रिकार्ड स्थापित किया।
11. **ईश गोयल एवं ईशान गोयल** – सबसे कम उम्र के जुडवां भाई जो पश्चिमी शास्त्रीय

संगीत बजाते हैं।

12. **अमित सिंघल** – पैदायशी रूप में शरीर पर भारत का मानचित्र। इनके शरीर पर एक असामान्य रूप से जन्म-चिह्न (नेवस – nevus) हैं जो कि मोटे तौर पर भारत के संपूर्ण मानचित्र जैसा दिखाई देता है।
13. **पीयूष दादरीवाला गोयल** – इन्होंने 36 X 23 इंच का विशाल विजिटिंग कार्ड 15 जुलाई 2012 में बनाया।
14. **अनंत गर्ग** – सबसे बडा टूथपेस्ट कलेशन।
15. **अपूर्व अग्रवाल** – इनके नाम से दो रिकार्ड हैं – सबसे बड़ा दाल समोसा बनाने तथा सबसे छोटा अखवार बनाने का।
16. **अदित्य गोयल** – सबसे कम उम्र के पायलेट – ये 16 वर्ष की उम्र में पायलेट बने हैं।
17. **निशांत मित्तल** – सबसे कम उम्र के रेडियो चीफ एक्जीक्यूटिव ऑफिसर।
18. **चारवी अग्रवाल** – कक्षा छठी में पढ़ते हुए छोटी उम्र में इन्होंने मिट्टी से कई तरह की आकृतियां बनाना प्रारंभ कर दिया। इन्हों ने स्वंन के द्वारा ईजाद की गई तकनीक जिसे 'Claytronics' कहा जाता है से 30 जून 2006 को 20 लघु 3-डी मूर्तियां (3-D sculptures) बनाईं।
19. **अर्पित गुप्ता** – आपके द्वारा 29 जनवरी 2015 तक के "**स्मारक सिक्कों**" का बेजोड़ संग्रह किया गया है जिसमें 700 सिक्के हैं।
20. **लेफ्टिनेंट कर्नल हेमेन्द्र बंसल** (सूक्ष्म लेखन) – पहला – एक रूपये के स्टाम्प पर अधिकतम सूक्ष्म शब्द तथा दूसरा मूंगफली के छिलके के आधे भाग पर अधिकतम शब्द लिखने का रिकॉर्ड।
21. **श्री नभ अग्रवाल** – सबसे कम उम्र में प्रधानमंत्री की योजनाओं पर स्टोरी बुक लिखने वाले।
22. **संदीप टिबड़ेवाल** – 52 तरह के पांच रूपये के सिक्कों का संग्रह।
23. **गीता गोयल** – सबसे अधिक मोर की डिजायन बनाना।
24. **काव्या गोयल,** फरीदाबाद – सात साल की काव्या गोयल ने अंडर 7 में 17 मिनट तक पूर्ण शलभ आसन करने का नया इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड बनाया है। वर्ष – 2019
25. **जाहन्वी जिंदल**(चंडीगढ़) – 12 वर्षीय जाहन्वी ने दो श्रेणियों में 'स्केटिंग के दौरान नीचे की ओर सरकने की अद्भुत उपलब्धि' और 'स्केट्स पर भांगड़ा करने वाली सबसे कम उम्र' में अपना नाम इंडिया बुक ऑफ रिकार्डस् में कराया है। जाहन्वी ने आठ साल की उम्र में स्केटिंग सीखी जब उनके पिता ने य-ट्यूब से स्केटिंग सिखाई। जाहन्वी ने 2019 में नेशनल स्केटिंग चैंपियनशिप जीती है।
26. **प्रीशा गुप्ता** (गाजियाबाद) – एक बच्चे द्वारा किया गया अधिकतम बेकस्प्रिंग 20 सैकिंड

में 26 है, यह रिकॉर्ड प्रीशा गुप्ता (जन्म – 4 नवम्बर 2011) द्वारा बनाया गया है। (2019)

27. **आरव जिंदल**(पंचकुला) –जन्म–27 नवम्बर 2019,अरनव को अंग्रेजी वर्णमाला के शब्दों, 6 हास्य पात्रों, 15 जानवरों, 6 पक्षियों, 5 वाहनों, 5 संगीत वाद्ययंत्रों, 7 सब्जियों, 6 आकृतियों आदि अन्य वस्तुओं की पहचान करने के लिये उनकी सराहना की जाती है। फलों को पहचानना, ग्रह के नाम बताना, 1–10 तक गिनती, सप्ताह के दिनो को पढ़ना, 7 संगीत नोट्स व 6 जानवरों की आवाज की नकल करना आता है।यह कमाल एक साल छ:माह की उम्र में हुआ है। (प्रशंसा -इंडिया बुक ऑफ रिकार्डस्)
28. **प्रणवी गुप्ता** (गुरूग्राम) – सभी देशों और उनकी राजधानियों के नाम सबसे तेज जपने का रिकॉर्ड (जन्म – 15 जून 2015), उसने 4 मिनट व 23 सैकिंड में उनकी राजधानियों के साथ, सही वर्णानुक्रम में 195 देशों (संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मान्यता प्राप्त) के नामों का पाठ किया। (2020)
29. **आयुष अग्रवाल**(मेरठ) – सभी देशों की राजधानियों और मुद्राओं का पाठ करने में सबसे तेज होने का रिकॉर्ड आयुष (जन्म – 28 अगस्त 2006) ने बनाया। उन्होंने 14 साल 11 महीने और 10 दिन की उम्र में 195 देशों (संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मान्यता प्राप्त) की राजधानियों को उनकी मुद्राओं के साथ 4 मिनट और 39 सैकिंड में पढ़ा। (2021)
30. **अव्याना अग्रवाल** (हैदराबाद) – सबसे कम्र उम्र में 'संदकफू' चोटी पर चढ़ने का रिकॉर्ड बनाया है। आपका जन्म 15 मार्च 2017 को हुआ है। इन्होंने 2 मार्च 2021 को धोत्रै (अपने माता–पिता और गाइड सहित, 18 सदस्यों के समूह के साथ) से ट्रेक आरंभ किया और 4 मार्च 2021 को संदकफू चोटी (समुद्रतल से 3,636 मीटर की ऊंचाई) पर पहुंच गईं। (टोंगलू और के माध्यम से) 3 साल 11 महीने और 17 दिन की उम्र में। (2021)
31. **विधि जैन** (भोपाल) – दर्पण लेखन में सबसे कम उम्र में वर्णमाला लिखने का का रिकॉर्ड (जन्म – 23 मार्च 2018), उसने AZ से 3 साल 4 महीने और 22 दिन की उम्र में 3 मिनट और 30 सैकिंड में मिरर राइटिंग (ऊपरी मामलों में) वर्णमाला लिखी। (2021)
32. **खुशाल अग्रवाल** (कोलकाता) – हनुमान चालीसा का सबसे तेज पाठ का रिकॉर्ड (जन्म – 17 अगस्त 2016), उन्होंने 2 मिनट 01 सैकिंड और 69 मिली सैंकिंड में पूरी हनुमान चालीसा का पाठ किया। (2021)

एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड

1. **कुमारी जुई मुकेश लीलडिया** – द्वारा **''इंडिया बुक ऑफ रिकाड''** एवं **''एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड''** में नाम दर्ज करवाया। मात्र **''नौ वर्ष''** की उम्र में जुई द्वारा **''वाटर इमेज स्टाइल राईटिंग का इन्वेंशन''** किया गया। **उल्लेखनीय है कि** – भारत ही नहीं बल्कि पूरे एशिया में यह एक मात्र बालिका है जो इस **''लिपी''** की ज्ञाता है। दिनांक – 31 अगस्त 2019 को नागपुर में लीलडिया परिवार द्वारा आयोजित भव्य ''बधाई समारोह'' में अनेक गणमान्यों की उपस्थिति में मुख्य अतिथि श्री नितिन गडकरी, केंद्रीय मंत्री द्वारा कु. जुई को सम्मानित किया गया। वर्ष – 2019
2. **वैष्णवी गुप्ता** – पंचकूला–हरियाणा निवासी वैष्णवी गुप्ता ने मात्र छः वर्ष की उम्र में, **''केवल 117 सैकिंड''** के अंदर **''200 देशों के झंडे पहचानकर''** **''वर्ल्ड रिकॉर्ड''** बनाया। इस उपलब्धि पर हरियाणा के **मुख्यमंत्री** श्री मनोहर लाल खट्टर जी ने अपने निवास पर वैष्णवी गुप्ता को बुलाकर सम्मानित किया। **विधान सभा अध्यक्ष** श्री ज्ञानचंद गुप्ता ने भी वैष्णवी गुप्ता को पुरकृत किया। वर्ष – 2019
3. **नबीन अग्रवाल,** आसाम – हेड स्टैंड की स्थिति में 30 सैकिंड में 108 फुट क्लैप प्रदर्शन करने के लिये। वर्ष – 2020

अग्र बंधुओं द्वारा अर्जित अन्य उपलब्धियां

1. **जस्टिस श्री सुधीर अग्रवाल** – इलाहबाद हाईकोर्ट के वरिष्ठ न्यायाधीश श्री सुधीर अग्रवाल भारत ही नहीं बल्कि पूरे एशिया में सबसे ज्यादा मामलों में फैसला सुनाने वाले **''पहले''** न्यायामूर्ति बने।
2. **''अग्रवाली छिपकली''** – तमिलनाडू के ''सालेम'' में मिली नई प्रजाति की छिपकली का नाम **''वैज्ञानिक इशान अग्रवाल'' के नाम पर ''अग्रवाली'' रखा गया है।** वर्ष 2019 में देश में जंतुओं की 368 नई प्रजातियों की खोज हुई। इनमें से 116 जंतुओं की किस्म पहली बार देखी गई। इसी साल ही दुनिया में पहले से जाए जाने वाले 257 जंतुओं को पहली बार देखा गया, जो बीते 10 वर्षों में सबसे अधिक है। सभी नए जंतुओं का चित्र व उसकी पूरी जानकारी को जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया ने ''एनिमल डिस्कवरी–2019'' में प्रकाशित किया गया है। जेडएसआई के निदेशक ने बताया कि इस बार एनिमल डिस्कवरी – 2019 में निमेसपिस जाति की आठ छिपकलियां खोजी गईं। इनके नाम भी भारतीय खोजकर्त्ता वैज्ञानिकों और उस जगह के नाम पर रखे गए हैं।

3. **काव्या गुप्ता** – वर्ष 2005 में ''चार वर्ष'' की काव्या गुप्ता को मात्र **''ढाई साल की उम्र**

में गंगा नदी पार करने'' के लिये, उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्य मंत्री मुलायम सिंह जी द्वारा ''**यश भारती**'' पुरस्कार से सम्मानित करते हुए पांच लाख रूपये नकद, अंग वस्त्र तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। यह पुरस्कार पाने वाली काव्या अब तक की **सबसे कम उम्र** की हस्ती बनी हैं।

4. **कुहू गोयल** – का मात्र 11 वर्ष की उम्र में पहला उपन्यास प्रकाशित हो चुका है।
5. **दिव्यांश गुप्ता** – मात्र 15 साल की उम्र तक 27 किताबें लिखने का रिकार्ड।
6. **अक्षत सिंघल** – बृहस्पति एवं मंगल ग्रह के बीच एक छोटे उपग्रह का नाम आपके नाम पर रखा गया। आपने विश्व में सबसे कम आयु के कंप्यूटर इंजीनियर बनने का गौरव प्राप्त किया।
7. **डा. मोहन लाल अग्रवाल** – अद्‌भुत घड़ी का आविष्कार।
8. **अभिषेक जैन** – विश्व का सबसे तेज कनिष्ठ टंकक – 13 वर्ष की उम्र में विश्व में सबसे तेज गति से टाइप करने वाले कनिष्ठ युवा बने।
9. **अर्जित कंसल** – माइक्रोसॉफ्ट पावर पाइंट–2010 वर्ल्ड चैंपियनशिप जीती।
10. **अनिल गुप्ता** – आपके नाम विश्व की सबसे छोटी हस्तलिखित गीता लिखने का विश्व् कीर्तिमान है जो दो सेंटीमीटर चौड़ी व तीन सेंटीमीटर मोटी है। इसमें 16 अध्यायों के 700 श्लोकों के 700 पृष्ठों में संस्कृत भाषा में लिखा गया है।
11. **कुलदीप गोयल** – छपाई तकनीक में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर वर्ल्ड लेबल एसोसिएशन का 2004 का विश्व पुरस्कार प्राप्त कर इस क्षेत्र में प्रथम भारतीय होने का गर्व हांसिल किया। इस स्पर्धा में विश्व के 600 प्रतिष्ठानों ने भाग लिया जिसमें 8 प्रतियोगी भारतीय थे। कुलदीप गोयल भारत में अनेक उच्च पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।
12. **आलोक गुप्ता** – इन्होंने खाली समय में इतनी गणितीय गणना करने का अभ्यास किया कि अब वे एक अरब साल का चलता फिरता कैलेंडर बन गए हैं। इतना ही नहीं वे चालीस डिजीट की कोई भी गणना चुटकियों में कर लेते हैं। आलोक गुप्ता से किसी भी तिथि, वार और वर्ष में से कोई भी दो चीज बताकर तीसरी पूछ सकते हैं। उनका दावा है कि वे अनंत वर्ष तक की गणना कर सकते हैा। इस तरह की गणना के रिकॉर्ड्स नहीं होने के कारण गिनीज बुक में आपका नाम नहीं लिखा जा सका।
13. **सौरभ अग्रवाल** – तीन पत्ती मोबाइल गेम के रचियता।
14. **प्रदीप कुमार गुप्ता** – 1992 में आपने 27 वर्ष की उम्र में अखिल भारतीय साईकिल यात्रा के दौरान 8700 किलोमीटर की यात्रा कर मदुरई पहुंचे, यहां से इनकी आगे भी यात्रा जारी रही।
15. **अतुल बंसल** (डिजाइनर) – इन्हें दुनियां का श्रेष्ठ डिजाइनर माना गया है।
16. **विनय कंसल** – पर्यावरण संबंधी मुद्दों को ज्वलंत बनाए रखने तथा समाज मे खामोश

पेड़-पौधों की भाषा को समझने के प्रति जागरूकता पैदा करने पर आपको डा.नजमा हेपतुल्ला, उप सभापति राज्य सभा द्वारा 11 वां रेड एंड व्हाइट बहादुरी पुरस्कार (सामाजिक साहसिक श्रेणी) प्रदान किया गया।

17. **कीर्ति अग्रवाल** - 12 वर्ष की उम्र में आपने शरीर से मारूति कार गुजारना व छाती पर पत्थर तुड़वाने जैसे रोमांचक कार्य करने वाली बालिका।
18. **सुधीर अग्रवाल** - उत्तर प्रदेश में पहला बीज गोदाम बनाने और फसल बीमा के क्षेत्र में मथुरा को मॉडल जिले का गौरव दिलाने में भी सुधीर अग्रवाल की महत्वपूर्ण भूमिका रही।
19. **अभिजीत गुप्ता** - आपने शतरंज में राष्ट्रमंडल चैंपियनशिप लगातार तीन बार जीत कर कीर्तिमान बनाया है। आपकी यह चौथी जीत थी। इससे पहले आपने इंग्लैड के निगेल शार्ट के साथ तीन खिताब का रिकार्ड साझा किया था।
20. **हेमंत गुप्ता** - वर्ष 2017 में हेमंत ने दुनियां की सबसे ऊंची चोटी, एवरेस्ट 27 साल की उम्र में फतह की। वे एक अनुभवी पर्वतारोही हैं। हेमंत ने अमेरिका की सबसे ऊंची चोटी माउंट एकोंकागुआ 2015 में फतेह की थी जो दुनियां की सात सबसे ऊंची चोटियों में से एक है।
21. **मित्तल एम्लायंस लिमिटेड कंपनी** - देश का सबसे पुराना और सबसे बड़ा सिक्के बनाने का प्लांट जहां हर साल 500 करोड़ के साढ़े पांच टन वजनी कोरे सिक्के ढाले जाते हैं (कीमत आदि की सील आरबीआई बाद में लगाती है)। मित्तल एम्लायंस लिमिटेड कंपनी, मध्य प्रदेश के पीथमपुर में स्थित है। यहां आर. बी. आई. के लिये 5 और 10 रूपये मूल्य के सिक्के ढाले जाते हैं। यह देश का तीसरा सबसे पुराना और सबसे बड़ा प्लांट है, जहां सिक्के बनाये जाते हैं। दो प्लांट फरीदाबाद और हिसार में हैं। 1986 में बनी मित्तल एप्लायंस कंपनी के चेयरमैन इंदौर के दिनेश मित्तल हैं। यह कंपनी 1969 से सिक्के बना रही है और 2002 से मुख्य कार्य सिक्के बनाने का ही है। कंपनी नौसेना के मेडल भी बनाती है।
22. **इशानी अग्रवाल**- प्लेयर्स एंड ग्लेयर्स पब्लिकेशन की सह-संस्थापक इशानी अग्रवाल (जन्म 4.8.1996, कोलकाता) ने थीम के रूप में सह-लेखकों के नाम का उपयोग करते हुए, एक्रोस्टिक पोएट्री के एंथोलॉजी को संकलित करके एक नया विश्व रिकॉर्ड बनााया है। (कलाम्स वर्ल्ड रिकॉर्ड, 08.09.2021 में दर्ज)
23. **तैराक अनशव जिंदल** (फिरोजपुर) - आपने व्यक्तिगत स्पर्धा (पुरूषों के लिये 4X200 मीटर व्यक्तिगत मेडली) में स्वर्ण पदक जीता है। उन्होंने 200 मीटर बटरफ्लाई स्ट्रोक इवेंट में अपना ही रिकॉर्ड तोड़ा। उन्होंने नया रिकॉर्ड बनाने के लिय 02.22.65 सैकिंड के साथ रिकॉर्ड बनाया।
24. **श्रेष्ठ गुप्ता** (दिल्ली)- आपके पास 22 नवम्बर 2017 तक 86 राष्ट्रीय और 18 अंतरराष्ट्रीय विभिन्न कार्डों के जोकर काड्र्स का सबसे बड़ा (104) संग्रह है। जन्म - 23 अगस्त 2000 (एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स)

अग्रवालों द्वारा किये गये लोकोपकारी कार्य

अग्रवाल समाज के दानवीरों द्वारा पूरे भारतवर्ष में इतने लोकोपकारी कार्य करवाये गये हैं, जिनका अगर वर्णन किया जाये तो 8-10 पुस्तकें तो निश्चित रूप से लिखी जा सकती हैं। निर्माण कार्य के अलावा विपुल धनराशि का दान भी किया गया। **मंदिर** - पूरे देश में प्रसिद्ध मंदिरों के निर्माता, सहयोग कर्त्ता या मुख्य भूमिका में अग्रवाल समाज के लोग हैं। इसी समाज द्वारा मंदिरों के निर्माण के प्रति उत्साह को इसी से जाना जा सकता है कि **''रामगोपाल दुजोदवालों'' ने अकेले शेखावाटी क्षेत्र में 400 से अधिक मंदिरों का निर्माण या जीर्णोद्धार करवाया।** भिवानी में तो इस समाज द्वारा निर्मित मंदिरों व अन्य धर्मस्थलों की संख्या इतनी है कि उसे छोटी काशी कहा जा सकता है। सत्यनारायण गोयनका जी के निर्देशन में निर्मित **''पैगोड़ा''** विश्व का सबसे बड़ा पैगोडा है। हरियाणा में प्रसिद्ध पितृपक्ष तीर्थ स्थल पांडु पिंडारा (जींद) में 20 बड़ी-बड़ी धर्मशालाएं अग्रवालों ने बनवाई हैं। पूरे भारत में फैले जनहित व लोकोपकारी कार्य, विद्यालयों, मंदिरों, कुंओं, तालाबों, औषधालयों, बाग-बगीचों आदि की लंबी श्रृंखला, अग्रवालों की प्रशस्ति ही करते हैं, लेकिन इस देश में वैश्य समाज की गलत छवी प्रस्तुत की गई तथा फिल्मों में भी बनिया जाति का मजाक ही उड़ाया गया।

- प्रस्तुत है कुछ बानगी। ''संक्षिप्त में'' -

1. **राजा शिवबक्स बागला** - चुरू, वाराणसी और रामेश्वरम में सामाजिक एवं सांस्कृतिक केंद्र, कलकत्ता में नि:शुल्क आयुर्वेदिक व होम्योपैथिक चिकित्सालय, हावड़ा में मंदिर व धर्मशाला एवं पिंजरापोल सोसायटी की स्थापना।
2. **सेठ सूरजमल झुंझनूवाला** - चिड़ावा, कलकत्ता, हरिद्वार और ऋषिकेश में धर्मशाला, गंगाघाट पर श्राद्धकर्म के लिये पक्का घाट बनवाया, लक्ष्मण झूले का निर्माण।
3. **बलदेवदास दूदेवाला** - रामेश्वरम, द्वारकापुरी व मुजफ्फर नगर में विशाल धर्मशालाएं।
4. **रामरिखदास हरलालका** - भवानीपुर-कलकत्ता में चिकित्सालय एवं विद्यालय।
5. **रायबहादुर पूरणमल जैपुरिया** - नवलगढ़ में निर्माण कार्य, गोरखपुर तराई क्षेत्र में बाढ़ पीड़ितों के लिए सड़कों का निर्माण, बंगाल के लालमनी हाट और शिवगंज में हवाई अड्डे बनवाए।
6. **बालकृष्ण गोयनका** - बर्मा (म्यांमार) में हाईस्कूल व अन्य कार्य।
7. **सीताराम खेतान** - दिल्ली में सत्यनारायण मंदिर, रतनगढ़ में धर्मशाला, कुंआ तथा मंदिर।
8. **राधेश्याम जालान** - अग्रवाल अस्पताल-मद्रास, लक्ष्मण गढ़-गौशाला व मंदिरों के निर्माण हेतु दान।
9. **सुखानंद सरावगी** - मुंबई में जैन मंदिर, फतेहपुर में विद्यालय व तीर्थ स्थानों पर

धर्मशालाएं बनवाईं।

10. **रामगोपाल गनेड़ीवाल** – फतेहपुर-शेखावटी में विशाल मंदिर, तालाब, कुंए व धर्मशाला, रानीवास, ऋषिकेश, मथुरा आदि में धर्मशालाओं का निर्माण।
11. **जगन्नाथ सिंघानिया** – धर्मशाला एवं विशाल बगीचा तथा अनेक स्थानों पर कुंए, मंदिर, गौशाला बनवाई।
12. **पूर्णमल सिंघानिया** – इंग्लैंड में स्थित अस्पताल में वार्ड का निर्माण, बंबई विश्वविद्यालय को आठ लाख रूपये का दान, तथा धर्मशाला का निर्माण।
13. **रामप्रताप चमाड़िया** – 1922 में संस्कृत महाविद्यालय, पोस्ट डिग्री कॉलेज, हा.सै.स्कूल का निर्माण। गोविंद देव जी का मंदिर बनवाया। फतेहपुर में आयुर्वेदिक औषधालय, वाटर वर्क्स का निर्माण।
14. **ज्वाला प्रसाद भरतिया** – फतेहपुर में भरतिया हॉस्पीटल, गौशाला, विद्यालय, अनाथालय व पुस्तकालय।
15. **नंदकिशोर बाजोरिया** – फतेहपुर में संस्कृत पाठशाला जो अब महाविद्यालय है।
16. **राधाकृष्ण चमड़िया** – जयपुर में आदर्श नगर कॉलोनी व आदर्श विद्यामंदिर भवन बनवाया, मेंहदीपुर बालाजी में धर्मशाला।
17. **सीताराम केडिया** – फतेहपुर में बस स्टैण्ड पर विश्रामगृह।
18. **कामाक्षा प्रसाद बिदावतका** – सीकर में विद्यालय।
19. **घीसालाल श्रीराम बिदावतका** – सीकर में धर्मशाला।
20. **कन्हैया लाल नरसिंह लाल तोदी** – सीकर में धर्मशाला।
21. **गणपतराय तोदी** – सीकर में नेत्र चिकित्सालय भवन बनवाकर सरकार को दिया तथा धर्मशाला बनवाई।
22. **ब्रजमोहन चौधरी** – सामोद-जयपुर में धर्मशाला।
23. **राजेश अग्रवाल** – कुचामन सिटी में विद्यालय।
24. **उदयराम बागला** – चुरू में विशाल कुंए का निर्माण।
25. **चुरू के अग्रवालों** – ने 40 कुंए और चार पक्के तालाब बनवाये।
26. **भगवानदास बागला** – चुरू में आधुनिक सुविधा युक्त अस्पताल और दूसरा बीकानेर में बनवाया। इनकी धर्मपत्नी ने कलकत्ता में चिकित्सालय, चुरू में संस्कृत पाठशाला व हा.सै. स्कूल बनवाया।
27. **डेडराज भरतिया** – चुरू में सबसे बड़ा अस्पताल।
28. **श्रीनारायण गोयनका** – चुरू में औषधालय, संचालन भी केवल परिवार वालों द्वारा ही होता है।
29. **मदन लाल पाटोदिया** – उड़ीसा में हाई स्कूल।
30. **घनश्यामदास कसेरा** – श्रीगंगानगर में सरस्वती पब्लिक स्कूल निर्माण एवं संचालन, अनेक शहरों में जनहित कार्यों व धर्मशाला हेतु दान।

31. **रूघलाल ढंडूराम** – श्री गंगानगर में गीता भवन निर्माण।
32. **बनवारी लाल व जगदीशराय लीला** – श्रीगगानगर में राजकीय चिकित्सालय में विशाल धर्मशाला, व गौशाला का निर्माण।
33. **विश्वेश्वर दयाल रामगोपाल दुजोदवाला** – सीकर में धर्मशाला।
34. **महावीर प्रसाद हरिप्रसाद तोदी** – सीकर में हनुमान मंदिर व बगीची निर्माण, होम्योपैथिक चिकित्सालय के लिये विशाल भूमि दान, कुंआ व पंपसेट का दान।
35. **भेराराम केडिया** – फतेहपुर में कन्या पाठशाला व चिकित्सालय।
36. **बालूराम जयदयाल सर्राफ** – फतेहपुर में आयुर्वेदिक औषधालय निर्माण व संचालन।
37. **सत्यनारायण मोदी** – जयपुर में सवाई मानसिंह अस्पताल के सामने तथा ऋषिकेश में विशाल धर्मशाला। अनेक स्थानों पर कुंओं का निर्माण। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय को एक लाख रूपये का दान।
38. **सरनामल अग्रवाल** – श्री गंगानगर में हरियाणा भवन।
39. **जयदयाल कसेरा** – फतेहपुर में 1180 बीघा जमीन खरीदकर गोचर भूमि के रूप में गौशाला को दी।
40. **सीताराम सेक्सरिया** – कलकत्ता में शिक्षायतन बालिका महाविद्यालय की स्थापना। साहित्य सम्मेलन का सेक्सरिया पुरस्कार आरंभ किया।
41. **सूरजमल जालान** – कलकत्ता में प्रथम कन्या पाठशाला व हनुमान पुस्तकालय स्थापित किया। छात्रवृत्तियां घोषित कीं तथा मूक बघिर विद्यालय के भवन का एक खंड का निर्माण।
42. **लाला चैनसुख दास मोहनलाल** – सन् 1905 में गुड़गांव के पास बादशापुर में एक ''**कलात्मक बावड़ी**'' का निर्माण करवाया था जो आज भी स्वर्णिम इतिहास का एक अंग है। अग्रोहाधाम मई – 1993

सेठ मुकुन्द लाल जयप्रकाश – प्रथम विश्व युद्ध में व्यापर आरंभ कर आपने लाहौर में दुकानों की श्रृंखला बनाई जिसे ''**एलैक्जेंडर बाजार**'' नाम दिया गया। आपने रादौर (अब पाकिस्तान में) में ''**पुरानी अनाज मंडी**'' की स्थापना की, 1946–47 में एक मैटरनिटी अस्पताल खोला, यमुनानगर में 1946 में **पहला स्कूल** ''मुकुन्द लाल नेशनल स्कूल'' खोला। आपने गाजियाबाद में पहले ''प्राइमरी स्कूल'' के रूप में ''सुशीला मॉडल स्कूल'' की स्थापना की। यमुना नगर में आपके पिताजी ने ''न्यू जमना टॉकीज'' की स्थापना 1946–47 में की, जिसकी संपूर्ण आय धर्मार्थ कार्यों में लगाई जाती थी। पाकिस्तान से आए हिंदुओं के लिये गाजियाबाद में ''मुकुन्द नगर'' की स्थाना की। आपके पुत्र जयप्रकाश जी ने 1955 में यमुना नगर मे **पहले डिग्री कॉलेज** ''मुकुन्द लाल नेशनल कॉलेज'' की स्थापना की। आपने अपने जीवन में और भी अनेक कार्य किये हैं जिनकी सूची काफी लंबी है।

लाहौर (अब पाकिस्तान) में अग्रवाल समाज द्वारा बनाई गईं शिक्षण संस्थाएं – नेशनल

कॉलेज जहां भगतसिंह भी विद्यार्थी रहे तथा डी.ए.वी. कॉलेज की स्थापना – लाला लाजपत राय जी ने की, सोहन लाल बालिका हाई स्कूल एवं सोहन लाल महिला ट्रेनिंग कॉलेज की स्थापना – नानौल के रायबहादुर सोहन लाल सांघी (बंसल) ने की, फतेहचंद महिला कॉलेज की स्थापना – राय फतेहचंद अग्रवाल ने सन् 1935 में की तथा धर्म कॉलेज की स्थापना – अग्रवाल समाज द्वारा की गई, सर गंगाराम अग्रवाल आश्रम की स्थापना गंगाराम के पुत्रों द्वारा की गई। मार्डन मैथामेटिकल इंस्टिट्यूट, लाहौर की स्थापना लाला मनीराम अग्रवाल ने मात्र 19 वर्ष की आयु में की। सर गंगाराम जी द्वारा – सनातन धर्म कॉलेज की स्थापना सन् 1916 में, 1921 में नि:शुल्क पुस्तकालय, लेडी मायनार्ड इंडस्ट्रीयल स्कूल फॉर हिदू सिख वूमन एंड गर्ल्स की स्थापना की गई।

1. **पुष्कर का रंगनाथ वेणुगोपाल मंदिर** – यह दक्षिणी भारतीय शैली का भगवान रामानुजाचार्य संप्रदाय का प्रसिद्ध मंदिर है, जिसे 1008 अनंन्ताचार्य महाराज कांचीपुरम की प्रेरणा से **''सेठ पूर्णमल गनेड़ीवाल''** ने संवत् 1844 में बनवाया था। यह पुष्कर के प्राचीन मंदिरों में से एक है तथा इसका स्वर्ण मंडित गोपुरम अत्यंत भव्य है।
2. **भारत माता मंदिर, काशी** – यह अपने ढंग का पूरे देश में अकेला मंदिर है, जिसका निर्माण प्रसिद्ध राष्ट्रभक्त **''शिवप्रसाद गुप्त जी''** ने करवाया, जिसका उद्घाटन म. गांधी ने किया।
3. **शाह बिहारी जी का मंदिर, वृंदावन** – यह अपनी कलात्मक व स्थापत्य कला के मंदिरों में अनूठा स्थान रखता है। इसका निर्माण **''कुंदनलाल शाह व फुंदनलाल शाह''** ने करवाया था।
4. **झुंझनु का राणी मंदिर** – अग्रवाल समाज द्वारा निर्मित यह भव्य मंदिर है।
5. **श्री सीताराम चोंच - कांच का भव्य मंदिर** – बालोतरा जिला बाड़मेर में अग्रवाल समाज द्वारा बनवाया गया।
6. **शिव मंदिर** – झझर के बेरी गांव स्थित इस मंदिर को लाला शिवदयाल सिंघल जी के तीन पुत्रों ने सन् 1892 में बनवाया था। मंदिर के साथ उन्होंने धर्मशाला व एक पक्के कुएं का निर्माण भी करवाया। इस मंदिर के शिवालय की ऊंचाई 112 फीट है जिसकी कारीगरी बहुत ही मनमोहक है। इस परिवार के सेवाकार्यों को देखते हुए तत्कालीन पंजाब के उपराज्यपाल ने उन्हें प्रशस्ति पत्र जारी किया था।

गौरी शंकर मंदिर, दिल्ली, कानपुर का राधाकृष्ण मंदिर, सुजागढ़ का तिरूपति मंदिर, हैदराबाद का सीताराम मंदिर, भिवानी का गौरीशंकर मंदिर, दिल्ली का लाल मंदिर, हरिद्वार का मनसा देवी मंदिर, कोलकाला का सत्यनारायण मंदिर, गोविंद देव जी का मंदिर, मुंबई का महालक्ष्मी मंदिर, नगरकोट–हिमाचल प्रदेश का प्रसिद्ध **कांगड़ाधाम** मंदिर, सिरसा का वैष्णोदेवी मंदिर, श्रीगंगानगर का गीताभवन, बाबा गंगाराम का पंचदेव मंदिर, महादेव जटिया का बिसाऊ का शिवमंदिर (131 फीट ऊंची प्रतिमा सहित), आदि अनेक भव्य मंदिरों का निर्माण इस समाज द्वारा करवाया गया। सालासर धाम मंदिर निर्माण में श्री रामजीदास गनेड़ीवाल की मुख्य भूमिका रही।

इतिहास के झरोखे से --

''अग्रोहा में अग्रवालों का प्रथम महाकुंभ''

24-25 अक्टूबर 1982 को **शरद पूर्णिमा** के अवसर पर

डा. गिरिजा प्रसाद मित्तल - ने अपनी पुस्तक ''महाराजा अग्रसेन जी का जीवन चरित्र'' में दो दिवसीय ''प्रथम अग्र माहकुंभ'' का बड़ा ही रोचक वर्णन किया है, प्रस्तुत है कुछ अंश -

रात्रि के आठ बजे हैं, पांडाल खचाखच भरा हुआ है, हरियाणा की पंचायत एवं विकास मंत्री श्रीमती शारदा रानी अग्रवाल तथा श्री बनारसीदास जी गुप्त ने कुंभ की ''पूर्व सांस्कृतिक संध्या'' का विधिवत उद्घाटन किया। दूसरे दिन अथाह भीड़ के बीच बनारसीदास जी गुप्ता, रामेश्वर दास जी गुप्त ने ध्वाजा रोहण किया। राजकवि श्री परमानंद जी ने ''**ध्वजगान**'' आरंभ किया।

अग्रवंश अधिनायक जय हे, जन-जन के सुखदाता,
अग्रसेन के नव समाज में, न कोई भूखा नंगा।
सभी बराबर के भाई थे, बहती प्यार की गंगा।
सब जन के दुख भागे, भाग्य सभी के जागे।
अमर बन गई, गाथा।। ईंट रूपया देकर सब को समता पाठ सिखाता।
जय हे..जय हे..जय हे...। जय जय जय जय हे।।

महाराजा अग्रसेन मंदिर का उद्घाटन - हरियाणा के मुख्यमंत्री चौधरी भजनलाल जी ने किया। मित्तल जी लिखते हैं कि - हे भगवान इतनी भीड़ कहां समाएगी। मंदिर तक पहुचने में मुख्यमंत्री, बनारसीदास जी को काफी कठिनाई हुई। मुख्य मंत्री भीड़ में वे बुरी तरह फंस गये थे। बनाारसीदास जी तो भीड़ में गिर पड़े थे। न जाने उनके ऊपर से कितने लोग चले गये। मुख्य मंत्री ने मंदिर के द्वार खोले, मूर्ति को तिलक लगाया, हाथ जोड़े और पूजा की। बाद में विशाल पांडाल में बने भव्य मंच पर विराजे - केंद्रीय मंत्री श्री सीताराम केसरी, श्री दलवीर सिंह, हरियाणा की मंत्री श्रीमती शारदा रानी, लोकसभा सदस्य श्री भीकूराम जैन, श्री सुल्तानसिंह आदि। उद्योगपति व स्वागताध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जिंदल ने मेहमानों का स्वागत किया। अ.भा. अ.स. के महामंत्री श्री रामेश्वर दास गुप्त ने अग्रोहा में चल रहे विकास कार्यों की जानकारी दी। साथ ही मुख्यमंत्री जी से दस लाख रूपये के आर्थिक सहयोग का अनुरोध किया। सम्मेलन के अध्यक्ष बनारसीदास जी ने भी संबोधित किया।श्रीमती स्वरामणि अग्रवाल ने भी अग्रोहा निर्माण

के लिये तन-मन-धन की जोरदार अपील की। अग्रोहा विकास ट्रस्ट के संयोजक श्री श्रीकिशन मोदी ने अपनी झोली पसारते हुए सहयोग की अपील की। मुख्य मंत्री भजन लाल जी ने कहा कि मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूं कि महाराजा अग्रसेन के पवित्र मंदिर का उद्घाटन मेरे द्वारा हुआ।

दहेज विरोधी सम्मेलन - दूसरे दिन, दोपहर दो बजे श्री राजीव गांधी पधारे, सबसे पहले वे मंदिर गये। मंदिर के मॉडल को देखा और सराहना की। श्रीमती स्वरामणि अग्रवाल ने पुस्तकें भेंट कीं। उपस्थित अपार जनसमूह को संबोधित करते हुए श्री **राजीव गांधी** ने कहा कि, यदि हरियाणा की नई राजधानी बने तो अग्रोहा को राजधानी बनाया जाये, उन्होंने आगे कहा कि हजारों साल पहले महाराजा अग्रसेन हुए, उन्होंने जो समाजवाद चलाया था, वह दुनियां के लिए नमूना हैं, दहेज के बारे में बोलते हुए कहा कि अग्रवालों को इस कलंक को तुरंत धो डालना चाहिए। श्री सीताराम केसरी ने अपने विद्वता पूर्ण भाषण में गीता के उदाहरणों से वैश्य समाज की वकालात की। भजनलाल जी ने कहा कि जब चंडीगढ़ पंजाब को दे दिया जाएगा और फजिलका तथा अबोहर हरियाणा को मिल जाएगा तभी अग्रोहा को राजधानी बनाने की सोची जाएगी।

बनारसीदास जी चिंतित थे कि पर्याप्त संख्या में अग्रवाल वहां होंगे कि नहीं, रामेश्वर दास जी कहते थे कि एक लाख से अधिक अग्रवाल वहां पहुंचेंगे, लेकिन सभी अखबारों ने यहां ढाई लाख अग्रवालों के पहुंचने का दावा किया। अग्रोहा में इस अवसर पर अ.भा.यु.अ.स., हरियाणा का पुरातत्व विभाग और इतिहासकार श्री वृंदावन कानूनगो के सहयोग से एक **विशाल प्रदर्शनी** का आयोजन किया गया। हिसार से अग्रोहा और फतेहाबाद तक तोरणद्वारा लगाए गये, पूरे अग्रोहा को फूलों से सजाया गया, अग्रवाल महापुरूषों के बड़े-बड़े चित्र लगाए गये, सड़क के दोनों ओर बाजार लगाया गया जहां सभी खाने-पीने का वस्तुएं उपलब्ध थीं। रात्रि विश्राम के लिये दस हजार से अधिक अग्रबंधुओं के लिये विशाल तंबू लगाये गए।

''राजधानी दिल्ली में अपनी तरह का पहला अभूतपूर्व सम्मेलन''

नींव का पत्थर - मंगल मिलन मासिक पत्रिका का आरंभ मार्च 1973 में आरंभ हुआ। 1974 में घोषणा हुई कि दिल्ली में देशभर के अग्रवाल पत्र/पत्रिकाओं के प्रकाशकों, प्रबंधकों, संपादकों, पत्रकारों का अ.भा.स. बुलाया जायेगा। पत्रकारों का सुझाव आया कि अग्रवालों का अखिल भारतीय सम्मेलन बुलाया जाए, केवल पत्रकारों आदि का नहीं। इस विषय पर विचार हेतु जनवरी 1975 में दिल्ली की समस्त अग्रवाल सभाओं व सामाजिक कार्यकत्ताओं की एक बैठक धर्म भवन में बुलाई गई। सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि ''**अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन**'' के नाम से एक सम्मेलन का आयोजन किया जाए। 5-6 अप्रैल 1975 को प्रथम बार आयोजित इस दो दिवसीय विराट सम्मेलन में अनेक ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किये गए। -- अग्रवालों को एक मंच पर संगठित करने और उनकी स्थिति सुधारने के लिए अखिल भारतीय स्तर की एक सक्रिय संस्था स्थापित करने का निश्चय किया गया। यह संस्था अग्रोहा

को अग्रवालों का तीर्थस्थल बनाने के लिये, सरकार से खुदाई कराने और पुनरूत्थान करने, अग्रसेन जी के जन्म दिन पर देश भर में सार्वजनिक छुट्टी कराने और विशेष डाक टिकट जारी कराने का प्रयास करेगी। प्रमाणिक इतिहास तैयार कराने तथा अ.भा.अग्रवाल डायरेक्ट्री प्रकाशित कराने का निश्चय किया गया।

सम्मेलन के खुले अधिवेशन का उद्घाटन तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री बी.डी. जत्ती ने किया। इस सम्मेलन में पूरे भारत से अगवाल बंधुओं ने भाग लिया। अग्रवाल सदा अग्रणी रहा – **पहली सभा** का **उद्घाटन हरियाणा के तत्कालन वित्तमंत्री श्री रामसरनचंद्र मित्तल ने किया। द्वितीय सत्र ''इतिहास''** – प्रसिद्ध पुरातात्विक वेता डा. परमेश्वरी लाल गुप्त ने इस सभा की अध्यक्षता की। आपने कहा कि अग्रोहा से जो सिक्के मिले हैं, उनसे यह सिद्ध हो गया है कि, अग्रोहा का प्राचीन नाम अग्रोदक था तथा वहां आग्रेय नामक जनपद था। इस सत्र को रामेश्वरदास जी गुप्त, डा.स्वराजमणि अग्रवाल, विद्वान वेद प्रताप वैदिक आदि ने संबोधित किया। सम्मेलन में अग्रसेन जी के चित्र तथा अग्रवाल ध्वज को मान्यता देने का भी प्रस्ताव पारित किया गया। 18 गोत्रों के प्रचलित विभिन्न रूपों में एकरूपता लाने की दृष्टि से तथा इनकी व अग्रवाल (Agrawal) की ठीक से वर्तनी के मान्य रूपों की सूची को पारित करने का प्रस्ताव इस सभा में स्वीकृत हुआ।

अग्रोहा को तीर्थ बनाया जाए – दूसरी सभा हैदराबाद के श्री जगदीश प्रसाद जी सरावगी की अध्यक्षता में हुई। इसका उद्घाटन प्रसिद्ध उद्योगपति पद्मश्री देवीसहाय जिंदल ने किया। इसमें भी अनेक प्रस्ताव पारित किये गये जिनमें – दिन में शादी करने, अखिल भारतीय संस्था बनाने के लिये 51 सदस्यों की तदर्थ समिति बनाना आदि। **तीसरी सभा ''राष्ट्रदूत'' नागपुर के संपादक श्री हरिकिशन अग्रवाल की अध्यक्षता** में संपन्न हुई। इसका उद्घाटन किया वयोवृद्ध नेता व स्वतंत्रता सेनानी प्रो. रामसिंह जी ने। इसमें भी अनेक प्रस्ताव पारित किये गये।

पत्रकार सम्मेलन – दूसरे दिन प्रस्ताव पारित कर प्रतिवर्ष 1100–1100 रूपयों के पुरस्कार ऐसे व्यक्तियों को देने का निर्णय लिया गया जिन्होंने पत्रकारिता में उत्कृष्ट कार्य किया हो। यह भी तय किया गया कि एक अखिल भारतीय अग्रवाल पत्रिका निकाली जाये। इस सभा का उद्घाटन सुप्रसिद्ध पत्रकार तथा **नवभारत टाईम्स के प्रधान संपादक श्री अक्षयकुमार जैन** ने किया। अध्यक्ष्ता कानपुर से प्रकाशित दैनिक जागरण के संपादक श्री नरेन्द्र मोहन ने की। इसमें 60 पत्रकारों ने भाग लिया।

महिला अधिवेशन – दूसरे दिन ही एक भव्य महिला सम्मेलन आयोजित किया गया। इसकी अध्यक्षता हरियाणा **विधान सभा की तत्कालीन उपाध्यक्ष श्रीमती लेखवती जैन** ने की तथा दिल्ली की प्रसिद्ध समाज सेविका श्रीमती रक्षासरन ने उद्घाटन किया। देश के लगभग सभी प्रांत की महिला प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया। **खुला अधिवेशन** – इसको तत्कालीन उपराष्ट्रपति मा. बी.डी. जत्ती ने संबोधित किया। इस अवसर पर नंदन के संपादक श्री जयप्रकाश

भारती, मंगल मिलन के संपादक रामावतार जी गुप्त एवं वैश्य संगठन सभा के अध्यक्ष ग्यारसीराम गुप्त ने पत्रिकाएं तथा स्मारिकाएं भेंट कीं। कनखल-हरिद्वार के प्रतिनिधियों ने गंगाजन से भरा कलश भेंट किया।

अग्रोहा यात्रा - तीसरा दिन परम उल्लेखनीय दिन रहा जब भारत के अनेक स्थानों से पधारे हुए बंधुओं ने सम्मेलन के संयोजक के नेतृत्व में अग्रोहा तीर्थ की यात्रा करके अपनी जन्मस्थली के दर्शन किये। कहना होगा कि इस अभूतपूर्व अधिवेशन में अनेक प्रस्ताव पारित किये गए। इस तरह भारत के तीन करोड़ अग्रवालों को एकत्रित करने का, एक झंडे तले लाने का यह प्रयास नींव का पत्थर बना। अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन ने कुल 18 प्रस्ताव पारित किये। 12 अक्टूबर 1975 को श्री श्रीकिशन मोदी, श्री रामेश्वरदास गुप्ता, श्री तिलकराज अग्रवाल, श्री देवकीनंदन गुप्ता, श्री बद्रीप्रसाद अग्रवाल, श्रीमती स्वराजमणि अग्रवाल,मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, श्री बाबूलाल सलमेवाले, वैद्य निरंजन लाल गौतम, श्री बलदेवराज अग्रवाल, श्री एम.एम. बंसल, श्री राधेश्याम अग्रवाल तथा सिरसा के श्री गंगाविशन एडेवोकेट आदि अग्रोहा गये। सबने अग्रोहा के टीले का सर्वेक्षण किया, उस भूमि का भी निरीक्षण किया जिसे तीर्थ के रूप में विकसित करना था।

पुस्तक ''महाराजा अग्रसेन जी का जीवन चरित्र''

मासिक पत्रिका - अग्रणी संदेश 2005 में छपा श्री रामेश्वर दास गुप्त का लेख ''महाराजा अग्रसेन, अग्रोहा और अग्रवाल'' के कुछ अंश

1930 के दशक में मैं जब दिल्ली आया था, तब भी अग्रवाल समाज की सभाओं, अधिवेशनों, बैठकों आदि में भाग लेता था। वहां अनेक लोगों को प्रश्न उठाते हुए मैंने सुना था कि महाराजा अग्रसेन कौन थे, कहां से आए? आदि-आदि। 1937-38 में ''वैश्य बीसे अग्रवाल पंचायत'' का एक अधिवेशन चांदनी चौक के गांधी ग्राउंड में हुआ। वहां सामने बैठे लोग मंचासीन लोगों से प्रश्न पूछ रहे थे कि जब महाराजा अग्रसेन के 18 पुत्रों के हम बेटी-बेटा हैं तो आपस में विवाह कैसे करते हैं? वे कब पैदा हुए थे? आदि प्रश्नों की झड़ी लगी थी। 1940 के आस-पास मैंने सत्यकेतु जी की पुस्तक **उर्दू** में पढ़ी थी। 1945 में मैं मास्टर लक्ष्मीनारायण जी के संपर्क में आया। उनको भी इन प्रश्नों का अनुमान तो था, परंतु समाधान नहीं था। 1975 में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन की स्थापना की, उस समय भी ये प्रश्न सिर उठाए खड़े थे। मैंने अनेक विद्वानों से बात की पर संतोषजनक उत्तर नहीं मिलता था। मैं केवल इतना ही कह सकता हूं कि अगले 15 वर्ष में देश और दुनियां के हर अग्रवाल परिवार में, हम महाराजा अग्रसेन को प्रतिष्ठित कर देंगे। फिर किसी व्यक्ति की, विद्वान की, इतिहासकार अथवा साहित्यकार की यह मजाल नहीं होगी कि वह उन घरों में से महाराजा अग्रसेन को बाहर निकाल दे।

संस्मरण

सन् 1976 में भारत सरकार ने महाराजा अग्रसेन के सम्मान में ''**डाक टिकट**'' निकाला। उस समय सम्मेलन के अध्यक्ष श्री श्रीकिशन मोदी थे और मैं महामंत्री था। सरकार के अधिकारियों ने हमें आमंत्रित किया, मोदी जी और मैं उनके पास पहुचें। अधिकारियों ने हमसे महाराजा अग्रसेन के संबंध में जो सामग्री चाही, वह हमनें उन्हें दे दी। साथ ही अधिकारियों ने हमसे पहला प्रश्न किया कि आप यह साबित करें कि महाराजा अग्रसेन आपके पूवर्ज थे। मैंने उनसे अनुरोध किया कि हम तो परंपरा से महाराजा अग्रसेन को अपना ''**पूर्वज**'' मानते आ ही रहे हैं। इससे बड़ा प्रमाण और आपको क्या चाहिए - जबकि मैं अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन महामंत्री हूं और मोदी जी अध्यक्ष हैं। जब हम, हमारी संस्था और हमारा समाज इसे स्वीकार किए हुए है, फिर भी आपको शक है तो आप सिद्ध कीजिए कि महाराजा अग्रसेन हमारे पूर्वज नहीं थे। इसी पर मैंने एक बात और कही, श्रीमान् जी यदि किसी के यहां कोई लड़का नहीं हो तो वह किसी दूसरे लड़के को गोद लेकर पिता बन जाता है और अपना वंश चला लेता है। क्या यह ठीक है ? उन्होंने कहा हां, यह बिल्कुल ठीक है। तो जब किसी बच्चे को गोद लेकर कोई पिता बन जाता है तो हमारे पास यदि पिता नहीं था और हमने पिता गोद लिया या गढ़ लिया, तो हमने अच्छा ही किया है। इस पर वे महानुभाव चुप हो गये और डाक टिकट जारी हो गया।

-- मासिक पत्रिका - अग्रणी संदेश 2005 के पेज नं. 22 पर छपा श्री रामेश्वर दास गुप्त के लेख से।

बंगाल का रसगुल्ला - रसगुल्ले का जन्म बंगाल में हुआ या उड़ीसा में ? दो साल तक बंगाल व उड़ीसा में चली कानूनी लड़ाई में बंगाल को मिला रसगुल्ले का जीआई टैग तथा बंगाल सरकार अब इसको इंटरनेशनल फूड ब्रांड के रूप में पेश करेगी। यह टैग किसी वस्तु या संपत्ति को भौगोलिक पहचान बताने वाला टैग है। 2015 में उड़ीसा ने यह टैग लेने के लिये दावेदारी पेश की। बंगाल का तर्क, जिसके आधार पर उसकी जीत हुई - ''सन् 1868 में कोलकाता के बाग बाजार में नोबीन चंद्र दास हलवाई की दुकान थी। उन्होंने रोसोगुल्ला नाम की मिठाई तैयार की। एक बार सेठ **रायबहादुर भगवानदास बागला** (अग्रवाल) कहीं जा रहे थे। उनके बेटे को प्यास लगी, तो नोबिनदास की दुकान पर रूककर पानी मांगा। नोबीन ने बच्चे को पानी और रसगुल्ला दिया। बच्चे को यह अच्छा लगा तो कई रसगुल्ले खरीद लिए। बस इस एक घटना से यह मिठाई शहर भर में मशहूर हो गई।'' इसी घटना के आधार पर बंगाल की जीत हुई। निर्णय 2017 में हुआ।

❖❖❖

आजादी के पूर्व अग्रवाल समाज की पत्र-पत्रिकाएं

आजादी के पूर्व भी पत्रकारिता के क्षेत्र में अग्रवाल समाज की सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होता था, जिसमें जातीय एकता, कुरीतियों का निवारण, राष्ट्र विकास तथा धार्मिक गतिविधियों के साथ-साथ राष्ट्रीय आंदोलनों के दौरान उल्लेखनीय योगदान दिया गया। कोलकाता व मुंबई दो ऐसे केंद्र थे जहां समाज विकास के हित दूर होकर भी आपस में जुड़े हुए थे। 'आजादी के पूर्व अग्रवाल समाज की पत्र-पत्रिकाओं' के शोध कार्य में मुझे कुछ रोचक जानकारियां प्राप्त हुईं -

1. सन् 1889 में 'अग्रवाल उपकारक' शीर्षक से मासिक पत्र प्रकाशित हो रहा था जिसे पं. अंबिका प्रसाद जी ने अच्छा जातीय पत्र माना था। पहले यह अजमेर से निकला फिर लाला किशनलाल जी ने इसे आगरा से निकाला। इसका मूल्य एक रूपया वार्षिक था। सामाजिक पत्रकारिता के प्रकाशन में इसे सर्वप्रथम प्रकाशन माना जा सकता है। इस पत्र के मुख पृष्ठ पर इसके उद्देश्य की पहली दो पंक्तियां हर अंक में प्रकाशित होती थीं।

   ''श्री समाज उत्तम करण, विद्या बल विस्तार। जासे सुख संपत लहे, अंत होय भवपार।।''

   इस पत्र में तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था पर भी बहुत अच्छी टिप्पणियां और संपादकीय लिखे गये हैं।
2. सन् 1890 में कलकत्ता से 'मारवाड़ी गजट' नामक एक मासिक पत्र आरंभ हुआ।
3. सन् 1891 में सभाए आजम, खुर्जा उ.प्र. से 'वैश्योन्नति चंद्रिका' का प्रकाशन हुआ। यह पत्रिका हिंदी तथा उर्दू दोनों भाषाओं में छपती थी।
4. सन् 1891 में अजमेर से 'जैन प्रभाकर' और 1895 में 'जैन गजट' का प्रकाशन आरंभ हुआ। इन दोनों प्रकाशनों में धर्म के साथ-साथ जातीय एकता और विकास पर भी बल दिया गया।
5. वर्ष 1891 में फतेहपुर से 'अग्रहरि वैश्य बंधु' नामक पत्र का प्रकाशन हुआ।
6. अ.भा.भारत वर्षीय वैश्य महासभा, मेरठ का गठन सन् 1892 में हुआ और उसी समय इस संस्था ने 'वैश्य हितकारी' के नाम से उर्दू पत्र का प्रकाशन किया। बाद में यह हिंदी में निकाला गया। उल्लेखनीय है कि - सन् 1901 में जनगणना के समय वैश्यों के लिये बनिया, बक्काल शब्दों का प्रयोग करने पर इस सभा ने सरकार का भारी विरोध किया, अंत में सरकार ने ''वैश्य'' शब्द स्वीकार किया।
7. सन् 1896 में खेमराज कृष्णदास द्वारा बंबई से 'श्री वैंकटेश्वर समाचार' का प्रकाशन आरंभ किया गया था।
8. सन् 1904 में राजस्थान के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री शिवचंद्र भरतिया के संपादन में कलकत्ता के 'राम प्रेस' की ओर से मासिक 'वेश्योपकारक' प्रकाशित हुआ, जिसके संचालक थे रामनाथ नेमाणी इस पत्र के प्रथम अंक में प्रकाशित आत्म परिचय शीर्षक लेख

में वैश्योपकारक का पूरा परिचय दिया गया है। इसके आविर्भाव की चर्चा इस प्रकार है – अजमेर में जब अग्रवाल सभा का जन्म हुआ तो 'उपकारक' नाम के एक मासिक पत्र ने जन्म लिया था, आरंभ में यह हिंदी व उर्दू दोनों भाषाओं में निकलता रहा बाद में हिंदी की शरण ली।

इस पत्र के संपादक लाला रामचंद्र जी से चर्चा के बाद तय किया गया कि – इस पत्र का नाम और स्थान परिवर्तन कर इसे नये ढंग से संपादित किया जाए। इधर कोलकाता में राम प्रेस के स्वामी श्री बाबू राम लाल नेमाणी को वैश्य जाति के लिये एक सर्वांग सुंदर मासिक पत्र निकालने को कहा गया तो उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। तब निश्चय हुआ कि अजमेर का ''अग्रवाल उपकारक'' इस पत्र में मिला लिया जाए। इसकी भाषा हिंदी रहेगी परंतु कुछ पन्ने मारवाड़ी भाषा के भी दिये जाएंगे। 'वेश्योपकारक' के उद्देश्य – वैश्य जाति का उचित महत्व दिखलाना, परंतु सामान्यत: अन्य सभी वर्णों की यथसंभव सेवा करने से वह पीछे न हटेगा, इसमें धर्म, नीति, समाज आदि सब विषयों पर लेख लिखे जाएंगे, परंतु समुदाय विशेष पर अनुचित कटाक्ष न हो।

9. सन् 1906 में 'अग्रवाल' मासिक पत्र का संपादन बाबू गंगाराम रामचंद्र कंदोई ने किया।
10. सन् 1913 में कलकत्ता से अग्रवाल मासिक पत्र प्रकाशित होता था जिसका प्रकाशन बाबू चुन्नी लाल अग्रवाल जी ने किया, इसका मूल्य दो रूपये वार्षिक था तथा आकार 7.5 ग 5 इंच था।
11. कलकत्ता से ही बाबू मूलचंद अग्रवाल ने सन् 1916 में दैनिक 'विश्वमित्र' का प्रकाशन आरंभ किया था।
12. वर्ष 1919 में लखनऊ से आर.एस.अग्रवाल ने 'व्यापार' शीर्षक से मासिक प्रकाशन आरंभ किया। इसका आकार 10 ग 6.5 इंच था।
13. वर्ष 1919 में आगरा से परमेश्वरी सहाय ने 'अग्रवाल बंधु' नामक पत्र का प्रकाशन आरंभ किया जो अग्रवाल सभा द्वारा प्रकाशित किया जाता था। वर्ष 1924 तक इसका नियमित प्रकाशन हुआ। इसका वार्षिक मूल्य दो रूपये इसका आकार 10 X 6.5 इंच था।
14. वर्ष 1919 में ही दो रूपये वार्षिक मूल्य का मासिक 'श्री अग्रवाल' का प्रकाशन आरंभ हुआ जो कलकत्ता से प्रकाशित होता रहा। यह वर्ष 1921 तक निरंतर प्रकाशित होता रहा।
15. वर्ष 1920 में 'अग्रवाल लोहिया हितैषी' शीर्षक से भी एक पत्र प्रकाशन की जानकारी मिनली है।
16. अखिल भारतीय माारवाड़ी अग्रवाल सभा का सन् 1921 में दूसरा अधिवेशन कलकत्ता में हुआ, तब 'मारवाड़ी अग्रवाल' मासिक पत्रिका का प्रथम अंक परमेश्वरी सहाय, बी.ए. ,एल.एल.बी. के संपादन में आगरा से निकाला गया। तीन रूपये वार्षिक मूल्य वाली इस पत्रिका का प्रकाशन बाद में कलकत्ता से आरंभ हुआ। 1930 में संस्था का नाम अखिल भारतीय अग्रवाल सभा कर दिया गया तथा पत्रिका नाम भी 'अग्रवाल' कर दिया गया।

इसका प्रकाशन व संपादन कलकत्ता से श्री मोती लाल लाठ द्वारा किया जाने लगा।

17. अग्रवाल सभा, जोधपुर-राजस्थान की स्थापना 1932 में की गई तथा उसी समय से 'अग्रवाल स्नेही' मासिक पत्रिका का प्रकाशन व संपादन देशभक्त स्व. खेराती लाल अग्रवाल द्वारा किया जाने लगा तथा उनके बाद इनके पुत्र स्व. रोशनलाल जी अग्रवाल ने इसका काफी अरसे तक प्रकाशित किया।
18. वर्ष 1925 के लगभग कलकत्ता से 'अग्रसर' नामक साप्ताहिक समाचार पत्र प्रकाशित हुआ, जिसका मूल्य तीन रूपये वार्षिक था।
19. अग्रवाल सेवा सभा, कलकत्ता की स्थापना सन् 1936 में की गई तथा इस संस्था के द्वारा सन् 1940 में 'अग्रवाल पंचायत समाचार पत्र' प्रकाशित किया, जो 1942 तक चला।
20. सन् 1945 में अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन, कलकत्ता ने 'समाज विकास' नाम से मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया। इसमें भी मारवाड़ी समाज के संगठन के समाचार के साथ-साथ समाज द्वारा जनहितकारी कार्यों का विवरण दिया जाता था तथा कुरीतियों पर भी टिप्पणियां दी जाती थीं।

शंकरगादी (Shankar Gaadi)

(शिव की गद्दी)

ऐसी मान्यता चली आ रही है कि - अग्रवाल समाज एक व्यापारी समाज है। हम जो व्यापार-व्यवसाय करते हैं, उसमें दुकान या आफिस में खुद के बैठने का जो मुख्य स्थान है, उसे **''भगवान शंकर की गद्दी''** कहते आए हैं। इस गद्दी पर बैठकर व्यापारी व्यापार करता है। यह एक तरह से **''तपस्या''** ही है। (बहुत पहले बुजुर्गों से सुना था कि अग्रवाल वैश्य समाज व्यापार करता है, जो व्यापारी की बैठक होती है वह ''शंकरगादी'' कहलाती है।)

कहते हैं कि - जब भगवान शंकर सभी को अपने आशीर्वाद के रूप में सोना, चांदी, हीरे, मोती आदि बहुमूल्य खजाना लुटा रहे थे, लेकिन अग्रवाल समाज दूसरों की मदद कर रहा था, इसलिये वह देरी से पहुंचा, तब तक शंकर जी के पास कुछ भी नहीं बचा। दूसरों की मदद करने के कारण शंकर जी ने प्रसन्न होकर अपनी **''गादी''** अग्रवाल वैश्य समाज को दी और बोले, कि जो भी मेरा नाम लेकर इस **गादी** पर बैठेगा वह कभी भूखा नहीं रहेगा। इसलिए हमें हमेशा भगवान शंकर का ध्यान करके अपना व्यापार करना चाहिए। इसे शंकर जी का **''थड़ा''** भी कहते हैं।

(अग्रवालों के लिये **शंकरगादी** की क्या अहमियत होती है और क्यों अग्रवाल व्यापार को अपने रिश्ते और अन्य कार्यों से ज्यादा महत्व देते हैं। (यह प्रश्न मुझसे फेसबुक पर रोहित अग्रवाल जी ने पूछा था।) (काफी प्रयास के बाद यह जानकारी मुझे बबिता जी अग्रवाल से मिली थी।)

ब्रिटिश अधिकारियों को अग्रवाल सेठों का सहयोग
अजमेर-राजस्थान में नव निर्माण झुंझुनू का अग्रवाल परिवार

सेठ रामप्रसाद अग्रवाल - 1 जुलाई 1832 में मेजर अलैक्जेंडर स्पीयर्स अजमेर के सुपरिडेंटेंट के पद पर कार्य कर रहा था। वह 16 अप्रेल 1834 तक इस पद पर रहा। इसके बाद मि. एडमंस्टन अजमेर का सुपरिडेंटेंट बनकर आया। एडमंडस्टन ने अग्रवाल सेठों के सहयोग से लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाने का निर्णय लिया। उसने सेठ रामप्रसाद अग्रवाल से आग्रह किया कि वह इस भयावह दुर्भिक्ष में लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाये। इसलिये सेठ रामप्रसाद अग्रवाल ने 19423 ई. में **आनासागर झील** पर एक ''**घाट**'' बनवाया जो ''**रामप्रसाद जी के घाट**'' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस घाट के साथ एक **उद्यान** का भी निर्माण करवाया। इसके निर्माण के लिये एडमंस्टन ने सेठ रामप्रसाद के पिता आसकरण को 18 जुलाई 1834 को ''**सनद**'' प्रदान की। एडमंस्टन के अनुरोध पर सेठ रामनारायण सिरिया ने आनासागर पर ''**जगदीश घाट**'' बनवाया। इसके बाद एक मंदिर भी बनवाया। बाद में घाट पर ''**मारवाड़ी अग्रवाल पंचायत**'' बनाई गई।

झुंझुनू के सेठ आसकरण के चार पुत्र थे। बड़े पुत्र रामप्रसाद अग्रवाल सबसे पहले अजमेर आये। उनके आने से अजमेर नगर एवं प्रजा को बहुत लाभ हुआ। कर्नल डिक्सन ने अजमेर की प्रजा के लिये पेयजल की सुविधा हेतु चार जलाशय बनवाने के लिये प्रजा से चंदा एकत्रित करने का निर्णय लिया तो सेठ रामप्रसाद अग्रवाल ने चार में से दो जलाशय अपने धन से बनवाये। उन्होंने तारागढ़ की तलहटी में ''**डिग्गी**'' का निर्माण भी करवाया जिससे अजमेर नगर के दक्षिणी भाग में जलपूर्ति की जाती थी, तथा दूसरा जलाशय ''नाहर'' के नाम से नया बाजार में बादशाही इमारत के पास बनवाया जिससे अजमेर नगर के उत्तरी भाग में जलापूर्ति की जाती थी। सेठ रामप्रसाद ने अजमेर की प्रजा को जलपूर्ति करने के उद्देश्य से दौलत बाग तथा दूधिया कुंए के निकट **शक्कर कुई नामक कुंआ खुदवाया।** इस कुंए के लिये सरकार ने 25 जुलाई 1840 को सेठ रामप्रसाद को पट्टा एवं परवाना प्रदान किया।

1840-50 की अवधि में सेठ रामप्रसाद अग्रवाल के छोटे भाई **श्री नरसिंहदास अग्रवाल** ने कड़क्का चौक में एक **हवेली** बनवाई जो ''नरसिंहदास जी की हवेली'' के नाम से प्रसिद्ध हुई, बाद में डेक्कनी बाड़ा के नाम से प्रसिद्धि मिली। 1840 से 1850 की अवधि में नाहर मौहल्ला में **रामप्रसाद जी की हवेली** का निर्माण हुआ। सेठ रामप्रसाद ने पुरानी **पुष्कर घाटी सड़क** बनावाई तथा पहाड़ी के चोटी पर एक **कुंड** का निर्माण करवाया। सेठ रामप्रसाद ने अजमेर के हिंदू मंदिरों में तिबारों का निर्माण करवाया। इनमें अजयपाल तथा बेजनाथ प्रमुख थे। सेठ रामप्रसाद ने नया बाजार में **नृसिंह जी का मंदिर** बनवाया।

सन् 1835 में मेरवाड़ा के सुपरिडेण्टेंट कैप्टेन डिक्सन ने नया नगर की नींव रखी जो आगे चलकर ब्यावर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 1836 में ब्यावर में मुख्य बाजार बनवाया गया। सेठ

रामप्रसाद अग्रवाल ने नया बाजार(ब्यावर) को लोकप्रिय बनाने में कर्नल डिक्सन को बड़ी सहायता की। उससे उपकृत होकर डिक्सन ने सेठ रामप्रसाद के व्यापार संबंधी अभियोजनों में लगने वाली कोर्ट फीस आधी कर दी तथा चुंगी चौथाई कर दी। सन् 1837 में जब सेठ रामप्रसाद अग्रवाल गया की तीर्थ यात्रा पर गये तो राजपूताना के एजीजी एवं कमीशनर मेजर नेटहैनील अल्वेस ने सेठ रामप्रसाद के मार्ग में पड़ने वाले समस्त अंग्रेज अधिकारियों को एक परिपत्र भिजवाकर उन्हें निर्देशित किया कि सेठजी की तीर्थयात्रा में हर संभव सहायता की जाये। कर्नल डिक्सन ने भी 01 फरवरी 1837 को सेठ रामप्रसाद अग्रवाल को एक परिपत्र दिया कि सेठ रामप्रसाद अग्रवाल के तीर्थयात्री दल में 900 तीर्थ यात्री, 100 शस्त्रधारी, 75 बैलगाड़ी, 2 रथ, 50 ऊंट, 26 घोड़े, 5 पालकी तथा 3 चपरासी हैं। समस्त ब्रिट्रिश अधिकारी इनकी सहायता करें।

पूर्णमल गनेड़ी परिवार – सेठ रामप्रसाद अग्रवाल ने अपने संबंधी पूर्णमल गनेड़ी को भी अजमेर आने के लिये प्रेरित किया। सेठ पूर्णमल गनेड़ी ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया तथा नया बाजार में तीन नोहरे तथा तीन घर बनवाये। इनमें से एक घर बाद में खरवा हाउस के नाम से प्रसिद्ध हुआ। **सेठ पूरणमल ने पुष्कर में प्रसिद्ध रंगजी का मंदिर बनवाया।**

पटवारी परिवार – ई. 1830 से ई. 1840 की अवधि में अजमेर आने वाला तीसरा प्रमुख परिवार परबतसर का पटवारी परिवार था। इस परिवार में मोहनलाल, जवाहरलाल तथा छोटूलाल नामक तीन भाई थे। सेठ मोहनलाल ने **पुष्कर में एक मंदिर** बनवाया तथा नया बाजार कटला में चार दुकानें बनवाईं। जवाहरलाल ने नाहर मौहल्ला, जहां गजमालजी की गली और नाहर गली मिलती थीं, एक विशाल **हवेली** का निर्माण करवाया। सेठ छोटूलाल ने सेठ रामप्रसाद अगब्राल के लघु भ्राता **सेठ करणीदान** की हवेली के पड़ौस में अपनी हवेली बनवाई। सेठ करणीदान अग्रवाल ने एक और हवेली सेठ रामप्रसाद जी की हवेली के पास बनवाई। रामप्रसाद अग्रवाल के चौथे भाई दीनानाथ अग्रवाल ने नाहर कुंड के सामने अपनी हवेली बनवाई। इन सेठों के अजमेर में बसने एवं विशाल हवेलियां और दुकानें बनाने से अजमेर में रौनक बढ़ गई। ई. 1839 में सरकारी खजांची **राधाकिशन** ने **आनासागर पर खजांचियों का घाट** बनवाया।

अजमेर का वृहत इतिहास-लेखक डा. मोहन लाल गुप्ता

संक्षिप्त में कुछ अग्रविभूतियों का परिचय

दीवान नानूमल जी अग्रवाल

ये **पटियाला के महाराजा अमरसिंह** के दीवान थे। महाराजा की महत्वकांक्षाओं को मूर्त रूप देने में दीवान नानूमल का महत्वपूर्ण योगदान था। **कुशल राजनीतिज्ञ** होने के साथ-साथ ये **कुशल सेनापति** भी थे। इन्होंने हांसी के सूबेदार रहीमदाद खाँ को परास्त कर जींद की रक्षा की थी। इसी प्रकार सरदार हरिसिंह के विद्रोह मचाने पर दिल्ली बादशाहत के प्रधानमंत्री नबाब मजुदुदौला अब्दुल अहमद ने जब पटियाला पर आक्रमण किया तब भी दीवान नानूमल ने बड़ी वीरता के साथ उसका सामना कर पटियाला की रक्षा की। सन् 1781 में महाराजा अमरसिंह की मृत्यु बे बाद नानूमल की जिम्मेदारी और भी बढ़ गई, क्योंकि उस समय राज्य के **उत्तराधिकारी साहबसिंह की आयु मात्र छः वर्ष** की थी। अमरसिंह जी की विधवा रानी हुकमा की आज्ञा से दीवान नानूमल पटियाला के **प्रधानमंत्री** नियुक्त किये गए। समय पाकर भवानीगढ़ के सूबेदार मानसिंह तथा सरदार आलासिंह ने पटियाला राज्य के विरूद्ध भयंकर विद्रोह मचाया, परंतु दीवान नानूमल ने विद्रोहियों का दमन कर पटियाला राज्य के अक्षुण्णता की रक्षा की। इसके पश्चात् सन् 1783 में पटियाला दुर्भिक्ष के समय सरदारों ने पुनः विद्रोह भड़काया, उस समय भी नानूमल जी ने लखनऊ के कुछ फौजी अफसरों के सहयोग से यूरोपियन ढंग से सेना को संगठित कर विद्रोहियों का दमन किया। इस युद्ध में नानूमल जी बुरी तरह से आहत हुए थे। सन् 1784 में रानी हुकमा की मृत्यु के पश्चात् रानी खेमकौर ने नानूमल जी को कैद में डलवा दिया, परंतु रानी राजेन्द्र कौर ने इन्हें कैद से छुड़वाकर पुनः प्रधानमंत्री बनवा दिया। उस समय भी इन्होंने मराठा सरदार धारराव की सहायता लेकर विद्रोहियों को परास्त किया और राजय में शांति स्थापित की। इस प्रकार भीषण आपत्तियों के समय ''दीवान नानूमल अग्रवाल'' ने अतयंत बहादुरी और राजनैतिक कुशलता का परिचय दिया। **सन् 1765 से 1781 के बीच इन्होंने पूर्वजों की पुण्य-भूमि अग्रोहा में एक अत्यंत सुदृढ़ किले का निर्माण करवाया, जिसके अवशेष आज भी विद्यमान हैं।**

कानूनगो (बिंदल) परिवार कैथल

बाद में यह परिवार **बिंदलिश** खानदान के नाम से जाना जाता रहा। इस परिवार के प्रथम पुरूष लाल मेदनीमल थे, वे संस्कृत, फारसी तथा अरबी के उच्च कोटि के विद्वान थे। इसी कारण दिल्ली में सुल्तान खिज खां (1414-1421) के दरबारी थे। एक दिन सुल्तान खिज खां कुरान पढ़ रहे थे, तो एक वाक्य उनकी समझ में नहीं आया, तब केवल मुंशी मेदनीमल ने ही इसका अर्थ स्पष्ट किया, जिससे सुल्तान बहुत खुश हुए। दरबारियों की जलन के कारण ऐसे विद्वान का हिंदू बने रहना इस्लाम के लिये खतरा बताया। इसपर मुंशी मेदनीमल को 1421 ईस्वी में मुसलमान बना दिया गया। उसका विवाह एक शहजादी से कर दिया गया। उसका नाम शेख

मुबारक रखा गया। **उस समय इनकी हिंदू पत्नी ने इस्लाम नहीं अपनाया था। उसके पुत्र का नाम रायमल था, जिससे आज भी उनका परिवार चल रहा है।**

मुस्लिम पत्नी से मेदनीमल के चार पुत्र हुए, जिनमें सबसे बड़ा शेख तैय्यब था, जिसने बहलोल लोधी परिवार काल में शीशों वाली मस्जिद का निर्माण करवाया था। उनके शरजाह (वंश वृक्ष) के अनुसार मस्जिद पर 878 हिजरी लिखा पत्थर लगा हुआ है, अर्थात् सन् 1473 में यह मस्जिद बहलोल लोधी के समय बनी थी। आज भी विवाह के अवसर पर इस खानदान के लोग इस शीशों वाली मस्जिद, तिवाड़ी मौहल्ला में शरबत घड़ा चढ़ाकर आते हैं।

पुस्तक - हरियाणा का गौरव-अग्रवाल समाज

रायबहादुर राजा ज्योति प्रसाद, बैंकर एवं रईस (सिंघल)

सन् 1911 में राजा ज्योतिप्रसाद ने रेलवे कंपनी बनाई थी, जिसका नाम जगाधरी लाईट रेलवे लिमिटेड कंपनी था। इनके परिवार की स्वामित्व वाली इस कंपनी ने बाद में रेलगाड़ी चलाने के लिये छोटी लाईन यमुना नगर रेलवे स्टेशन से जगाधरी बाजार तक बिछाई थी, जिसकी लागत उस समय डेढ़ लाख रूपये थी। कहा जाता है कि राजा ज्योति प्रसाद खुद रेलगाड़ी में सवार होकर पूरी रियासत का भ्रमण किया करते थे। आस-पास की रियासतों में भी राजा साहब की ट्रेन के खूब चर्चे थे। कई दूसरी रियासतों के राता भी ट्रेन की सवारी करने के लिये ज्योति प्रसाद जी के मेहमान बनते थे। 1924 तक ये ट्रेन छुक-छुक कर चलने वाली जगाधरी रियासत की शान थी। राजा ज्योति प्रसाद के बाद रघुनाथसिंह ने रियासत को संभाला, फिर उनके भतीजे बृजभूषण राजा बने। इसके बाद चमन प्रकाश को लाईट रेलवे कंपनी का एम.डी. बनाया गया। 1956 में जगाधरी लाईट रेलवे कंपनी की गतिविधियां पूरी तरह खत्म हो गई।

हरियाणा का गौरव अग्रवाल समाज

राजा पटनीमल बहादुर

आपका जन्म सेठ बालगोविंद राय के यहां सन् 1770 में हुआ था। आपको मुगल बादशाह अकबर द्वितीय से ''राजा का खिताब'', ''पांच हजारी का मन्सब'' का सबसे बड़ा सम्मान और आपके पुत्र राय श्रीकृष्ण को गोहद महाराजा से अटोर परगना की ''जागीर'' मिली। लगभग एक लाख रूपये लगाकर आपने **ज्वालामुखी(कांगड़ा) में एक कुंआ** बनवाया। लगभग तीन लाख रूपये की लागत से मथुरा में **शिवताल** के नाम से मशहूर **तालाब** बनवाया तथा वहां के दीर्घ विष्णु एवं वीर भद्रेश्वर महादेव के मंदिरों का पुनर्निर्माण किया। आपने बनारस जिले के नेवतपुर के पास कर्मनाशा नदी पर एक सुंदर व मजबूत ''**पुल**'' बनवाया। दिल्ली में आपके स्मारक स्वरूप पटनीमल की गली, पटनीमल की खिड़की एवं हवेली है। उनकी हवेली (नाईवाड़ा चांदनी चौक) में आजकल सूरज कन्या शिक्षालय दिल्ली है। मथुरा में ''**पटनीमल का घाट**'' भी है।

शाह गोविन्द चंद (सिंघल गोत्र)

आपको अवध दरबार ने अपना जौहरी नियुक्त किया था। अवध दरबार का प्रसिद्ध **''पीकॉक थ्रोन'' (मयूर सिंहासन)** आप ही ने बनवाया था। आपके काम से प्रसन्न होकर सरकार ने आपको खिल्लत (सम्मान पत्र) और शाह का खिताब प्रदान किया था। आपके पिता जीवित होने के कारण आपने यह खिताब लेने से मना कर दिया तब नवाब ने आपकी वंश परंपरा को **शाह** का सम्मानित खिताब दिया। इसके बाद आप अवध दरबार के खजांजी नियुक्त हुए।

राजा दुर्गाप्रसाद अग्रवाल

हरियाणा के नारनौल में **''जनक तालाब''** बनवाने वाले सिंघल गोत्री ''बाबू जानकी प्रसाद'' आपके दादाजी थे। दुर्गाप्रसाद जी अपने पिता श्री छोटे लाल जी के इकलौते पुत्र थे। आपका जन्म संवत् 1904 में हुआ था। हिंदी, उर्दू, मराठी आदि विषयों में आपने शिक्षा प्राप्त की। 30 वर्ष की उम्र में वे दूसरे दर्जे के ''ऑनरेरी मजिस्ट्रेट'' बनाए गये। 1936 में फरूर्खाबाद में आर्य समाज की स्थापना हुई। इस अवसर पर **स्वामी दयानंद सरस्वती** भी आए तथा उनका दुर्गाप्रसाद जी से संपर्क हुआ जो लगातार प्रगाढ़ होता गया। सवंत् 1940 में दयानंद जी के देहांत के बाद दुर्गादप्रसाद के प्रसास से उनकी परोपकारिणी सभा का अजमेर में अधिवेशन हुआ। सन् 1889 में बरेली में आर्य प्रतिनिधि सभा के तीसरे अधिवेशन में कॉलेज की स्थापना के लिये दुर्गाप्रसाद जी की अध्यक्षता मे एक समिति बनी। वे आर्य प्रतिनिधि सभा के ''उपसभापति'' बने। सन् 1892 को उन्हें ''रायबहादुर'' की पदवी से विभूषित किया गया। सन् 1892 में ही उन्होंने वैश्य एकता और संगठन का सर्वप्रथम शंखनाद करने वाली संस्था ''वैश्य महासभा'' का स्थापना अधिवेशन मेरठ में करवाया। जिसकी अध्यक्षता दुर्गाप्रसाद जी ने की। 61 वर्ष की अवस्था में उन्होंने संवत् 1965 में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट का काम छोड़ दिया। वे जीवनभर समाजिक कार्यों में सक्रिय रहे।

राजा रामदेव पौद्दार

सेठ राजा रामदेव का जन्म सन् 1896 को शेखावटी की कुबेर नगरी नवलगढ़ में हुआ था। वे महान् दानी-मानी, समाजसेवी, शिक्षा प्रेमी, देश भक्त तथा उद्योगपति थे। वे सेठ ज्ञानी राम पौद्दार के पौत्र थे। 12 वर्ष की आयु में नवलगढ़ में अपनी हवेली के निर्माण का कार्य हाथ में लिया। मात्र 14 वर्ष की आयु में अपने पिता के मुंबई में सथापित समृद्ध व्यापार को संभाला। 29 वर्ष की आयु में जापान से समझौता कर वस्त्र उद्योग के क्षेत्र में उच्च कीर्तिमान स्थापित किये। जापान के साथ **भारतवर्ष में वर्ष 1925** में **स्थापित** यह **''पहली कताई तथा बुनाई मिल''** थी जिसका नामा **''टोयो पौद्दार मिल''** रखा गया।

1938 में राजा रामदेव ने **''सिल्क एंड आर्ट सिल्क मिल्स संघ''** की स्थापना की, जिसमें भारत की लगभग 300 रेशमी मिलें सदस्य थीं। उन्होंने **''सिल्क तथा आर्ट सिल्क**

रिसर्च एसोसिऐशन'' की भी नींव डाली तथा 1948 में उन्होंने अंतरराष्ट्रीय सिल्क कांग्रेस, जिसका सम्मेलन फ्रांस के नगर लिआंस में तथा पुन: 1951 में लंदन में हुआ था, भारतीय शिष्ट मंडल का **नेतृत्व** किया तथा वे 1948 से अपनी मृत्यु तक उक्त सिल्क कांग्रेस के **उपाध्यक्ष** बने रहे। उन्होंने देश में विभिन्न **तिलहनों तथा अन्न भंडार संघों** के **एकीकरण** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने बैंकिंग तथा रूई उद्योग को असाधारण ख्याति प्रदान की, वे **रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया** के **निदेशक**, पूर्वी भारत कॉटन संघ के उपाध्यक्ष, पश्चिमी भारत व्यापार एवं वाणिज्य संघ के अध्यक्ष, फिक्की तथा इंडियन मर्चेन्ट एसोसिएशन की कार्यकारिणी समितियों के सदस्य रहे।

आपने भी अपने पिता की भांति शिक्षा पर जोर दिया तथा अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। जिनकी संख्या **40 से अधिक** है। उन्होंने मुंबई में **''भगवान लक्ष्मी नारायण मंदिर''** का निर्माण भी करवाया। राजा रामदेव जी ने जीवनभर खादी के वस्त्र ही धारण किये। उन्होंने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भी भाग लिया। सन् 1952 में एकीकृत मुंबई प्रांत की सरकार ने उन्हें मुंबई का **''शेरिफ''** नियुक्त किया तथा नगर निगम मुंबई ने उनकी असाधारण सेवा का सम्मान करते हुए कर्मवीर भाऊराव पाटिल मार्ग का नाम **''रामदेव पौद्दार चौक''** कर उनकी स्मृतियों का चिरस्थायी बना दिया। श्री रामदेव जी ने अपनी प्रतिष्ठा व ख्याति का ध्यान रखते हुए तत्कालीन ब्रिटीश सरकार द्वारा उन्हें दिये जाने वाल नाईट हुड सम्मान को ठुकरा दिया, किंतु सरदार पटेल के परामर्श से जयपुर महाराजा द्वारा दी गई **''राजा की पदवी''** को स्वीकार कर लिया।

(अग्रोहाधाम, सितम्बर - 2004)

सर शादीलाल अग्रवाल

''प्रथम भारतीय न्यायाधिपति''

आपको भारत के इतिहास में सर्वप्रथम भारतीय के रूप में किसी उच्च न्यायालय के **मुख्य न्यायाधीश** पद प्राप्त करने का श्रेय है। आपका जन्म 12 मई 1872 को जिला महेन्द्रगढ़ के रिवाड़ी नगर में हुआ था। 1890 में मैट्रिक परीक्षा प्रथम स्थान पास कर छात्रवृत्ति प्राप्त की। भारत में विद्याध्ययन पूर्ण कर आपने आक्सफोर्ड वैलीपोल कॉलेज में प्रवेश लिया। आपने यहां भी ''बैचलर सिविल लॉ'' परीक्षा विश्वविद्यालय में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आपने सबसे पहले लाहौर में वकालत प्रारंभ की। योग्यता और प्रतिभा के बल पर आपको **लाहौर का मुख्य न्यायाधीश** नियुक्त किया गया। यह पद प्राप्त करने वाले आप **प्रथम भारतीय** थे। आप इस मध्य पंजाब विधान परिषद के सदस्य भी रहे। सन् 1934 में आप मुख्य न्यायाधीश पद से सेवानिवृत्त हुए। आपकी प्रतिभा को देखते हुए आपको तत्काल **इंग्लैंड की प्रिविकॉन्सिल की न्यायिक समिति**

का सदस्य नियुक्त किया गया, जो कि उस समय भारत के सभी उच्च न्यायालयों की अपील के लिये सर्वोच्च न्यायालय था। अस्वस्थ होने के कारण आप 1938 में भारत आ गये तथा दिल्ली में वकालत करने लगे। मार्च 1945 में 71 वर्ष की आयु में आपका देहांत हुआ। ''सर शादीलाल अस्पताल'' आज भी रिवाड़ी जनता की सेवा कर रहा है। आपने ही सर्वप्रथम राजनीतिक संगठन ''**हिंदू महासभा**'' के गठन का विचार दिया और वे इस संगठन के श्रेष्ठ कार्यकत्ता थे। आपके दो पुत्र श्री राजेन्द्र लाल व श्री नरेन्द्र लाल बार-एट-लॉ रहे। सर शादीलाल जी की स्मृति में पुत्र श्री नरेन्द्र लाल ने शामली कस्बे में एक विशाल अस्पताल का निर्माण भी करवाया है तथा पूज्य पिताजी की स्मृति में प्रतिवर्ष राष्ट्रीय स्तर पर खेल-कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन भी करते हैं।

अग्रोहाधाम-नवम्बर 1995

सर गंगाराम

आधुनिक लाहौर के पितामह - जन्म 13 अप्रैल 1851, आपने बिजली से चलने वाली तथा भाप से चलने वाली टरबाईन से मेन नहर से पानी ऊंचाई पर लाकर ''**लिफ्ट सिंचाई**'' का सिद्धांत आधुनिक भारत में सबसे पहले देकर भारत में कृषि विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया। उनका सबसे मुख्य एवं अभूतपूर्व योगदान यातायात के साधन में भी ''**घोड़ा ट्रेन**'' के रूप में भी रहा। यह ''घोड़ा ट्रेन'' सन् 1903 में आरंभ की गई जिसमें दो डिब्बे लगाये जाते थे और 16 यात्री एक बार में यात्रा कर सकते थे। इसे घोड़े के द्वारा खींचा जाता था। सौ वर्ष बाद पाकिस्तान सरकार ने इसे बंद कर दिया।

प्रशासनिक कार्य - दिल्ली दरबार, कांगड़ा घाटी में टेढ़ी-मेढ़ी पहाड़ियों में रेलवे लाईन बिछाना, पेशावर की पेयजल समस्या को समाप्त किया, पंजाब (पाकिस्तान) में एक मेगावाट बिजली का ''रेनाला हाइड्रो पॉवर स्टेशन'' बनाया, जिसका उद्घाटन 22 मार्च 1925 में हुआ, इसका नाम ''**गंगा पॉवर**'' स्टेशन है। आपने नई दिल्ली का सचिवालय भवन, पटियाला का विक्टोरिया गर्ल्स स्कूल डिजाईन किया। आपने लाहौर के आधे हिस्से को डिजाईन किया था। सन् 1921 में लाहौर के किले के बाहर लखपत राय में करीब 1500 एकड़ में गार्डन टॉऊन डिजाईन किया जो अब लाहौर का सबसे खूबसूरत इलाका है। आप लाहौर के म्यूजियम कमीश्नर रहे। पटियाला रियासत में रहते हुए, मारवाड़ बैंक के कई वर्षों तक चैयरमेन रहे। **सेवा कार्य** - 2 अप्रैल 1923 को ''सर गंगाराम ट्रस्ट सोसायटी'' की स्थापना की गई जिसके संस्थापक सर गंगाराम (गोयल गोत्र), उनके दो बेटे-रायबहादुर लाला सेवक राम (वकील, लाहौर) व बालक राम (वकील, लाहौर) सहित अन्य सदस्य भी थे। गंगाराम अस्पताल व बालक राम मेडिकल कॉलेज व सर गंगाराम हाई स्कूल की स्थापना की गई। सर गंगाराम जी

द्वारा लाहौर में लाइब्रेरी तथा अग्रवाल आश्रम स्थापित किया गया था।

गंगापुर गांव – सर गंगाराम के नाम पर स्थापित। जब अंग्रेजों द्वारा लायलपुर (अब पाकिस्तान में) बसाया जा रहा था तब अंग्रेजों ने सर गंगाराम को अपनी इच्छा का एक गांव डिजाईन करके बसाने के लिये 50,000 एकड़ जमीन दी थी। इस गाव का नाम उनके नाम पर ''**गंगापुर**'' है, जिसकी स्थापना सन् 1898 में हो गई थी। यह गांव लायलपुर जिले के जडांवाला तहसील, फैसलाबाद–पाकिस्तान के अंतर्गत आता है। सर गंगाराम ने इस गांव को एक आदर्श गांव के रूप में स्थापित किया था। सर गंगाराम द्वारा इस गांव मं एक घंटाघर व एक सुंदर कुंआ भी खुदवाया जिसकी दीवार लाला गंगाराम द्वारा अविष्कृत एक विशेष प्रकार की ईंटों से चुनी गई हैं। गंगाराम जी को अंग्रेजों ने पुरस्कार स्वरूप 1000 रूपयों की थैली भेंट की।

श्री सेवकराम – आप सर गंगाराम के सुपुत्र थे, जिन्हें सन् 1907 में लायलपुर(पाकिस्तान) में आयोजित '**कृषि प्रदर्शनी**'' में 11 पुरस्कार मिले। इस प्रदर्शनी में वे **सर्वप्रथम** रहे। उन्हें सफेद देशी कपास, आसामी कपास, मकई, मसाले उगाने तथा कृषि यंत्रों से काम लेने का पहला पुरस्कार भी मिला। 1908 में अच्छी फसलें व तंदुरूस्त नस्ल के जानवर पैदा करने के लिये भी उन्हें कई पुरस्कार मिले। आप आजादी के पहले संयुक्त पंजाब की विधान परिषद में **चार बार** सदस्य रहे, जो एक कीर्तिमान है।

ज्योतिप्रसाद अग्रवाला

स्वतंत्रता सेनानी, असमी संस्कृति के अग्रदूत, कवि, नाटककार, फिल्म निर्माता, निर्देशक और फिल्म संगीतकार

असम के सबसे लोकप्रिय व्यक्ति श्री ज्योतिप्रसाद अग्रवाला जैसी बहुमुखी प्रतिभा की धनी विभूति आज तक न असम में हुआ है और उनके विराट व्यक्तित्व को देखते हुए नहीं लगता कि आने वाला युग ऐसी महान् विभूति को जन्म दे सकेगा। वे ऐसी सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी थे, जिन्होंने अपनी प्रतिभा से साहित्य, संगीत, कला, नाटक, नृत्य, समालोचना काव्य, स्थापत्य कला, पत्रकारिता आदि विविध विधाओं को एक साथ अलंकृत कर असम के सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठा और ख्याति प्राप्त की। आपने अपनी अद्‌भुत लेखनी से असमिया भाषा के साहित्य को अमर बना दिया।

आपका परिवार मूल रूप से राजस्थानी था। कभी जीविका की खोज में असम जाकर

बस गये। सन् 1811 में उनके पूर्वज नौरंगराय अग्रवाल (केडिया) चुरू निवासी मारवाड़ छोड़कर असम आकर बस गये थे, तब उनकी उम्र 16 साल की थी। ज्योतिप्रसाद जी का जन्म 17 जून 1903 को डिब्रूगढ़ में ताम्बूलवाड़ी में हुआ। पिता श्री परमानंद अग्रवाल व माता किरणमयी दोनों ही कला साधक और संगीत प्रेमी थे। मैट्रिक पढ़ते समय ही वे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। बाद में आप अध्ययन के लिये इंग्लैंड चले गये और लंदन व जर्मनी में रहकर पढ़ाई के साथ-साथ फिल्मों का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। इसी समय आप हिमांशु राय एवं देविका रानी के संपर्क में आये और हिमांशु राय से सात माह तक बर्लिन में चलचित्र निर्देशन के विषय में शिक्षा ली। 1936 में आपका विवाह देवयानी से हुआ, किंतु दुर्भाग्यवश देवयानी का देहांत हो गया।

1934 में उन्होंने ''**चित्रलेखा**'' मूवीटोन नामक संस्था की स्थापना कर चाय बागान में ''**चित्रवन**'' नामक स्टूडियो की स्थापना की और अथक परिश्रम कर ''**प्रथम असमिया फिल्म जयमति**'' का निर्माण करने में सफलता प्राप्त की, जिसे 10 मार्च 1935 में पहली बार कलकत्ता में प्रर्शित किया गया। इससे आपको जबरदस्त ख्याति मिली और वे ''**रूपकंवर**'' की उपाधि से विभूषित हुए। बाद में आपने ''इंद्र मालती'' का निर्माण किया। इस फिल्म में ''**भूपेन हजारिका**'' ने ग्रामीण बालक का अभिनय किया। फिल्मों के माध्यम से ज्योति प्रसाद जी ने संपूर्ण भारत में असमिया भाषा को विशेष पहचान दी। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अनेक असमिया नाटकों का मंचन किया। ज्योतिप्रसाद जी की गणना असमिया के श्रेष्ठ नाटककारों में की जाती है। असमिया नाटक के क्षेत्र में उनकी देन के बारे में **हिदी विश्वकोश में** लिखा है - नाटक के क्षेत्र में अतुलयुद्ध हजारिका से भी ''ज्योति प्रसाद अग्रवाला का कार्य अधिक महत्वपूर्ण है।'' भारतीय निवासियों का इतिहास एवं संस्कृति ग्रंथ में लिखा है - ''**ज्योतिप्रसाद अग्रवाल संभवतः असमिया नाटक साहित्य की श्रेष्ठ विभूति है।**''

जयोति प्रसाद जी ने जो भी काव्य लिखा वह क्रांतिकारी एवं जनकवि के रूप में उनको स्थापित करता है। उन्होंने असम की संस्कृति और विरासत को समृद्ध किया, अनेक कठिनाईयों के बावजूद अपने अथक प्रयासों से उन्होंने अकेले अपने दम पर असम में फिल्म उद्योग को जन्म दिया। मात्र 14 साल की उम्र में ही उन्होंने सोनित कुनवारी नामक नाटक लिख दिया था। उन्होंने असम के कुछ मशहूर गानों की धुन बनाई जो आज ''**ज्योति संगीत**'' के नाम से प्रसिद्ध है। गांधी जी जब भी कभी असम जाते थे तब वे ज्योतिप्रसाद अग्रवाला जी के यहां ही ठहरते थे। मात्र 48 वर्ष की आयु में 17 जनवरी 1951 को इस महान् कलाकार एवं साहित्य सेवी का देहांत हो गया। असम में उनकी पुण्यतिथि हर साल ''**शिल्पी दिवस**'' के रूप में मनाई जाती है। भारतीय डाक विभाग ने 17 जून को 101वीं जयंती पर इस महान् विभूति की स्मृति में ''डाक टिकट'' जारी किया।

शंकर लाल गोयनका, फिल्म निर्माता और डिस्ट्रीब्यूटर
पूर्वोत्तर माटी के लाल

भारतीय सिनेमा के रजट पटल पर चमकते हुए सितारे, सिनेमा व्यवसाय के वास्तविक हीरो श्री शंकरलाल गोयनका बचपन से ही फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े रहे हैं। वे इसी क्षेत्र में पले बढ़े और अभी तक उनका विशेष कार्य क्षेत्र यही है। जब भारत के बहुत से भू भाग से सिनेमा का प्रचार-प्रसार शैशवावस्था में था, तब पूर्वोत्तर को फिल्म उद्योग से जोड़ने के इरादे से **स्व. जीवनराम जी गोयनका** ने सन् 1926 में शिलांग में ''**केल्विन**'' नामक ''**प्रथम सिनेमा हॉल**'' की स्थापना की। इसके बाद 1932 में गुवाहाटी केल्विन सिनेमा घर तथा सन् 1935 में शिलांग में एक सिनेमा घर **बिजौ** स्थापित किया तथा 1966 में आधुनिक सिनेमा हॉल ''**अंजली**'' का निर्माण हुआ। इन सभी क्रियाकलापों ने पूर्वोत्तर भारत में फिल्म उद्योग के लिये बुनियाद का काम किया। इस तरह स्व. जीवनराम जी पूर्वोत्तर के फिल्म क्षेत्र के विकास पुरूष साबित हुए।

इन्हीं विकास पुरूष के पुत्र हैं, शंकर लाल गोयनका जी, इस प्रकार सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि उनका बचपन पूर्वोत्तर भारत में ''फिल्म'' को विकसित होने के कालखंड में प्रत्यक्ष भागीदारी के रूप में व्यतीत हुआ। जिसका परिणाम यह हुआ कि, युवा शंकर लाल गोयनका एक परिपक्व ''फिल्म वितरक'' तथा ''फिल्म निर्माण'' खासकर पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति, भाषा, जनजीवन से जुड़े फिल्मों के खेवनहार बन कर उभरे।

सन् 1970 के प्रारंभ में श्री गोयनका ने विख्यात गायक डा. भूपेन हजारिका द्वारा निर्देशित फिल्म **प्रतिद्वन्दी** फिल्म देखी, जो चेरापूंजी के राजा और उसके असमिया समकक्ष मित्रता पर आधारित थी। वे उस फिल्म को देखकर बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने डा. भूपेन हजारिका से अनुरोध किया कि वे इस फिल्म प्रतिद्वंदी को **खासी भाषा** में ''डब'' करें, ताकि शिलांग में दिखाई जा सके। उनका अनुरोध मान्य होने पर, उसके संपूर्ण खर्च को स्वंय वहन करते हुए ''**कासारतीह**'' नाम से ''**पहली खासी फिल्म**'' को अंजली हॉल में प्रदर्शित कराने का गौरव प्राप्त किया। 'पूर्वोत्तर भारत' में जनगोष्ठियों से उन्होंने अपने लगाव का आगाज किया, जो गौरवमय इतिहास बन गया। इसके बाद तो फिल्म क्षेत्र को अपना जीवन दर्शन ही बना डाला। उन्होंने बहुत सारी हिंदी फिल्मों का वितरण, असमिया फिल्मों का निर्माण और वितरण वितरण कर वे पूर्वोत्तर भारत के **फिल्मों के मसीहा** बन गए। इन कार्यों में उन्हें अपार सफलता मिली, वहीं असमिया फिल्मों के उत्थान-पतन के साक्षी बनने का अवसर भी मिला।

गोयनका जी का सफल व्यवसायी होना मात्र उन्हें महान् नहीं बनाता, उन्हें महान् बनाता है उनका संवेदनशील होना। पूर्वोत्तर भारत से असीम प्रेम का जज्बा, इसके लिये कुछ कर गुजरने का अदम्य साहस, अपने इस संवेदनशील कार्यक्रम को अग्रसारित करते हुए उन्होंने ''जीवनराम मुंगीदेवी पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट'' की स्थापना की, जिसके अंतर्गत पूर्वोत्तर के फिल्म कलाकारों, कवियों और साहित्कारों को उनकी कला के प्रति सम्मान व प्रोत्साहन तथा उत्कृष्ट योगदान हेतु 2007 से हर वर्ष पुरस्कार प्रदान किया जाता है। यह ट्रस्ट ज्योतिप्रसाद

अग्रवाला और शिलांग हेरिटज आदि अविस्मरणीय पुस्तकें भी प्रकाशित कर चुका है। उन्होंने 2009 में भूपेन हजारिका शीर्षक से गीतों का एक एलबम प्रस्तुत किया था, जिसमें 1938 से भूपेन हजारिका के गीतों का संग्रह है, इसके अधिकांश गीत अन्यत्र उपलब्ध नहीं हैं। पूर्वोत्तर के साहित्य और संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु असम साहित्य सभा के कई प्रकल्पों में आपका महत्वपूर्ण योगदान सदा याद रहेगा। वर्तमान में मशहूर असमिया नाटककार अरूण शर्मा का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त उपन्यास आशीर्वाद रंग पर आधारित असमिया फिल्म ''अजेय'' के वे निर्माता हैं, जिसका निर्देशन अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जाहनू बरूआ ने किया है। इस फिल्म को 03 मई 2014 को राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा वर्ष 2013 की सर्वश्रेष्ठ असमिया फिल्म का रजत कमल प्रदान किया गया।

श्री गोयनका जी की उपलब्धियों की सूची बहुत लंबी है, जिनपर आने वाले समय में शोधार्थी शोध करेंगे और पुस्तकें लिखेंगे। वे एक साथ सफल व्यवसायी, भाषा-संस्कृति संरक्षक, कलाप्रेमी, कलाकार-साहित्य संरक्षक, पूर्वोत्तर भारत के कण-कण से प्रेम करने वाले सचमुच पूर्वोत्तर भारत के माटी के लाल हैं। उनका जीवन का उद्देश्यपूर्ण कार्यक्रम इसी प्रकार निरंतर चलता रहे, उनका जीवन दीर्घायु हो। वे आज भी सक्रिय हैं तथा फिल्मों व कलाकारों के लिये संघर्षरत हैं। असम के ये वयोवृद्ध फिल्म निर्माता शंकर लाल गोयनका जी, पिछले 6 दशकों से से फिल्म उद्योग से जुड़े हुए हैं, आपने असम आंदोलन को असम में घटते फिल्म उद्योग के लिए कारकों में से एक कारक करार दिया।

प्रसिद्ध धारावाहिक के रामायण के सहनिर्माता प्रेम सागर जी ने बताया था कि शिलांग में फिल्म ललकार की शूटिंग से पहले हमारे डिस्ट्रीब्यूटर शंकरलाल गोयनका हमें कामाख्या देवी के मंदिर ले गये थे। यह कहानी अविश्वसनीय है, मगर उसका जिक्र पापाजी की बायोग्राफी एन एपिक लाईफ, रामानंद में भी मैंने किया है। गोयनका जी रामानंद सागर जी के अनन्य मित्र रहे हैं। पत्रिका - वैश्य परिवार - जुलाई-सितम्बर 2014, में श्री चंद्रप्रकाश पौद्दार, गुवाहाटी की प्रस्तुति

सर मोती सागर जैन

आप अग्रवाल समाज के पहले ''**फिल्म निर्माता**'' बने। आपके द्वारा सन् 1924 में लाहौर में "Great Eastern Film Corporation" की स्थापना अपने पुत्र प्रेम सागर (जन्म 11 फरवरी 1898) के साथ मिलकर की। इस फिल्म कंपनी के अंतर्गत आपने लाहौर में एक जर्मनी की फिल्म कंपनी के साथ मिलकर बुद्ध के जीवन पर आधारित फिल्म ''प्रेम संन्यास'' या Light of Asia बनाई। इस फिल्म के निर्देशक हिमांशु राय थे। 1926 में यह फिल्म ब्रिटेन के महाराजा जार्ज पंचम ने देखी थी। अमेरिका में इसे 1928 में दिखाया गया। मोती सागर दिल्ली विश्वविद्यालय के दूसरे वाईस चांसलर भी रहे। आपको सन् 1914 में लाहौर हाईकोर्ट का ''**जज**'' बनाया गया। आपका जन्म सन् 1873 में पिता रायबहदुर सागर चंद जी के यहां हुआ था। 1930 में आापका देहांत हुआ। आपके पूर्वज सेठ जोधराज ग्वालियर महाराजा के दीवान थे।

जोधराज के पुत्र रामनारायण को राजा की उपाधि व बड़ी जागीरदारी मिली। मोती सागर पंजाब नेशलन बैंक, दिल्ली के निदेशक भी रहे। सन् 1928 में अमृतसर में आयोजित ''**अग्रवाल सम्मेलन, पंजाब**'' के ''द्वितीय अधिवेशन'' की **अध्यक्षता** सर मोती सागर जी जैन ने की। **आपके पुत्र प्रेमसागर** ने दादा सागर चंद द्वारा स्थापित स्कूल को आगे बढ़ाया, जो अभी भी दरिबां कला, चांदनी चौक में संचालित है। आपकी ''सर मोती सागर एंड सन बैंकर्स'' के नाम से ठेकदारी और जमींदारी लाहौर और दिल्ली में थी। आप 'रायल एशियेटिक सोसायटी, लंदन' के सदस्य तथा 'ग्रेट ईस्टर्न फिल्म कॉर्पोरेशन के कार्यकारी निदेशक रहे। प्रेमसागर जी का देहांत 10 जनवरी 1939 को हुआ। (पुस्तक अग्रवाल समाज की विरासत)

आचार्य डा. रघुवीर (मंगल)

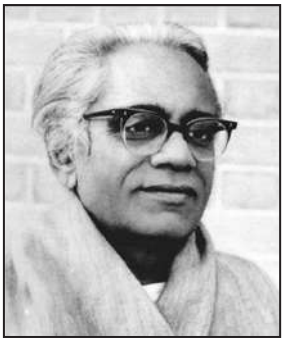

आपका जन्म 30 दिसम्बर 1902 को रावलपिंडी में हुआ था। आप ''**32 भाषाओं**'' के जानकार थे। आपने सन् 1932 में **डच भाषा** में उपनिवेशवाद के विरूद्ध क्रांति समर्थक ग्रंथ लिखा। स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये। संविधान सभा के सदस्य तथा राज्य सभा के 1948-60 तक सदस्य रहे। आप वैदिक एवं बौद्ध अनुसंधान में देश के अग्रणीय विद्वान शिरोमणि थे। आपने तिब्बत, मंगोलिया, चीन, कोरिया, जापान, इंडोनेशिया, मलेशिया आदि देशों से हस्तलिखित ग्रंथ, चित्र, शिल्पों का संग्रह किया। हिंदी को प्रशासन, उद्योग और विज्ञान की यथार्थ भाषा बनाने के लिऐ ''**प्रशासनिक शब्दावली (शब्दकोश) का निर्माण**'' किया। इस शब्दकोश के निर्माण में आचार्य रघुवीर जी ने **चार लाख से अधिक पारिभाषिक शब्दों** का निर्माण कर अप्रतिम योगदान दिया। आप जैसे धुन के धनी राष्ट्रभक्त के कारण ही हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर विभूषित किये जाने का मार्ग प्रशस्त किया।

डा. रघुवीर भाषाविद् के अलावा प्रसिद्ध पुरातात्विक भी थे। उन्होंने भारतीय अवशेषों की खोज में भी अपना बहुमूल्य समय व्यतीत किया। दिल्ली में आपके द्वारा स्थापित संग्रहालय ''**सरस्वती विहार**'' में भारतीय संस्कृति से जुड़ी अनेक हस्तलिखित ग्रंथ, पुराण, चित्र आद का बहुत बड़ा दुर्लभ संग्रह है। इस संग्रहालय का शिलान्यास सन् 1956 में तत्कालीन राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद जी ने किया तथा रघुवीर जी के कार्यो की प्रशंसा की। मनीषी डा. वासुदेव शरण अग्रवाल जी के शब्दों में ''बृहत्तर भारत की जितनी सामग्रियां सरस्वती बिवार की छतों के नीचे एकत्र है, उतनी संसार में किसी एक स्थान पर नहीं मिलेगी।'' उन्होंने अस्त्रा खान (बोल्गा) से ''पद्म पुराण'' बाइकाल (बैकाल) के निकट से सुभाषित रत्ननिधि और मंगालिया से विक्रमादित्य और राजा भोज की कहानियों की पुस्तकें प्राप्त की थीं।

आप भारतीय **जनसंघ** के **संस्थापक** सदस्य थे तथा सन् 1963 में जनसंघ के **अध्यक्ष**

रहे। लाहौर के पास ''इछरा'' गांव में आपकी 32 एकड़ जमीन थी, जहां आपने ''**अंतरराष्ट्रीय भारतीय संस्कृति अकादमी**'' की स्थापना की। भारतीय संस्कृति अनसंधान के लिये आप यूरोप, सोवियत संघ, चीन एवं दक्षिण पूर्वी देशों की यात्राएं की। आप अपनी अकादमी को सन् 1946 में नागपुर ले गए। रघुवीर जी का जन्म 30 दिसम्बर 1902 को रावलपिंडी में श्री मुंशीराम अग्रवाल जी के यहां हुआ। सन् 1963 में आपका एक दुर्घटना में देहांत हो गया।

सेठ मिर्जामल पौद्दार

अग्रवाल समाज के ऐसे रत्न हैं, जिन्होंने अपनी विलक्षण प्रतिभा द्वारा भारत के कोने-कोने में अपने व्यवसाय का प्रसार किया। उस समय जब भारत में संचार एवं यातायात की आधुनिक सुविधाएं नहीं थीं, व्यापारिक मार्ग असुरक्षित थे, आपने देश के हर कोने में अपनी कोठियां एवं प्रतिष्ठान स्थापित किये। उस समय बीकानेर राज्य में आपके बराबर का कोई साहूकार नहीं था। उनका मुख्य व्यवसाय बैंकिंग, बीमा, ठेका और आयात-निर्यात का था। उनकी दिल्ली स्थित फर्म मिर्जामल मगनीराम के बही खाता से उस समय लाखों रूपयों की हुंडियों के जमा खर्च मिलते हैं। उनके द्वारा काश्मीरी शॉलों का मुंबई के बंदरगाह से इंग्लैंड निर्यात के भी उल्लेख मिलते हैं। आपका जन्म वि.सं. 1848 में चुरू-राजस्थान में हुआ। आप सेठ चतुर्भुज के पौत्र एवं श्री जिंदाराम के छोटे पुत्र थे। सेठ चतुर्भज की बीमा व्यवसाय में बहुत प्रसिद्धि थी।

उस समय छोटे-छोटे राज्य व ठिकानेदार थे, हर एक इस बात के लिये उत्सुक रहता था कि उसके यहां संपन्न लोग आकर बसें और राज्य की आर्थिक समृद्धि में योगदान दें। संवत् 1840 में सीकर दरबार में चुरू के समान एक नया शहर बसाने का आयोजन किया। उन्होंने श्री चतुर्भुज एवं उनके परिवार को आमंत्रित किया कि वे राज्य में आकर बसें। परिणाम स्वरूप **सेठ परिवार सहित सीकर में ''नीसा ढाणी'' नामक गांव में जाकर बस गये। यही ढाणी कालांतर में ''रामगढ़ सेठों''** के नाम से **प्रसिद्ध** हुई।

मिर्जामल जी के बीकानेर महाराजा से भी मधुर संबंध थे। वे महाराजा सूरतसिंह के आग्रह पर चुरू आ गये। बीकानेर राज्य में उनकी बहुत प्रतिष्ठा थी। आपने अनेक राजाओं को ऋण दिया था। संवत् 1827 में मिर्जामल जी ने बीकानेर राज्य को चार लाख रूपये का ऋण दिया था। बाद में समय-समय पर भी राज्य की भरपूर सहायाता की। महाराजा सूरतसिंह ने उनको ऊंचे ओहदे व सम्मान प्रदान किये। उन्हें ''नगारा निशान'' बख्शा। एक परवाने से पता चलता है कि महाराजा ने उन्हें 700 रू. का एक सिरोपाव व दुशाला भेंट किया। बीकानेर महाराजा ने उन्हें एक **''रूक्का'' संवत् 1882 में दिया**, जिसमें लिखा है कि - सेठ मिर्जामल पौद्दार ने राज्य की बहुत सेवा की। चुरू के बागी ठाकुर सूजा को मोजे से बाहर निकालने में इनका सफल प्रयत्न रहा। उक्त सेठ ने उजड़े गांवों को बसाकर बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया है। इनको व इनके पूरे खानदान को न्याय विभाग और अन्य विभाग की सब प्रकार की सजाओं से मुक्त किया जाता है।

बीकानेर सरकार इनसे व इनके खानदान से सदायशतापूर्ण व्यवहार करेगी। इनके खिलाफ कोई भी शिकायत का ध्यान नहीं दिया जायेगा। इन्हें तथा इनके खानदान को **तीन खून तक गुनाह माफ** हैं। इनके खिलाफ जो भी शिकायत आयेगी उसका निपटारा ये खुद करेंगे। इनके कर्जदारों से कर्ज वसूलने की कचहरियों को सख्त हिदायत दी जाती है। सेठ मिर्जामल को यह भी अधिकार दिया गया कि यदि उनकी हवेली में कोई भी अपराधी यदि **शरण** प्राप्त कर लेगा तो उसे पकड़ा नहीं जायेगा।

सेठ मिर्जामल पंजाब केसरी महाराजा रणजीतसिंह के विशेष कृपापात्र तथा विश्वसनीय व्यक्ति थे। वे इनकी विलक्ष्ण बुद्धि तथा अनुभव से बहुत प्रभावित थे। वे सेठ जी को अपने राज्य की शक्ति समझते थे। महाराजा की ओर से उनको अनेक छूट मिली हुईं थीं। कश्मीर व मुल्तान की दुकानों पर उन्हें 25 प्रतिशत की छूट दी गई। रणजीत सिंह जी के साथ संबंधों का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि सन् 1838 में लाहौर के शालीमार बाग में महाराजा ने प्रसन्न होकर उन्हें **मोतियों का कंठाहार भेंट किया** व अपने पौत्र की शादी में विशेष रूप से आमंत्रित किया। पंजाब की अन्य रियासतों के साथ भी उनके अच्छे संबंध थे।

सेठ जी के व्यापार कौशल को देखते हुए अंग्रेजों ने उनसे बार-बार आग्रह किया कि वे ईस्ट इंडिया के अधीन अपना कारोबार स्थापित करें। उस समय के ''पोतेदार'' संग्रह के कागजों से पता चलता है कि सेठ मिर्जामल पौद्दार रोहतक व रिवाड़ी जिलों के ''**खजांची**'' रहे। एक अंग्रेज अधिकारी चार्ल्स थियोफिल्स ने अपने अधीन थानेदारों को आदेश दिया था कि वे सेठ मिर्जामल के माल को अपनी-अपनी हदों से सुरक्षित तथा सावधानी से आगे पहुंचायें। आपकी मृत्यु सन् 1848 में ''नाभा'' में हुई। उन्होंने अनेक लोकोपकारी कार्य किये, जिनकी सूची काफी लंबी है। उन्होंने अपने जीवन में अनेक दुर्लभ ग्रंथो का संग्रह किया। महाराजा रणजीतसिंह द्वारा उनको **प्रसिद्ध कवि फिरदौसी द्वारा लिखित शाहनामा भेंट किया था।** उनकी मृत्यु के बाद उनके पुत्रों गुरूमुखराय एवं महादयाल पौद्दार का भी राज्य में विशेष सम्मान बना रहा। बीकानेर महाराजा जब भी चुरू आते तो उनका हाथी सेठ मिर्जामल की हवेली के सामने रोका जाता था। इनके परिवार वालों ने मथुरा में ''राधागोविंद जी का मंदिर'' रामगढ़ में ''श्री बद्रीनारायण मंदिर'' तथा यात्री धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। अग्रोहाधाम, सितम्बर-1997

सेठ आनंदीलाल ज्ञानी राम पौद्दार

आपका जन्म सन् 1874 को नवलगढ़-शेखावटी में हुआ। संघर्षशील जीवन आरंभ कर आपने काटन व्यवसाय आरंभ किया। देखते ही देखत वे भारत के एक महान् कॉटन व्यवसायी बन गये। उन्होंने जापान जैसे देश से कॉटन मिल लगाने का समझौता किया। आपको शिक्षण संस्थाएं स्थापित करने का बेहद शौक था। उन्होंने नवलगढ़, जयपुर, भवानीमंडी तथा मुंबई में अनेक शिक्षण संस्थाएं स्थापित कीं। आपने 1922 में पहली संस्था नवलगढ़ में ''ब्रह्मचर्य आश्रम'' के रूप में स्थापित की। आपने मुंबई में अपने भाई तथा पुत्र के साथ मिलकर 18

शिक्षण संस्थाएं स्थापित कीं। आपने समाज सेवा, शिक्षा, औद्योगिक विकास, प्रबंधन, आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के प्रचार एवं प्रसार तथा राजनीति में इतनी ख्याति अर्जित की कि 21 अक्टूबर 1954 को उनकी जयंती नवलगढ़, जयपुर तथा मुंबई में मनाई गई। आपने सन् 1922 में ''तिलक स्वराज कोष'' के लिये दो लाख एक हजार रूपये देकर देशभक्ति का परिचय दिया।

आपका ''जन्म शताब्दी समारोह'' नवलगढ़ सहित अनेक स्थानों पर मनाया गया, जिसमें उपराष्ट्रपति डा. गोपालस्वरूप पाठक, अनेक राज्यपाल तथा गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त हजारों की संख्या में जनता उपस्थित थी। नवलगढ़ में प्रवेश करते ही इस महान् विभूति द्वारा किये गए कार्यों की अनुभूति होती है। नगर में एक विशाल प्रतिमा भी स्थापित की गई। मुंबई, मालाबार हिल में आपकी सात फीट ऊंची प्रतिमा भी स्थापित है।

भागीरथ कानोडिया

आपका जन्म 25 फरवरी 1895 को राजस्थान के मुकुन्दगढ़ में हुआ। आपके पूर्वज हरियाणा के महेन्द्रगढ़ जिले के कानोड़ गांव के रहने वाले थे, अत: वे कानोडिया कहलाए। उन्होंने अपना कार्य क्षेत्र कलकत्ता और राजस्थान बनाया। उन्होंने शिक्षा प्रसार, हरिजनोद्धार और जन चिकित्सा के क्षेत्र में अपने को समर्पित कर दिया। 16 वर्ष की आयु में आपने मुकुन्दगढ़ में पुस्तकालय की स्थापना कर दी। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में आप जेल भी गये। आप राजस्थान हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष थे। राजस्थान के प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान वनस्थली विद्यापीठ, बालमंदिर, विद्याभवन, महिला मंडल एवं राजस्थान विद्यापीठ आदि अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। राजस्थान में अकाल पड़ने पर वे पीड़ितों घर-घर पहुंचे। आपने आदिवासी क्षेत्रों में स्वंय जाकर कार्य किया। बीकानेर में अकाल के समय भी आपने महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने हजारों जोड़ी चप्पल मंगवाकर पीड़ितों को बांटी। 1943 में जब बिहार में भूकंप आया तो आपने 40 लाख रूपये एकत्रित कर गांव-गांव लंगर खोल दिये।

स्वतंत्रता के बाद जब राजस्थान को भयंकर जल संकट का सामना करना पड़ा तब मुख्य मंत्री श्री मोहन लाल सुखाड़िया ने आपको ही आग्रहपूर्वक ''**राजस्थान जलबोर्ड का अध्यक्ष**'' बनाया। आपका कार्य काल प्यासे मरूस्थल में नंदनवन की कल्पना का साकार रूप है। उन्होंने एक ही वर्ष में 10500 कुंए और हजारों की संख्या में कुंड बनवाए और 2500 पुराने कुओं को गहरा करवाया। उन्होंने अपने अथक प्रयत्नों से झूंझनू एवं सीकर जिलों में तो ''कुंआ क्रांति'' ला दी। उन्होंने ''कासा'' की सहायता से 1000 नलकूप भी बनवाए। बंगाल में भी उनका सेवाकार्य अतुलनीय है। अतिथि सत्कार में उनका कोई जवाब नहीं था। डा. राजेन्द्र प्रसाद, पुरूषोत्तमदास टंडन सहित बड़े-बड़े राजनेता, साहित्यकार उनके यहां ठहरते थे। 22 अक्टूबर 1971 को आपका देहांत हो गया।

सेठ किरोड़ीमल लोहारीवाला

कुबेर दानवीर के नाम से मशहूर। भिवानी नगर से 10 किलोमीटर दूर लोहारी गांव में 15 जनवरी 1892 को आपका जन्म हुआ। 1930 में आपने मथुरा में ब्रज मार्ग स्थित छाता नामक स्थान में विशाल धर्मशाला का निर्माण अपने सहयोगी मंगतराय आसेका के साथ करवाया। 13 मई 1946 को आपने 30 लाख रूपये से ''सेठ किरोड़ीमल चैरिटी ट्रस्ट'' की स्थापना की जिसने अनेक कार्य किये। जिनमें प्रमुख है - दिल्ली का मशहूर ''किरोड़ीमल कॉलेज''। सन् 1951 से भी पहले पहाड़गंज दिल्ली में निर्मला कॉलेज था, मूलभूत सुविधाओं के अभाव में यह बंद हो गया तभी 1951 में सेठ किरोड़ीमल ने इसे खरीद लिया तथा इसे नार्थ कैंपस में स्थापित किया, जहां पर अनेक हस्तियों ने अध्ययन किया।

सेठ किरोड़ीमल ने ही छत्तीसगढ़ के रायगढ़ को पूरे भारत में एक पहचान दी। 1946 में आपने अपने धर्मादा ट्रस्ट का आरंभ 30 लाख रूपयों से किया। रायगढ़ में स्कूल, कॉलेज, बालमंदिर, बालसदन, भव्य मंदिर, धर्मशालाएं, कुंए, बावड़ी सहित कॉलोनियों का निर्माण सेठ किरोड़ीमल जी ने करवाया। इतना ही नहीं रायगढ़ को औद्योगिक पहचान दिलाने के लिये ''प्रथम जूट मिल'' स्थापित की। उस समय मध्य प्रदेश की यह एकमात्र जूट मिल थी। रायगढ़ का प्रसिद्ध ''झूला मेले'' का आरंभ भी उन्होंने गौरीशंकर मंदिर से किया। रायगढ़ में मध्यप्रदेश के प्रथम पॉलिटेक्निक कॉलेज का निर्माण करवाया जो कि आकार में किसी विश्वविद्यालय का स्मरण करवाता है। इस कॉलेज में मशीनें उन्होंने जर्मनी से मंगवाईं थी। इसके अलावा देश के अनेक शहरों में भी उन्होंने अनेक जनहित स्थानों का निर्माण करवाया। आधुनिक रायगढ़ के इस महान् शिल्पी का निधन 2 नवम्बर 1965 को हुआ।

सेठ सुखानंद सरावगी

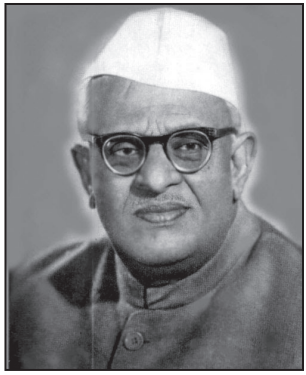

महान् दानवीर एवं जैन धर्म के अनुयायी सुखानंद जी के पूर्वज फतेहपुर के निवासी थे। जब संवत् 1508 में फतेहखां ने हिसार से आकर फतेहपुर बसाया तो आपके पूर्वज श्री तुहिनमल जैन भी उनके साथ आ गये। उन्होंने फतेहपुर में सुंदर ''दिगम्बर जैन मंदिर'' का निर्माण करवाया। श्री गुरूमुख राय मारवाड़ी समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, उनका सन् 1860 में इंदौर में आपका बड़ा व्यवसाय था। यहीं सन् 1967 में इनके यहां पुत्र सुखानंद का जन्म हुआ। सुखानंद जी ने मुंबई आने वाले

यात्रियों विशेषकर मारवाड़ियों के लिये आवास की बड़ी कठिनाई होती थी, आपने मारवाड़ी भाईयों की सुख-सुविधा के लिये लाखों रूपये खर्च करके माधोबाग में विशाल ''सुखानंद गुरूमुखराय दिगम्बर जैन मंदिर धर्मशाला'' का निर्माण करा दिया। आपकी मैसूर नरेश तथा सीकर नरेश महाराजा माधोसिंह जी से खूब पटती थी। आपने इस धर्मशाला के उद्घाटन के लिये रावराजा माधोसिंह जी को आमंत्रित किया, महाराजा धर्मशाला की विशालता और सेठ जी की उदारता देखकर प्रसन्न हुए। उस समय सीकर के सभी बड़े गांवों और शहरों में दशहरे के दिन भैंसे काटे जाते थे, आपने महाराजा से कहकर यह जीव हिंसा हमेशा के लिये समाप्त करवा दी। आपके प्रयत्नों से बिसाऊ राज्य में जीव हिंसा बंद रखने की आज्ञा दे दी गई। आप परम गौरक्षक व गौसेवक भी थे। सन् 1909 में संपूर्ण शेखावटी में भयंकार अकाल पड़ा। संपूर्ण शेखावटी अनाज एवं चारे के अभाव में त्राहि-त्राहि कर उठा। अनाज के भाव अकाश छूने लगे। लोग दाने-दाने को तरसने लगे। ऐसे भयंकर समय में सुखानंद जी ने महंगे भावों में बाजरे के ''कोठार'' खरीदे और बहुत अधिक घाटा सहते हुए वह बाजरा ''एक रूपये का सोलह सेर'' के हिसाब से जनता में बांट दिया। आपने ''गुरूमुखराय जैन पाठशाला'' की स्थापना की।

ईश्वर दास जालान

पश्चिमी बंगाल की राजनीति के शीर्ष व्यक्तित्व

जिन्होंने लगातार 30 वर्षों तक विधान सभा में प्रतिनिधित्व किया

आप स्वंय में एक संस्था थे और उनकी बहुमुखी प्रतिभा ने विभिन्न तरीकों से देश की अनुकरणीय सेवा की। राजनीति में लगातार 35 वर्षों से भी अधिक समय तक रहते हुए आपने अपनी पवित्रता और उच्च मानदंडों को बनाए रखा। पिता श्री गौरीदत्त जालान के यहां मुजफ्फरपुर में 30 मार्च 1895 को आपका जन्म हुआ। 1914 में आप उच्च शिक्षा के लिये कलकत्ता आ गये। उस समय कलकत्ता विश्वविद्यालय के अंतर्गत बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश आदि के महाविद्यालय भी सम्मिलित थे। आपने यहां से एम.ए. की परीक्षा पास कर संपूर्ण विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। आपकी महान् प्रतिभा को देखते हुए आपको 'डिप्टी कलेक्टर' बनाया गया। युवा अवस्था में आपने ''मारवाड़ी युवक सभा'' की स्थापना की, जिसके माध्यम से बाल विवाह, वृद्ध विवाह का विरोध किया तथा समाज सुधार के अनेक कार्य किये। आपका ''अखिल भारतीय मारवाडी सम्मेलन'' की स्थापना में विशेष योगदान था। आपने समाजोन्नति के अनेक कार्य किये। पश्चिमी बंगाल की राजनीति में आपका शीर्ष स्थान था। 1927 में ही वे कलकत्ता कॉर्पोरेशन सदस्य चुन लिये गये। 1946 में पुनः निर्विरोध चुने गये। बड़ा बाजार क्षेत्र से वे कलकत्ता कॉर्पोशन के ''कॉंसलर'' भी चुने गये। आपने बड़ा बाजार की खूब सेवा की। 1947 में आजदी मिलने पर जब डा. प्रफुल्लचंद्र घोष के नेतृत्व में प्रथम कांग्रेसी मंत्रिमंडल गठित हुआ ता आप विधान सभा के ''अध्यक्ष'' निर्वाचित हुए और वर्षों तक इस पद पर कार्य करते रहे। आपने जिस योग्यता, सच्चाई और न्याय की दृष्टि का परिचय दिया, वह

इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है। उनके विरोधियों ने भी हमेशा उनकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की। मुख्यमंत्री ज्योति बसु भी उनकी निष्पक्षता की प्रशंसा किया करते थे। लंदन में आयोजित राष्ट्रमंडलीय देशों के विधानसभा अध्यक्षों के सम्मेलन में आपने अंग्रेजी पत्रों को जो वक्तव्य दिया, विधि व विज्ञान के क्षेत्र में बड़े-बड़े नेताओं ने उसकी प्रशंसा की और बाद में वह भाषण ''पुस्तकाकार'' रूप में प्रकाशित भी हुआ। बाद में आपको लगातार 15 वर्ष तक मंत्री मंडल में विभिन्न पदों पर रहने का अवसर मिला। उनके कार्यकाल में कलकत्ता की गंदी बस्तियों के सुधार में उल्लेखनीय कार्य हुआ। 1971 में उनकी सोलीसिटरी के 50 वर्ष पूरे होने पर उनकी स्वर्ण जयंती मनाई गई और भव्य अभिनंदन किया गया। 29 अगस्त 1977 को उनकी सामाजिग सेवाओं को देखते हुए कलकत्ता में विशाल अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। श्री ईश्वरदास जालान 1938 से लेकर 1968 तक निरंतर बंगाल असेम्बली के सदस्य निर्वाचित होते रहे। वे कुशल वक्ता, उच्च कोटि के लेखक और विद्वान थे। सन् 1980 में कलकत्ता में आपका देहांत हुआ।

श्री रामेश्वर टाटिया

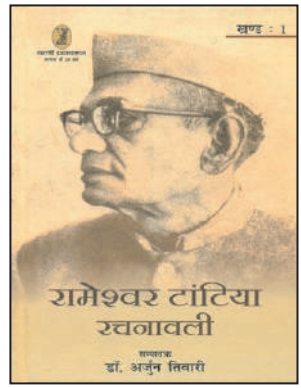

श्री रामेश्वर टाटिया के जीवन की कहानी वास्तव में एक व्यक्ति के संघर्ष की गाथा है, जो छोटी सी अवस्था में घर-बार छोड़कर दूरस्थ स्थानों में नौकरी और व्यापार की खोज में निकले और कितने ही कष्ट व यातनाओं को सहते हुए अपने कठोर परिश्रम, अध्यवसाय एवं बुद्धि-कौशल से अपने विशिष्ट व्यक्तित्व और व्यवसाय का निर्माण करने में सफल रहे।

श्री टाटिया अपने उद्यम और लगन से न केवल कुशल व्यवसायी एवं उद्योगपति ही बने बल्कि उन्हें ब्रिटिश इंडिया कॉर्पोरेशन जैसे विशाल संस्थान का प्रबंध निदेशक, एल्गिनमील के चैयरमैन तथा कानपुर महानगरपालिका के ''मेयर संसद के सदस्य'' बनने का गौरव प्राप्त हुआ। 1957 में टाटिया जी लोकसभा के सदस्य चुने गये। उस समय वे ब्रिटिश इंडिया कॉर्पोरेशन जैसे विशाल संस्थान में सलाहकार के पद पर थे। उनकी मासिक आय थी लगभग 20 हजार रूपये, जो भारत के राष्ट्रपति को मिलने वाले वेतन से दो गुनी थी। टाटिया जी ने आसाम में व अन्य स्थानों में अनेक शिक्षण संस्थान बनवाये। फक्कड़ की तरह से एक सामान्य धोती-चोले में घूमने वाले और बिल्कुल सीदा - सादा जीवन जीने वाले टाटिया जी की सुयोग्य संतान श्री नंदलाल टाटिया ने कठिन परिश्रम से उपार्जित धनराशि में से उनकी मृत्यु के बाद 80 लाख रूपये एक मुश्त श्री रामकृष्ण मिशन एवं अन्य सार्वजनिक संस्थाओं को दान दिया। टाटिया एक साहित्यानुरागी भी थे, उन्होंने तीन बार विदेश भ्रमण किया। आपने अनेक पुस्तकें लिखीं। उनके अनुभव इतने रोचक तथा विचित्र हैं कि नई पीढ़ी को तो शायद यह विश्वास ही नहीं होगा कि कभी ऐसा भी होता था।

श्री रामेश्वर टाटिया जी ने ''मेरा बचपन-मेरा गांव, मेरा संघर्ष-मेरा कलकत्ता'' के नाम से अपने प्रारंभिक जीवन के जो **संस्मरण** प्रस्तुत किय, वे अत्यंत रोचक हैं और उस युग का बोध कराते हैं। ये संस्मरण अग्रोहाधाम पत्रिका, फरवरी 1992 में छपे हैं जो महत्वपूर्ण हैं - उन्होंने लिखा है कि-

1. प्रसिद्ध चाय उत्पादक **श्री हनुमान बक्स केनाई** असम में आज से 70 साल पहले ''दर्जी'' का काम करते थे। उसके बाद उन्होंने छोटी सी मोदी खाने की दुकान खोली थी। कुछ वर्षों बाद ही थोड़ी सी जमीन में चाय की खेती की और मशीनों के अभाव में कड़ाहियों में चाय गर्म करके सुखाते थे। आज उनके फर्म का कठिन परिश्रम और सच्चे व्यवहार के कारण, भारत के चाय उत्पादकों में विशिष्ट स्थान है। विदेशों से आये चाय विशेषज्ञ भी उनके गणेशवाड़ी चाय बगीचे को देखने आते हैं, जिसमें प्रति एकड़ चाय उत्पादन सबसे ज्यादा है। टाटिया जी लिखते हैं कि इस प्रकार के उदाहरण बताते हैं कि किस प्रकार कठोर परिश्रम एवं साहस के बल पर ही मारवाड़ी वर्तमान स्थिति तक पहुंचने में सफल हुए।
2. कलकत्ता के प्रसिद्ध अखबार ''विश्वमित्र'' के संचालक **स्व. श्री मूलचंद अग्रवाल** बहुत साधारण स्थिति में थे, परंतु अपने जीवनकाल में ही भारत के समाचार संचालकों में अग्रणीय और आदरणीय हो गये। 18-20 घंटे कार्य करना तो उनके लिये साधारण सी बात थी।
3. आज हजारों - लाखों रूपयों वालों की समाज में कोई विशेष गिनती नहीं किंतु, पुराने जमाने में जिन व्यक्तियों के पास 20-30 हजार भी होते, उन्हें विशेष सम्मान से देखा जाता था और पूरे कस्बे में चर्चा होती थी।
4. आज से लगभग 50 साल पहले जब कुंए कम थे तब बटोही को पानी की जगह दूध पिलाना आसान समझते थे। उस समय कुंआ बनवाना तो बहुत ही पुण्य का काम माना जाता था। लोग अपनी जीवनभर की कमाई कुंआ बनवाने में लगा देते थे। कुंए के पास छतरी विश्राम के लिये बनवाई जाती थी।
5. व्यापिरियों को मुहूर्तों में बड़ा विश्वास था। इस संबंध में कुछ सच्ची घटनाओं का जिक्र भी करते हैं।
6. सामान्य गरीब लोगों के लिये मंहगी आधुनिक चिकित्सा करवाना आसान नहीं था। हमारे जमाने में सेठ-साहूकार गांव-गांव में धर्माथ चिकित्सालय खुलवाते थे। वे लिखते हैं - गांव में श्याम नारायण व डिगे, दो ही डाक्टर थे, उनकी फीस एक रूपया थी। लेकिन इतनी बड़ी फीस केवल धनी लोग ही दे पाते थे। साधारण जनता वैद्यों से इलाज करवाया करती थी। वैद्यों के अलावा झाड़-फूंक करने वाले भी थे।
7. आज असम, बंगाल, उड़ीसा, बिहार आदि प्रांतों से मारवाड़ियों को ''एक लोटा-डोरी'' लेकर निकलने की बातें, कुछ ही दिनों के मंत्रीपद से जनता के धन द्वारा अपना घर भर लेने वाले, तथाकथित भ्रष्ट नेता करते हैं। -- मारवाड़ी व्यापारियों ने कितने कष्ट उठाकर और

पूरे जीवन को संकट में डालकर उन प्रदेशों को अपने कठोर परिश्रम से संपन्न बनाया और उनके के लिये कितनी असह्य यातनाएं सहनीं पड़ीं। यह कोई बताने का प्रयत्न नहीं करता। उस समय देशाटन या भ्रमण के लिये शायद ही काई गांव से बाहर जाने की सोचता था।

8. आज जो घर-घर में बी.ए., एम.ए. मिल जाएंगे लेकिन पहले मिडिल पास होना भी बड़ी बात समझी जाती थी। टाटिया जी ने इस संबंध में कुछ संस्मरण भी लिखे हैं। वे लिखते हैं कि - ''गुरू की चोट-विद्या की पोट'' मानी जाती थी।।
9. टाटिया जी ने विवाह संबंधी संस्मरणों व अपने अनुभवों को भी सुंदरता से लिखा है।
10. वे लिखते हैं कि - घर की भंगिन को भी भूरी चाची कहते थे और जब वह रोटी लेने आती तो हमारी दादी जी खुद ही रोटी देने जाती थी, उसके बच्चों की राजी-खुशी का समाचार सुनती थी। इस प्रकार सामाजिक समानता थी। इसमें भी आपने कुछ संस्मरण लिखे हैं।

सेठ रामेश्वरदास नथानी, दूधवा वाले
''किंग ऑफ मारवाड़ी'' के नाम से प्रसिद्ध

बंगाल में पड़े भयंकर अकाल के समय पीड़ितों की सहायता के लिये खेले जा रहे नाटक में जब आपको आमंत्रित किया गया तो न जाने वहां के कारूणिक दृश्यों को देखकर क्या प्रेरणा प्रस्फुटित हुई कि बिना आग्रह या प्रार्थना के आपने एक लाख रूपये के दान की घोषणा कर दी। इस भारी दान की प्रशंसा वहां के अखबारों ने 'दानवीर कर्ण' और 'आज का भामाशाह' आदि उपाधियों से की। इसी प्रकार देहरादून स्कूल के लिये आपने एक लाख रूपये का दान किया। आपने जनकपुर, द्वारकाधाम, मुजफ्फरपुर, पल्लूजी आदि में धर्मशालाएं बनवाईं।

आपकी दानशीलता की अनेक कहानियां प्रसिद्ध हैं। अस्पताल, अनाथालय, कन्या विवाह, विद्यालय, अकाल पीड़ित सहायता आदि के लिये दिल खोलकर दान दिया। आपकी दानशीलता इतनी बढ़ गई थी कि दिन में कई बार दान करते और याचक चाहे कैसा भी हो, राशि हजारों से कम नहीं होती थी। आपके द्वार से कोई भी व्यक्ति कभी भी खाली हाथ नहीं लौटा।

आपकी ईमानदारी की चर्चा देश में ही नहीं विदेशों में भी खूब थी। जब अंग्रेजों ने आपके द्वारा करोड़ों रूपये के भुगतान की चर्चा सुनी तो कहते हैं कि - आपको देखने के लिये उत्सुकतावश अंग्रेजों ने आपके चित्र अपने देश में मंगवाए। शेयर बाजार में तो शायद ही कोई ऐसा प्रतिष्ठान था, जहां आपका चित्र न लगा हो। अंग्रेजी शासक, भारतीय जनता और रियासती राजा-महाराजा समान रूप से आपका सम्मान करते थे। देशी राज्यों में आपको विचार-विमर्श के लिये बुलाया जाता था। आपकी जन हितैषी राय उन्हें मानने के लिये बाध्य कर देती थी। सेठ नाथानी जी का जन्म सन् 1886 में दूधवाखारा-बीकानेर में हुआ।

रसायनाचार्य पं. श्यामसुंदराचार्य वैश्य, काशी

भारत के आयुर्वेदिक जगत में जिन लोगों ने अपनी मौलिक प्रतिभा से क्रांति ला दी है तथा जिन लोगों ने इस क्षेत्र में नवीन अन्वेषण के द्वारा आयुर्वेद जगत में युगान्तर उपस्थित कर दिया है उनमें काशी के प्रसिद्ध रसायन शास्त्री पंडित श्याम सुंदर दास का नाम बहुत महत्वपूर्ण है। आपका जन्म वि.सं. 1928 में भरतपुर स्टेट के कामवन नामक स्थान में हुआ। इनके पिता का नाम नंदकिशोर जी था तथा गोत्र मंगल था। वे युवा अवस्था में ही काशाी आ गये तथा सुप्रसिद्ध विद्वान सर्वतंत्र महामहोपाध्याय राममिश्र शास्त्री से साहित्य, व्याकरण और रामानुज दर्शनों का, सुप्रसिद्ध पं. सीताराम शास्त्री से न्याय दर्शन और महामहोपाध्याय पं. अंबादास शास्त्री से जैन से दर्शनों का अध्ययन किया था। सनातन धर्म के अनुयायाी होने पर भी जैन समाज के अंदर आपकी बहुत प्रसिद्धी थी और अनेक बड़े-बड़े आचार्यों और विद्वानों ने आपसे जैन धर्म की शिक्षा ग्रहण की।

अनेक दर्शनों का उच्च ज्ञान प्राप्त करने के बाद आपका ध्यान आयुर्वेद के अध्ययन की ओर गया और तत्कालीन धनवंतरी कल्प पं. अर्जुन मिश्र से आपने आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया। पारद के शोधन और चंद्रोदय – निर्माण की ओर आपका ध्यान गया और इसके लिये आपने गंभीर अन्वेषण करना आरंभ किया। वैद्य समाज के अंदर आपने पारद को वुभुक्षित कर उसमें स्वर्ण को लीन करने के प्रयोग सिद्ध करके बतलाये और अंत में सफलता पूर्वक **''रसायनसार''** नामक ग्रंथ की। आज भी आधुनिक आयुर्वेदिक साहित्य में यह ग्रंथ अद्वितीय है। आपकी प्रसिद्धि तथा प्रमाणिकता इतनी बढ़ गई कि सन् 1918 में जब काशी हिंदू विश्वविद्यालय आरंभ हुआ तब उस समय आप वहां प्राच्य रसायन शास्त्र के प्रधान अध्यापक नियुक्त हुए। पारद के शोधन और उसके द्वारा बताये जाने वाले रसों के संबंध में जो अन्वेषण और आविष्कार आपने किये वे इस युग के लिये नवीन वस्तु हैं।

श्री काशी अग्रवाल समाज शतवार्षिकी 1995

बलदेव जी वैद्य

आप बड़ागांव के वैद्य जी के नाम से प्रसिद्ध थे। काशी जनपद में रामेश्वर के पास बड़ागांव स्थित है। इस गांव में कंसल गोत्रीय श्री जगेश्वर पसाद अग्रवाल के घर पर आपका जन्म संवत् 1953 में हुआ था। विवाह उपरांत आपकी पत्नी का देहांत हो गया तथा फिर वे आजीवन अविवाहित ही रहे। आपने आयुर्वेद का अध्ययन बहुतरा गांव, जिला वाराणसी में किया। आयुर्वेद के तीन ग्रंथ चरक संहिता, सुश्रुत संहिता और वृ. वागभट्ट के वे मर्मज्ञ थे तथा सारंगधर संहिता, माधव निदान एवं भाव प्रकाश के भी आप मर्मज्ञ थे। चरक संहिता पर आपकी सर्वाधिक आस्था थी। वे कहते थे इसके योगों से ही समस्त चिकित्सा हो सकती है। पंचकर्म विज्ञान पर उन्होंने प्रसिद्धि प्राप्त की। इससे इनकी कीर्ति चारों ओर फैल गई। पंचकर्म कुटीरों में

समस्त देश के रोगियों का अड्डा जमा रहता था। अन्य औषधियों का प्रयोग न करके वे पंचकर्म के प्रत्येक कर्म में रोगानुसार विशिष्ट औषधियों का वे प्रयोग किया करते थे।

आपने ही सर्वप्रथम आयुर्वेद संस्कृत विद्यालय की स्थापना की तथा बाद में वैदिक शिक्षा परिषद नामक संथा की स्थापना की। इसके बाद संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की जो राजकीय संस्कृत विश्वविद्यालय से संबद्ध है। सन् 1938 में आपने इंटर कॉलेज की स्थापना की। आपकी स्मृति में अभी आठ संस्थाएं बड़गांव में चल रही हैं। श्री चंद्रशेखर आजद ने भी 12-13 वर्ष की अवस्था में वैद्यजी द्वारा संचालित संस्कृत पाठशाला में अध्ययन आरंभ किया किंतु 6 महीने के अंदर ही सरकार विरोधी कार्यों के लिये पुलिस ने उन्हें पकड़ कर बड़ागांव के पूरब स्थित तालाब के पास बगीचे में ले जाकर मारा-पीटा। वैद्य जी स्वंय महान् स्वतंत्रता सेनानी थे।

श्री काशी अग्रवाल समाज शतवार्षिकी 1995

जगमोहन डालमिया

सन् 1997 में अग्रविभूति डालमिया जी को **अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट कौंसिल** (आई.सी.सी.) का **''अध्यक्ष''** चुना गया। डालमिया जी ने ही पहली बार यह कहने का साहस किया कि विश्व कप इंग्लैंड के बाहर भी होना चाहिए। लगातार तीन विश्व कप के बाद भारत ने इंग्लैंड की मनमानी को तौड़ा। आपके कार्यकाल में 1887 तथा 1996 में सफलतापूर्वक दो विश्व कप आयोजित कर भारत ने क्रिकेट में नये मानदंड स्थापित किये। आपने न क्रिकेट को न केवल प्रसिद्ध खेल बनाया बल्कि पैसा उपजाने वाले साधन में तब्दील कर दिया। **भारतीय किक्रेट बोर्ड के मानद सचिव रहे डालमिया जी को सन् 1996 में बी.बी.सी. ने विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्रशासक घोषित किया था।** आपका जन्म 30 मई 1940 को कोलकाता में हुआ तथा देहांत 20 सितम्बर 2015 को हुआ।

कुछ मुख्य बातें अग्रबंधुओं की

1. चुरू-राजस्थान के ''**सेठ मिर्जामल पौद्दार**'' का व्यापार-व्यवसाय कश्मीर से मालवा और मुल्तान से कलकत्ता तक फैला हुआ था। कितने ही राजा-महाराजाओं और बड़े-बड़े अंग्रेज अधिकारियों से उनके आर्थिक संबंध थे। सन् 1832 में पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह जी ने उन्हें अपने पौत्र के विवाह पर आमंतत्रित करके मोतियों का बहुमूल्य कंठा उपहार स्वरूप प्रदान किया।
2. आधुनिक हिंदी के जन्मदाता ''**भारतेंदु बाबू हरिशचंद्र**'' जी को केवल 35 वर्ष का जीवन मिला। 16 वर्ष की अवस्था में उन्होंने ''कवि वचन सुधा'' पत्र निकाला। 17 वर्ष की आयु में ''चौखंभा हाई स्कूल बनारस'' की स्थापना की। 20 वर्ष की आयु में इनको ''ऑनरेरी मजिस्ट्रेट'' बनाया गया।
3. सन् 1884 की 27 दिसम्बर को मुंबई के गोकुल दास तेजपाल संस्कृत कॉलेज के सभागृह में ''अखिल भारतीय कांग्रेस'' का जन्म हुआ। कुल 73 जन्मदाताओं में पंजाब के प्रतिनिधि ''**लाला मुरलीधर**'' भी थे। दो साल बाद सन् 1886 में गिरफ्तार कर लिये गए। उन्हें ''**प्रथम राजबंदी**'' होने का श्रेय प्राप्त हुआ।
4. अग्रवाल समाज में **काली प्रसाद खेतान** पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने ''**बैरिस्टरी**'' पास की। 24 जुलाई 1914 वह भारत लौटे। विदेश यात्रा करने के अपराध में उनका जाति बहिष्कार किया गया था। पंडितों द्वारा शास्त्रोक्त विधि से प्रायश्चित करने के बाद ही बहिष्कार टूट सका। एक विशाल समारोह करके उन्हें मानपत्र दिया गया।
5. सर्वाधिक लोकप्रिय ''**हनुमान चालीसा**'' का भारत में सबसे पहले प्रकाशन ''**वैंकटेश्वर प्रेस, मुंबई**'' ने किया। इस प्रेस के मालिक उस समय ''माया विशन'' और ''खेमराज अग्रवाल'' चुरू के रहने वाले दो भाई थे।
6. लोसल जिला सीकर के **डेडराज खेतान** को परोपकारी कार्यों में अथाह लोकप्रियता मिली। उनके निधन पर सारे लोसल और आस-पास के क्षेत्रों में शोक छा गया। नगर में सभी हिंदू-मुसलमानो ने शोक व्यक्त किया।
7. वर्धा के सेठ बच्छराज जी की पत्नी स्व. सद्दीबाई की स्मृति में निर्मित ''**श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर**'' पूरे देश में ''**पहला मंदिर**'' है, जो 19 जुलाई 1928 को ''**हरिजनों**'' के लिये खोला गया। भगवान की पहली खादी की पोशाक विनोबा जी के हाथ से कते सूत की बनी थी।
8. सन् 1928 के अंतिम चरण में 17 एक विलक्षण संख्या है। शेरे पंजाब **लाला लाजपतराय** पर 17 प्रहार हुए, वे 17 दिन तक जीवित रहे और 17 नवम्बर को वे स्वर्गवासी हुए। 17 दिसम्बर को क्रांतिकारियों ने हत्यारे सांडर्स का वध कर दिया।
9. सन् 1932 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में कलकत्ता में 15 वर्षीय ''**इंदुमती गोयनका**'' ने हजारों की संख्या में ऐसे पर्चे बांटे जिनमें पुलिस को ब्रिटिश सरकार के आदेश न मानने की प्रेरणा दी गई थी। उनकी गिरफ्तारी पर सारा कलकत्ता बंद रहा। **स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में वह सबसे छोटी आयु की महिला जेलयात्री थीं।**

10. बसंल लाला मुरारका अपनी चारित्रिक विशेषताओं के कारण बंगाल के बेजोड़ लोकप्रिय समाजसेवी नेता थे। सन् 1952 में जो चुनाव हुए, उसमें वे ''**वीरभूमि**'' जिले से विधान सभा के सदस्य के रूप में भारी बहुमत से विजयी हुए। मजे की बात तो यह है कि – इस चुनाव क्षेत्र में केवल बंगालियों के अलावा अन्य किसी के वोट नहीं थे।

11. मारवाड़ी समुदाय के पांच प्रमुख समाज सेवियों के संबंध में एक सर्वेक्षण में सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने ''**भागीरथ कनोडिया**'' को समाज सेवकों की श्रेणी में **सर्वोच्च स्थान** दिया। उनके चयन का मुख्य कारण यह बताया गया किया वह धन के साथ मन को सेवा कार्यों में लगा देते थे। कई उत्तरदाताओं ने तो भागीरथ जी को समाज सेवा का पर्याय बताया था। (1-12 पत्रिका अग्रोहाधाम-जुलाई 1998)

12. लाला ज्योतिप्रसाद गुप्ता – आपका जन्म कुरूक्षेत्र के लाला लेखराज सिंघल जी के यहां हुआ। सन् 1910 में वे हरिद्वार गये तथा गुरूकुल कांगड़ी में ''स्वामी श्रृद्धानंद जी'' से मिले और कुरूक्षेत्र में गुरूकुल की स्थापना के लिये विचार-विमर्श किया। आपने आर्य प्रतिनिधि सभा को कुरूक्षेत्र में **गुरूकुल की स्थापना हेतु 1049 बीघा जमीन तथा 10000/- दान में दिये** तथा निर्माण कार्य अपनी देखरेख में करवाया। 13 अप्रैल 1912 को इस **''गुरूकुल'' का उद्घाटन स्वामी श्रृद्धानंद जी** ने किया। एक बार की **घटना** है कि – गुरूकुल का गेंहू चक्की पर पिसवाने भेजा, तथा कहा कि इसको जल्दी पीस दें। दुकानदार ने कहा कि सेठ जी को कह दो कि यदि इतली जल्दी है तो गुरूकुल में ही चक्की लगवा दें। इसी बात पर सेठ जी ने तुरंत लाहौर से इंजन व चक्की मंगवाकर गुरूकुल में लगवा दी। 49 वर्ष की उम्र में आपका देहांत हुआ।

13. देवकरण रासवासिया – हरियाणा में रासीवास गांव के निवासी, आपके पूर्व लगभग 155 वर्ष पहले तिनसुख्यि-आसाम गये थे। **''तिनसुख्यि'' शहर को आबाद करने का श्रेय आपके परिवार को है।** हिंदू धर्म की महान् सेवा के फलस्वरूप श्री आदि शंकराचार्य की जन्मशताब्दी पर यूनिवर्सल संगठन धर्म फाउंडेशन द्वारा ''**राजर्षि**'' की उपाधि से विभूषित किया गया।

14. पद्श्री फूलचंद देवरालिया – निवासी देवराला गांव – हरियाणा। आपने अस्पताल, विद्यालय, कुंए तथा अनेक लोकोपकारी संस्थाओं का निर्माण करवाया। हिसार में **डी.ए.वी. कॉलेज** भी बनवाया। बद्रीनाथ में अतिथिगृह व अपने गांव में भव्य राधाकृष्ण मंदिर का निर्माण करवाया। सार्वजनिक सेवाओं के उपलक्ष्य में आपको 1970 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

15. सेठ विशेश्वर लाल हलवासिया – धर्म, साहित्य एवं समाज के प्रति समर्पित सेठ जी का जन्म भिवानी में सन् 1870 में हुआ। आप सनातन मंडल के संरक्षक बने तथा गौशाला, चिकित्सालय, विद्यालय, धर्मशाला आदि बनवाकर अनेक जनोपयोगी कार्य किये। आप ''मारवाड़ी एसोसिएशन'' के अध्यक्ष बनाए गये। **आपने ''मारवाड़ी बैंक'' की स्थापना की।** 1913 में **रायबहादुर** की उपाधि मिली।

16. बैजनाथ भिवानीवाला – बंगाल के भयंकर अकाल के समया 2500 लोगों को प्रतिदिन भोजन कराने वाले बैजनाथ जी का जन्म 25 फरवरी 1899 को हुआ। आपने आशाराम

भिवानी वाला अस्पताल की स्थापना की। हरियाण नागरिक संघ की स्थापना की तथा उसके सभापति बने।

17. **वीर समाजसेवी बाबूलाल पौद्दार** – 22 अक्टूबर 1950 को प्रकृति प्रकोप से पीड़ित मानवों की सेवा करते हुए ब्रह्मपुत्र नदी में नौका दुर्घटना में आपका देहांत हुआ। आपने ''**कलकत्ता किरायेदार संघ**'' की स्थापना कर मकान मालिकों के अत्याचारों से किरायेदारों को राहत दिलवाई। असहयोग आंदोलन में सक्रिय सहयोग दिया। काशी विश्वनाथ सेवा समिति का गठन कर समाज सेवा में लगे रहे। डिब्रूगढ़ के मुख्य मार्ग पर आपकी प्रतिमा स्थापित की गई तथा एक मार्ग का नामकरण आपके नाम पर किया गया।

18. **भूरामल अग्रवाल** – 26 अगस्त 1906 को आपका जन्म अलसीसर में हुआ। ''**विमाता को भी संपत्ति पर कानूनी अधिकार**'' दिलाने का श्रेय आपको है। 10 वर्ष की उम्र में कलकत्ता आकर पढ़ाई आरंभ की। लगन ऐसी कि आई.ए. परीक्षा में संस्कृत भाषा में सर्वप्रथम आकर ''**हरिशचंद्र कविरत्न पुरस्कार**'' प्राप्त किया। **आपके प्रयत्न से ही कलकत्ता प्रेसीडेन्सी कॉलेज में हिंदी विभाग खुला।**

19. **काशी निवासी पद्मविभूषण श्री रायकृष्णदास** – एक नामवर रईस, स्वादिष्ट पदार्थों के शोकीन व हीरे जवाहरत के विलक्षण पारखी थे। युवावस्था में विलायत से विशेष वस्त्र मंगवाकर कलकत्ता के प्रसिद्ध अंग्रेज दर्जी ''मि. रैकिन'' से सूट सिलवाया करते थे। 1925 में कानपुर में कांग्रेस अधिवेशन में गांधी जी से मिले और 100 प्रतिशत प्रमाणित खद्दर के कपड़े पहनने लगे। गांधी टोपी के लिये वे खोजत – खोजते चिरगांव में उस दर्जी के पास पहुंच गये, जो सबसे बढ़िया टोपी बनाता था।

20. **मनीषी श्री श्रीप्रकाश जी का संस्मरण** – साबरमती आश्रम में गांधीजी और कुछ आश्रमवासी प्रात: कालीन भ्रमण पर जा रहे थे। श्रीप्रकाश जी आगे निकल गये, किसी ने गांधी जी से कहा – ''बापू श्रीप्रकाश बहुत आगे निकल गये, हम भी जरा तेज चलें। गांधी जी ने मुस्कराकर कहा – ''**वह अग्रवाल है, आगे रहेगा।**''

21. **लार्ड स्वराजपाल** – लंदन में रह रहे अनिवासी भारतीय उद्योगपति तथा कपारो उद्योग समूह के अध्यक्ष अग्रवंशी लार्ड स्वराजपाल भी मूलत: गांव–चांग (भिवानी से नौ किलोमीटर दूर) के निवासी हैं और उनकी माता गांव चरखी दादरी की निवासी थीं। 19वीं शताब्दी के मध्य में स्वराज पाल जी के परिवार जन अपने मूल गांव चांग का परित्याग कर पंजाब के जालंधर नगर में जाकर रहने लगे और तभी से स्वराजपाल जी को पंजाबी समझा जाने लगा।

22. **सेठ किरोड़ीमल लोहारीवाला** – कुबेर दानवीर के नाम से मशहूर। भिवानी नगर से 10 किलोमीटर दूर लोहारी गांव में 15 जनवरी 1892 को आपका जन्म हुआ। 1930 में आपने मथुरा में ब्रज मार्ग स्थित छाता नामक स्थान में विशाल धर्मशाला का निर्माण अपने सहयोगी मंगतराय आसेका के साथ करवाया। 13 मई 1946 को आपने 30 लाख रूपये से ''सेठ किरोड़ीमल चैरिटी ट्रस्ट'' की स्थापना की जिसने अनेक कार्य किये। जिनमें प्रमुख है – दिल्ली का मशहूर ''किरोड़ीमल कॉलेज''। (12–20 अग्रोहाधाम अप्रैल–1994)

विज्ञान एवं चिकित्सा

पद्श्री प्रोफेसर डा. गोविंद स्वरूप (एफ.आर.एस)

पुत्र साहू राम रघुवीर शरण

भारत में रेडियो खगोलशास्त्र के जनक

1. असाधारण वैज्ञानिक प्रोफेसर गोविंद स्वरूप, भारत में रेडियो एस्ट्रॉनमी को लाने वाले शख्स थे।
2. इन्होंने ही की थी पुणे के पास भारत में दुनियां के सबसे बड़े रेडियो टेलिस्कोप की स्थापना।
3. प्रो. स्वरूप की बदौलत ही भारत में नेशनल सेंटर फॉर रेडियो एस्ट्रोफिजिक्स (NCRA) अस्तित्व में आया।
4. संसार में आपका नाम खगोल विज्ञानी के अग्रदूतों में लिया जाता है।
5. भारत में रेडियो एस्ट्रोनॉमी (अनुसंधान एवं विकास) के लिये आपको जाना जाता है।

संसार के जाने-माने खगोल विज्ञानी स्व. श्री गोविंद स्वरूप जी का जन्म 23 मार्च 1929 को उत्तर प्रदेश के ठाकुरद्वारा में मित्तल गोत्री अग्रवाल परिवार में हुआ था। इनका विवाह सागर निवासी वाईस चांसलर श्री लक्ष्मीचंद जैन जी की पुत्री बीना जी से हुआ। आपने खगोल विज्ञान में न केवल अनेक महत्वपूर्ण अनुसंधानों में अपना योगदन दिया बल्कि इस क्षेत्र में आपकी उपलब्धियां महत्वपूर्ण हैं। आपने Stanford University USA से DOCTORATE किया व आपका विषय ASTROPHYSICS था। 1963 में भारत में आकर Ooty में रेडियो टेलीस्कोप की स्थापना की। इस सफलता के बाद पूना के पास नारायण गांव में Giant Microwave Rdio Telescope (GMRT) की स्थापना की जो दुनियां का सबसे बड़ा और ताकतवर रेडियो टेलिस्कोप है। साल 2002 से 2015 के बीच 31 अलग-अलग देशों ने यहां डेटा रिसर्च प्रपोजल सबमिट किए, उनमें से थोड़ा कम भारत से थे। इससे पहले प्रो. स्वरूप ने मुंबई के पास कल्याण में भारत का **''पहला''** रेडियो टेलिस्कोप लगाया।

डा. गोविंद स्वरूप ने 1950-53 और 1955-56 तक नई दिल्ली में राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला में और 1953-55 तक सीएसआईआरओ ऑस्ट्रेलिया में काम किया। उन्होंने 1956-57 में हार्वर्ड विश्वविद्यालय और 196-67 में स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में शोध सहायक के रूप में काम किया तथा यहीं पर उन्होंने 1961 से 63 तक सहायक प्रोफेसर के रूप में भी काम किया। उन्होंने सिडनी के पास पॉट्स हिल में परवलयियक एंटेना स्थापित करने में

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस टेलीस्कोप की मदद से सूर्य का अध्ययन किया गया। उनको अमेरिका के स्टैनफोर्ड में पढ़ाने का मौका मिला था, मगर डॉक्टरेट करते ही वे भारत लौट आये और रेडियो एस्ट्रॉनमी पर कार्य करने का फैसला किया। भारत के परमाणु कार्यक्रम के जनक डा. होमी जहांगीर भाभा ने उनसे बात की और फिर उनके नेतृत्व में टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च में नया रेडियो एस्ट्रोफिजिक्स ग्रुप बना जो दुनियां में सबसे अच्छा कार्य करने के लिये जाना जाता है।

1953-65 के दौरान प्रो.स्वरूप ने ''टाईप यू'' सौर रेडियो फटने की खोज की, माइक्रोवेव सौर उत्सर्जन की व्याख्या करने के लिये एक जीरो-विकिरण मॉडल विकसित किया और क्वाइट सन से रेडियो उत्सर्जन का अध्ययन किया। 1959 में उन्होंने एक राउंड ट्रिप ट्रांसमिशन तकनीक विकसित की, जिसका उपयोग दुनियां के लगभग सभी रेडियो इंटरफेरोमीटर में किया गया है। 1963-70 के दौरान उन्होंने दक्षिण भारत के ''ऊटी'' में 530 मीटर लंबी और 30 मीटर चौड़ी पैराबोलिक-बेलनाकार रेडियो टेलीस्कोप का निर्माण किया, जिसे उपयुक्त झुकाव वाली पहाड़ी पर रखा गया ताकि रोटेशन की लंबी धुरी को समानान्तर बनाया जा सके। 1980 के दशक के दौरान उन्होंने ध्रुवीकरण टिप्पणियों के आधार पर जेट, कोर और क्वैसर के गर्म स्थानों की विशेषताओं का अध्ययन किया।

वे फेलोशिप ऑफ रॉयल सोसायटी सहित अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं के फेलो थे।उन्होंने 125 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किये और चार पुस्तकों का लेखन किया। वे अनेक संस्थाओं के सदस्य व अध्यक्ष रहे जैसे - **सदस्यता** - रॉयल सोसायटी-लंदन, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारतीय विज्ञान अकादमी, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी-इलाहबाद, तीसरी दुनियां विज्ञान अकादमी, भारतीय भू-भौतिकीय संघ, महाराष्ट्र विज्ञान अकादमी, रॉयल एस्ट्रोनॉमिकल सोसायटी-लंदन आदि। अध्यक्ष - इंडियन नेशनल कमेटी फॉर इंटरनेशनल यूनियन ऑफ रेडियो साइंस (URSI), URSI विकासशील देशों की समिति, URSI स्टैंडिंग कमेटी फॉर फ्यूचर जनरल असेंबली, एस्ट्रोनॉमिकल सोसायटी ऑफ इंडिया, अंतरराष्ट्रीय खगोल संघ, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत आदि।

पुरस्कार - शांतिस्वरूप भटनागर पुरस्कार, विज्ञान एवं तकनीकी में उल्लेखनीय योगदान के लिये सन् 1973 में **पद्श्री**, 1984 INSA पीसी महालनोबिस पदक, 1986 आईपीएस बीरेन रॉय ट्रस्ट मेडल, कलकत्ता, 1987 INSA Vainu बापू मेमोरियल अवार्ड, 1987 Tskolovosky Medal, Cosmonautics, USSR, NASI मेघनाद साहा पदक, 1988 भौतिकी में TWAS पुरस्कार, 1990 IURS जॉन हॉवर्ड डेलिंगर गोल्ड मेडल, 1990 आर.डी. बिरला पुरस्कार, 1991 FIE Foundation अर्वाड, 1993 गुजरमल मोदी विज्ञान पुरस्कार, 1993 INSA सी.वी.रमन पदक, 1994 यू.ओ.सी. सर देवप्रसाद सरभिकारी मेडल, 1995 सांसद बिरला पुरस्कार, 1999 में 12वां ख्वारिज्मी अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार, ईरान, 2001 एच.के. फिरोदिया पुरस्कार, 2005 आर.ए. एस. हर्शल मेडल, 2006 में पुणे विश्वविद्यालय द्वारा LIFE time achievement Award, 2007 आई.एस.सी. राष्ट्रपति पदक, 2009 भारत के प्रधान मंत्री द्वारा लाईफ टाइम अचीवमैंट के लिए

होमी भाभा पुरस्कार, इंग्लैंड में Fellow of Royal Society (FRS) (देश में कुछ ही वैज्ञानिकों को यह सम्मान प्राप्त हुआ है। आप Former centre Director NCRA & GMRT Hony Fellow TIFR रहे।

रेडियो एस्ट्रॉनमी की दुनियां में भारत को नई पहचान दिलाने वाले प्रोफेसर गोविंद स्वरूप जी का देहांत 7 सितम्बर 2020 को पुणे में हुआ। भारत के प्रधानमंत्री **श्री नरेन्द्र मोदी** ने आपके निधन पर गहरा दु:ख प्रकट किया। भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार **के. विजय राघवन** - भारत में खुद एक संस्थान बन चुके महान् वैज्ञानिक को खो दिया है। उन्होंने अपने ट्वीट में लिखा कि ''प्रोफेसर स्वरूप ने कई सारे असंभव काम किये और साथियों को भी प्रेरित किया।''

डायरेक्टर यशवंत गुप्ता - प्रोफेसर स्वरूप की बदौलत नैशनल सेंटर फॉर रेडियो एस्ट्रोफिजिक्स (NCRA) अस्तित्व में आया, दुनियां ने आज विज्ञान के एक पुरोधा को खो दिया है और हमने पिता जैसे एक शख्स को खोया है, यह छब्। के लिये दुख का दिन है। नामी वैज्ञानिक **आर.ए.माशेलकर** - स्वरूप अपने आप में एक संस्थान थे। उन्होंने कहा '' कोई भले ही गुजर जाए मगर संस्थाएं पीछे छूट जाती हैं और उन्होंने हमें छब्। और ळडब्ज जैसे संस्थान दिए हैं। उनकी जिंदगी एक संदेश थी कि ''हां हम कर सकते हैं।''

ध्यातव्य - श्री महेश स्वरूप अग्रवाल स्व. गोविंद स्वरूप जी के भ्राता हैं, जो अभी कानपुर में रहते हैं तथा उद्योगपति हैं, जिन्होंने सन् 1760 से अपने परिवार की वंशावली बनाई है, यह वंशावली आपने दिल्ली के मोहित अग्रवाल जी को भेजी थी, जिनके द्वारा मुझे यह महत्वपूर्ण जानकारी मिली है। अधिकांश ख्याति प्राप्त अग्रवाल बंधु अपने नाम के बाद जाति का प्रयोग नहीं किया करते थे, जिसके कारण आज भी अनेक अग्रवाल बंधुओं के बारे में जानकारी मिलना संभव नहीं है। कुछ जानकारी नेट से ली गई है।

पद्श्री एवं पद्मभूषण डा. रामनारायण अग्रवाल

अंतरिक्ष वैज्ञानिक - अग्नि प्रक्षेपास्त्र के जनक

आप उन महान् वैज्ञानिकों में अग्रणी हैं, जिन्होंने '**अग्नि मिसाइल**' का निर्माण एवं विकास कर भारत को विश्व परमाणु प्रधान राष्ट्रों की सूची में पहुंचाकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का नाम रोशन किया है। आपने 1963 में मद्रास अभियांत्रिकी संस्थान से वैज्ञानिक अभियांत्रिकी में डी.एम.आई.टी. परीक्षा पास की, 1970 में भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर से एम.ई. की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1963 में भारत सरकार की सेवा आरंभ की तथा मात्र छ: माह में ही दिल्ली में प्रतिरक्षा अनुसंधान के फैलो रहे तथा उस दौरान उन्होंने मिसाइल मॉडल के वायुगतिक परीक्षण, जो ध्वनि की गति से चार गुना अधिक है, के लिए पराध्वनिक हवाई सुरंग डिजाइन की

परियोजना को पूरा किया। 1964 में वे प्रतिरक्षा, अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला, हैदराबाद में वरिष्ठ वैज्ञानिक बने। आपकी दक्षता को देखते हुए उन्हें लंबी रेंज सिस्टम की डिजाईन का कार्य सौंपा गया। 1972 में उन्हें नवीन कौशल के स्थान जैसे प्रज्वाल परीक्षण सुरंग वायु प्रक्षेपिक रेंज एवं पराध्वनिक सुरंग का दायित्व भी दिया गया।

श्री रामनारायण ध्वनि की गति से भी तेज हवाई तोप में मारक अस्त्रों, संपूर्ण दीवार गिराने वाले जेट की जांच सुविधा, पृथ्वी से आकाश तक मार करने वाली प्रक्षेपाणास्त्रों के डिजाइन, निर्माण और विकास तथा लंबी दूरी तक मार करने वाले प्रक्षेपणास्त्र प्रणालियों जैसी उच्चगतीय शस्त्र सुविधाओं के निर्माण और विकास के एक समूह के प्रमुख के रूप में रहे। जून 1982 में भारत रत्न डा. अब्दुल कलाम ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला के निदेशक के रूप में कार्यभार संभाला, जिसके फलस्वरूप इस अग्नि मिसाइल की जांच 22 मई 1989 को उड़ीसा राज्य में चांदीपुर गांव में प्रक्षेपण द्वारा की गई। यह परीक्षण सफलता पर खरा उतरा तथा संपूर्ण उद्देश्य को पूरा किया। अग्नि मिसाइल के इस सफल परीक्षण से भारत उन देशों की श्रेणी में आ गया, जिनके पास हवा में मार करने वाले बाह्य प्रक्षेपास्त्र हैं। अग्रवाल जी ने एक परियोजना के वृहद स्वरूप एवं डिजाईन का फिर विस्तार किया तथा 11 अप्रैल 1999 को अग्नि द्वितीय का सफल प्रक्षेपण किया। डा. रामनारायण अग्रवाल की कार्य दक्षता, कुशलता एवं निष्ठा की डा. कलाम ने बहुत प्रशंसा की।

डा. रामनारायण जी के प्रक्षेपास्त्र प्रणालियों की रूपरेखा, निर्माण एवं विकास संबंधी 50 से भी अधिक शोध पत्र एवं प्रतिवेदन प्रकाशित हो चुके हैं। आप प्रतिरक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन में कार्य निदेशक (अग्नि) रहे हैं। आपने अग्नि तृतीय की योजना को भी मूर्त रूप दिया है। **पुरस्कार** – 1989 में विज्ञान मणि पुरस्कार, 1990 में **पद्श्री**, 1993 में सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक पुरस्कार, 1997 में राजस्थान सरकार ने 'राजस्थान श्री' पुरस्कार दिया, 1998 में मैन ऑफ द ईयर 1998 का पुरस्कार, आप स्पेस अवार्ड से भी सम्मानित हो चुके हैं, प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी जी ने आपको रक्षा अनुसंधान एवं विकास तकनीक में नेतृत्व का सर्वोच्च सम्मान दिया, विज्ञान में उनकी उपलब्धियों को देखते हुए 2000 में कांचीकोटि के जगद्गुरू शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती जी ने सुरक्षा प्रणाली के क्षेत्र में श्रेष्ठम वैज्ञानिक योगदान के लिये ''चंद्रशेखर सरस्वती राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार'' से सम्मानित किया, 2000 में **पद्मभूषण** अलंकरण से सम्मानित किया गया, अ.भा.वै.महासम्मेलन,इंदौर में आपको राज्यपाल द्वारा एक लाख रू. व 'वैश्य रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया, अग्रोहा विकस ट्रस्ट ने आपको 'सेठ द्वारिका प्रसाद सर्राफ' राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया।

आपका जन्म 24 जुलाई 1941 को जयपुर–राजस्थान में पिता रामचरण अग्रवाल व माता दुर्गादेवी के यहां हुआ तथा विवाह हैदराबाद की विदूषी रेणु अग्रवाल जी से हुआ जो इलैक्ट्रोनिक्स एवं कंप्यूटर इंजीनियर थीं। अग्रवाल सरल स्वभाव व अत्यंत धार्मिक प्रवृति के हैं। आपने भारत के राष्ट्रपति डा. कलाम जी के साथ काफी कार्य किया, महान् वैज्ञानिक का घमंड आपको छू तक नहीं गया। उन्होंने एक पुत्र व पुत्री को गोद लिया है।

पत्रिका अग्रोहाधाम – दिसम्बर 2002

पद्श्री प्रोफेसर डा. हर्ष कुमार गुप्ता

विश्व में प्रतिष्ठित ''भू-वैज्ञानिक''

भूकंप की सफल भविष्यवाणी करने में महारत डा. हर्ष ने ''महाराष्ट्र के कोयना बांध क्षेत्र में चार रिक्टर स्केल तक, भूकंप की भविष्यवाणी की।''

सन् 1964 में नेशनल जियोफिसिकल इंस्टीट्यूट, हैदराबाद में वरिष्ठ वैज्ञानिक रहे, डा. हर्ष कुमार गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के ठाकुरद्वारा में **मित्तल** गोत्री अग्रवाल परिवार में हुआ तथा बचपन मुरादाबाद में व्यतीत हुआ। इन्होंने एप्लाईड जियो फिजिक्स में बी.एस.सी तथा एम.एस.सी.(आनर्स) किया। आपने वर्ष 1963 में शिलांग स्थित सिसमोलोजिकल वेधशाला से अपना कैरियर आरंभ किया। 1966 में इन्हें एक साल के लिये इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ सिसमोलोजी और भूकंप इंजीनियरिंग, टोकियो में अध्ययन के लिये फेलोशिप प्राप्त हुई। 1970 में इन्हें रूड़की विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि दी गई। 1971 में इन्हें एक साल के लिए आई.आई.एस.ई.ई., टोकियो में सीनियर फेलोशिप के लिए अवार्ड दिया गया। 1972 में डा. हर्ष टैक्सास (यू.टी.डी.) विश्वविद्यालय, अमेरिका गए और कुछ साल वहां बिताए।

डा. हर्ष 1977 में अमेरिका से वापस आए और एन.जी.आर.आई ज्वाईन किया। सन् 1982 में इन्हें सेंटर फॉर अर्थ साइंसेज स्टडीज (सी.ई.एस.एस.) का निदेशक नियुक्त किया गया और यू.एन.डी.पी. के अंतर्गत त्रिवेन्द्रम में चल रहे केरला मिनरल डेवलपमेंट प्रोजेक्ट का ''प्रोजेक्ट डायरेक्टर'' नियुक्त किया गया। भारत की प्रधान मंत्री **श्रीमती इंदिरा गांधी** द्वारा 1983 में इन्हें अंटार्कटिक के **तृतीय ''भारतीय वैज्ञानिक अभियान का नेतृत्व करने के लिये चुना गया''**। इन्होंने 1983-84 में अंटार्कटिक में **''प्रथम भारतीय स्थाई स्टेशन''** को अंटार्कटिक की एक गर्मी के समय में स्थापित किया जो अभी तक **''विश्व रिकार्ड''** है। 1987 में डा. हर्ष को कोचिन साइंस एवं टेक्नोलोजी विश्वविद्यालय का ''वाईस चांसलर'' नियुक्त किया गया जहां वे 1990 तक रहे।

जनवरी 1990 में पहली ''भारतीय विज्ञान कांग्रेस'', जिसका उद्घाटन भारत के प्रधान मंत्री श्री वी.पी.सिंह ने किया था, को सफलता पूर्वक कराने से इन्हें पहचान मिली। सन् 1990 में साईंस एवं टेक्नोलोजी मंत्रालय में सीनियर एडवाईजर नियुक्त किये गये तथा इसके बाद नेशनल जियोफिजिकल इंस्टिट्यूट (एन.जी.आर.आई.) हैदराबाद में तैनात रहे। डा. हर्ष को भारत सरकार द्वारा वर्ष 2001 में समुद्र विकास विभाग का ''सचिव'' नियुक्त किया गया। इस अवधि में इन्होंने भारत के ''अर्ली वार्निंग सिस्टम'', जिसे अभी तक विश्व का सबसे बेहतरीन सिस्टम माना जाता है, को स्थापित करने की महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की। वर्ष 2005 में वे एन.जी.आर.

आई. में लौट गए और वहां आर्टिफिशियल रिजर्वायर और ट्रिगर्ड अर्थक्वेक पर काम करते रहे। आप यूरोप, अमेरिका और जापान के विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर रह चुके हैं तथा यूनेस्को, कॉमनवेल्थ कौंसिल, आई.सी.एस.यू. और आई.ई.ए.एम में सलाहकार रह चुके हैं। वर्तमान में वे एटामिक एनर्जी रेगुलेटरी बोर्ड के सदस्य और जियोलोजिकल सोसायटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष हैं।

पुरस्कार – विज्ञान और अभियांत्रिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के फलस्वरूप 2006 में ''**पद्मश्री**'' पुरस्कार, 1983 में शांतिस्वरूप भटनागर पुरस्कार, 1985 में यू.एस.एस.आर. एकेडमी ऑफ साइंस का सम्मान मिला, अमेरिकन जियोफिजिकल यूनियन द्वारा वाल्डो स्मिथ अवार्ड, ए.ओ.जी.एस. द्वारा ऑक्सफोर्ड मेडल आदि। डा. हर्ष की 6 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। 2001 में इन्होंने (Encyclopedia of Solid Earth Geophysis) के 1500 पेजों वाले दो खंडों का निबंधन, डिजाईन और संकलन किया जिसे स्प्रिंगर द्वारा प्रकाशित किया गया।

पद्मश्री डा. आत्माराम सिंघल

भारत के अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त **वैज्ञानिकों** में प्रमुख स्थान वाले डा. आत्माराम जी सिंघल का जन्म 12 अक्टूबर 1908 को जिला बिजनौर के गांव पिलाना में अग्रवाल परिवार में हुआ। जब भारत की प्रथम चार प्रयोगशालाएं स्थापित करने के कार्य का श्रीगणेश हुआ, तो कलकत्ता में कांच व ताम्रचीनी की केंद्रीय प्रयोगशाला स्थापित करने का कार्य आपको सौंपा गया। पूरे देश में घूमकर उन्होंने पाया कि देशी बोतलों की किस्म अच्छी नहीं होने से बोतलें बाहर से आयात की जा रही हैं। अपने अनुसंधान से यह दोष सुधार कर उन्होंने देश में ही अच्छी किस्म की बोतलों के निर्माण का मार्ग खोल दिया। इसके बाद तांबे के आक्साइड से सेलीनियम का विकल्प खोजकर उन्होंने फिरोजाबाद के चूड़ी उद्योग की समस्या हल कर दी।

देश को डा. आत्माराम जी की प्रमुख उपयोगी देन है – चश्मों, सूक्ष्मदर्शी यंत्रों, दूरबीनों आदि के लिये ऑप्टीकल ग्लास। यहां शुद्ध कांच बनाकर उन्होंने भारत को संसार के अग्रिम देशों की पंक्ति में खड़ा कर दिया। नि:संदेह ''**चश्में के कांच**'' के निर्माण में आपका उल्लेखनीय योगदान रहा है। भारत में यह कांच जर्मनी से मंगवाया जाता था जिसमें भारी मात्रा में विदेशी मुद्रा खर्च होती थी, भारत में आपने ऐसे ही कांच को बनाने का आविष्कार किया। 1952 से 1966 तक आप सेंट्रल ग्लास एंड सिरेमिक रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक रहे। तत्पश्चात् तत्कालीन शिक्षा मंत्री श्री छागला ने इनके काम से प्रसन्न होकर वैज्ञानिक एवं अनुसंधान परिषद का महानिदेशक बना दिया।

आपकी स्मृति में केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा एक लाख रूपये की राशि का ''**आत्माराम**

पुरस्कार'' प्रदान किया जाता है, यह एक प्रतिष्ठित पुरस्कार है जो वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य तथा उपकरण विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिये दिया जाता है। आपको शांतिस्वरूप भटनाकर पुरस्कार, अणुव्रत पुरस्कार व 1959 में **पद्श्री** से सम्मानित किया गया। रूस ने उनके कार्य को देखते हुए ''**डाक्टर ऑफ टेक्नोलॉजी की उपाधि**'' प्रदान की। ब्रिटेन के प्रसिद्ध वैज्ञानिक लार्ड ब्लैन्कट ने तो उनकी प्रशंसा में यहां तक कहा – ''**काश ब्रिटेन में हमारे पास भी एक आत्माराम होता।**'' डा. आत्माराम जी की गणना विश्व के अग्रणी कांच प्रौद्योगिकी अनुसंधान वैज्ञानिक के रूप में की जाती है। प्रौद्योगिकी अनुसंधान परिषद के महानिदेशक और भारत सरकार के सचिव पद से अवकाश ग्रहण करने के बाद भी उन्होंने कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। वे राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी समिति के अध्यक्ष और परमाणु ऊर्जा आयोग के सदस्य भी रहे।

दिनेश अग्रवाल

इसरो के वरिष्ठ वैज्ञानिक

बुरहानपुर निवासी दिनेश अग्रवाल

22 जुलाई 2019 को भारत के चंद्रयान-2 की लेंडिंग हुई, इस महत्वपूर्ण परियोजना में आपने चंद्रमा पर उंचाई नापने, फोटो खींचने और अध्ययन के लिये इलैक्ट्रीक कलपुर्जे बनाने में अपकी अहम भूमिका रही। आप अहमदाबाद में अंतरिक्ष विभाग में कार्यरत हैं। अब तक इन्होंने करीब 130 दूरसंचार एवं दूरसंवेदी उपग्रहों एवं चंद्रयान-1, मंगलयान एवं चंद्रयान-2 के विभिन्न पेलोड इलेक्ट्रॉनिक फैब्रिकेशन के कार्य का मार्गदर्शन किया है। आपको तीन बार टीम उत्कृष्ट एवार्ड मिले हैं। अंतरिक्ष विज्ञान शब्दावली को अद्यतन करने एवं अंतरिक्ष विभाग द्वारा अंतरिक्ष विज्ञान से संबंधित मौलिक पुस्तक लेखन योजना के लिये मापदंड निर्धारण में आपकी भूमिका महत्वपूर्ण रही।

केसरी-ए-हिंद, पद्मश्री डा. मोहन लाल

आपका जन्म सन् 1905 में मुरादाबाद-उत्तर प्रदेश में एक प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में हुआ। आपके पिता डा. केशव शरण भी एक सफल चिकित्सक थे। इनके पितामह राजा गुलाबराय ''रामपुर स्टेट में खजांची'' थे। आपने सन् 1926 में आगरा से चिकित्सक की उपाधि प्राप्त की, मद्रास तथा वियाना से नेत्र चिकित्सा विज्ञान की विशेष शिक्षा प्राप्त की। इनके पिता अलीगढ़ रहे, उस समय अलीगढ़ तथा इसके आस-पास नेत्र चिकित्सा की कोई व्यवस्था नहीं थी। 1928 में इन्होंने नेत्र चिकित्सा का एक छोटा सा क्लिनिक खोला। यहां से जनसेवा की भावना लेकर इस देवदूत ने कार्य आरंभ किया। शीघ्र ही इनकी ख्याति अनेक स्थानों पर फैल गई। 1930 में आपने ''मोहन आई हॉस्पिटल'' खोला। इसी हॉस्पिटल में ''**नेताजी सुभाषचंद्र बोस**'' पधारे और डा. मोहन लाल की भूरि-भूरि प्रशंसा की। डा. मोहन लाल जी का ध्येय,

सर्वजन हिताय व सर्वजन सुखाय था। 25 दिसम्बर 1933 को देशबंधु सी.आर.दास ने लिखा – ''हमारी इस अभागी मात्भूमि में जहां किसी को निजी संस्था के रूप में कार्य करने के अवसर हैं, डा. मोहन लाल अग्रवाल जी ने नेत्रों का इतना बड़ा अस्पताल कुशलता पूर्वक चलाने का साहस दिखलाया है, वे अपार प्रशंसा के पात्र हैं।''

डा. मोहन लाल ने निजी स्वार्थ से उठकर अपने व्यक्तिगत अस्पताल को सार्वजनिक संस्था बनाने की कार्य योजना तैयार की। हालांकि सन् 1953 तक उनके इस निजी अस्पताल में ''तीन लाख से अधिक इनडोर मरीजों'' की चिकित्सा हुई, जिसकी सराहना तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत ने की। अपने निजी प्रयासों से डा. मोहन लाल जी ने ''**अग्रवाल जमींदार कुबेर नाथ जी**'' के परिवारजनों से ''17 एकड़'' जमीन हस्तान्तरित करवा ली। यह वही भूमि है जहां आज भारत का प्रसिद्ध ''**मोहन लाल मैमोरियल गांधी आई हॉस्पिटल**'' का विशाल भवन जन सेवा के लिये कार्य कर रहा है। इस अस्पताल को बनवाने में डा. मोहन लाल, डा. महाराज किशोर गुप्ता व इनकी पत्नियों ने सक्रिय योगदान दिया।

डा. मोहन लाल जी का व्यक्तित्व ऐसा था कि कोई भी व्यक्ति इनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। इनकी सेवाओं को भारत के राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद, नेहरू जी, महामना मदनमोहन मालवीय, राजऋषि पुरूषोत्तमदास टंडन, राजा महेन्द्र प्रताप, जनरल करिअप्पा जैसी देश की विभूतियों ने आपना आशीर्वाद प्रदान किया। इनकी सेवाओं से प्रसन्न होकर सन् 1942 में उत्तर प्रदेश तत्कालीन गर्वनर ने ''केसरी-ए-हिंद'' की उपाधि देते हुए लिखा कि – ''डा. मोहन लाल ने त्याग का अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया है। नि:स्वार्थ भाव और निष्ठा से जनता की सेवा की है, उसके लिये वे बधाई के पात्र हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए सन् 1956 में आपको ''**पद्मश्री**'' से सम्मानित किया गया।

1948 में आपने अस्पताल को महात्मा गांधी के नाम पर समर्पित कर दिया, जिसका उद्घाटन तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री ''श्री चंद्रभान गुप्ता'' ने किया। इसी वर्ष इस अस्पताल में आचार्य नरेन्द्र देव, श्रीमती सुचेता कृपलानी, मौलाना आजाद जैसी विभूतियां पधारीं। इस अस्पताल को देश मे ''**सर्वोत्तम अस्पताल**'' के नाम से ''**सम्मानित**'' किया गया। 1950 में इंग्लैंड का प्रतिनिधि मंडल यहां आया और अस्पताल की प्रशंसा की।

डा. मोहन लाल जी हमेशा गांवों में जाकर नेत्र शिविर लगाते थे। उत्तर प्रदेश के अनेक स्थानों पर इन्होंने शिविर लगाये और कुछ स्थानों पर तो क्लिनिक ही स्थापित कर दिये। ''वे संसार के नेत्र चिकित्सा समिति के उप प्रधान रहे।'' अग्रवाल समाज की यह महान् विभूति 30 अप्रैल 1962 को इस संसार से विदा हो गई। (अग्रोहाधाम, अगस्त-1999)

डा. दीवान चंद अग्रवाल, एम.डी.

आपका जन्म लाहौर में 30 सितम्बर 1896 को हुआ। रेडियोलॉजी में अपनी रूचि को बढ़ाते हुए आपने अपने व्यस्त अभ्यास को छोड़ दिया और एक्स-रे इस्टिट्यूट, देहरादून से ट्रेनिंग कोर्स किया। **आप भारत में पहले अग्रवाल रेडियोलॉजिस्ट बने।** सन् 1924 में

लाहौर(पंजाब) में उन्होंने अपने घर में रेडियोलॉजी (एक्स-रे) क्लिनिक खोला। आप ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन (पंजाब शाखा, लाहौर) के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। रेडियोलॉजी के भविष्य को ध्यान में रखते हुए डा. दीवान चंद ने यू.के. और यू.एस.ए. से मुख्य पत्रिकाओं की सदस्यता ली। उन्होंने भारत में नए उपकरणों का बीड़ा उठाया, लाहौर के उनके क्लिनिक में रेडियोलॉजी उपकरण के लिये 12 कमरे थे, जिनमें एक गहन एक्स-रे चिकित्सा इकाई भी थी। देश विभाजन के बाद वे दिल्ली आ गये, जहां क्लिनिक को फिर स्थापित किया गया जो डा. सत्यपाल अग्रवाल के साथ संयुक्त प्रयास के कारण जल्दी ही प्रतिष्ठित हो गया। इनके सबसे छोटे पुत्र **पद्श्री डा. सुदर्शन अग्रवाल** भी जाने-माने रेडियोलॉजिस्ट हैं। आपके बड़े पुत्र **डा. एम. एल. अग्रवाल** भी जाने-माने रेडियालॉजिस्ट रहे हैं, जो अनेक पी.जी. संस्थानों की चयन समितियों के सदस्य रहे तथा अपनी शैक्षणिक योग्यता के कारण देश में 100 रेडियोलॉजिस्ट डाक्टरों में चुने जाने वाले सबसे युवा थे, 1946 में उन्हें सर्वश्रेष्ठ रेडियोलॉजिस्ट चुना गया, सन् 1970 में उन्हें भारतीय रेडियोलॉजी एसोसिएशन का सर्वोच्च पुरस्कार ''सर जगदीशचंद्र बोस मेमोरियल ओरेशन एवार्ड मिला। 30 नवम्बर 1967 को डा. दीवान चंद जी का देहांत हो गया। आपके सम्मान में आपके परिवार द्वारा एक पुरस्कार हर साल एक स्वर्ण पदक के साथ भारतीय रेडियोलॉजीकल और इमेजिंग एसोसिएशन के वार्षिक सम्मेलन में दिया जाता है।

डा. ललित प्रकाश अग्रवाल

जन्म 23 जनवरी 1922, पिता रायबहादुर माधोराम जी, शिक्षा एम.बी.बी.एस., डी.ओ.एम.एस. - लंदन, डी.ओ.-आक्सफोर्ड, एम.एस.। आप 37 वर्ष की आयु में दिल्ली एम्स में के **संस्थापक प्राध्यापक** बने। आप राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी के सबसे युवा प्रतिनिधि बने थे। आपके द्वारा ही एम्स में ''**डा. राजेन्द्र प्रसाद नेत्र विज्ञान केंद्र**'' की स्थापना की गई थी। आप दिल्ली एम्स में ही डीन तथा डायरेक्टर के पद पर रहे। भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने आपको अपना ''**पहला मानद नेत्र विज्ञान सलाहकार**'' सन् 1975 में बनाया। आपने नेत्र विज्ञान संबंधी 22 पुस्तकें लिखीं और 350 से अधिक शोध पत्र लिखे। 1976 में आपकी **अध्यक्षता** में ही भारत सरकार ने अंधापन रोकने के लिये राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम चलाया। कार्यक्रम इतना सफल रहा कि बाद में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी आपकी सहायता ली। 1977 में आप अखिल भारतीय नेत्र विज्ञान संस्था के ''अध्यक्ष'' रहे। आपने ही दिल्ली के एम्स में ''**राष्ट्रीय नेत्र बैंक**'' की स्थापना की। डब्ल्यूएचओ से शोध के लिये 1982 में ''**स्वर्ण पदक**'' मिला, 1985 में भारत सरकार द्वारा सम्मनित।

(पुस्तक-अग्रवाल समाज की विरासत)

साहित्य सेवक

भारती भूषण, अग्रवाल रत्न, भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र

काशी के सुप्रसिद्ध साहित्य सम्राट, वर्तमान हिंदी के जन्मदाता व हिंदी गद्य के हास्य और व्यंग्य के प्रथम लेखक, भारतेंदु बाबू हरिशचंद्र अग्रवाल समाज के एक देदिप्यमान नक्षत्र थे। इन्होंने बड़े ही प्रतिभा संपन्न अग्रवाल कुल में जन्म लिया। -- इतिहास प्रसिद्ध ''सेठ अमीचंद'' इनके पूर्वजों में से थे। सेठ अमीचंद बड़े ही प्रखर बुद्धि, राजनीतिज्ञ विशारद और धनकुबेर थे। इनको ''राजा'' की उपाधि मिली हुई थी और नवाब सिराजद्दोला के विश्वस्त राजकार्य में दक्ष मंत्री थे। सेठ अमीचंद के पुत्र फतेह चंद और इनके पुत्र हर्ष चंद्र हुए। हर्ष चंद्र एक उच्च श्रेणी के कवि थे। बनारस में इनका बड़ा सम्मान था। ''काशी नरेश के परामर्शदाता'' थे, इनके सबसे बड़े पुत्र गोपालचंद्र बड़े ही विद्वान और धर्म निष्ठ थे। कविता में इनका उपनाम ''गिरधरदास'' था और ये गद्य और पद्य दोनों में बड़े निपुण लेखक थे। इन्होंने लगभग 40 ग्रंथों की रचना की। इन्होंने अनेक सार्वजनिक देवस्थानों का जीर्णोद्धार करवाया और बाग-बगीचे तथा तालाब बनवाये। इनके सरस्वती पुस्तकालय-संग्रहालय में बड़े-बड़े अमूल्य ग्रंथों का संग्रह था। उस समय बनारस के कमिश्नर गविन्स साहेब ने इनके लिये लिखा था कि ''बाबू गोपालचंद्र फरिश्ता हैं, जो पंख काटकर स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरा दिए गये हैं।'' इन्हीं के यशस्वी पुत्र थे भारतेंदु बाबू हरिशचंद्र।

भारतेंदु जी हिंदी के साक्षात् कालीदास ही थे। संस्कृत फारसी, बंगला, मराठी आदि अनेक भाषाओं के प्रौढ़ कवि व विद्वान थे। ये दानियों में कर्ण और विद्वान पुरूषों का आदर करने में राजा भोज थे। इन्होंने हिंदी साहित्य की बहुत बड़ी सेवा की। हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिये इन्होंने लाखों रूपयों का व्यय किया। स्कूल, वाचनालय, पुस्तकालय, नाट्य समित, कवि समाज आदि की स्थापना की और लगभग 105 ग्रंथों की रचना कर हिंदी साहित्य में युग परिवर्तन ही कर दिया। अनेक पत्रों का संपादन भी किया। इन्हीं साहित्यिक विशेषताओं के कारण विद्वानों ने आपको ''भारतेंदु'' की उपाधि दी। ये 20 वर्ष की उम्र में आनरेरी मजिस्ट्रेट नियुक्त हुए। आप म्युनिसिपल कमिश्नर एवं पंजाब विश्वविद्यालय की एफ.ए. आदि की संस्कृत परीक्षाओं के परीक्षक भी रहे। इनके कोई पुत्र नहीं था अत: इनके दौहित्र को ही इनका उत्तराधिकरी बनाया गया। इनको वर्तमान हिंदी का जन्मदाता कहा जाता है। हिंदी साहित्य जगत का यह दुर्भाग्य ही रहा कि मात्र 35 वर्ष की आयु में आपका देहांत हो गया। सरकार ने अर्द्धशताब्दी मनाई, आपके नाम से संवत् भी चलाया गया। यह आपके महान् व्यक्तित्व का परिचायक है। भारत सरकार ने आपके सम्मान में 25 पैसे का डाक टिकट जारी किया।

डा. वासुदेव शरण अग्रवाल
ज्ञान के भागीरथ

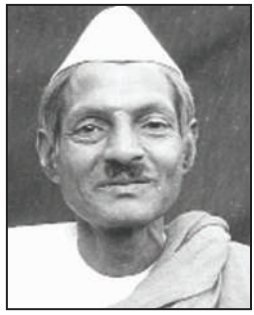

जिस प्रकार तक्षशिला विश्वविद्यालय ने कुमार लब्ध जैसे प्रकांड पंडित संसार को प्रदान किये, वैसे ही आधुनिक भारत में काशी हिंदू विश्वविद्यालय ने डा. वासुदेव शरण अग्रवाल जैसे उद्भट विद्वान इस देश को दिये। आप जैसे विद्वान वर्तमान काल की महान् उपलब्धि है। अग्रवाल समाज के ऐसे मनीषी, साहित्य के प्रकांड पंडित, पुरातात्वविद्, कला के साधक, शोधकर्ता एवं ऐसे विद्वान व महामानव जिस पर कोई भी जाति, समाज और देश गौरव कर सकता है। आपने 14 वर्ष की आयु में ही ''पाणिनी अष्टाधायी'' पर अनुसंधान किया और 1941 में अपना शोधग्रंथ ''इंडिया एज नोन टू पाणिनी'' पूरा किया और डी.लिट् की उपाधि प्राप्त की। इस उपलब्धि से आपका नाम संसार भर में संस्कृत और भारतीय विद्याओं के विद्वानों में बड़े सम्मान के साथ फैल गया। हिंदी में यह ग्रंथ ''**पाणिनी कालीन भारतवर्ष**'' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आप जनपदीय आंदोलन के प्रर्वतक, भारतीय भाषाओं के सूर्य, वैदिक धर्म दर्शन, व्याकरण के ज्ञाता, 3500 के लगभग लेख एवं 90 से अधिक पुस्तकों एवं शोधग्रंथों के प्रणेता थे। आप रामायण, महाभारत के प्रमाणिक विद्वान थे। आपने ''भात सावित्री'' नामक ग्रंथ में महाभारत के 2 लाख 4000 श्लोकों पर अपूर्व व्याख्या लिखी, 800 पृष्ठों का यह महान् ग्रंथ तीन खंडों में पूरा हआ।

आप हिंदी के साथ संस्कृत एवं अंग्रेजी के भी उत्कट विद्वान थे। आपने अंग्रेजी में वैदिक सूक्तों की व्याख्या कर उल्लेखनीय कार्य किया। वे वेद विद्या को सृष्टि विद्या मानते थे अत: उन्होंने अपनी इस मान्यता को पुष्ट करने के लिये दीर्घ तमस ऋषि के अस्थवाभीय सूत्र की व्याख्या लिखी और उनकी ख्याति ऋषि परंपरा की श्रृंखला में हाने लगी। आप कला प्रेमी थे, आपकी ''इंडियन आर्ट'' नामक पुस्तक का कला जगत में विशेष मान है। उन्होंने संस्कृत साहित्य की सहायता से कला और पुरातत्व विषयों के हजारों शब्दों का पुनरूद्धार किया। सन् 1938 में उनकी नियुक्ति पुरातत्व संग्रहालय में अध्यक्ष पद पर हुई। यहां रहकर उन्होंने ''भारतीय मूर्ति कला शास्त्र'' का विधिवत अध्ययन पूर्ण किया। सन् 1940 में उनकी नियुक्ति लखनऊ पुरातत्व संग्रहालय में अध्यक्ष के पद पर हुई, यहां 1946 तक रहे। इसके पश्चात् इनकी नियुक्ति दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में अध्यक्ष के पद पर हुई। 1952 के अंत में उनकी नियुक्ति काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कला विभाग में अध्यक्ष पद पर हुई। वे अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन के भी अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

संस्कृत व अंग्रेजी के प्रकांड पंडित होते हुए भी डा. वासुदेव अपनी मातृभाषा हिंदी को नहीं भूले। जहां अंग्रेजी में उनके रचित वैदिक सूत्रों की व्याख्या का विशेष स्थान है, वहीं हिंदी भा,षा में भी उनकी विरचित ''पद्यावत टीका'' हिंदी जगत में प्रमाणिक मानी जाती है। आपका

समस्त जीवन पुराणों, शास्त्रों, दर्शन इतिहास के ग्रंथों के मनन में ही व्यतीत हुआ। आप ब्रज साहित्य मंडल के ''**प्रथम अध्यक्ष**'' थे। आपकी पाणिनी कालीन भारतवर्ष, हर्षचरित-एक सांस्कृतिक अध्ययन, कादम्बरी, मेघदूत, भारत सावित्री, वेद विद्या आदि कालजयी रचनाएं हैं जिनकी समानता मिलना कठिन है। सन् 1952 में भारत सरकार ने आपको ''पद्भूषण'' से सम्मानित करना चाहा, किंतु आने उदसे विनम्रता से लेने से इन्कार कर दिया। आप विश्वविद्यालय ''स्थापत्य विभाग के अध्यक्ष'' भी रहे। भारतीय विद्या एवं हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि के रूप में ख्याति प्राप्त विभूति का जन्म मेरठ के ''खेड़ा'' नामक गांव में सन् 1904 को हुआ। डा. वासुदेव अग्रवाल जी ने अपनी अग्रवाल वैश्य जाति पर भी सश्रम अनुसंधान किया और उनका शौध कार्य अग्रवाल जाति के इतिहास की आधार शिला मानी गई। 27 जुलाई 1966 को अपने जीवन के 62 वर्ष पूरे कर इस संसार से विदा हुए।

जगन्नाथदास रत्नाकर

आधुनिक युग के ब्रज भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि - आपका जन्म संवत् 1923 (सन् 1866), ऋषि पंचमी के दिन काशी के प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में हुआ था। आपके पिता बाबू पुरूषोत्तम दास फारसी के प्रकांड विद्वान थे तथा इनको कुरान कंठस्त थी। उनका हिंदी कविता के प्रति उनका प्रगाढ़ प्रेम था। बाबू भाारतेंदु हरिशचंद्र उनके मित्र व संबंधी थे। आपके पूर्वजों का आदि निवास स्थान सफीदो (जिला करनाल, रियासत जींद) में था, वहां इनके पूर्वज लाला तुलाराम जहांदार बादशाह के दरबार में प्रतिष्ठित अधिकारी के पद पर थे। पानीपत की दूसरी लड़ाई के बाद वे अकबर के दरबार में आये और मुगल साम्राज्य में उंचे-उंचे पद सुशोभित करते रहे। फिर मुगल राज्य के नष्ट प्राय हो जाने पर जंहादारशाह के साथ काशी चले आये और वहीं बस गये। जगन्नाथ जी की सारी शिक्षा काशी में हुई। फारसी भाषा मे आपने सन् 1891 में बी ए. पास किया। 1990 में आप आवागढ़ राज्य में प्रधान कर्मचारी नियुक्त हुए। बाद में अयोध्या नरेश स्व. महाराजा सर प्रतापनारायणसिंह बहादुर के.सी.आई. ई. ने सन् 1901 में आपको अपना प्राइवेट सेक्रेटरी बना लिया। बाद में प्रसन्न होकर काशी नरेश ने आपको चीफ सेक्रेटरी के उच्च पद आसीन किया। 1906 में महाराज की मृत्यु हो जाने पर महारानी साहिबा जगदंबा देवी ने आपको अपना ''प्राइवेट सेक्रेट्री'' नियुक्त किया। आपने राज्य की बहुत सेवा की। आप ब्रजभाषा काव्य के बहुत बड़े मर्मज्ञ थे इसलिये ''ब्रजभाषा के सबसे सर्वश्रेष्ठ कवि'' माने जाते थे। आपने अनेक काव्य पुस्तकें लिखीं। रीतिकालीन कवि बिहारी की बहुत ही प्रमाणिक तथा विशद टीका ''बिहारी रत्नाकर'' के नाम से की है।

प्रारंभिक काल में आप ''जकी'' उपनाम से रचनाएं किया करते थे। आपने प्राचीन

ग्रंथों का गहन अध्ययन किया था इसलिये आप प्राचीन साहत्य के मर्मज्ञ माने जाते थे। सन् 1900 में आपने प्रसिद्ध पत्रिका ''सरस्वती'' का संपादन आरंभ किया। आपने महारानी साहिबा की प्रेरणा से ''गंगा लहरी'' रचना लिखी जिससे खुश होकर महारानी ने उस समय 2000/- रू. का पारितोषिक प्रदान किया। आपने यह राशि नागरी प्रचारिणी सभी को भेंट कर दी। आपको प्राकृत्त भाषा का अच्छा ज्ञान था इसलिए प्राचीन शिलालेख पढ़ लेते थे। आपका देहांत 21 जून 1932 को हुआ। आपकी समृति में नागरी प्रचारिणी सभा ने आपकी समस्त रचनाओं का ''रत्नाकर'' शीर्षक से एक सुंदर संग्रह प्रकाशित किया है। जगन्नाथ जी की प्रमुख रचनाएं इस प्रकार हैं - हिंडोला, हरिशचंद्र, समालोचनादर्श, घनाक्षरी-नियम रत्नाकर, कलकाशी, अष्टक रत्नाकर आदि। गंगावतरण व उद्धव शतक उनके श्रेष्ठतम काव्य ग्रंथ हैं।

बाबू गुलाबराय

हिंदुस्तान के महान् साहित्यकारों में अग्रविभूति बाबू जी की गिनती होती है। वे अपने जीवन में अतिव्यस्त होते हुए भी अग्रवाल समाज की सेवा करना नहीं भूले। वे वर्षों तक अग्रवाल सभा के अध्यक्ष रहे। सन् 1943 में दिल्ली में संपन्न हुए ''अग्रसेन जयंती'' महोत्सव में सम्मिलित हुए। 1944 में आपने अखिल भारतीय वैश्य महासभा के वार्षिक अधिवेशन में भाग लिया। जीवन पर्यन्त आपने अग्रवाल समाज की पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखे। आपने सन् 1963 में आयोजित होने वाली अग्रसेन जयंती के लिये ''समाज के प्रति हमारा कर्त्तव्य'' अंतिम लेख लिखा। कार्यकत्ताओं को सलाह दी कि - जाति के भाईयों के सुधार के लिये जो उपाय किये जाएं उनमें शासन की गंध नहीं आनी चाहिए। जो कुछ किया जाए प्रेम, सेवा और सद्भाव से किया जाए। समाज सुधारक का पहला उत्तरदायित्व है कि वह अपना सुधार करे। पदाधिकारियों के लिये कहा कि - उन्हें यह देखना चाहिए कि उन्होंने दूसरों की कहां तक सेवा की।

बाबू जी ने हिंदी साहित्य के भंडार में जबरदस्त वृद्धि की। आपके प्रखर पांडित्य से प्रभावित होकर आगरा विश्व विद्यालय ने सन् 1957 में उन्हें ''**डाक्टर ऑफ लिटरेचर**'' की मानद पदवी प्रदान की। आपने अनेक गंभीर और स्थायी महत्व के ग्रंथों की रचना की। आपने 'साहित्य संदेश' नामक उच्च कोटि की मासिक पत्र का संपादन किया। आप समन्यवादी आलोचक के रूप में प्रसिद्ध हुए। आपने निबंध और आलोचना के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कृतियों की रचना की। पूर्व रेल मंत्री स्व. श्री कमलापति त्रिपाठी जी ने बाबू जी का अभिनंदन करते हुए उन्हें ''अजातशत्रु'' कहा था। बाबू जी का जन्म 17 जनवरी 1988 को हुआ तथा स्वर्गवास 13 अप्रैल 1963 कों बैसाखी के दिन हुआ। भारत सरकार ने आपके सम्मान में पांच रूपये का ''डाक टिकट'' जारी किया। आधुनिक युग के आत्मपरक निबंधकारों में बाबू

गुलाबराय जी का सर्वश्रेष्ठ स्थान

पद्मविभूषण विष्णु प्रभाकर

आपका जन्म 21 जून 1912 को जिला मुजफ्फर नगर के मीरपुर गांव में हुआ था। लेखन कार्य में आपकी बचपन से रूचि थी। आपका नियमित लेखन सन् 1934 से आरंभ हुआ। आपने अनेक उपन्यास, कहानी संग्रह, लघु कथा संग्रह, नाटक व एकांकी संग्रह, रूपांतर, रूपक संग्रह, विचार-निबंध, जीवन एवं संस्मरण, अनुदित नाट्य, बाल जीवनी, बाल कहानी आदि का लेखन कार्य किया। संस्मरण संग्रह 15 से अधिक खंडों में प्रकाशित हो चुका है। आपने 64 से अधिक पुस्तिकाओं व पुस्तकों का संपादन किया तथा सस्ते साहित्य मंडल की मासिक पत्रिका 'जीवन साहित्य' सहित कई पत्रिकाओं का वर्षों तक अनाम रूप से संपादन किया। आपने हिमालय दर्शन के अतिरिक्त देश-विदेश की कई यात्राएं कीं। आपकी गणना देश के शीर्षस्थ साहित्कारों में होती है। आपको अनेक पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया।

श्री विष्णु प्रभाकर जी ने मासिक पत्रिका 'अग्रणी संदेश' के मार्च 2005 के अंक में एक लेख लिखा था -

मेरा ''पद्मभूषण-सम्मान-प्रकरण''

'पद्म सम्मान' के लिये मेरा नाम सुझाने का प्रस्ताव 20 वर्ष पहले भी दिल्ली प्रशासन की ओर से आया था, परंतु तब मैंने निश्चय कर लिया था कि मैं इस तरह के सम्मान स्वीकार नहीं करूंगा, इसलिये मैंने मना कर दिया। इसके बाद एक-दो बार फिर मेरे नाम की चर्चा हुई लेकिन मैंने तब भी मना कर दिया। इस बार मुझे बहुत बाद में पता लगा कि 'साहित्य अकादमी' की ओर से जिन दो साहित्यकारों के नाम प्रस्तावित हुए उनमें एक मैं भी हूं। अखबारों के माध्यम से मुझे सूचना मिली की, मेरा नाम ''पद्भूषण'' के लिये चुना गया है। दूरदर्शन पर भी इसकी चर्चा हुई। यह बात 26 जनवरी के आस-पास होगी। तब मैंने राष्ट्रपति जी को लिखा, कि अनेक करणों से मैं यह सम्मान स्वीकार नहीं कर पाऊंगा। यह बात 26 जनवरी से 3-4 दिन पहले की है। जो भी हो 25 जनवरी को जब सूची पारित हुई तो मेरा नाम भी था। अब बहुत देर हो चुकी थी। मैं राजनीति के चक्कर में फंसना नहीं चाहता था। इसलिये चुप हो गया। इसका अर्थ था कि मैंने वह सम्मान स्वीकार कर लिया। उस समारोह में मैं अपने पुत्र व पुत्रवधु के साथ गया। उस सम्मान में हर व्यक्ति अपने साथ 2 या 3 व्यक्तियों को ले जा सकता था। उसके बाद 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति भवन में जो समारोह होता है, उसका निमंत्रण मेरे पास आया, पहले भी आता रहा है। वह श्री और श्रीमती दो लोगों के लिये होता है। इस पर मैंने

लिखा कि मेरी पत्नी स्वर्ग सिधार चुकी है, मेरी आयु अब 93 वर्ष हो चुकी है, मैं अकेला आ-जा नहीं सकता, इसलिये मुझे श्रीमती जी के स्थान पर पुत्र को लाने की अनुमति दी जाए। मुझे कोई उत्तर नहीं मिला।

26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर फिर वैसा ही निमंत्रण पत्र मेरे पास आया। मैंने सोचा इस बार भी कोइ जबाव नहीं आएगा इसलिये मैं बेटे को लेकर जाऊंगा। लकिन जब मैं अपने पुत्र के साथ वहां पहुंचा तो द्वार रक्षक ने मेरे साथ बेटे को ले जाने की अनुमति नहीं दी। मैंने समझााने का प्रयत्न किया, उसने कहा कि आप अकेले जा सकते हैं, क्योंकि कार्ड में पुत्र का नाम नहीं है। अगले दिन पंजाब केसरी में यह समाचार प्रकाशित हुआ। उसके बाद तो न जाने क्या हुआ, कैसे हुआ, सारे समाचार पत्रों में यह खबर विस्तार से छप गई। अपने-अपने विचार भी लिखे लोगों ने। तब अचानक राष्ट्रपति भवन से मेरे पास फोन आया कि महामहिम राष्ट्रपति जी मुझसे मिलना चाहते हैं। मैं रविवार को 10.30 बजे उनसे मिलने गया। पुत्र को भी साथ ले गया। राष्ट्रपति जी ने आधा घंटे बड़े स्नेह-पूरित वातावरण में हमसे बातें कीं। मेंरी कृति 'आवारा मसीहा' की भी चर्चा की। फिर बोले, ''देखो यह पद्म सम्मान आपको देकर आपका सम्मान नही, अपना सम्मान किया है, आप इसे लौटाएं नहीं।'' मैंने निवेदन किया, आपका आदेश सिर माथे पर, लेकिन मुझे मेरे पत्रों का तो उत्तर मिलना चाहिए था। क्या हिंदी में लिखे पत्रों का जबाव नहीं दिया जाता। वे बोले, मैं इस बात की जांच करवाऊंगा, आप अपने पत्रों की प्रतिलिपि दे दीजिए। मैं तीन पत्रों की प्रतिलिपि अपने साथ ले गया था, वे दे दिये। उन्होंने उन पत्रों की प्रतिलिपियां अपने सचिव को इस आदेश के साथ सौंप दी कि इस बात की जांच की जाये, कि उनके उत्तर क्यों नहीं दिये। और भी बातें हुईं।

पद्मभूषण प्रोफेसर डा. लोकेश चंद्र

भारत की ही नहीं बल्कि विश्व की एक जानी-मानी हस्ती हैं, जिनके संबंध में अगर लिखा जाये तो पुस्तकों की एक श्रृंखला ही लिखनी पड़ेगी, वे अपने आप में एक विशाल शब्दकोश हैं, भाषाविद् हैं, प्रख्यात विद्वान, चिंतक, विचारक हैं, जिन्होंने संसार व भारतीय संस्कृति तथा भाषा में अपना विशेष योगदान दिया। 20 से अधिक भाषाओं के जाने माने विद्वान, प्रोफेसर लोकेश चंद्र शास्त्रीय यूनानी, लैटिन, चीनी, जापानी, पारसियों की अवेस्ता, पुरानी फारसी, तिब्बती, मंगोलियन, इंडोनेशिया, ग्रीक, जर्मन, फ्रैंच, रशिया और सांस्कृतिक महत्व की अन्य अनेक भाषाओं के ज्ञाता हैं। वह संस्कृत, पाली और प्राकृत भाषा के प्रकांड विद्वान हैं।

आप भारतीय संस्कृति अकादमी के मानद निदेशक हैं, जो एशियाई संस्कृतियों के लिये एक प्रमुख शोध संस्थान है। साथ ही वे भारतीय संस्कृति की अंतरराष्ट्रीय अकादमी, एशियाई संस्कृतियों के लिये एक प्रमुख अनुसंधान संस्था के मानद निदेशक हैं। लोकेश जी ने भारत,

तिब्बत, मंगोलिया, चीन, कोरिया, जापान, दक्षिण पूर्व एशिया, इंडोनेशिया और फिलीपींस के बीच वार्ता को आगे बढ़ाया है। आपने विज्ञान से संबंधित एक अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका का भी संपादन किया। पूरे यूरोप, एश्यिा और रूस की व्यापक यात्रा की है। अनेक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया। दुनियां के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न संस्कृतियों के प्रसार और रचनात्मकता के अध्ययन में लोकेश जी का जीवनभर समर्पण रहा है। उनके लेखन तथा शोधों में विशालता और गतिशीलता है। लोकेश जी के अद्‌भुत कार्य ने कई देशों के विकास की समझ में क्रांति ला दी है क्योंकि उन्होंने अज्ञात ग्रंथों, तथ्यों और मूल्यांकन को खोल दिया है, जो इस वैज्ञानिक जगत को प्रकाशमान बनाते हैं। आपको अनेक अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय सम्मान मिले हैं, जिनकी सूची काफी लंबी है। आपने बौद्ध स्मारकों का अध्ययन करने के लिये चीन का दौरा किया।

लोकेश जी ने अनेक ग्रंथों की रचना की जिनकी सूची काफी लंबी है, उदाहरण के तौर पर डिक्शनरी ऑफ बुद्धिस्ट आइकॉनोग्राफी – 13 खंड, तिब्बती साहित्य के इतिहास के लिये सामग्री, तिब्बत का बौद्ध प्रतिमा विज्ञान और 15 खंडों में बौद्ध कला का उनका शब्दकोश जैसी कालजयी कृतियां हैं। उन्होंने बुद्ध और शिव तथा भारत एवं जापान के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान पर भी लिखा है। आपने तिब्बत के विशान साहित्य पर ध्यान आकर्षित किया, जिसमें विज्ञान, चिकित्सा, दर्शन आदि है, यह इसलिये भी अद्वितीय है क्योंकि इसमें एक हजार चित्र भी हैं, कैलिफोर्निया के प्रो. एफ.डी. ने लिखा था कि मैं चकित हूं कि ऐसा किस प्रकार किया तथा यह तिब्बती–संस्कृत के अध्ययन के क्षेत्र में एक बड़ा कदम होगा। लोकेश चंद्र जी ने अनेक तिब्बती ऐतिहासिक ग्रंथों के कई संस्करणों का संपादन किया है। इसमें समई का एक इतिहास शामिल है जो तिब्बत का पहला मठ है। उन्होंने मंगोलियाई के स्वर्णिम इतिहास का अध्ययन किया।

लोकेश चंद्र जी का जन्म 11 अप्रैल 1927 को अंबाला में हुआ था। आपकी अब तक लगभग 600 से भी अधिक पुस्तकें तथा 400 से अधिक शोध पत्रों का प्रकाशन हो चुका है। आपके पिता प्रोफेसर डा. रघुवीर जी भारत की नामी हस्तियों में शुमार थे, जो स्वंय 32 भाषाओं के विद्वान थे। लोकेश जी राज्य सभा के 1974–80 तथा 1980–86 तक दो बार सांसद रहे। आप संसदीय कमेटी जैसे – शिक्षा, राजभाषा, भारी उद्योग, पर्यटन, नागर विमानन, डिफेंस तथा तकनीकी आदि के सदस्य रहे। इसके अलावा आप अनेक जानी–मानी संस्थाओं में विभिन्न पदों पर रहे व अनेक के सदस्य भी रहे, जिनकी सूची काफी लंबी है। सन् 2006 में साहित्य व शिक्षा के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान के लिये भारत सरकार ने आपको **''पद्‌मभूाण''** से सम्मानित किया। अभी आप दिल्ली में – जे–22, हौज खास एन्क्लेव में रह रहे हैं।

शिवचंद्र जी भरतिया (सिंघल)

राजस्थानी के आदि गद्य लेखक

आपका जन्म सन् 1853 में राजस्थान के डीडवाना में हुआ था, इनका घराना बड़ा ही प्राचीन था। इनके पिता श्री बलदेव जी ने व्यापार से बहुत संपत्ति अर्जित की। आप मराठी, कन्नड़, संस्कृत्त, उर्दू, बंगला, गुजराती, मारवाड़ी, हिंदी आदि अनेक भाषाओं के विद्वान थे। इन सभी भाषाओं में आपने ग्रंथ लिखे और प्रकाशित किये। **मारवाड़ी भाषा में ''नाटक'' लिखने वाले संभवत: आप पहले लेखक थे।** फाट का जंजाल, कैसर विलास, बुढ़ापा की सगाई आदि नाटकों ने मारवाड़ी समाज में काफी हलचल पैदा कर दी। इन्होंने कलकत्ता के ''**वैश्योपकारक**'' नामक हिंदी मासिक पत्र का संपादन भी बहुत दिनों तक किया। आपने 42 पुस्तकें विभिन्न भाषाओं में लिखीं। सूर्य चक्र भेद और विचार दर्शन आपकी हिंदी भाषा की महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं। आपने अपने वृहत ग्रंथ ''विचार दर्शन'' में लिखा था - जिसको अपने कुल का, अपने धर्म का, अपनी जाति का, अपने देश का और अपनी मात् भाषा का कुछ भी आदर और अभिमान न हो, वह कभी इस पुस्तक को छूकर इसे अपवित्र न करे।

गुजराती और मराठी भाषा के उत्कृष्ट विद्वान होने के साथ-साथ आप हिंदी के श्रेष्ठ लेखक और कवि थे, हिंदी में गद्य, पद्य, नाटक अनेक विधाओं में साहित्य का श्रृजन किया। आपने अपने जीवन का आरंभ एक व्यापारी से किया लेकिन साहित्कार होने के कारण व्यापार में मन नहीं लगा, हालांकि आपने व्यापार में बहुत नाम कमाया। 1947 में पत्नी, पुत्र व पुत्री का देहांत हो गया। आप कन्नड़ आकर वकालात करने लगे। संवत् 1952 में आपने दूसरा विवाह किया, तीर्थ यात्रा पर निकले। जगह-जगह रूकते हुए आप इंदौर आये और राज्य की नौकरी में लग गये। आपने राज्य व्यवस्था का विकास किया। इंदौर में खूब सम्मान हुआ। फिर किशनगढ़ के दीवान बाबू श्यामसुंदर जी के बुलाने पर किशनगढ़ गये। 61 वर्ष की उम्र में आपका देहांत दि. 12 फरवरी 1915 को हुआ।

कन्हैयालाल पौद्दार

जिस समय हिंदी साहित्य में अलंकार ग्रंथों का प्राय: अभाव था, उस समय इन्होंने अपना अलंकार का ग्रंथ ''काव्य-कल्प-द्रुम'' प्रकाशित कर साहित्य का बड़ा उपकार किया। आप हिंदी काव्य के मर्मज्ञ और संस्कृत भाषा के विद्वान थे। आपने अनेक ग्रंथों की रचना की। उतकृष्ट पद्यानुवाद तथा गद्यानुवाद हिंदी संसार को भेंट किया है। आपने अनेक पद्य रचनाएं भी की हैं। **प्रसिद्ध रचनाएं** -काव्य कल्प द्रुम, अलंकार प्रकाश, हिंदी में मेघदूत विमर्श, भ्रर्तृहरि शतक का अनुवाद।

डा. परमेश्वरी लाल गुप्त

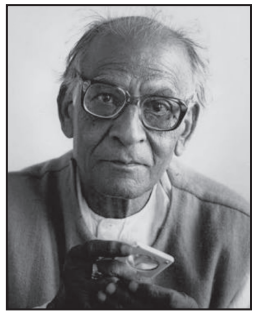

स्वतंत्रता सेनानी, मुद्राशास्त्री, इतिहासकार एवं हिंदी साहित्यकार थे। आपका जन्म 24 दिसम्बर 1914 को उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ में हुआ था तथा मृत्यु 29 जुलाई 2001 को हुई। सन् 1930 में जब वे वेजली हाई स्कूल में थे, नेहरू की गिरफ्तारी के विरूद्ध उन्होंने विरोध आयोजित किया था, जिसके कारण उन्हें विद्यालय से निकाल दिया गया। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य बने और अनेक बार जेल गये। वे आजमगढ़ में इतने लोकप्रिय हुए कि ''आजमगढ़ के नेहरू'' कहलाने लगे। उन्होंने अपना पूरा जीवन ज्ञान पिपासा को बुझाने में लगा दिया। आपने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से पीएसडी की। परमेश्वरी लाल जी ने अग्रवाल सेवक मंडल और अग्रवाल नवयुवक संघ भी बनाया। आजमगढ़ में उन्होंने एक पुस्तकालय व एक बालिका प्राइमरी स्कूल की स्थापना की। यह विद्यालय आगे चलकर महाविद्यालय बना। वाराणसी से छपने वाले ''आज'' तथा आगरा से प्रकाशित ''सैनिक'' नामक दैनिकों के संपादकीय मंडल में भी 15 वर्ष तक सेवाएं दीं।

मुद्रशास्त्री – डा. गुप्त ने वाराणसी के भारत कलाभवन में 1950 से 1954 तक सहायक संग्रहालयाध्यक्ष के पद पर कार्य किया। बाद में सन् 1962 तक प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम में मुद्राशास्त्री के रूप में कार्य किया। सन् 1963 से 1972 तक वे पटना संग्रहालय के अध्यक्ष रहे। सेवानिवृत्ति के बाद वे नासिक में रहे और वहीं पर ''भारतीय मुद्राशास्त्रीय अध्ययन शोध संस्थान'' की स्थापना की। आज यह संपूर्ण एशिया में अपने तरह का अकेल संस्थान है। आपका प्रथम शोधपत्र सन् 1942 मं प्रकाशित हुआ। इसके बाद इन्होंने 32 पुस्तकें व 250 से भी अधिक शोध पत्र लिखे। अति प्राचीन भारतीय पंच-मार्क सिक्कों के तो वे सर्वश्रेष्ठ विद्वान थे।

सम्मान एवं पुरस्कार – भारतीय मुद्राशास्त्रीय सोसायटी ने 1954 में चक्रविक्रम मेडल, 1962 में नेल्सन राइट मेडल, तथा 1972 में अपना अवैतनिक फेलो बनाया। रॉयल नुमिस्मैटिक सोसायटी ने भी उन्हें 1975 में अपना अवैतनिक फेलो चुना। कोलकाला की एशियाटिक सोसायटी ने-यदुनाथ सरकार स्वर्ण पदक प्रदान किया। सन् 1986 में डा. गुप्त को अंतरराष्ट्रीय मुद्राशास्त्रीय आयोग का अवैतनिक सदस्य बनाया गया। 1987 में उन्हें अमेरिकी मुद्राशास्त्री सोसायटी का मेडल ;Archer M. Huntington Medal) प्रदान किया गया। 1993 में आपको मुंबई की एशियाटिक सोसायटी का अवैतनिक फेलो चुना गया। (सोर्स – नेट से प्राप्त)

स्व. बाबू ठाकुर प्रसाद जी गुप्त, बुकसेलर

हजारों से भी अधिक लोक साहित्य के प्रकाशनों के द्वारा आपने आस्तिक जनता की पिपासा को तृप्ति प्रदान की। अग्रवाल कुलभूषण बाबू ठाकुर दास गुप्त का जन्म मुकाम पोस्ट

चेनारी, रेलवे स्टेशन-कुदरा, सब डिवीजन सासाराम, जिला-रोहतास, बिहार में सन् 1907 को हुआ था। आपके पिता बाबू श्री रामधनी लाल अग्रवाल एक अत्यंत धर्मनिष्ठ एवं कर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। ''जन साहित्य'' के प्रशस्त प्रकाशन से संबंधित विमल व्यवसाय में आपका नाम शिक्षित समुदाय के हृदय पटन पर अंकित है। आपकी जन भाषा एवं सत्साहित्य की सराहनीय साधना द्वारा हिंदी जगत इस प्रकार उपकृत है कि स्वप्न में भी आपके नाम को विस्मृत नहीं कर सकता ।

''भोजपुरी भाषा'' के सरस प्रकाशन को जन-जन तक पहुंचाने का ''एकमात्र श्रेय'' आपको ही है। इनके समक्ष संपूर्ण भारत में कोई दूसरा भोजपुरी साहित्य का प्रकाशक ही दृष्टिगोचर नहीं होता, जिसने इस क्षेत्र में इस प्रकार का कार्य किया हो। आपको यदि ''भोजपुरी भाषा का समुद्धारक'' कहा जाये तो संभवत: कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी, यह ध्रुव सत्य है। इसी कारण बिहार प्रांत का बच्चा-बच्चा आपके नाम से परिचित है। आपका देहावसान 26 जून 1969 को राजादरवाजा, वाराणसी मे हुआ। आपके नाम से प्रसिद्ध ''ठाकुर प्रसाद पंचांग कैलेण्डर'' बनारस से लगातार 50 सालों से भी अधिक समय से निकाला जा रहा है।

चंद्र कुमार अग्रवाल

आप असमिया के प्रसिद्ध लेखक, कवि और पत्रकार थे। वे ''जोनाकी'' काल के अग्रदूत थे। असमिया साहित्य में उन्हें **प्रतिमार खोनिकोर** कहा जाता है। वे ''जोनाकी पत्रिका'' के प्रथम संपादक तथा वित्त पोषक थे। वे ''असमिया भाषा उन्नति साधिनी सभा'' के ''संस्थापक'' थे, जिसकी स्थापना उन्होंने 25 अगस्त 1888 को की। आपके भाई आनंद चंद्र अग्रवाल भी लेखक एवं कवि थे। प्रसिद्ध कवि, नाटककार, असमिया फिल्मकार ज्योति प्रसाद अग्रवाला उनके भतीजे थे। लक्ष्मीनाथ बेजबबरूआ, हेमचंद्र गोस्वामी तथा चंद्र कुमार अग्रवाल को ''आसामी साहित्य की त्रिमूति'' कहा जाता था। चंद्र कुमार जी का जन्म 28 नवम्बर 1867 को ब्राह्म्जन गोहपुर, सोनितपुर जिला आसाम में हुआ तथा मृत्यु 2 मार्च 1938 को गुवाहाटी में हुई। चंद्र कुमार जी ने स्थानीय अखबार अशोमिया का प्रकाशन भी किया था।

जयप्रकाश भारती
बाल साहित्य के प्रणेता

आप बाल साहित्य के ऐसे दिग्गज लेखक और संपादक थे जिन्होंने बच्चो को नैतिक संस्कार देने तथा राष्ट्रीय विचारों की घुट्टी पिलाने के उद्देश्य से लेखन के क्षेत्र में प्रवेश किया था। उन्होंने पूरे 40 साल तक ऐसे बाल साहित्य का सृजन किया, जिससे बच्चे अपने देश, अपनी संस्कृति तथा अपने इतिहास की जानकारी प्राप्त कर सकें। आपका जन्म मेरठ में श्री रघुनाथ प्रसाद अग्रवाल, एडवोकेट के यहां 02 जनवरी 1936 में हुआ। 1965 में जयप्रकाश जी

''साप्ताहिक हिंदुस्तान'' के संपादकी विभाग में आए

हिंदुस्तान टाईम्स ने लोकप्रिय बाल मासिक पुस्तक ''**नंदन**'' का प्रकाशन आरंभ किया, राजेन्द्र अवस्थी जी के बाद जयप्रकाश भारती को इसकी बागडोर सौंप दी गई। **34 साल तक उन्होंने ''नंदन'' का कुशल संपादन किया**, जिसने देश-विदेश में लोकप्रियता प्राप्त की। आपने बाल साहित्य के क्षेत्र में दर्जनों पुस्तकों का सृजन किया। उन्हें ''सोवियत लैंड नेहरू'' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। **वे एकमात्र लेखक थे जिन्हें ''हैंड एंडरसन सम्मान'' से अलंकृत किया गया।** भारतेंदु हरिशचंद्र राष्ट्रीय पुरस्कार, उत्तर प्रदेश बाल साहित्य पुरस्कार जैसे दर्जनों सम्मानों से सम्मानित किया गया।

भारती जी पहले संपादक थे जिन्होंने बड़े-बड़े राजनेताओं तक से व साहित्यकारों से बच्चों के लिये कथाएं-संस्मरण लिखवाए। भारती जी की धर्मपत्नी ''**श्रीमती स्नेह अग्रवाल**'' भी जानी-पहचानी लेखिका थीं, जिनकी अनेक पुस्तकें पुरस्कृत की गईं। भारती जी का अग्रोहाधाम से विशेष लगाव था। एक बार उन्होंने 'नंदन' में महाराजा अग्रसेन जी का रंगीन चित्र तथा 'एक रूपया-एक ईंट' शीर्षक की कहानी प्रकाशित की। वे एक बार बालेश्वर जी अग्रवाल, डा. वेद प्रताप वैदिक जी, प्रो.देवेन्द्र स्वरूप अग्रवाल (पांचजन्य), श्री ब्रजनारायण अग्रवाल, श्री राजेन्द्र अग्रवाल (आकाशवाणी के समाचार वाचक), प्रसिद्ध पत्रकार श्री शिवकुमार गोयल आदि के साथ अग्रोहा गये। उन्होंने रामेश्वर दास जी गुप्त से अग्रोहाधाम की प्रशंसा की। 5 फरवरी 2005 को आपका देहांत हुआ।

अग्रोहाधाम, अप्रैल-2005

कैलाश चंद्र अग्रवाल
हिंदी के लोकप्रिय गीतकार

आपका जन्म मुरादाबाद में 18 दिसम्बर 1926 को रामेश्वर सरन सर्राफ जी के घर पर हुआ। आपने पहले 10 वर्ष तक वकालात की लेकिन मन नहीं लगा और वकालात छोड़ दी। आप अपना सर्राफा का व्यवसाय देखने लगे और यहीं पर लक्ष्मी व सरस्वती की समान साधना प्रारंभ की। वे मूलत: गीतकार थे। उन्होंने 600 से अधिक गीतों और 400 से अधिक मुक्तकों की रचना की। उनके छ: गीत संग्रह, एक मुक्तक संग्रह तथा इसके अतिरिक्त ''कैलाशचंद्र अग्रवाल-जीवन और काव्य सृष्टि'' शीर्षक से आलोचनात्मक पुस्तक प्रकाशित हुई। इन पर दो शोध प्रबंध रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली में प्रस्तुत हुए हैं। एक विद्यार्थी ने ''कैलाशचंद्र अग्रवाल का गीतिकाव्य'' शीर्षक से सन् 1995 में अपनी पी.एच.डी. पूर्ण की।

श्री कैलाशचंद्र अग्रवाल मुरादाबाद जनपद के ''पहले साहित्यकार'' थे, जिन पर स्वतंत्र रूप से शोध कार्य संपन्न हुआ। सहारनपुर की दधीचि हिंदी साहित्य परिषद ने उनके गीत संग्रह ''आस्था के झरोखे से'' को वर्ष 1984 का सर्वश्रेष्ठ गीत संग्रह मानते हुए 1985 में उन्हें ''**कवि रत्न**'' और 2500/- देकर सम्मानित किया। 1993 में चांदपुर के साहित्य कला मंच से

आपको सम्मानित किया गया। लगभग 35-40 वर्षों से उनके गीत आकाशवाणी के लखनऊ तथा रामपुर केंद्र द्वारा प्रसारित होते रहे हैं। अनेक पत्रिकाओं में आपके लेख छपे। मूलत: वे प्रणय के गायक थे। छंद शास्त्र की दृष्टि से उनका काव्य पूर्णत: निर्दोष है। उन्होंने अग्रवाल समाज की सेवा खूब की। आपका देहांत दिसम्बर 1996 के अंतिम सप्ताह में हुआ।

भागीरथ कानोडिया - जन्म 25 जनवरी 1895 मुकुन्दगढ़, निधन-29 अक्टूबर 1979, प्रसिद्ध रचनाएं- बहता पानी निर्मला (कहावतों की कहानियां), राजस्थानी कहावत कोष, लोक कथाओं पर शोध कार्य। मुकुन्दगढ़ में पुस्तकालय की स्थापना, कलकत्ता-शांति निकेतन में हिंदी भवन एवं वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना में सहायक। सस्ता साहित्य मंडल के सभापति। विधवा विवाह समर्थन के कारण जाति बहिष्कृत किये गये। 1943 के बंगाल अकाल में राहत कार्यों का संचालन।

त्रिलोक गोयल, 'जीजा' अजमेर - अग्रवाल समाज से संबंधित अनेक नाटक, गीत, कविताएं आदि प्रचुर मात्रा में प्रकाशित, आकाशवाणी जयपुर के गायक, राष्ट्रीय एवं सामाजिक विषयों की अनेक कहानियां एवं कविताएं प्रकाशित। अग्रसेन की कथा सहित 15-20 पुस्तकें प्रकाशित। महाराजा अग्रसेन जी की प्रसिद्ध आरती आपके द्वारा ही लिखी गई है।

श्रीगोपाल नेवटिया - 15 साल की उम्र में ''श्री स्वदेश'' मासिक पत्र प्रकाशित किया। सन् 1923 में इस पत्र को अंग्रेजों ने बंद करा दिया। आपने बंबई हिंदी मासिक ''नवनीत'' निकाला, स्वंय संपादन किया। व्यापारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय स्थित तथा धार्मिक विषयों पर अनेक लेख लिखे।

मतादीन भगोरिया - जन्म 9 अप्रेल 1912, चिढ़वा, सन् 1948 में नवभारत टाईम्स के प्रधान संपादक, बाद में मुंबई, कलकत्ता और दिल्ली तीनों स्थानों से प्रधान संपादक रहे। साहित्य की विभिन्न विधाओं में आपने 42 पुस्तकें लिखीं।

ज्वालाप्रसाद फतेहचंदका - फतेहपुर-शेखावटी की स्थानीय बोली में रचित दोहे, लवणी प्रथा ''मंगल बधाई'' आज भी राम और कृष्ण जन्मोत्सव पर गायी जाती है।

गोपाल दिनमणि - प्रसिद्ध रचनाएं - राजिया काव्य, फतेहपुर परिचय।

बहुमुखी प्रतिभा संपन्न-विधिश्री पवन चौधरी ''मनमौजी''

स्व. विधिश्री पवन चौधरी नामक व्यक्तित्व की जितनी शाखाएं हैं, वह एक व्यक्ति में मिलना मुश्किल है। यह भी एक चमत्कार है कि एक अकेला व्यक्ति क्या-क्या हो सकता है। वे पेशे से वकील, समर्थ लेखक और समर्पित अध्यापक भी थे, तो उपन्यासकार, स्तंभ लेखक भी थे, लघुकथाएं लिखते थे, संस्मरण लिखते थे, साक्षात्कार करते थे और कानून का विश्लेषण करते थे। नि:संदेह आपकी विद्वता इस देश में अलग ही पहचान रखती थी। आप कानून के ज्ञाता थे।

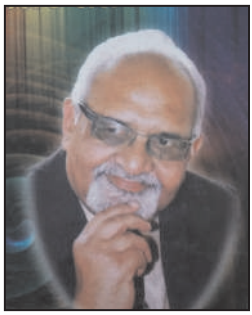

मनमौजी को **अजूबा साहित्यकार** कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। इनकी साहित्यिक कृतियों के शीर्षक सारगर्भित और विषयवस्तु के अनुकूल माने गए हैं। लगभग सभी पुस्तकों का प्रकाशन मनमौजी ने स्वंय किया है। आपके साहित्य पर कुरूक्षेत्र एवं रोहतक विश्वविद्यालयों में **06 एमफिल व 02 पीएचडी** हो चुकी हैं। आपके लिखित साहित्य का मूल्यांकन बड़े-बड़े साहित्यकार कर रहे हैं, उन पर शोध किया जा रहा है। आपकी पुस्तक ''70 सतरंगी साल'' पूर्ण दस्तावेज है मनमौजी को जानने व समझने का, शुरू से लेकर आखिर तक मानो जैसे फिल्म चल रही हो। एक दिन कोई फिल्मकार इस पर फिल्म भी बना दे तो कोई आश्चर्य नहीं।

उल्लेखनीय है कि मनमौजी की सभी पुस्तकों की समीक्षाएं-सुपठित, सुप्रसिद्ध और सुप्रतिष्ठित समाचार पत्रों/पत्रिकाओं, आकाशवाणी व दूरदर्शन सहित प्रकाशित व प्रसाारित हुई हैं। कई पुस्तकें राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर पर पुरस्कृत भी हुई हैं तथा विश्वविद्यालयों में शोध प्रबंधकों का सफल-प्रबल सबब भी बनी हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि इन्होंने साहित्य को अपना अमूल्य योगदान दिया है लेकिन अपने वकालत के प्रोफेशन के साथ भी पूरा इंसाफ किया है। विधि, न्यायालय एवं न्यायिक व्यवस्था संबंधी विषयों पर तो आपकी लेखनी ने वर्चस्व स्थापित किया है।

इनके अब तक 37 से अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। पत्रकारिता, निबंध, उपन्यास, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, डायरी, लघुकथा, समीक्षा, सूक्ति तथा यात्रावृत्त पर आपने लिखा और खूब लिखा। देश की नामी-गिरामी राष्ट्रीय व राज्य स्तर की संस्थाओं ने आपको अनेक बार सम्मानित व पुरस्कृत किया है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि पवन चौधरी ने अपनी मेहनत से सुप्रीम कोर्ट में ''**एडवोकेट ऑन रिकार्ड** '' का दर्जा जिस उम्र में हॉसिल किया।

ऐसे यशस्वी मनीषी, हरियाणा के लाल, वैश्य समाज की शान, विधिश्री पवन चौधरी मनमौजी का जन्म ''**गोयल**'' **गोत्री** अग्रवाल परिवार में 14 अक्टूबर 1941 को कैथल में हुआ था। साहित्य को सर्वश्रेष्ठ और विधि को सर्वोपरि मानने वाले पवन चौधरी हिंदी के दुर्लभ साहित्यकार हैं जिनकी कोई परंपरा नहीं मिलती। आपने दिल्ली से प्रकाशित ''नवभारत टाइम्स'' में पत्रकारिता से कैरियर प्रारंभ किया और कानून, न्याय, न्यायालय, निर्णय और विधि की सरलताओं व विसंगतियों को समझते-समझते, लिखते-लिखाते स्वंय अधिवक्ता बन गए। सन् 2018 में आपका देहावसान हुआ।

अनेक विद्वानों, साहित्यकारों, लेखकों, संस्थाओं, न्यायविदों आदि ने जो आपके बारे में अनेक सम्मतियां लिखी हैं वे आपके व्यक्तित्व व कृतित्व का दर्पण हैं। श्री रमेशचंद लाहोटी (पूर्व प्रधान न्यायाधीश) लिखते हैं कि-उन का मन उसी ओर प्रवाहित होता है जहां मौज होती है और वे सदा मौज में रहते हैं-सदैव संतुष्ट, आनंदित, प्रफुल्लित। मनमौजी - यही तो उपाधि दी है श्रेष्ठ साहित्यकार अज्ञेय जी ने। राधारानी (जिला जज)-उनका ज्ञान जितना विस्तृत है उससे

कहीं अधिक उनका अनुभव है। यही अनूठा संगम उनकी जीवन शैली को असाधारण व विषिष्ट बनाता है। डा. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' जी ने इनको कानून का कबीर की उपाधि दी। अज्ञेय जी भी सार्वजनिक रूप से यह कह चुके हैं कि पवन चौधरी कानून, ज्ञान और मानवतावादी विचारधारा का दुर्लभ मिश्रण है। यह भी सच है कि ''**मनमौजी-सूक्तियों**'' ने भी काफी लोकप्रियता पाई है। आप केंद्रीय सरकार के नोटरी पब्लिक, भारतीय विधि संस्थान एवं बार ऐसोसिएशन ऑफ इंडिया के आजीवन सदस्य तथा केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य रहे थे। (यह मेरा सौभाग्य रहा कि स्व. मनमौजी जी से मेरा आत्मीय संबंध रहा। - लेखक)

पुरस्कार सम्मान

निबंध पुरस्कार-दिल्ली विश्वविद्यालय, नेताजी सुभाषचंद्र बोस पुरस्कार व डा.राधाकृष्णनन् स्मृति पुरस्कार- राजघानी स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक संघ, साहित्यिक कृति पुरस्कार-हिंदी अकादमी,दिल्ली, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'पुरस्कार -अ.भा.स्वतंत्र लेखक संघ,दिल्ली, साहित्यिक कृति पुरस्कार-हरियाणा साहित्य अकादमी, हरिशचंद्र राष्ट्रीय पुरस्कार-प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मत्रालय, निबंध पुरस्कार-दिल्ली पुलिस, लाला गीताीराम-साहित्यकार सम्मान-साहित्य सभा,कैथल, राष्ट्रीय हिंदी सहस्राब्दी सम्मान-विश्व हिंदी सम्मेलन,पटना, साहित्यकार सम्मान-हिंदी अकादमी दिल्ली, लाल बहादुर शास्त्री मौलिक रचना पुरस्कार-रेल मंत्रालय, साहित्कार सम्मान-अग्रवाल एड्वोकेट्स फोरम,दिल्ली, विधिक मौलिक पुस्तक पुरस्कार-केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्रालय, साहित्यिक कृति पुरस्कार व विद्यासागर (डी लिट-मानद उपाधि)-भारतीय साहित्यकार संसद,समस्तीपुर, युगीन सम्मान-युगीन पत्रिका, विधिश्री (मानद उपाधि) विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहबाद, कलम कलाधर-अ.भा.साहित्य संगम, उदयपुर।

डा. मोहन लाल गुप्ता

इतिहासकार, व्यंग्यकार, कहानीकार, उपन्यासकार एवं नाट्य लेखक

आप आधुनिका युग के बहुचर्चित एवं प्रशंसित लेखकों में अलग पहचान रखते हैं। आपकी लेखनी से अभी तक दर्जनों पुस्तकों का सृजन हो चुका है, जिनमें अधिकांश पुस्तकों के तो अनेक संस्करण प्रकाशित हुए हैं। डा. मोहन लाल गुप्ता हिंदी साहित्य के जाने-माने व्यंग्यकार, कहानीकार, उपन्यासकार एवं नाट्य लेखक हैं। यही कारण है कि उनकी अनेक रचनाएं मराठी, तेलगु आदि भाषाओं में अनुदित एवं प्रकाशित हुई हैं। ''**इतिहास**'' के क्षेत्र में उनका योगदान उन्हें वर्तमान युग के इतिहासकारों में विशिष्ट स्थान देता है। वे ऐसे **पहले लेखक** हैं, जिन्होंने राजस्थान के सभी जिलों के राजनैतिक इतिहास के साथ-साथ सांस्कृतिक इतिहास को सात खंडों में लिखा तथा उसे विस्मृत होने से बचाया। आपके इस कार्य को जबरदस्त प्रसिद्धि मिली। इसी कारण इन इतिहास से संबंधित ग्रंथों के अनेक संस्करण

प्रकाशित हो चुके हैं तथा लगातार पुनर्मुद्रित हो रहे हैं। आपने ''**भारत के इतिहास**'' का तीन खंडों में पुर्लेखन किया तथा वे गहन गंभीर तथ्य जो विभिन्न कारणों से इतिहासकारों द्वारा जानबूझ कर, तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किए जाते रहे थे, उन्हें पूरी सच्चाई के साथ लेखनीबद्ध किया एवं भारतीय इतिहास को उसके समग्र रूप में प्रस्तुत किया। भारत के विश्वविद्यालयों में आपके इतिहास के ग्रंथ विशेष रूप से पसंद किये जा रहे हैं।

राष्ट्रीय ऐतिहासिक चरित्रों यथा - अब्दुर्रहीम खानखाना, क्रांतिकारी केसरी बारहठ, महाराणा प्रताप, महाराजा सूरजमल, सवाई जयसिंह, भैरूसिंह शेखावत, सरदार पटेल, राव जोधा आदि पर डा. गुप्ता द्वारा लिखी गई पुस्तकों ने भारत की युवा पीढ़ी को प्रेरणादायी इतिहास नायकों को जानने का अवसर दिया। प्रखर राष्ट्रवादी चिंतन, मखमली शब्दावली और चुटीली भाषा डा. मोहनलाल गुप्ता द्वारा रचित साहित्य एवं इतिहास को गरिमापूर्ण बनाती है। यही कारण है कि उन्हें महाराणा मेवाड़ फांउडेशन से लेकर मारवाड़ी साहित्य सम्मेलन, मुंबई, जवाहर कला केंद्र जयपुर, तथा अनेकानेक संस्थाओं द्वारा राष्ट्रीय महत्व के पुरस्कार दिये गए।

पुरस्कार - जोधपुर गौरव अलंकरण-भारतीय लोक प्रशासन, महाराणा कुंभा सम्मान-महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन, अर्वाड ऑफ एक्सीलेंस सम्मान-पब्लिक रिलेशंस सोसायटी ऑफ इंडिया, फादर युसुफ हुसैन सूचना एवं जनसंर्क सम्मान-मरूधरा पत्रकार संघ, सर्वश्रेष्ठ लघुनाटक पुरस्कार-जवाहर कला केंद्र,जयपुर, घनश्यामदास सर्राफ पुरस्कार-मारवाडी सम्मेलन मुंबई, राष्ट्रीय हिंदी सेवा सम्मान, कथा सम्मान आदि।

प्रकाशन - 77 मुद्रित पुस्तकें एवं 150 ई-बुक्स विश्वभर के इलैक्ट्रोनिक प्लेटफार्म पर उपलब्ध, देशभर के पत्र-पत्रिकाओं में 1000 से अधिक आलेखों का प्रकाशन। Stories of Hindu Dharma - डेढ़ लाख लोग यू ट्यूब चैनलों से जुड़े हुए हैं। **प्रसारण** - विभिन्न आकाशवाणी केंद्रों से रेडियो रिपोर्ट वार्ताएं, परिचर्चाएं। आकाशवाणी केंद्रों से हवामहल में लघु नाटक एवं हास्य-नाटिकाएं। साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा इंडियन राइट्स हूजहू (भारतीय लेखक कोश) में परिचय प्रकाशित।

अग्रसेन जयंती पर्व है, अग्रवालों को गर्व है।

अग्रवाल समाज की अलंकृत विभूतियां

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त ''सर्वोच्च नागरिक सम्मान'' में प्रथम स्थान ''**भारत रत्न**'' द्वितीय स्थान ''**पद्म विभूषण**'' तृतीय स्थान ''**पद्म भूषण**'' तथा चतुर्थ स्थान ''**पद्म श्री**'' का है। महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा प्रदत्त इन सभी नागरिक सम्मानों को ''अग्रवाल समाज की महान् विभूतियों'' ने समय-समय पर अपने महत्वपूर्ण व उल्लेखनीय कार्यों के फलस्वरूप प्राप्त किया है। सम्मान प्राप्त अग्र सपूतों ने राष्ट्र के विकास में तथा देश सेवा में अपना अतुलनीय योगदान देकर जहां भारत माता का नाम संसार में रोशन किया, वहीं अग्रवाल समाज का सिर सम्मान के साथ ऊंचा किया है। समाज गौरवान्वित हुआ है। समाज की इन महान् विभूतियों से प्रेरणा लेकर हम भी समाज का गौरव बनाए रखेंगे।

क्र.सं	वर्ष	नाम	क्षेत्र

भारत रत्न

1.	1955	श्री भगवान दास	साहित्य शिक्षा

पद्म विभूषण

1.	1956	श्रीमती जानकी देवी बजाज	मध्यप्रदेश	समाज सेवा
2.	1957	श्री प्रकाश	आंध्रप्रदेश	जन सेवा
3.	1967	अक्षय कुमार जैन	दिल्ली	साहित्य शिक्षा
4.	1980	रायकृष्णदास	उत्तर प्रदेश	जनसेवा
5.	1999	डा धर्मवीर	दिल्ली	जनसेवा
6.	2005	डा. बालकृष्ण गोयल	महाराष्ट्र	औषधि
7.	2008	श्री लक्ष्मी निवास मित्तल	राजस्थान	उद्योग
8.	2009	डा. पुरूषोत्तम लाल जिंदल	उत्तर प्रदेश	औषधि चिकित्सा
9.	2011	स्व.श्री एल.सी.जैन	दिल्ली	जन सेवा

पद्म भूषण

1	1954	श्री राधाकृष्ण गुप्ता	दिल्ली	जनसेवा
2	1956	डा. कंवर सेन	राजस्थाधन	प्रशासनिक सेवा
3	1962	श्री सीताराम सेकसरिया	आसाम	समाज सेवा
4	1968	श्री गूजरमल मोदी	उत्तर प्रदेश	उद्योग एवं व्यापार
5	1969	श्री केशव प्रसाद गोयनका	प.बंगाल	उद्योग एवं व्यापार
6	1970	लाला हंसराज गुप्ता	हरियाणा	समाज सेवा
7	1970	श्री भरत राम	दिल्ली	उद्योग
8	1971	श्री मंगतूराम जयपुरिया	दिल्ली	समाज सेवा
9	1972	डा. जयकृष्णा	उत्तर प्रदेश	प्रशासनिक सेवा
10	1974	डा. मोती चंद्र	महाराष्ट्र	साहित्य – कला

(गोत्र सिंघल, पिता कृष्णचंद्र दादा गोकुलचंद, आप भारतेंदु हरिशचंद्र के भाई गोकुलचंद के परिवार से हैं।)

11	1983	डा. स्वराजपाल	यू. के.	समाज सेवा
12	1988	श्री श्रेयांश प्रसाद जैन	महाराष्ट्र	समाज सेवा
13	1989	श्री गिरीलाल जैन	दिल्ली	साहित्य शिक्षा
14	1990	डा.बालकृष्ण गोयल	महाराष्ट्र	औषधि विज्ञान
15	1998	डा. श्रीमती हेमलता गुप्ता	दिल्ली	औषधि विज्ञान
16	2000	श्री अनिल कुमार अग्रवाल	दिल्ली	अन्य
17	2000	डा. रामनारायण अग्रवाल	आंध्रप्रदेश इंजीनियरी	विज्ञान व
18	2001	श्री राहुल बजाज	महाराष्ट्र	उद्योग एवं व्यापार
19	2001	श्री बद्री नारायाण रामूलाल बारवाले	महाराष्ट्र	उद्योग एवं व्यापार
20	2003	श्री हरिशंकर सिंघानिया	दिल्ली	उद्योग एवं व्यापार
21	2003	डा. पुरूषोत्तम लाल जिंदल	उत्तर प्रदेश	औषधि चिकित्सा
22	2004	श्री विष्णु प्रभाकर	दिल्ली	साहित्य व शिक्षा
23	2006	श्री दिनेश नंदिनी डालमिया	दिल्ली	साहित्य व शिक्षा
24	2006	श्री जयवीर अग्रवाल	तमिलनाडू	औषधि चिकित्सा
25	2006	डा. लोकेश चंद्र	दिल्ली	साहित्य व शिक्षा

26	2006	श्री विजयपत सिंघानिया	महाराष्ट्र	(खेल) हवाई उड़ान
27	2006	श्रीमती देवकी जैन	कर्नाटक	समाज सेवा
28	2006	श्री शशि भूषण	दिल्ली	सार्वजनिक उपक्रम
29	2007	श्री सुनील भारती मित्तल	दिल्ली	उद्योग एवं व्यापार
30	2008	श्री सुरेश कुमार नेवटिया	दिल्ली	उद्योग व सामाजिक कार्य
31	2009	श्री शेखर गुप्ता	दिल्ली	पत्रकारिता
32	2010	डा. सत्यपाल अग्रवाल	कर्नाटक	चिकित्सा–विज्ञान
33	2012	सत्य नारायण गोयनका	महाराष्ट्र	समाज सेवा
34	2015	डा. अंबरीश मित्तल	दिल्ली	चिकित्सा–विज्ञान
35	2016	इंदु जैन	दिल्ली	उद्योग एवं व्यापार
36.	2019	दर्शन लाल जैन	हरियाणा	समाज सेवा

पद्म श्री

1.	1956	डा. मोहन लाल (नैत्र चिकित्सक)	उत्तर प्रदेश	चिकित्सा
2	1956	डा. एम.सी.मोदी	कर्नाटक	चिकित्सा
3.	1959	डा. आत्माराम	प.बंगाल	औद्योगिक विज्ञान
4.	1963	श्री बृजकिशन चांदीवाला	दिल्ली	समाज सेवा
5	1963	श्री सुमंत किशोर जैन	उत्तर प्रदेश	जन सेवा
6	1965	श्री हनुमानबक्ष कन्नोई	राजस्थान	औद्योगिक व्यवसाय
7	1966	सुमित्रा भरतराम	दिल्ली	कला
8	1966	श्री अरूण रामावतार पोद्दार	महाराष्ट्र	साहित्य शिक्षा
9	1968	श्री अमरनाथ गुप्ता	दिल्ली	समाज सेवा
10	1969	श्री कल्याण सिंह गुप्ता	दिल्ली	समाज सेवा
11	1969	श्री श्यामलाल गुप्ता	दिल्ली	साहित्य शिक्षा
12	1969	श्री रामलाल राजगढ़िया	दिल्ली	औद्योगिक व्यवसाय
13	1970	श्री फूलचंद देवरालिया अग्रवाल	प.बंगाल	औद्योगिक व्यवसाय
14	1970	श्री घनश्याम दास गोयल	कर्नाटक	समाज सेवा
15	1971	श्री देवी सहाय जिंदल	दिल्ली	औद्योगिक व्यवसाय
16	1972	श्री बद्री प्रसाद बाजोरिया	उत्तर प्रदेश	समाज सेवा

17	1972	श्री प्रभुदयाल डाबरीवाला	प.बंगाल	समाज सेवा
18	1972	श्री ईश्वर चंद्र गुप्ता	चंडीगढ़	जन सेवा
19	1972	श्रीमती सुरेन्द्र बंशीधर गुप्ता	दिल्ली	समाज सेवा
20	1973	श्रीमती सुलोचना मोहन लाल मोदी	महाराष्ट्र	समाज सेवा
21	1973	डा. गोविंद स्वरूप (मित्तल)	कर्नाटक	विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
22	1974	श्री इंद्र कुमार गुप्ता	दिल्ली	जन सेवा
23	1974	डा. जोगेन्द्र लाल गुप्ता	दिल्ली	औषधि
24	1975	श्री सूरजमल अग्रवाल	दिल्ली	समाज सेवा
25	1975	श्री बिशन स्वरूप बंसल	उत्तराखंड	जन सेवा
26	1976	श्री ओमप्रकाश मित्तल	दिल्ली	जन सेवा
27	1976	सेठ किशनदास (रोहतक निवासी-अग्रवाल)	हरियाणा	जन सेवा
28	1977	श्री श्रीराम भरतिया	उत्तर प्रदेश	समाज सेवा
29	1981	हरिकृष्ण जैन	दिल्ली	समाज सेवा
30	1982	डा. निरंजन दास अग्रवाल	पंजाब	औषधि
31	1982	श्री विरेन्द्र प्रभाकर	दिल्ली	कला
32	1982	श्री गोपाल कृष्ण सर्राफ	प. बंगाल	औषध
33	1983	डा. रघुवीर शरण मित्र	उत्तर प्रदेश	साहित्य शिक्षा
34	1984	डा. बालकृष्ण गोयल	महाराष्ट्र	औषध
35	1985	श्री ओम बी. अग्रवाल	प.बंगाल	क्रीड़ा
36	1985	श्री प्रभुलाल गर्ग-काका हाथरसी	उ.प्रदेश	साहित्य शिक्षा
37	1986	श्री अनिल कुमार अग्रवाल	दिल्ली	शिक्षा (पर्यावरण)
38	1987	डा. सरोज कुमार गुप्ता	प.बंगाल	औषधि
39	1990	श्री रामनारायाण अग्रवाल	आंध्रप्रदेश	विज्ञान इंजीनियरिंग
40	1990	श्री जगदीश चंद्र मित्तल	आंध्रप्रदेश	कला
41	1991	श्री भारत भूषण	उ.प्रदेश	साहित्य शिक्षा
42	1991	डा. महेन्द्र कुमार गोयल	उ.प्रदेश	औषधि
43	1991	प्रो. नरेन्द्र कुमार गुप्ता	दिल्ली	विज्ञान इंजीनियरिंग
44	1991	श्री बिमल प्रसाद जैन	दिल्ली	समाज सेवा
45	1991	श्रीमती शीला झुनझुनवाला	दिल्ली	साहित्य शिक्षा
46	1992	श्री शांति लाल जैन	दिल्ली	अन्य

47	1999	श्री हर्ष वर्धन नेवटिया	प. बंगाल	औद्योगिक व्यवसाय
48	2000	श्री सत्यवनारायण गौरीसरिया	यू. के.	जनसेवा
49	2001	डा. प्रेम शंकर गोयल	प. बंगाल	विज्ञान इंजीनियरिंग
50	2002	श्री अशोक झुनझुनवाला	तमिलनाडू	विज्ञान इंजीनियरिंग
51	2002	श्री ज्ञानचंद जैन	दिल्ली	साहित्य शिक्षा
52	2003	प्रो. रामगोपाल बजाज	आंध्रप्रदेश	कला
53	2003	श्री ओमप्रकाश जैन	दिल्ली	कला
54	2003	डा. जयपाल मित्तल	महाराष्ट्र	विज्ञान–इंजीनियरिंग
55	2003	श्री नेमी चंद जैन	दिल्ली	कला
56	2004	प्रो. अनिल कुमार गुप्ता	गुजरात	साहित्य व शिक्षा
57	2004	डा. रमेश चंद्र शाह	मध्यप्रदेश	साहित्य व शिक्षा
58	2004	सुनीता जैन (मित्तल)	दिल्ली	साहित्य व शिक्षा
59	2005	श्रीमती शोभना भरतीया	दिल्ली	साहित्य व शिक्षा
60	2006	श्री हर्ष कुमार गुप्ता	आंध्रप्रदेश	विज्ञान
61	2006	प्रो. नरेन्द्र कुमार गुप्ता (वैज्ञानिक)	कर्नाटक	विज्ञान–इंजीनियरिंग
62	2007	श्री राजेन्द्र गुप्ता	पंजाब	उद्योग
63	2007	डा. शिव भगवान टीबड़ेवाल	यू.के.	चिकित्सा
64	2007	डा. सुशीला गुप्ता	दिल्ली	सामाजिक कार्य
65	2007	डा. नर्मदा प्रसाद गुप्ता	दिल्ली	चिकित्सा
66	2008	डा. बीना अग्रवाल	दिल्ली	साहित्य व शिक्षा
67	2008	श्री कैलाश चंद अग्रवाल मानव	राजस्थान	सामाजिक कार्य
68	2008	डा. रमेश कुमार जैन	उत्तराखंड	चिकित्सा
69	2009	डा. अशोक कुमार गुप्ता	महाराष्ट्र	औषधि
70	2010	डा. के. के. अग्रवाल	दिल्ली	औषधि
71	2010	डा.लक्ष्मी चंद गुप्ता	दिल्ली	चिकित्सा
72	2011	डा. ओम प्रकाश अग्रवाल	उ.प्रदेश	पुरातत्व संरक्षण
73	2011	श्री मामराज अग्रवाल	प.बंगाल	समाज सेवा
74	2012	डा. लोकेश कुमार सिंघल	पंजाब	विज्ञान एवं इंजीनियरिंग
75	2012	स्व.. मंजू भरतराम	दिल्ली	समाज सेवा
76	2012	डा. स्वाति पीरामल	महाराष्ट्र	औषधि
77	2013	डा.मणेन्द्र अग्रवाल	उ.प्रदेश	विज्ञान एवं इंजीनियरिंग

78	2013	डा. सुदर्शन के. अग्रवाल	दिल्ली	चिकित्सा
79	2013	डा.विश्व कुमार गुप्ता	दिल्ली	चिकित्सा
80	2013	श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल	झारखंड	एवरेस्ट विजय
81	2014	प्रो.डा.पवनराज गोयल	हरियाणा	चिकित्सा
82	2014	प्रो.आमोद गुप्ता	हरियाणा	चिकित्सा
83	2015	बिमला पौद्दार	उत्तर प्रदेश	समाज सेवा
84	2017	अनन्त अग्रवाल	एनआरआई, यूएसए	साहित्य एवं शिक्षा
85	2018	अरविंद गुप्ता	महाराष्ट्र	साहित्य और शिक्षा
86	2020	जयप्रकाश अग्रवाल	दिल्ली	व्यापार एवं उद्योग
87	2020	भरत गोयनका	कर्नाटक	व्यापार एवं उद्योग
88	2020	सुश्री मीनाक्षी जैन	दिल्ली	साहित्य एवं शिक्षा
		(आप टाईम्स ऑफ इंडिया के पूर्व संपादक श्री गिरिलाल जैन की पुत्री हैं।)		
89.	2021	जयभगवान गोयल	हरियाणा	साहित्य एवं शिक्षा
90.	2021	डा. रतन लाल मित्तल	पंजाब	चिकित्सा
91.	1973	बलवंत गार्गी	चंडीगढ़	साहित्य एवं शिक्षा

ये अग्रवाल नहीं हैं – इन वैश्य विभूतियों पर भी डाक टिकट प्रकाशित किया गया है।

भूलवश हम इन्हें अग्रवाल मान लेते हैं। ये वैश्य समुदाय से हैं, सभी वैश्य (गुप्ता या गुप्त) अग्रवाल नहीं होते।

1. मैथिलीशरण गुप्त – गहोई वैश्य ।
2. सियारामशरण गुप्त – मैथिलीशरण गुप्त के अनुज, गहोई वैश्य ।
3. जयशंकर प्रसाद गुप्त – कान्यकुब्ज हलवाई (मोदनवाल – यससेनी वैश्य) जन्म–वाराणसी, सुंघनी साहूदेवीप्रसाद जी हलवाई वैश्य के यहां हुआ। 1900 में हलवाई युवक दल संगठित किया।
4. स्व.श्री चंद्रभानु गुप्त – भू.पू. मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश। माहौर वैश्य – अलीगढ़।
5. श्री श्याम लाल गुप्त – पार्षद जिन्होंने विश्व विजयी तिरंगा प्यारा नामक राष्ट्रगीत लिखा था, आप दौसर वैश्य हैं, आपने दौसर वैश्य महासभा, कानपुर की स्थापना की ।
6. महात्माय गांधी – गुजरात के म्योढ़ वैश्य (मोढ)।
7. भामाशाह – कावड़या वैश्य (ओसवाल–जैन), आजकल दानवीर को भामाशाह कहते हैं।
8. आरती गुप्ता (शाह) – इन पर भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया।

अग्रवाल समाज की विभूतियों पर भारत सरकार द्वारा प्रकाशित डाक टिकट

क्र.सं.	नाम	जन्म	अवसान	कीमत	टिकट जारी किया	प्रसारित संख्या
1.	लाला लाजपत राय	02.10.1865	16.11.1928	15 पैसे	02.10.1965	20 लाख
2.	डा. भगवान दास	12.01.1869	18.09.1958	20 पैसे	20.01.1969	30 लाख
3.	सेठ जमना लाल बजाज	04.11.1889	11.02.1942	20 पैसे	04.11.1970	30 लाख
4.	काशी विद्या पीठ स्वर्ण जयंती के अवसर पर जारी स्थापित 1921 – स्वर्ण जयंती 1971			20 पैसे	10.02.1971	30 लाख
5.	भारतेंदु बाबू हरीशचंद्र	09.09.1850	05.01.1885	25 पैसे	09.09.1976	30 लाख
6.	महाराजा अग्रसेन	एकम, प्रथम नवरात्रा		25 पैसे	24.09.1976	80 लाख
7.	सर गंगा राम	13.04.1851	10.07.1927	25 पैसे	04.09.1977	30 लाख
8.	डा. राम मनोहर लोहिया	23.03.1910	12.10.1967	25 पैसे	12.10.1977	30 लाख
9.	डा. राम मनोहर लोहिया	पुन: प्रकाशित		2 रूपये	23.03.1997	04 लाख
10.	श्री मोहन लाल सुखाड़िया	31.07.1916	02.02.1982	60 पैसे	02.02.1988	10 लाख
11.	राष्ट्ररत्न बाबू शिवप्रसाद गुप्त	28.06.1883	24.04.1944	60 पैसे	28.06.1988	10 लाख
12.	श्री श्री प्रकाश	03.08.1890	23.06.1971.	2 रूपये	03.08.1991	06 लाख
13	श्री हनुमान प्रसाद पौद्दार	17.09.1892	22.03.1971	1 रूपया	10.09.1992	06 लाख
14.	डा. देवकी नंदन जटिया	1930	2000	15 रूपये	11.12.2000	50 हजार
15.	श्री बाबू गुलाब राय	17.01.1888	13.04.1963	5 रूपये	22.06.2002	04 लाख
16.	श्री नरेन्द्र मोहन	10.10.1934	28.09.2002	5 रूपये	14.10.2003	04 लाख
17	डा. इन्द्र चंद शास्त्री	27.05.1912	03.11.1986	5 रूपये	27.05.2004	04 लाख
18.	श्री ज्योति प्रसाद अग्रवाला	17.06.1903	17.01.1951	5 रूपये	17.06.2004	04 लाख
19.	सर पदमपत सिंघानिया	03.02.1905	18.01.1979	5 रूपये	03.02.2005	06 लाख
20.	श्री रामचरण अग्रवाल	02.12.1919	25.07.1977	5 रूपये	25.07.2009	04 लाख
21.	श्रीमती दिनेश नंदिनी डालमिया	16.2.1928	25.10.2007	5 रूपये	11.10.2009	04 लाख
22.	श्री गौरीशंकर डालमिया	12.11.1910	16.06.1988	5 रूपये	12.11.2009	04 लाख
23.	श्री कमलापत सिंघानिया	07.11.1884	31.05.1937	5 रूपये	01.12.2010	04 लाख
24.	श्री लक्ष्मीपत सिंघानिया	23.11.1910	1976	5 रूपये	15.11.2010	13 लाख
25	श्री देशबंधु गुप्ता	1938		5 रूपये	14.06.2010	03 लाख
26	श्री पूर्ण चंद गुप्ता	1912	1986	5 रूपये	02.01.2012	30 लाख
27	श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी	18.12.1906	29.06.1992	5 रूपये	31.07.2012	04 लाख
28	श्री बाबू बनारसीदास	08.07.1912	03.08.1985	5 रूपये	31.12.2013	04.1 लाख
29	अग्रसेन की बावली	29.12.2017		15 रूपये		
30.	इंद्रप्रस्थ गर्ल्स स्कूल, दिल्ली		1904	5 रूपये	8.7.2006	
31.	श्री बलवंत गार्गी	04.12.1916	22.04.2003	10 रूपये	31.05.2017	03 लाख

अग्रवाल समाज और स्वाधीनता संग्राम

(1857-1947) संक्षिप्त में रूपरेखा .....

अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति के लिये स्वतंत्रता संग्राम में **अग्रवाल समाज** का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है, जिसमें अग्र क्रांतिवीरों एवं सत्याग्रहियों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। स्वतंत्रता संग्राम में अग्रवाल समाज के अग्रवीरों का सहयोग निम्न प्रकार से था - आर्थिक रूप से, आश्रयस्थली के रूप में, सशस्त्र क्रांति में भाग लेने, ओजस्वी साहित्य की रचना करके, सत्याग्रह करके और राज्यों में स्थापित प्रजामंडल के माध्यम से।

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम -

1857 की क्रांति के इतिहास में ऐसे अनेक प्रसंग मिलते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि अग्रवाल वैश्य समाज ने क्रांतिकारी देशभक्तों की हर प्रकार से मदद की और प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में इसमें भाग लिया। 1857 की क्रांति में अग्रवाल समाज का योगदान इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में लिखे जाने योग्य है। जिसमें अग्रवीरों ने हर तरह से अपना सक्रिय सहयोग दिया। इस क्रांति में अग्रवाल समाज के लोगों ने नाना साहब पेशवा, तांत्या टोपे, बहादुरशाह जफर, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, बिहार के क्रांतिवीर कुंवर सिंह तथा अन्य क्रांतिकारियों को आर्थिक सहयोग दिया तथा मदद के लिये खुलकर सामने आए। अग्रवीरों ने न केवल भरपूर आर्थिक सहयोग दिया बल्कि कई तो फांसी पर भी चढ़े, जेल गये और गिरफ्तार हुए। सेठ रामजीदास गुड़वाले, राजाराम गुड़वाले लाला मटोलचंद, लाला झमकूमल सिंघल, लाला हुकमचंद और इनके भतीजे फकीरचंद, हंसराम अग्रवाल, संघी परिवार के लाला हरदेव सहाय को अंग्रेजों ने **फांसी** पर चढ़ा दिया, संघी परिवार के ही श्री रामनारायण संघी और लाला हुकमचंद ने अंग्रेजों से जबरदस्त युद्ध किया। हैदराबाद स्थित सुल्तानाबाद की **ब्रिटिश रैजीडेंसी** पर आक्रमण होने के कारण अंग्रेजों ने **सेठ जयगोपाल** के पूरे परिवार को मौत के घाट उतार दिया।

महाराष्ट्र के सतारा जिले के सेवाराम मोर को सतारा और महाबलेश्वर के कैदियों को छुड़ाने, सरकारी खजाना लूटने तथा ब्रिटिश अधिकारियों को मारने के जुर्म में 8 सितम्बर 1857 को फांसी की सजा दी गई। 1857 में विद्रोह के दौरान नाना साहब पेशवा के दूत स्वाधीनता संग्राम में सहायता प्राप्त करने के लिये कई राजा-महाराजाओं, नवाबों आदि से गुप्त रूप से संपर्क कर रहे थे। उस समय उनके पत्रों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने में मारवाड़ी अग्रवाल व्यापरियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उस समय मारवाड़ी व्यापारिक कार्य के लिय जगह-जगह घमूते थे तथा इनके अनेक राजाओं से व्यापारिक संबंध थे इसलिये इन पर शंका भी नहीं की जाती थी। इसके साथ ही ये पत्र-वाहकों को भी अपने यहां ठहराते थे। इससे क्रांति का प्रभाव सुदूर दक्षिण तक पहुंच गया।

अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर जब अंग्रेजों की अधीनता स्वीाकर करने के लिये लगभग तैयार हो गये थे और उनके पास सेना को वेतन चुकाने के लिए पैसा नहीं रहा तब उनकी सहायता के लिए दिल्ली के सेठ रामजीदास अग्रवाल गुड़वाले, सेठ राजाराम गुड़वाले, सेठ नाढ़ोमल गुड़वाले, हांसी निवासी लाला हुकमचंद जैन (अग्रवाल) लाला मटोलचंद अग्रवाल

आदि आगे आए और उन्होंने सोने चांदी के सिक्के छकड़े भर कर उनकी मदद की। तांत्या टोपे जब बांसवाड़ा में प्रवेश कर सलुंबर होते हुए सीकर पहुंचे तो वहां सेठ **रामप्रकाश अग्रवाल** ने उन्हें कुछ नगदी और आभूषण भेंट किये।

मार्च 1862 में नाना साहब पेशवा के भतीजे, राव साहब पेशवा अपने कुछ साथियों के साथ हैदराबाद पहुंचे तो उस समय उनको धर्म गुरू प्रचारित करके बेगम बाजार में ठहराया गया। यहां मारवाड़ी व्यापारियों ने उनकी काफी सहायता की। **सेठ मोहनलाल पित्ती** ने उन्हें **एक हजार** रूपये भेंट किये थे। राव साहब की तरफ से उन्हें **सिरोपाव** मिला था। **सेठ पूरणमल** अपनी दुकान से राव साहब के लिये भोजन सामग्री भेजते रहते थे। जब अंग्रेजों को इस बात की भनक लगी तो राव साहब की मदद करने वालों को पकड़वाने के लिये 5000/- के **ईनाम** की घोषणा की। 40 लोगों को इस अपराध के लिये पकड़ा गया। इनमें **14 वर्षीय सेठ मोहनलाल पित्ती पर 75000/- और सेठ पूरणमल पर 10,000/- का जुर्माना** किया गया।

अंग्रेजों द्वारा सेठ मोहन लाल पित्ती आदि पर किये गए जुर्मों से आहत होकर हैदराबाद के अग्रवालों ने इसका बदला लेने की योजना बनाई। **अग्रवंशी सेठ जयगोपाल दास** की हवेली की छत से हैदराबाद रैजीडेंसी पर आक्रमण किया गया। इस विद्रोह और आर्थिक सहायता के अपराध के कारण सेठ जयगोपाल दास के परिवार का **कत्ल** कर दिया गया।

स्वतंत्रता संग्राम - द्वितीय चरण

स्वाधीनता संग्राम में अंग्रेजों को देश से उखाड़ने के लिए नेशनल कांग्रेस और गांधी जी को अग्र विभूतियों से भरपूर सहयोग मिला। काकोरी ट्रेन डकैती कांड में अंग्रेजों का खजाना लूटने वाले अभियुक्तों में चार वैश्य अग्रवीर क्रांतिकारी थे, विष्णुशरण दुबलिश, दामोदरदास, मुकुन्दी लाल तथा मन्मथनाथ गुप्त। **विष्णुशरण दुबलिश** को इस कांड में कालेपानी की सजा हुई। काकोरी ट्रेन डकैती कांड को अंजाम दने की योजना का सूत्रपात्र ईस्टर्न कचहरी रोड स्थित **वैश्य अनाथलय,** मेरठ में हुआ था। **आचार्य जुगलकिशोर अग्रवाल** शहीदे आजम भगतसिंह, सुखदेव, भगवतीचरण बोहरा आदि शीर्षस्थ क्रांतिकारियो के गुरू रहे। **लाला श्याम लाल सत्याग्रही** का तो पूरा परिवार ही दूर-दूर तक सत्याग्रही के नाम से विख्यात हो गया। **मोती लाल बगड़िया** सुभाष च्रद बोस के सहयोगी थे जिनका घर आजाद हिंद फौज का कार्यालय बन गया। अंग्रजों ने आपको जेल में डाल दिया। **ओंकारमल सर्राफ** का क्रांतिकारी आशुतोष लाहिड़ी से और **प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका** का अतुलनाथ से संपर्क हो गया था। क्रांतिकारी **मास्टर अमीचंद** तथा अवधबिहारी से **लाला हुमंतसहाय** के प्रगाढ़ संबंध थे। उन्होंने दिल्ली के क्रांतिकारियों की भरपूर मदद की। लाला का पैसा वे अपना पैसा मानते थे। लाला का भवन **बमों का भंडारगृह बन** गया था। रासबिहारी बोस ने वायसराय लार्ड हार्डिंग पर बम फैंकने की योजना बनाई थी, उसमें **लाला हनुमंतसहाय** भी शामिल थे। दिल्ली षड़यंत्र कांड के अंतर्गत 5 अक्टूबर 1914 को हनुमंत सहाय को आजीवन काले पानी की सजा सुनाई गई। मास्टर अमीरचंद जो 1912 के लार्ड हॉर्डिंग बम कांड के प्रमुख अभियुक्त थे, को **फांसी** की सजा मिली।

लाला लाजपत राय ने 1888 में 23 वर्ष की अवस्था मे अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष का बिगुल बजा दिया था। रूडमल गोयनका सुभाषचंद बोस की सहायता करने वालों में प्रमुख थे।

शहीदे आजम भगतसिंह ने लाहौर में जिस पिस्तौल से सांडर्स की हत्या का प्रयास किया वह राधामोहन जी ने उपलब्ध करवाई। राममनोहर लोहिया आजादी के आंदोलन में 40 बार जेल गये और अनेक पुस्तकें लिखीं। जमनालाल बजाज स्वाधीनता आंदोलन के भामाशाह थे तथा आजीवन कांग्रेस के कोषाध्यक्ष रहे। हनुमान प्रसाद पौद्दार तो खुलेआम क्रांतिकारियों के **मुकदमों की पैरवी** करते थे।

1885 में कांग्रेस की स्थापना हुई। इस अवसर पर बंबई के तेजपाल गोकुलदास संस्कृत हॉल में आयोजित अधिवेशन में देश के 73 वरिष्ठ व्यक्तियो में सेठ मुरलीधर भी सम्मिलित थे, जिन्होंने सम्मेलन मे भाग लेकर राष्ट्रीय कांग्रेस को जन्म देने की भूमिका निभाई। आपको प्रथम राजबंदी होने का भी श्रेय है। पंजाब सरकार ने उन्हें **केसरे हिंद** की उपाधि प्रदान की।

-- आर्थिक सहयोग --

स्वतंत्रता आंदोलन में आर्थिक संबल के प्रमुख थे सेठ जमनालाल बजाज जिन्हें राष्ट्रीय आंदोलन का भामाशाह माना जाता है। उन्होंने क्रांतिकारियों को जेल से छुड़वाने तथा उनकी फांसी की सजा को रद्द कराने के लिये वकीलों के लिये धन की व्यवस्था की। आजादी के इतिहास में अग्रवाल मारवाड़ियों के आर्थिक योगदान को स्वीकारा गया है। अनेक अग्रवंशियों ने तो काफी मात्रा में गुप्त दान भी दिया। रामकृष्ण नेवटिया का कहना था कि – बंगाल के अधिकतर क्रांतिकारी मारवाड़ी लोगों से ही आर्थिक सहायता प्राप्त करते थे। सन् 1905 से 1917 तक मारवाड़ी अग्रवाल समाज ने क्रांतिकारियों की कई तरह से मदद की। बंगाल की अनेक संस्थाओं के बंगाल के क्रांतिकारियों से उनके संबंध बने हुए थे। शरतचंद्र बोस को **बसंतलाल मुरारका** ने **एक लाख ग्यारह हजार रूपये** की थैली भेंट की थी। **प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका** ने क्रांतिकारियों के लिये झोली फैलाई तथा उन्हें घरेलू खर्चों के लिये भी आर्थिक मदद की। कई व्यापारी सामने न आकर गुप्त रूप से भी अपनी सहायता क्रांति में जुटे लोगों तक पहुचाते रहे। कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में सुभाषचंद्र बोस जब रूड़मल गोयनका के पास आर्थिक सहयोग के लिये गये तो गोयनका ने उनके सम्मुख खाली चैक बुक रखकर रकम भरने का आग्रह किया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस जब विदेश जाकर आजाद हिंद फौज का गठन किया तो बर्मा व सिंगापुर में व्यापार करने वाले अग्रवाल समाज के अनेक लोगों ने उनके समक्ष अपनी जीवनभर की कमाई अर्पित कर दी थी। इस बात के साक्षी लाला सोहनलाल जी बगड़िया रहे। इनके चाचा मोतीलाल अग्रवाल को गिरफ्तार कर बर्मा की जेल में यातनाएं दी गई, इस संबंध में सोहनलाल जी ने अनेक प्रमाणिक तथ्य देकर आश्चर्य चकित कर दिया था। प्रसिद्ध क्रांतिकारी अरविंद घोष की भी मारवाड़ी अग्रवालों ने आर्थिक सहायता की। महात्मा गांधी को आर्थिक सहयोग देने वालों में भागीरथ कानोडिया, सीताराम सेक्सरिया, रामकुमार जालान, देवीप्रसाद खेतान, मोतीलाल देवड़ा, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, रामचंद्र गुरूप्रताप पौद्दार, राधाकृष्ण छावसरिया, हनुमानप्रसाद पौद्दार, रामकुमार केजड़ीवाल, गंगाप्रसाद, रामगोपाल सर्राफ, हीरालाल नथमल जयपुरिया, बालचंद मोदी, ज्वालाप्रसाद कनोडिया, औंकारमल सर्राफ, आदि व्यापारी थे।

सन् 1920 के नागपुर में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन में आंदोलन को संचालित करने के लिए **तिलक स्वाराज्य कोष** की स्थापना करने का निर्णय लिया गया तो इस कोष में जमनालाल बजाज व नवलगढ़ के आनंन्दीलाल पौद्दार ने 2–2 लाख रूपये देकर कोष की

शुरूआत की। रामकृष्ण डालमिया, केशोराम पौद्दार और अन्य अग्रवाल बंधुओं ने भी कोष के लिये अपनी थैलियों के मुंह खोल दिये। **रामकृष्ण डालमिया** ने 1945 से पूर्व कांग्रेस को कई मदों में दस लाख रूपये इकठ्ठा करके दिये। अनेक कांग्रेसी नेताओं को डालमिया जी से 500/- से लेकर 1000/- तक मासिक की आर्थिक सहायता प्राप्त होती थी। सुभाषचंद बोस को भी वे निजी व्यय के लिये 500/- प्रतिमाह लंबे समय तक देते रहे। बलदेवदास दुदवा ने मालवीय जी को लाखों रूपयों की सहायता दी।

महात्मा गांधी की पुस्तकें अच्छे कागज पर अच्छे ढंग से प्रकाशित और सफाई से निकलें इसके लिये 1933 में प्रवासी प्रेस को सारा खर्च **भागीरथ कानोडिया** ने दिया। कलकत्ता का सुप्रसिद्ध पत्र **भारतमित्र** मारवाड़ियों की आर्थिक सहायता से छपता था। मारवाड़ी अग्रवाल नवयुवकों ने **डू एंड डाई** पत्र निकाला। जयप्रकाश नारायण तथा लोहिया जी ने आंदोलन चलाने के लिये 1942 जो गुप्त संचालन समिति बनाई थी उसका आर्थिक प्रबंध भी मारवाड़ी लोगों ने किया था। भागीरथ कानोडिया, राधाकृष्ण नेवटिया, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, रामकुमार भुवालका आदि ने इस समिति के लिये अर्थसंग्रह किया। कोलकाता के खेतान बंधुओं ने भी सुभाषचंद्र बोस की दिल खोलकर मदद की। प्रसिद्ध क्रांतिकारी अरविंद घोष, रास बिहारी बोस एवं अन्य नेताओं की भी अग्रवाल समाज द्वारा आर्थिक मदद की गई। जिस तरह मारवाड़ी अग्रवाल समाज देश के आंदोलन मे सहयोग दे रहा था उसे देखकर **गांधी जी ने कहा था** - ये समुदाय दान देने में उदार है, ईमानदार है, देश सेवा कर सकता है।

आश्रय स्थल के रूप में -

गांधी जी जब अपने आंदोलन के सिलसिले में दिल्ली आया करते थे तब सेठ लक्ष्मीनारायण जी गाडोदिया के मकान कूचा नटवां में ठहरा करते थे, उनका मकान उन दिनों कांग्रेस की गतिविधियों का केंद्र स्थान था। जमनालाल बजाज भी अपने दलबल सहित यहीं ठहरा करते थे। डा. राजेन्द्र प्रसाद भी यहीं ठहरा करते थे। इसी प्रकार वाराणसी में बाबू शिवप्रसाद गुप्त, मुंबई में बृजलाल रूंगटा तथा कोलकाता में खेतान हाउस नेताओं की आश्रय स्थली बने हुए थे। क्रांतिकारियों के छिपने तथा धन की व्यवस्था भी अग्रवालों के द्वारा की जाती थी। चंद्रशेखर आजाद आदि अनेक क्रांतिकारियों को अग्रवालों ने अपने घर पर रखा। कोलकाला का खेतान घराना नेताजी सुभाषचंद्र बोस के काफी करीबी था। चंद्रशेखर आजाद मानपुर के अग्रवंशी रामचंद्र मुसद्दी के यहां 1930 में नौ महीने रहे। आगरा में वासुदेव गुप्ता का भवन क्रांतिकारियों के लिये सुरक्षित स्थली था। रंगून में जिस मकान में नेताजी सुभाषचंद्र बोस रहते थे, वह बागला परिवार द्वार भेंट किया गया था। सन् 1944 में सुभाषचंद बोस ने '' नेशनल बैंक ऑफ आजाद हिंद लि.'' की स्थापना की तब बैंक के लिये भगवानदास बागला ने ही अपना भवन दिया। अनेक क्रांतिकारी अग्रवालों के घरों, दुकानों, गोदामों में रहे। श्रीनिवास बालकिशन पोद्दार का घर तो क्रांतिकारियों का कार्यालय ही बन गय था। श्री केदारनाथ गोयनका ;संस्थापक मारवाड़ी पुस्तकालय-दिल्लीद्ध, बताया करते थे कि किस प्रकार क्रांतिकारी नवयुवक और स्वंय रासबिहारी बोस तथा उनके साथी मारवाड़ी अग्रवालों के घरों, गोदामों और दुकानों में निर्भय होकर पूरे विश्वास से रहा करते थे। बंगाल, पंजाब और राजस्थान के मध्य संपर्क कायम रखने के लिये दिल्ली में क्रांतिकारयों का आना-जाना निरंतर बना रहता था और ठहरने का अधिकतर

प्रबंध मारवाड़ियों के यहां ही किया जाता था। गोयनका जी दिल्ली कांग्रेस के डिक्टेटर नियुक्त किये गये थे, इसके लिये उन्हें 06 माह की जेल हुई।

जलियांवाला गोली कांड – 13 अप्रैल 1919 में हुआ जिसमें अग्रबंधु दौलतराम, चेतराम तथा कई मारवाड़ी व्यापारी शहीद हुए। इस कांड के विरोध में कोलकाता के बड़ा बाजार में मारवाड़ी अग्रवालों ने विशाल सभा की। लाला बाबूराम गर्ग ने पुलिस अधीक्षक पद से त्याग पत्र दे दिया। प्रो. रामसिंह को जलियांवाला कांड में मृत्युदंड की सजा सुनाई गई जो जनता के विरोध के कारण स्थगित करनी पड़ी। इसके विरोध में हरियाणा के कुंदनलाल सुमन अल्पायु में आंदोलन में कूद पड़े तथा गांव से निष्काषित किये गये।

स्वदेशी आंदोलन – जब–जब कांग्रेस ने कोई भी आंदोलन चलाया, इस समाज ने उसे पूरा सहयोग प्रदान किया। 1921 में असहयोग आंदोलन चलाए जाने पर जमनालाल बजाज ने रायबहादुर की उपाधि अंग्रेज सरकार को लौटा दी। शिवप्रसाद गुप्त ने काशी विद्यापीठ की स्थापना की।

विदेशी वस्त्र बहिष्कार – में अनेक अग्रवाल महिलाओं ने भूमिका निभाई। अग्रवालों व अन्य मारवाड़ी वैश्यों के सहयोग से हिंदुस्तानी मर्चेंट एंड कमीशन एजेंट एसोसिएशन बनाई गई। इस संस्था ने विदेशी वस्त्र बहिष्कार का नियम बनाया, पालन न करने वालों को दंडित किया गया। सरकार ने इस संस्था के गोविंद पोद्दार को गिरफतार कर लिया। गांधी जी के स्वदेशी आंदोलन प्रारंभ करने से पहले मारवाड़ियों का सबसे महत्वपूर्ण व्यापार विदेशी कपड़ों का था। गांधी जी के विदेशी कपड़ों के बहिष्कार के नारे ने इनके व्यापार को सर्वाधिक प्रभावित किया। अपने व्यापारिक हितों की तिलांजली देकर वे आजादी की लड़ाई में कूद गये। **अग्रवाल व्यापारियों ने करोड़ों रूपयों की हानि सहकर भी आंदोलनों में भाग लिया।** व्यापारियों ने करोड़ों रूपयों का **कपड़ा जला** दिया। अनेक अग्रवालों ने खादी के प्रचार–प्रसार के लिये अपने आपको समर्पित कर दिया। अग्रवाल महिलाओं व पुरूषों ने धरने दिये, विदेशी वस्त्रों की होली जलाई और आभूषण आंदोलनकारियों को दे दिये। **बजाज परिवार** में विदेशी वस्त्रों की होली कई दिनों तक जलती रही। बड़ा बाजार में सबसे पहले बुद्धिवर्धिनी सभा के नवयुवकों ने 1905 से पहले ही स्वदेशी आंदोलन छेड़ दिया था। जानकी देवी बजाज और इंदुमति गोयनका ने विदेशी माल की दुकानों पर धरना दिया।

मारवाड़ी अग्रवाल सभा कलकत्ता में 10 अप्रैल 1921 को आयोजित अपने तृतीय अधिवेशन में स्वदेशी की मांग का समर्थन किया। बड़ा बाजार के नेताओं ने ब्लैक हॉल नामक आंदोलन प्रारंभ कर दिया। विदेशी वस्त्र बहिष्कार और खादी प्रचार के कार्य को युवा वर्ग सदैव आगे बढ़ाने में लगा रहा। बंबई में यह कार्य मदनलाल जालान, बैजनाथ भावसिंहका, रामनारायण गोयनका, रामेश्वर जाजोदिया और सांवलराम सर्राफ कर रहे थे।

गिरफ्तारियों का तांता – स्वराज प्राप्ति के लिये कई अग्रवाल मारवाड़ी जेल गये जिनमें – बिहार के बैजनाथ प्रसाद भावसिंहका और रामकृष्ण भावसिंहका शामिल थे। मूलचंद अग्रवाल को 1921 में विश्वामित्र में लिखे लेखों के करण एक वर्ष के कठोर कारावास का दंड दिया गया। देश के कोने–कोने से आजादी के लिये जेलयात्रा करने में मारवाड़ी स्त्रियां भी पीछे नहीं रहीं। उषा गुप्ता ने बताया कि भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान कुसुम गुप्ता ने महत्वपूर्ण भूमिका

निभाई। इसके अतिरिक्त इंदुमति गोयनका, जानकी देवी बजाज, पार्वती देवी डीडवानियां, किशोरी देवी, लक्ष्मीदेवी जैन, सज्जन देवी, केशरबाई जैन, चंपादेवी श्रूका, राधादेवी गोयनका, दयावती देवी सर्राफ, सरस्वती गाडोदिया आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। गांधी जी ने 1930 में ऐतिहासिक **नमक सत्याग्रह** प्रारंभ किया जिसमें मारवाडियों ने भारी संख्या में योगदान दिया। रमादेवी मुरारका नमक सत्याग्रह में शामिल हुईं। तथा इंदुमति गोयनका ने कन्टाई ;बंगालद्ध मे नमक के विरूद्ध पुलिस दमन की निंदा की जिसके कारण उन्हें 9 माह की कैद की सजा हुई, बंबई के मदनलाल जालान नमक सत्याग्रह के लिये 14 मारवाड़ियों की टुकड़ी के नेता थे जिन्हें कैद की सजा हुई।

अजमेर में स्वाधीनता आंदोलन के सिलसिले में गिरफ्तार होने वालों में नृहसिंहदास अग्रवाल प्रमुख थे। इन्होंने मद्रास में अपनी दवाईयों की दुकान गांधी जी को समर्पित कर दी और देश सेवा का व्रत ले लिया था। फिरोजपुर के **गुरूदास अग्रवाल** सक्रिय **अवज्ञा आंदोलन** में शामिल हुए। उन्होंने एक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की तथा 31 अक्टूबर 1930 को जीरा जेल पर बम फेंका। इसके कारण उन्हें तीन वर्ष की जेल की सजा हुई। जेल में अमानवीय यातनाएं देने के कारण उनकी हालत गंभीर हो गई। 27 मई 1934 को उनकी मृत्यु हो गई।

रामनिरंजन सरावगी को कलकत्ता की चीफ प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट की अदालत में तिरंगा तथा सरकारी कर्मचारियों को नौकरी छोड़ने को उकसाने के जुर्म में जेल भेज दिया गया। **पदमसुख अग्रवाल** ने 1942 में फौजी ट्रेन को लूट लिया। **संतलाल जैन** पटना सचिवालय पर झंडा फहराते हुए घायल हो गये तथा फरार होने पर पुलिस ने उसके परिवार वालों को परेशान किया और उसका मकान जला डाला। ब्रिटिश सरकार ने **नागरमल जादूका** को रूपौली मर्डर कांड का प्रधान माना। उसकी गिरफ्तारी के लिये 5000/- का पुरस्कार घोषित किया तथा देखते ही **गोली मारने** का आदेश दे दिया। **सविनय अवज्ञा आंदोलन** 1932 में आरंभ होते ही सीताराम सेक्सरिया को इस आंदोलन में मारवाड़ी नवयुवकों को प्रतिनिधित्व करने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया। महावीर प्रसाद पौद्दार को को एक वर्ष की कैद की सजा हुई। हरियाणा के कुंदनलाल सुमन भी अल्पायु में आंदोलन में कूद पड़े, गांव से निष्काषित किये गये। इंदौर के छोटेलाल गुप्ता एक प्रतिष्ठित व्यवसायी थे, देश सेवा की लगन लगी तो 1921 में कूद पड़े समर में। आरंभ में विलायती वस्त्रों की होली जलाई। छोटे लाल जी को अंग्रेजों ने घोड़ों से खिंचवाया। मास्टर फकीरचंद आर्यसमाजी थे उन्होंने अनेक जाटवों को पादरी के चंगुल से निकालकर ईसाई होने से बचाया।

1942 का भारत छोड़ो आंदोलन - 8 अगस्त 1942 को मुंबई के ऐतिहासिक मैदान में गांधी जी द्वारा **भारत छोड़ो आंदोलन** की शुरूआत हुई। करो या मरो की भावना से प्रेरित इस आंदोलन में अग्रवाल समाज के अनेक राष्ट्रभक्तों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। क्रांतिकारियों के लिये आर्थिक सहायता जुटाई, अखबार निकाले, पर्चे बांटे, गुप्त रूप से रेडियो का संचालन किया और आंदोलन को सफल बनाने के लिये जितने भी उपाय हो सकते थे, उन सभी में अपनी भागीदारी निभाई। अगस्त क्रांति की धोषणा होते ही जब समस्त प्रसिद्ध नेताओं को बंदी बनाकर जेल में डाल दिया गया तब डा. राम मनोहर लोहिया एकमात्र ऐसे नेता थे जिन्होंने 8 अगस्त 1942 की रात से 20 मई 1944 तक भूमिगत रहते हुए इस आंदोलन में सर्वाधिक योगदान दिया।

अंततः उनको गिरफतार कर लाहौर की जेल में बंद कर दिया गया। जमनालाल बजाज का परिवार ही एकमात्र ऐसा गांधीवादी परिवार था जिसका प्रत्येक सदस्य 1942 तक जेल यात्राएं कर चुका था। राजधानी दिल्ली में पार्वती डीडवानियां ने 1942 की अगस्त क्रांति में अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में कई मारवाड़ी गिरफ्तार हुऐ जिनमें – मदनलाल पित्ती, लक्ष्मीनारायण, रामकुमार भुवालका, बालकृष्ण , हीरालाल लोहिया, विनायक प्रसाद हिम्मतसिंहका, पदमकुमार जैन, बैजनाथ कैडिया, बसंतलाल मुरारका, मुरलीधर गर्ग, मोतीलाला केजड़ीवाल, महावीर प्रसाद पौद्दार, रामचंद्र मुसद्दी, सुगनलाल अग्रवाल, रामकुमार नेवटिया, भगवती प्रसाद लड़िया, प्रहलाद जीवराजका आदि थे। मारवाड़ी स्त्रियां भी इस आंदोलन में गिरफ्तार हुईं जिसमें – इंदुमति गोयनका, राधादेवी गोयनका, कमला देवी, पार्वतीदेवी डीडवानियां आदि प्रमुख हैं।

मध्यप्रदेश के किशनलाल गोयनका आंदोलनों में काफी सक्रिय रहे। उदय चंद जैन ने 1942 में मंडला कस्बे में ब्रिटिश कानून के विरूद्ध जुलूस निकाला। पुलिस ने उन पर गोलियां चलाईं। जिससे उनकी मृत्यु हो गई। स्वतंत्रता आंदोलन में पुलिस की गोली से मुरादाबाद के प्रेमप्रकाश अग्रवाल का देहांत हो गया। बिहार के धातुरी मोदी और हजारी बाग के चूरामन मोदी को अगस्त 1942 में गोली से उड़ा दिया गया। कोल्हापुर के गनपत मोर की जेल में असहनीय यंत्रणा देने से मृत्यु हो गई। बंबई में नारायण मोर भी पुलिस की फायरिंग में मारे गये।

राधाकृष्ण नेवटिया ने विभिन्न प्रांतों में कार्यकत्ताओं को भेजकर 483 मारवाड़ी आंदोलनकारियों का ब्यौरा एकत्रित किया जिसमें अधिकांश को राष्ट्रीय आंदोलन में योग देने के कारण दंडित किया गया था।

देशी रियासतों का विलीनीकरण – कई मारवाड़ी अग्रवाल बंधुओं ने **देशी रियासतों के भरत में विलीनीकरण** के लिये ठोस प्रयास किये जिसमें कईयों की मृत्यु हो गई। उनमें **शंकरिया गुप्ता** का नाम उल्लेखनीय है। उसने **हैदराबाद को भारत में मिलाने के लिये आंदोलन चलाया था जिसके कारण निजाम की पुलिस ने 18 दिसम्बर 1947 को उसे गिरफ्तार करके मार डाला गया था।**

दमदार क्रांतिकारी लेखनी – राधामोहन गोकुल जी अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चिंतक तथा लेखक थे जिनकी लिखी पुस्तकों से अनेक देशों के विचारकों ने समता, समाजवाद, स्वाधीनता तथा स्वदेश प्रेम की प्रेरणा ली। बाबू हरिशचंद्र, विश्वंभर सहाय विनोद जी, बाबू गुलाबराय एम.ए., विष्णु प्रभाकर, बाल मुकुन्द गुप्त, मूलचंद अग्रवाल, ज्योति प्रसाद अग्रवाला, अक्षय कुमार जैन, कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी, शिवकुमार गोयल, रविचंद्र गुप्ता आदि लेखक और साहित्यकारों – जिन्होंने अपनी दमदार व क्रांतिकारी लेखनी से प्यार किया और अपने लेखों व कविताओं के माध्यम से आमजन को न केवन प्रभावित किया बल्कि उनके जीवन के प्रवाह को ही बदल दिया। उल्लेखनीय है कि – इस स्वतंत्रता संग्राम में अग्रवाल समाज की अनेक महिलाओं ने भाग लिया और अनेक बालक/बालिकाओं ने छोटी उम्र में ही अपने त्याग और बलिदान की अमर गाथा लिखी।

''आभार'' एवं ''गौरव के क्षण''

देश में - अग्रवाल समाज पर ''पहली बार'' लिखी गई पुस्तक

''अग्रवाल समाज और स्वाधीनता संग्राम (1857-1947)''

- का भव्य विमोचन -

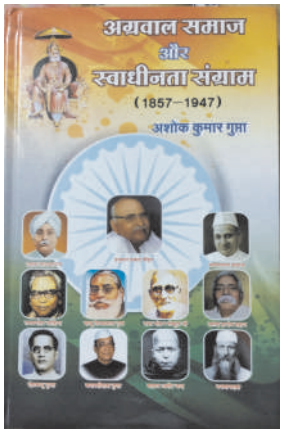

1. **दिनांक - 09.08.2019,** छतरपुर, मध्यप्रदेश - ''क्रांति दिवस'' पर ''अग्रवाल महासभा'' द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में माननीय बृजेन्द्र सिंह जी राठौर, वाणिज्य कर मंत्री म.प्र., श्री अनिल माहेश्वरी जी, डी.आई.जी, श्रीमती अर्चना सिंह - अध्यक्ष नगरपालिका, श्री तिलक सिंह जी - पुलिस अधीक्षक, श्री जयराज कुबेर - ए.एस.पी. एवं उपस्थित स्वतंत्रता संग्राम सेनानी - श्री रामकृपाल चौरसिया, श्री काशी प्रसाद महतो, श्री राजाराम सिंह जी तथ म.प्र. अग्रवाल सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री कमल अग्रवाल के द्वारा किया गया। श्री कमल अग्रवाल मध्य प्रदेश के जाने माने स्वतंत्रता सेनानी ''स्व. अग्रश्री परमलाल जी अग्रवाल'' के सुपुत्र हैं। मैं ''**श्री कमल जी अग्रवाल**'' व उनकी टीम का हृदय से **आभार** व्यक्त करता हूं।

2. **दिनांक - 25.08.2019,** पुणे-महाराष्ट्र - '' अग्रसेन भगवान चेरिटेबल फांउडेशन'' द्वारा आयोजित परिचय सम्मेलन के भव्य समारोह में, पुणे के अनन्य समाज सेवी ''**श्री राजेश जी अग्रवाल**'' व उनकी टीम द्वारा करवाया गया। इस विमोचन समारोह में महाराष्ट्र के विभिन्न स्थानों से पधारे गणमान्य अग्रबंधुओं ने भाग लिया। यह विमोचन मेरे जीवन का सबसे यादगर पल रहा, सोच से भी परे रहा यह भव्य समारोह। ''श्री राजेश जी अग्रवाल'' ने मेरा व मेरे परिवार का शानदार स्वागत भी किया, मैं व मेरा परिवार इनका व इनकी टीम का तहे दिल से **आभार** व्यक्त करते हैं। उल्लेखनीय है कि उपस्थित जनसमूह द्वारा इस पुस्तक की मुक्त कंठ से प्रशंसा की गई।

3. **दिनांक - 29.9.2019,** पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला - में आयोजित महाराजा अग्रसेन जयंती के भव्य कार्यक्रम में पुस्तक - ''अग्रवाल समाज और स्वाधीनता संग्राम (1857-1947)'' का विमोचन **महारानी साहिबा श्रीमती परनीत कौर (सांसद, पटियाला),** प्रो. बी. एस. घुम्मकन (वाईस चांसलर), श्री संजय गर्ग, (स्टेट इंफोर्मेशन कमीशनर,पंजाब), से.नि. न्यायाधीश श्री आर.के.गर्ग (चेयरमैन एनआरआई कमीशन, स्टेट गवर्मेंट ऑफ पंजाब), श्री बजरंगदास गर्ग (अध्यक्ष-अग्रोहा विकास ट्रस्ट), प्रोफेसर डा. प्रमोद अग्रवाल (चेयरमैन, महाराजा अग्रसेन चेयर), स्वामी असीमानंद लिंगम, श्री जतिंदर गोयल (पीएसपीसीएल डायरेक्टर फाइनांस), श्री पंकज महेन्दू (कांग्रेस मानवाधिकार सेल के प्रदेश चेयरमैन), श्री करूणेश गर्ग (सचिव - पीपीसीसी) श्री रामकुमार सिंगला, श्रीमती

शशि अग्रवाल एवं अन्य गणमान्य बंधुओं की उपस्थिति में किया गया। इस सफल आयोजन पर मैं प्रोफेसर ''**श्री प्रमोद अग्रवाल जी**'' का हृदय से **आभार** व्यक्त करता हूं।

4. **दिनांक - 29.9.2019**,अग्रवाल समाज-प्रताप नगर, जोधपुर - महाराजा अग्रसेन जयंती समारोह में पुस्तक - ''अग्रवाल समाज और स्वाधीनता संग्राम (1857-1947)'' का विमोचन उपस्थित गणमान्य अग्रबंधुओं द्वारा किया गया। इस अवसर पर मंचासीन अतिथियों -श्री रामावतार अग्रवाल, श्री पी.डी.लीला, श्री मूलचंद अग्रवाल, श्री जी.डी. मित्तल, डा.एम.के.गर्ग, श्री एस.के.गोयल ने इस पुस्तक पर अपने विचार व्यक्त किये तथा लेखक-अशोक कुमार गुप्ता का माल्यार्पण कर सम्मान किया गया। पुस्तक विमोचन एवं अन्य भव्य कार्यक्रम प्रस्तुति के लिये मैं अध्यक्ष श्री वी.सी. अग्रवाल, सचिव श्री राकेश बंसल, संस्था के पदाधिकारी एवं सभी कार्यकर्त्ताओं का हृदय से **आभार** व्यक्त करता हूं।

कुछ अन्य स्थानों पर भी इस पुस्तक का विमोचन किया गया। यह पुस्तक राज्य सभा सांसद- श्री नारायणदास जी गुप्ता, दिल्ली विधान सभा के अध्यक्ष श्री रामनिवास जी गोयल, हिमाचल प्रदेश विधान सभा अध्यक्ष डा.राजीव बिंदल, राजस्थान उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीश श्री मनोज जी गर्ग, डा. लालचंद मंगल - पूर्व अधिष्ठाता कला संकाय, कुरूक्षेत्र वि. विद्यालय, स्व. डा. सत्यकेतु जी विद्यालंकार के सुपुत्र श्री अमिताभ रंजन, भारत के प्रसिद्ध कथावाचक भाई रवि जी, वरिष्ठ समाज सेवी श्री रामावतार जी अग्रवाल, वरिष्ठ समाज सेवी श्री सुरेश जी अग्रवाल, समाज सेवी सतीश जी अग्रवाल सहित अनेक गणमान्य अग्रबंधुओं तथा अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों को भेंट की गई। सांसद श्री नारायणदास जी गुप्ता व दिल्ली विधान सभा अध्यक्ष श्री रामनिवास जी गोयल को यह पुस्तक लेखक व अग्रविद्वान श्री मोहित अग्रवाल ने तथा अग्रमिलन पत्रिका, दिल्ली के मुख्य संपादक श्री संजय गोयल ने भेंट की, यमुना नगर के पुलिस अधीक्षक श्री कमलदीप जी गोयल को यह पुस्तक भेंट की, कुरूक्षेत्र के श्री तरसेम जी मित्तल ने।

मैं **आभार** व्यक्त करना चाहूंगा विभिन्न पत्र/पत्रिकाओं का जिन्होंने मेरी पुस्तक की समीक्षा छापी। नागपुर की वार्षिक पत्रिका अग्रचिंतन के श्री दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, मासिक अग्रसत्ता, भोपाल के श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, मासिक पत्र धरती का चिराग, डीडवाना के श्री राजेन्द्र पटवारी, मासिक पत्र अग्रवाल टुडे, आगरा के डा.जी.पी.अग्रवाल, त्रैमासिक पत्रिका वैश्य वैभव, कुरूक्षेत्र के श्री तरसेम मित्तल, महाराष्ट्र का साप्ताहिक ख्याति लब्ध पत्र, सोनेरी महाराष्ट्र के श्री राजेश अग्रवाल आदि का हृदय से आभार।

मैं आभार प्रकट करता हूं - भू.पू.राज्य सभा सांसद, विश्व की अनेक भाषाओं के जानकार, बौद्ध धर्म के मर्मज्ञ, विभिन्न भाषाओं में 600 से भी अधिक पुस्तकें व 500 से अधिक शोध पत्र व लेख लिखने वाले, विश्व की जानी मानी विभूति स्व. आचार्य रघुवीर जी के सुपुत्र, मंगल गोत्रीय, **92 वर्षीय प्रो. डा. लोकेश चंद्रा जी का,** जिनसे मैं दिल्ली में मिला, यह मेरा **परम सौभाग्य** रहा। (मेरे साथ अग्रवाल समाज के प्रसिद्ध लेखक स्व. डा सत्यकेतु विद्यालंकार जी के पुत्र **श्री अमिताभ रंजन जी** भी थे, आदरणीय लोकेश जी ने उनका नाम पूछा तो कहा - मेरे पिताजी और अमिताभ बच्चन के पिताजी दोनों में अच्छी घनिष्ठता थी, उनके घर अमिताभ

का जन्म हुआ तो हरिवंश राय बच्चन जी ने कहा कि इसका नामकरण करना है, मेरे पिताजी ने नाम रखा **''अमिताभ बच्चन'',** क्योंकि भगवान बुद्ध का एक नाम अमिताभ भी है।) आपने पुस्तक लेखन का आशीर्वाद दिया तथा अपना शुभकामना संदेश प्रेषित किया। अग्रवाल समाज पर शोध परक सामग्री युक्त पुस्तकें लिखने वाले श्री मोहित अग्रवाल, दिल्ली भी मेरे साथ थे, इन्होंने ही मेरा परिचय आदरणीय लोकेश जी व अमिताभ रंजन जी से करवाया।

डा. लोकेश चंद्रा जी का जन्म 11 अप्रैल 1927 में हुआ था, सन् 2006 में शिक्षा व साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिये आपको **''पद्मभूषण''** पुरस्कार दिया गया, सन् 2014 से 2017 तक आप भारतीय इतिहास एवं अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष रहे।

शुभकामना संदेश प्रेषित करने के लिये मैं माननीय सांसद श्री नारायणदास जी गुप्ता, दिल्ली विधान सभा अध्यक्ष श्री रामनिवास जी गोयल, हिमाचल प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष डा. राजीव जी बिंदल, कुरूक्षेत्र वि.वि. के पूर्व अधीष्ठाता डा. लालचंद मंगल, महाराजा अग्रसेन चेयर प्रमुख प्रोफेसर श्री प्रमोद जी अग्रवाल, वरिष्ठ समाज सेवी जोधपुर के श्री रामावतार जी अग्रवाल का हृदय से आभार प्रकट करता हूं। **पुस्तक की भूमिका लिखी - भारत के जाने-माने इतिहासकार डा. मोहन लाल जी गुप्ता ने, प्रस्तावना लिखी - जाने वाले अग्र साहित्यकार गंगानगर के डा. चंपालाल जी गुप्त ने, प्राक्कथन लिखा - वरिष्ठ अग्र साहित्यकार बाड़मेर के श्री ओम प्रकाश गर्ग 'मधुप' जी ने,** मैं इन सभी का हृदय से धन्यवाद करता हूं कि आपका प्रेम व सान्निध्य मुझे मिला।

अग्रवाल समाज के इतिहास में पहली बार लिखी गई पुस्तक ''अग्रवाल समाज और स्वाधीनता संग्राम 1857-1947'' लिखने के लिये मुझे अनेक प्रतिक्रियाएं मिलीं, जिन्होंने अगली पुस्तक लिखने का हौंसला प्रदान किया। मैं हृदय से इन सभी महानुभावों का हृदय से आभार प्रकट करता हूं। वाट्सएप पर प्राप्त भी अनेक प्रतिक्रियाएं मिलीं हैं। **प्रस्तुत है कुछ प्रतिक्रियाएं**

1. डा.चंपालाल गुप्त,गंगानगर - मैं भाई अशोक कुमार गुप्ता को इस प्रकार के महत्वपूर्ण ग्रंथ लेखन के लिये बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि यह ग्रंथ समाज के लिये अमूल्य उपहार सिद्ध होगा। आप जैसे व्यक्ति हर समय समाज के लिये कुछ न कुछ करने की बात सोचते रहते हैं उसी के बल पर यह समाज जिंदा है, आपका नाम समाज के समर्पित व्यक्तियों में सदैव अविस्मरणीय रहेगा। मेरी आप जैसे निष्ठावान कार्यकत्ताओं के प्रति अत्यधिक सम्मान की भावना है।

2. कृष्ण मुरारी अग्रवाल, वरिष्ठ साहित्यकार, गाडरवारा, मध्य प्रदेश - लेखक श्री अशोक कुमार गुप्ता को साधुवाद, बहुत-बहुत शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूं, जिसके वो वास्तक में हकदार हैं। आपके अथक प्रयास से ही हम, समाज के इन शहीदों की देश सेवा को जान सके। आपकी पुस्तक अग्रवाल समाज के स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों व क्रांतिकारियों की देश सेवा को प्रस्तुत करती है, जो आजादी के बाद हाशिये में ढकेल दिये गए और समाज इन सबसे अनभिज्ञ हो गया है। पुस्तक पढ़ने के बाद मेरा मन कहता है कि, देश के अग्रवाल संगठनों को आपकी दोनों पुस्तकें क्रय कर अपने क्षेत्र की नई पीढ़ी को उपलब्ध कराना चाहिए, क्योंकि ये पुस्तकें बहुमूल्य हैं। अग्रसेन के अग्रवंश का लिख दिया इतिहास आपने, शहीदी पर रूला गये, उपलब्धियों से गर्वित करा दिया आपने। अंत में समाज को समाज हित की इस साहित्यिक भेंट के लिये साधुवाद।
3. व्यक्ति समाज से तभी प्रेरणा ले सकता है, जब समाज की पूर्व पीढ़ियों ने श्रेष्ठ कार्य किये हों और उन श्रेष्ठ कार्यों को किसी साहित्यकार ने अपने साहित्य में पिरोया हो और उस पिरोये गये साहित्य को उस व्यक्ति ने पढ़ा हो, इस दृष्टि से नि:संदेह श्री अशोक कुमार जी ने समाज के इस पावन कार्य में एक सफल साहित्यकार की भूमिका अदा की है। आपकी सुनहरी स्याही अग्रवालों के सुनहरे बिंबो के प्रतिबिंब बोलती है।
4. श्रीमान अशोक गुप्ता जी आपको हमारी ओर से अनंत धन्यवाद कि आपने समाज को वो कोहिनूर ज्ञान दिया, जिसकी जितनी बड़ाई की जाए उतनी ही कम है। इस महान् कार्य के लिये आपको बहुत-बहुत बधाई।
5. मुझे ज्यादा खुशी इस बात से है कि आपका स्वास्थ्य ठीक न रहने के बावजूद आप बहुत मेहनत समाज के लिए करते हैं। आपको नाम कमाने की कोई इच्छा नहीं है। मैं ये गर्व से कहता हूं कि आप एक महान् लेखक और विद्वान हो, आप हमारे लिये गौरव हो। बड़ी इच्छा है कि आप से मिलकर आपका आशीर्वाद ले सकूं। -- श्री संजय गोयल, दिल्ली
6. अग्रवाल समाज के गौरव का महिमा मंडल इस तरह से करवाने का अभिनव प्रयास अभिनंदनीय है। बधाईयां.....
7. आपको बहुत-बहुत बधाई हो। आप भविष्य में समाज से संबंधित इसी तरह की रचनाएं लिख कर समाज का गौरव बढ़ाने का प्रयास करते रहें।
8. भाईसाहब, आपने ऐसे विषय पर पुस्तक लिखी है कि अपने बहादुर जुझारू अग्र बंधुओं को अमर कर दिया, जिससे न केवल उनके परिजन प्रेरित होंगे, अपितु समस्त समाज की आने वाली पीढ़ियां उनके शौर्य एवं बलिदान से प्रेरित होती रहेंगी। आप बहुत-बहुत बधाई एवं सम्मान के पात्र हैं।
9. WoW ! Despite an awesome surgery here you come up with a new jewel ! That';s reallu something . You arte an investigative Historian . If the Government do not pay attention, the Agarwal community should take steps to honour you . Best wishes, Regards and Greetings !

❖❖❖

संदर्भ ग्रंथों की सूची

1. अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास – सत्यकेतु विद्यालंकार
2. अग्रवाल जाति का विकास – परमेश्वरी लाल गुप्त
3. अग्रसेन–अग्रोहा–अग्रवाल – डा. स्वराजमणि अग्रवाल
4. अग्रवाल जाति का प्रमाणिक इतिहास – गुलाबचंद ऐरन
5. अग्रवाल इतिहास शोध ग्रंथ – चौ. वृंदावन कानुनगो
6. अग्रसेन और अग्रवाल, सप्रमाण – वैद्य कृपाराम अग्रवाल
7. अग्रवाल समाज का गौरवपूर्ण इतिहास – डा. चंपालाल गुप्त
8. अग्रोत्कान्वय – निरंजन लाल गौतम
9. अग्रवाल समाज एक अध्ययन – ओमप्रकाश अग्रवाल
10. वैश्य अग्रवाल – एक परिचय – ब्रजलाल गुप्त
11. गौारवशाली अग्रवाल समाज–ऐतिहासिक परिदृश्य – अशोक कुमार गुप्ता
12. हरियाणा का गौरव, अग्रवाल समाज – मोहित अग्रवाल
13. अग्रवाल समाज की विरासत – मोहित अग्रवाल

धन्यवाद-ज्ञापन

सर्व प्रथम, मैं धन्यवाद करता हूं, परमेश्वर का, जिनकी असीम कृपा से मैं इस पुस्तक को पूर्ण कर सका हूँ। मैं अपने बुजुर्गों को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ कि अप्रत्यक्ष रूप से उनका आशीर्वाद मुझे लगातार मिला। आभार अग्रवाल समाज के उन इतिहासकारों व साहित्यकारों का, जिन्होंने अनेक कष्ट उठाकर भी अग्रवाल समाज का साहित्य समृद्ध किया तथा उनकी पुस्तकों का मैंने अपनी लेखनी में उपयोग किया।

अनेक बार ऐसे क्षण भी आए जब मन में आया कि समाज के बंधु पुस्तकें पढ़ते नहीं, लिखूं या नहीं? तब इस पुस्तक को लिखने के लिये मेरे मित्रों ने भी प्रोत्साहित किया, विशेष रूप से जुझारू समाज सेवी तथा मासिक अग्रमंगल के संपादक श्री संजय जी गोयल (दिल्ली), मेरे अनन्य प्रेमी श्री ब्रह्म प्रकाश जी गोयल (सोनीपत), मैं हृदय से इन दोनों बंधुओं का आभार प्रकट करता हूं। पुस्तक के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन के लिये मैं श्री अग्रवाल महासभा (गुजरात) तथा महामंत्री श्री कपूर चंद जी गुप्ता (अहमदाबाद) को हृदय से धन्यवाद देता हूं। विशेष साधुवाद, मेरे पुत्र सी.ए. विवेक कुमार गुप्ता का जिसने समय निकाल कर इस पुस्तक के कवर पेज सहित सभी रंगीन पेजों को तैयार किया, विवेक ने हमेशा कहा कि पापा आप लिखें अवश्य लिखें।

अशोक कुमार गुप्ता, लेखक

महकते पल

पुस्तक -''अग्रवाल समाज और स्वाधीनता संग्राम (1857-1947) को भेंट करते हुए कुछ झलकियां

दिनांक -29.9.2019, अग्रवाल समाज-प्रताप नगर, जोधपुर - महाराजा अग्रसेन जयंती समारोह में पुस्तक-''अग्रवाल समाज और स्वाधीनता संग्राम (1857-1947 का विमोचन मंचासीन अतिथियों द्वारा - श्री रामावतार अग्रवाल, डा.एम.के.गर्ग (अधीक्षक-एम्स, जोधपुर), श्री पी.डी.लीला, श्री मूलचंद अग्रवाल, श्री एस.के.गोयल, श्री जी.डी.मित्तल, द्वारा किया गया।

श्री नारायण दास जी गुप्ता, राज्यसभा सांसद को पुस्तक भेंट करते हुए श्री मोहित गर्ग, दिल्ली

श्री रामनिवास जी गोयल, विधान सभा अध्यक्ष, दिल्ली को पुस्तक भेंट करते हुए श्री संजय गोयल, दिल्ली

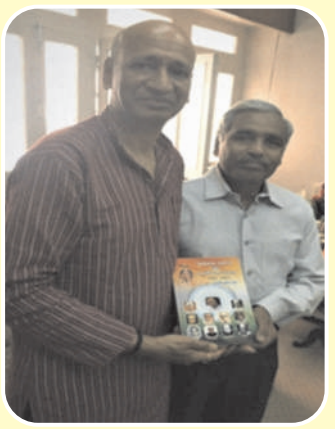

श्री मनोज जी गर्ग, मा.न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय, को पुस्तक भेंट करते हुए लेखक

श्री कमलदीप गोयल, पुलिस अधीक्षक, यमुनानगर को पुस्तक भेंट करते हुए
श्री तरसेम मिततल एवं साथीगण

कुरूक्षेत्र भारत के प्रसिद्ध कथावायक अग्रवंशी भाई रवि जी महाराज को पुस्तक भेंट करते हुए लेखक

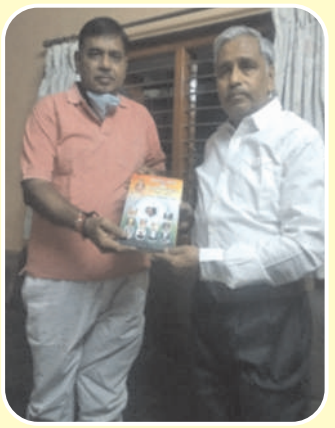

श्री कपूर चंद गुप्ता, महामंत्री, श्री अग्रवाल विकास महासभा, गुजरात को पुस्तक भेंट करते हुए लेखक

महकते पल - मधुर यादें

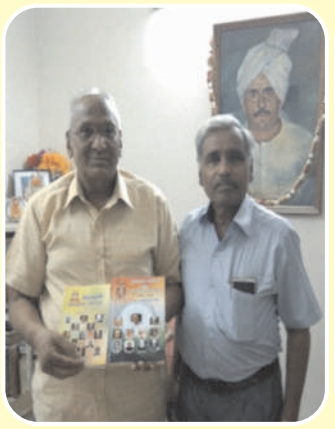

श्री सुखवीर सिंह जी दलाल, इतिहासकार एवं लेखक को पुस्तक भेंट करते हुए लेखक

वरि. समाज सेवी श्री रामावतार जी अग्रवाल, जोधपुर को पुस्तक भेंट करते हुए लेखक

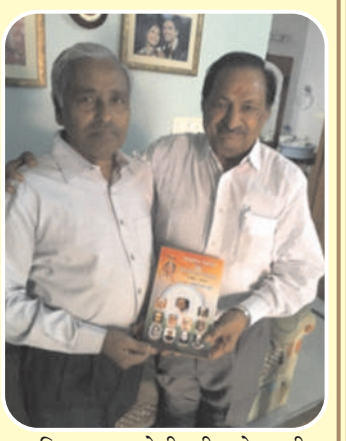

वरि. समाज सेवी श्री सुरेश जी गोयल को पुस्तक भेंट करते हुए लेखक

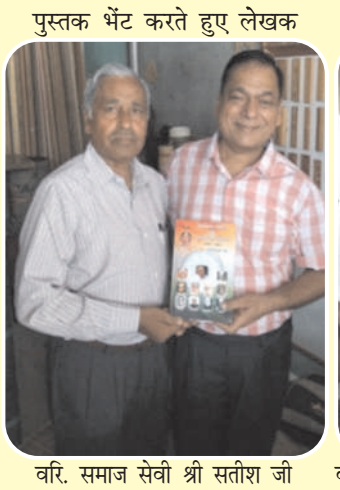

वरि. समाज सेवी श्री सतीश जी अग्रवाल, जोधपुर को पुस्तक भेंट करते हुए लेखक

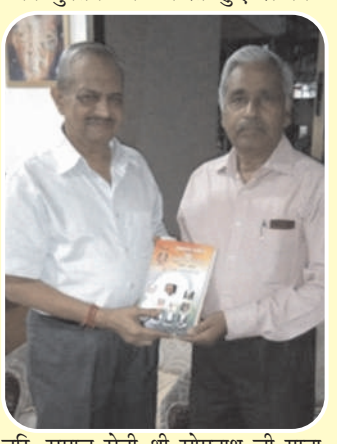

वरि. समाज सेवी श्री सोमनाथ जी गुप्ता, आजीवन चेयरमैन,म.अ.सेवा समिति, अहमदाबाद को पुस्तक भेंट करते हुए

श्री सतपाल गोयल, स्वतंत्रता सेनानी श्री जुगलकिशोर जी के पौत्र को पुस्तक भेंट करते हुए श्री मोहित गर्ग, दिल्ली

जयंती पर्व पर, अग्रवाल समाज-प्रताप नगर, जोधपुर द्वारा पुस्तक ''गौरवशाली अग्रवाल समाज-ऐतिहासिक परिदृश्य'' का विमोचन - वर्ष-2016

महकते पल-मधुर यादें

महकते पल - मधुर यादें

श्री बनारसी दास जी गुप्ता एवं श्री प्रदीप जी मित्तल

श्रद्धेय काका हाथरसी का सम्मान करते हुए

उच्च प्राथमिक विद्यालय, उत्तर रेलवे, समदड़ी - विदाई समारोह

अग्रसाहित्यकार-श्री त्रिलोक गोयल, श्री हरपतराय टाटिया, श्रीमती स्वराजमणि अग्रवाल, चौधरी वृंदावन जी कानूनगो, डा. चंपालाल जी गुप्त के साथ लेखक

उत्तर रेलवे, मुख्य कार्मिक अधिकारी द्वारा पुरस्कृत

इलाहबाद में आयोजित समारोह में, उत्तर रेलवे, महाप्रबंधक-राजभाषा का पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

मंडल रेल प्रबंधक उ.रे., जोधपुर द्वारा सम्मानित

हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक डा. नामवर सिंह जी से सम्मानित

पुस्तक -''अग्रवाल समाज और स्वाधीनता संग्राम (1857-1947)''- का भव्य विमोचन

दिनांक -09.08.2019,छतरपुर, मध्यप्रदेश-''क्रांति दिवस'' पर ''अग्रवाल महासभा'' द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में माननीय बृजेन्द्र सिंह जी राठौर - वाणिज्य कर मंत्री म.प्र., श्री अनिल माहेश्वरी जी - डी.आई.जी, श्रीमती अर्चना सिंह - अध्यक्ष नगरपालिका, श्री तिलक सिंह जी - पुलिस अधीक्षक, श्री जयराज कुबेर - ए.एस.पी. एवं उपस्थित स्वतंत्रता संग्राम सेनानी - श्री रामकृपाल चौरसिया, श्री काशी प्रसाद महतो, श्री राजाराम सिंह जी तथ म.प्र. अग्रवाल सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री कमल अग्रवाल के द्वारा किया गया।

दिनांक -25.08.2019, पुणे-महाराष्ट्र-''अग्रसेन भगवान चेरिटेबल फांउडेशन'' द्वारा आयोजित परिचय सम्मेलन के भव्य समारोह में, पुणे के अनन्य समाज सेवी ''**श्री राजेश जी अग्रवाल**'' व उनकी टीम द्वारा करवाया गया। इस विमोचन समारोह में महाराष्ट्र के विभिन्न स्थानों से पधारे गणमान्य अग्रबंधुओं ने भाग लिया। यह विमोचन मेरे जीवन का सबसे यादगर पल रहा, सोच से भी परे रहा यह भव्य समारोह। ''श्री राजेश जी अग्रवाल'' ने मेरा व मेरे परिवार का शानदार स्वागत भी किया।

दिनांक -29.9.2019, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला-में आयोजित महाराजा अग्रसेन जयंती के भव्य कार्यक्रम में पुस्तक का विमोचन **महारानी साहिबा श्रीमती परनीत कौर**-सांसद,पटियाला, प्रो.बी.एस.घुम्मन- वाईस चांसलर, श्री संजय गर्ग - स्टेट इंफोर्मेशन कमीशनर,पंजाब, से.नि.न्यायाधीश श्री आर.के.गर्ग चेयरमैन - एनआरआई कमीशन, स्टेट गवर्मेंट ऑफ पंजाब, श्री बजरंगदास गर्ग - अध्यक्ष-अग्रोहा विकास ट्रस्ट, प्रोफेसर डा.प्रमोद अग्रवाल -चेयरमैन, महाराजा अग्रसेन चेयर, स्वामी असीमानंद लिंगम, श्री जतिंदर गोयल - पीएसपीसीएल डायरेक्टर फाइनांस, श्री पंकज महेन्दू - कांग्रेस मानवाधिकार सेल के प्रदेश चेयरमैन, श्री करूणेश गर्ग - सचिव पीपीसीसी, श्री रामकुमार सिंगला, श्रीमती शशि अग्रवाल एवं अन्य गणमान्य बंधुओं की उपस्थिति में किया गया।

लेखक परिचय

अशोक कुमार गुप्ता पुत्र – स्व.श्री राम कुमार जी गुप्ता

जन्म – 08 जनवरी 1955, से.नि. वरि. अनुवादक, उ.प.रे., जोधपुर

शैक्षणिक योग्यता – एम.कॉम., एम.ए. (हिंदी),

प्रशैक्षणिक योग्यता – एस.टी.सी.,बी.एड., आई.जी.डी. (पेंटिंग), कंप्यूटर प्रशिक्षण कोर्स, (मानव संसाधन मंत्रालय), अनुवाद प्रशिक्षण कोर्स (गृह मंत्रालय), ट्रेकिंग कोर्स (गुजरात राज्य पर्वतारोहण संस्थान, मा.आबू), स्काउट मास्टर प्रशिक्षण (शिमला), प्रा.चिकित्सा प्रशिक्षण (रेलवे), एन.सी.सी.(एयर विंग–3 साल, आर्मी–1 साल) विद्यालय व विश्वविद्यालय में।

सामाजिक दायित्व – संस्थापक अग्रवाल समाज–प्रताप नगर, जोधपुर, संस्थापक सदस्य – पश्चिमी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन, इसके अलावा पूर्व तथा वर्तमान में प.रा.अ.स.,जोधपुर जिला अ. स. तथा अन्य संस्थाओं में विभिन्न पदों पर रहकर, सन् 1985 से सामाजिक कार्यों में नि:स्वार्थ भावना, लगन व निष्ठा से कार्यरत। अनेक परिचय सम्मेलनों में योगदान, अनेक स्थानों में अग्रसेन साहित्य का प्रचार–प्रसार किया। अग्रसेन ज्ञान प्रश्नोत्तरी के तीन संस्करणों का लेखन। त्रिलोक जी गोयल की पुस्तक कथाएं जो हमारे आंगन में उंगी का प्रकाशन। समय–समय पर अग्र साहित्कारों का सम्मान करवाया गया। **अनेक पत्र–पत्रिकाओं में अग्रसेन–अग्रोहा–अग्रवाल संबंधी लेख लिखे।**

श्रेष्ठ सेवाओं के लिए सम्मान

1. **समाजिक कार्यों में उल्लेखनीय योगदान के लिये** – वर्ष 1993 में अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा साहित्य प्रचार–प्रसार के लिए, 1994 में अग्रवाल पंचायत, जोधपुर, 1995 व 2006 में अग्रवाल समाज–प्रताप नगर, 1999, 2000 व 2006 में म.अ. मैरिज ब्यूरो, जोधपुर, 1995 में अग्रसेन प्याऊ समिति, जोधपुर, 2006 में अग्रसेन रिलीफ सोसायटी, जोधपुर, समाज कार्य में उत्कृष्ठ कार्य व सराहनीय योगदान के लिए अ.भा.अ.स.द्वारा पंचम प्रांतीय सम्मेलन में, 2008 में प.रा.अ.स. द्वारा अग्रसेन जनचेतना–त्रैमासिक सामाजिक पत्र के सफल संपादन के लिए, 2000 में वैश्य समाज विकास मंच, राजस्थान–जोधपुर, 2011 में प.रा.अ.स. द्वारा 17 वर्षों की उल्लेखनीय समाज सेवा व संस्थापक सदस्य के रूप में सम्मानित।
2. अ.भा.अ.स.द्वारा वर्ष 2006 में आयोजित 20वें राष्ट्रीय सम्मेलन, रायपुर में ''**अग्र–भूषण**'' की उपाधि से सम्मानित।
3. **श्रेष्ठ अध्यापक** के रूप में प्रबंध समिति आदर्श विद्या मंदिर जोधपुर, सरपंच सालावास गांव तथा मंडल रेल प्रबंधक, जोधपुर द्वारा सम्मानित।
4. **रेलवे में सराहनीय सेवाओं के लिए** – महाप्रबंधक, मु.कार्मिक अधि.,मं.रे.प्रबंधक, मु.कारखाना प्रबंधक आदि द्वारा सम्मानित।

अन्य कार्य व उपलब्धियां

1. **पुस्तक प्रकाशन** – गौरवशाली अग्रवाल समाज – ऐतिहासिक परिदृश्य तथा अग्रवाल समाज और स्वाधीनता संग्राम (1857–1947), महाराजा अग्रसेन और अग्रवंश (एक अध्ययन) तथा अग्रवंश ज्ञान प्रश्नोत्तरी।
2. कुछ पत्रिकाओं के संपादन में सहयोग व लेख प्रकाशित। अग्रसेन साहित्य, पत्र–पत्रिकाओं आदि का काफी बड़ा दुर्लभ संग्रह। दुर्लभ सिक्के व डाक टिकट–संग्रहकर्ता।

आगामी प्रकाशन – अग्रवाल समाज का गौरव – बेटियां, अग्रवाल समाज के मूर्धन्य साहित्यकारों व पत्रकारों का परिचय, पद्म पुरस्कार प्राप्त अग्रबंधुओं का परिचय तथा सिक्के बोलते हैं।

संपर्क :– 2–ब–15, प्रताप नगर, जोधपुर–राजस्थान, 342 003
मो.नं. 63765 66713 वाट्सएप – 94606 49764